PDMTI S1 02

One year postgraduate Diploma Programme
(CBCS and Accordance with NEP 2020)

1st Semester

साहित्य अनुवादसिद्धांत और प्रयोग :

“बाधाओं से परे शिक्षा—
सुलभ, समावेशी और समान अवसर आधारित अधिगम का संकल्प”
- कृष्णकांत हेंदिक

“Education Beyond Barriers —
A Commitment to Accessible, Inclusive, and Equity-Based Learning.”
-Krishna Kanta Handique

विषय विशेषज्ञ

प्रोफ़ेसर देवराज सेवानिवृत ,अनुवाद एवं निर्वचन विद्यापीठ ,प्रोफ़ेसरवर्धा ,एमजीएएचवी ,

प्रोफ़ेसर हरीश कुमार सेठी दिल्ली ,इग्नू ,निर्देशक ,अनुवाद अध्ययन एवं प्रशिक्षण विद्यालय ,

प्रोफ़ेसर दिलीप कुमार मेधी, हिंदी विभाग, गौहाटी विश्वविद्यालय, असम

एसोसिएट प्रोफ़ेसर मनोज कुमार स्वामीरवीन्द्रनाथ टैगोर विश्व ,हिंदी विभाग ,विद्यालय ,(विभागाध्यक्ष)असम

पाठ्यक्रम समन्वयक: डॉउज्जवल डेका बरुआ .,सहायक प्राध्यापक, कृष्णकांत हेंदिक राज्यिक मुक्त विश्वविद्यालय, असम

एसएलएम् तैयारी टीम

इकाइयाँ	**योगदानकर्ताओं के नाम**
3-1	डॉदिनेश कुमार साहू .,सहायक प्राध्यापक, सिक्किम विश्वविद्यालय सिक्किम ,
9-4	बी आकाश राव, सहायक प्राध्यापक पश्चिम बंगाल ,सूर्य सेन महाविद्यालय ,
14-10	मो अरुणाचल प्रदेश ,इंदिरा गांधी सरकारी महाविद्यालय ,सहायक प्राध्यापक ,जोहुरुल इस्लाम.

Editors

Content : डॉ सहायक , टिंकू छेत्री .प्राध्यापिका, कृष्णकांत हेंदिक राज्यिक मुक्त विश्वविद्यालय, असम

Language **:** लक्ष्मी नारायणदिल्ली ,इंद्रप्रस्थ महिला महाविद्यालय ,सहायक प्राध्यापक ,

Structure & Format **:** डॉसुरभि चुतिया ., सहायक प्राध्यापिकाकृष्णकांत हेंदिक राज्यिक मुक्त विश्वविद्यालय ,, असम

February, 2026

This Self Learning Material (SLM) of the Krishna Kanta Handiqui State Open University is made available under a Creative Commons Attribution-Non Commercial-Share Alike 4.0 License (international) http://creativecommons.org/licenses/by-nc-sa/4.0/

ISBN: xxxxxxxxxxxxxxxxx

Printed and published by Registrar on behalf of the Krishna Kanta Handiqui State Open University.

Headquarters: Patgaon, Rani Gate, Guwahati - 781 017

City Campus: NH 37, Resham Nagar, Khanapara, Guwahati - 781 006; www.kkhsou.in

अनुक्रमणिका

इकाई 1 – साहित्यानुवाद का अनुवाद : अवधारणा, स्वरूप और महत्व **9-20**

साहित्य अनुवाद का अर्थ एवं स्वरूप ,साहित्य के अनुवाद का स्वरूप ,साहित्यानुवादमें भाषा और शैली की भूमिकासाहित्यानुवाद का महत्व , |

इकाई 2 – साहित्यानुवाद की प्रक्रिया, प्रकार और चुनौतियाँ **21-35**

अनुवाद अनुवाद प्रक्रिया के प्रमुख चरण ,साहित्यानुवाद के प्रकार ,साहित्यानुवाद की प्रक्रिया , ,अनुवाद की चुनौतियाँसाहित्यानुवाद की चुनौतियाँ,|

इकाई 3– सृजनात्मक और ज्ञानआयाम और विशेषताएँ :विज्ञान आधारित साहित्य का अनुवाद- **36-47**

साहित्यानुवाद की चुनौतियाँसृजनात्मक और ,विज्ञान साहित्यानुवाद की दृष्टि-सृजनात्मक और ज्ञान , साहित्यानुवाद की शैलीगत ,विज्ञान-ज्ञानविशेषताएँविज्ञान साहित्यानुवाद में -सृजनात्मक औरज्ञान , समानता और विषमता के आयाम

इकाई 4 – काव्यानुवाद **48-61**

काव्य का अर्थ एवं स्वरूपकाव्यनुवाद की ,काव्य और अनुवाद का अन्तःसम्बन्ध ,अनुवाद : काव्यनुवाद और सृजन ,चुनौतियाँ

इकाई 5 – नाटक और दृश्य साहित्य का अनुवादस्वरूप और प्रविधियाँ : **62-78**

नाटकउद्भव विकास और :भारतीय नाट्य परंपरा ,अर्थ और नाट्य शिल्प की अवधारणा ,परंपरा : भाषिक संतुलन एवं ,नाट्यानुवाद में सांस्कृतिक ,रचनात्मक यात्रा :नाट्यानुवाद ,आधुनिक स्वरूप दृश्य साहित्य और अनुवाद ,चुनौतियाँ

इकाई 6 - कथा और कथेतर साहित्य का अनुवाद **79-96**

कथा साहित्य: अर्थ, संस्कृति, संवेदना और अनुवाद, भारतीय कथा साहित्य में अनुवाद की जीवंत परंपरा, कथा साहित्य और अनुवाद की सांस्कृतिक सन्दर्भ , कथा-साहित्य में अनुवाद की चुनौतियाँ, कथा साहित्य का अनुवाद: पुनःसृजन की जिम्मेदारी और रणनीतियाँ , कथेतर साहित्य और अनुवाद , कथेतर साहित्य की प्रमुख विशेषताएँ और उनके अनुवाद की चुनौतियाँ

इकाई 7 – आलोचना साहित्य का अनुवादअवधारणा और सीमाएँ : **97-114**

साहित्यिक आलोचनासाहित्यिक आलोचना के विविध प्रकार पाश्चात्य ,व्युत्पत्ति और परंपरा ,अर्थ : आलोचनात्मक लेखन में अनुवाद प्रक्रिया ,परंपरा का ऐतिहासिक विकास :एवं भारतीय आलोचना रणनीत :आलोचनात्मक अनुवाद ,और दृष्टिकोणि और पुनः सृजन

इकाई 8 – विश्व साहित्य और तुलनात्मक दृष्टि में अनुवाद **115-128**

विश्व साहित्य और अनुवाद की वैश्विक परंपरा ,वैश्विक साहित्य और तुलनात्मक दृष्टि ,अनुवाद , भारतीय कालजयी ,अनुवाद और तुलनात्मक दृष्टि :भारतीय प्राचीन साहित्य और विश्व साहित्य साहित्यऔर उसके वैश्विक अनुवाद

इकाई 9– भारतीय साहित्य की अवधारणा और अनुवाद **129-144**

भारतीय साहित्य का स्वरूप एवं अवधारणा-सामाजिक ,भारतीय साहित्य परंपरा में अनुवाद , अनुवाद की :भारतीय साहित्य ,भारतीय साहित्य व अनुवाद पर प्रभाव : सांस्कृतिक आन्दोलन सृजनात्मक भूमिका

इकाई 10 – तुलनात्मक साहित्य अनुवाद के संदर्भ में **134-158**

तुलनात्मक साहित्यअध्ययन और ,परंपरा :तुलनात्मक साहित्य ,परिभाषा और स्वरूप ,अर्थ : भारतीय साहित्य की ,अनुवाद और नवीन दृष्टिकोण ,बहुलता :तुलनात्मक साहित्य ,अनुवाद तुलनात्मक ,अवधारण और अनुवाद की भूमिकासाहित्य में अनुवाद की सृजनात्मक और केन्द्रीय भूमिका

इकाई 11 – बाल एवं किशोर साहित्य का अनुवाद **159-171**

बाल साहित्य एवं किशोर साहित्य अर्थ :भारतीय एवं पाश्चात्य परंपरा में बाल साहित्य ,अवधारण , हिंद ,साहित्यानुवाद-आधुनिक युग में बाल ,स्वरूप उद्देश्य और महत्वी बाल साहित्य में अनुवाद : परंपरा और भविष्य की दिशाएँ ,चुनौतियाँ

इकाई 12 – साहित्य, संस्कृति और अनुवाद का संबंध **172-187**

साहित्य और संस्कृति का अर्थ एवं अवधारणा ,एक सर्जनात्मक प्रक्रिया :साहित्यिक अनुवाद , अनुवाद म ,संस्कृति और अनुवाद का अंतः संबंध प्रक्रियाे ं भाषाई आदानप्रदान के माध्यम से - प्रदान-सांस्कृतिक आदन

इकाई 13 – साहित्य अनुवाद में भाषा की सरलता और शुद्धता का महत्व **188-201**

भाषा :अनुवाद और भाषा ,अनुवाद और भाषा का परस्पर संबंध ,परिभाषा और स्वरूप ,अर्थ : साहित्य अनुवाद में भाषा की ,विकास और संकल्पनाभूमिकाअनुभव और :साहित्यिक अनुवाद , विवेक

इकाई 14 – डिजिटल युग में साहित्यानुवादनई प्रवृत्तियाँ और बहुभाषिक परिवेश : **202-216**

प्रक्रिया और ,स्वरूप :डिजिटल युग में साहित्यानुवाद ,परम्परा एवं परिवर्तन :डिजिटल युग में साहित्य डिजिटल युग में ,सांस्कृतिक महत्वसाहित्यानुवाद की नई प्रवृत्तियों की भूमिकाडिजिटल युग में , मातृभाषा से बहुभाषीय :साहित्य अनुवाद

विषय प्रवेश

कृष्णकांत हेंदिक राज्यिक मुक्त विश्वविद्यालय के अनुवाद डिप्लोमा एक वर्षीय पाठ्यक्रम के प्रथम छमाही के**साहित्य ' 'सिद्धांत और प्रयोग :अनुवाद** द्वितीय पत्र है । इसमें कुल चौदह इकाईयाँ है। पत्र 'सिद्धांत और प्रयोग :साहित्य अनुवाद' साहित्यिक अनुवाद की सैद्धांतिक समझ और व्यावहारिक पक्ष को समग्र रूप में प्रस्तुत करने वाला एक महत्वपूर्ण पाठ्यक्रम है । यह पत्र अनुवाद को केवल भाषिक हस्तांतरण न मानकर एकसृजनात्मक, सांस्कृतिक और बौद्धिक प्रक्रिया के रूप में स्थापित करता है । इसके माध्यम से विद्यार्थियों को साहित्यिक विधाओं, भाषिक संरचनाओं और सांस्कृतिक संदर्भों की गहरी समझ विकसित करने का अवसर प्राप्त होता है ।

यह पत्र साहित्य अनुवाद की अवधारणा, स्वरूप और महत्व को स्पष्ट करते हुए भाषा और शैली की भूमिका को केंद्र में रखता है । अनुवाद प्रक्रिया के विभिन्न चरणों, प्रकारों और चुनौतियों का अध्ययन विद्यार्थियों को व्यावहारिक अनुवाद कौशल से संपन्न बनाता है । सृजनात्मक तथा ज्ञानविज्ञान आधारित साहित्य के अनुवाद के स-ंदर्भ में यह पत्र यह स्पष्ट करता है कि विषयवस्तु, उद्देश्य और पाठक वर्ग के अनुसार अनुवाद की रणनीतियाँ भिन्न होती हैं । काव्य, नाटक और दृश्य साहित्य के अनुवाद से संबंधित अध्ययन साहित्यिक संवेदना, सौंदर्यबोध, लय, संवाद और सांस्कृतिक संकेतों के संरक्षण की जटिलताओं को उजागर करता है । वहीं आलोचना साहित्य के अनुवाद के माध्यम से साहित्यिक सिद्धांतों, विमर्शों और पुनःसृजन की प्रक्रिया को समझने का अवसर मिलता है । विश्व साहित्य और तुलनात्मक दृष्टि में अनुवाद का अध्ययन साहित्य को वैश्विक परिप्रेक्ष्य प्रदान करता है तथा विभिन्न साहित्यिक परंपराओं के बीच संवाद स्थापित करता है ।

भारतीय साहित्य की अवधारणा और परंपरा में अनुवाद की भूमिका इस पत्र का एक महत्वपूर्ण पक्ष है, जो भाषायी विविधता के बीच साहित्यिक एकता को रेखांकित करता है । बाल और किशोर साहित्य के अनुवाद से सामाजिक और शैक्षिक दायित्व की भावना विकसित होती है । साहित्य, संस्कृति और भाषा के अंतःसंबंध के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि अनुवाद सांस्कृतिक आदानप्रदान का प्रभावी माध्यम है । डिजिटल युग में साहित्यानुवाद की नई प्रवृत्तियाँ इस पत्र को समकालीन और - प्रासंगिक बनातीहैं । समग्र रूप से यह पत्र साहित्य अनुवाद को एक सृजनात्मक, सांस्कृतिक और अकादमिक कौशल के रूप में विकसित करता है तथा विद्यार्थियों को साहित्यिक संवाद के व्यापक संसार से जोड़ता है ।साथ ही यहाँ प्रत्येक इकाई में महत्वपूर्ण बिंदु , प्रगति जाँच, प्रगति विवरण नाम से शीर्षक प्रस्तुत हैं जिसके द्वारा विद्यार्थियों ज्ञान प्राप्त करने के साथ ही इकाई से सम्बंधित प्रश्नों को हल करने में सक्षम होंगे ।

इकाई 1– साहित्यनुवाद भाषा और संस्कृति के सेतु के रूप में कार्य करता है । 'साहित्यनुवाद का अनुवादअवधारणा :, स्वरूप और महत्व' इकाई के माध्यम से विद्यार्थी साहित्यनुवाद की मूल अवधारणा, उसके विविध स्वरूपों तथा समाज-सांस्कृतिक संदर्भों में उसके महत्व को समझेंगे। इस इकाई में यह स्पष्ट किया जाएगा कि साहित्यनुवाद केवल शब्दांतरण नहीं, बल्कि भाव, संवेदना और सांस्कृतिक अर्थों का सृजनात्मक पुनर्पाठ है । विद्यार्थी विभिन्न साहित्यिक विधाओं के अनुवाद की प्रक्रिया, अनुवादक की भूमिका, चुनौतियाँ तथा संभावनाएँ सीखेंगे। यह इकाई भाषाई संवेदनशीलता, तुलनात्मक दृष्टि और वैश्विक साहित्यिक समझ विकसित करने में सहायक सिद्ध होगी । अंतिम में सारांशप ,्रगति विवरण ,(केवल रूपरेख)अधिक जानने के लिए पढ़े एवं कुछ अभ्यास प्रश्न दिया गया है । जिसे पढ़कर विद्यार्थी साहित्यानुवाद के बारे में विस्तार से समझ सकेंगे ।

इकाई -2'साहित्यनुवाद की प्रक्रिया, प्रकार और चुनौतियाँ' इकाई विद्यार्थियों को साहित्यनुवाद की व्यावहारिक समझ प्रदान करती है । इस इकाई के माध्यम से विद्यार्थी अनुवाद की विभिन्न प्रक्रियाओं, साहित्यनुवाद के प्रमुख प्रकारों तथा अनुवाद के दौरान आने वाली भाषिक, सांस्कृतिक और भावात्मक चुनौतियों को जानेंगे । इकाई का महत्व इस तथ्य में निहित है कि यह विद्यार्थियों में सृजनात्मकता, भाषाई दक्षता और आलोचनात्मक दृष्टि का विकास करती है तथा उन्हें सफल और संवेदनशील अनुवाद के लिए तैयार करती । जिसे पढ़कर शिक्षार्थी इस इकाई के बारे में ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे एवं दिए गए प्रश्न को सुलझा सकेंगे ।

इकाई 3– विज-सृजनात्मक और ज्ञान'्ञान आधारित साहित्य का अनुवादआयाम और विशेषताएँ :' इकाई साहित्यनुवाद के विविध पक्षों को समझने में सहायक है । इस इकाई के अंतर्गत विद्यार्थी सृजनात्मक साहित्य तथा ज्ञानविज्ञान -

आधारित ग्रंथों के अनुवाद के अंतर, उनके आयामों और विशिष्ट विशेषताओं का अध्ययन करेंगे। इकाई का महत्व इस बात में निहित है कि यह विद्यार्थियों को भावात्मक संवेदनशीलता के साथसाथ तथ्यात्मक स्पष्टता और - तकनीकी शब्दावली के उचित प्रयोग का ज्ञान प्रदान करती है, जिससे वे प्रभावी और सटीक अनुवाद करने में सक्षम बनते हैं। इस इकाई को ध्यानपूर्वक पढ़ने पर छात्र न केवल विषय को गहराई से समझ पाएंगे, बल्कि उससे जुड़े हर प्रश्न का समाधान भी ढूंढ़ सकेंगे।

इकाई -4काव्यनुवाद' इकाई विद्यार्थियों को कविता के अनुवाद की सूक्ष्म और सृजनात्मक प्रक्रिया से परिचित कराती है। इस इकाई के माध्यम से विद्यार्थी काव्यनुवाद की अवधारणा, उसके प्रमुख सिद्धांतों तथा छंद, लय, रस और भावानुवाद की समस्याओं को समझेंगे। इकाई का महत्व इस बात में निहित है कि यह विद्यार्थियों में काव्यात्मक संवेदना, भाषिक सौंदर्यबोध और रचनात्मक क्षमता का विकास करती है, जिससे वे मूल काव्य की आत्मा को सुरक्षित रखते हुए प्रभावी अनुवाद करना सीखते हैं। साथ ही इस इकाई में में कविता के अनुवाद से संबंधित सिद्धांतों और व्यवहारिक पक्षों पर चर्चा की जाएगी। इकाई में सम्मिलित विविध बिंदुओं को पढ़कर शिक्षार्थी ज्ञान प्राप्त करने के साथ ही सम्बंधित प्रश्नों का हल करने में सक्षम होंगे।

इकाई 5– 'नाटक और दृश्य साहित्य का अनुवादस्वरूप और प्रविधियाँ :' इकाई विद्यार्थियों को मंचीय और दृश्य माध्यमों के अनुवाद की विशेषताओं से परिचित कराती है। इस इकाई में विद्यार्थी नाटक तथा दृश्य साहित्य के अनुवाद के स्वरूप, संवादसंरचना-, मंचीयता, सांस्कृतिक संदर्भ और अनुवाद प्रविधियों का अध्ययन करेंगे। इकाई का महत्व इस तथ्य में निहित है कि यह विद्यार्थियों को प्रभावी संवादानुवाद, दृश्य प्रभावों की समझ और दर्शकसंवेदनशील - अनुवाद क्षमता विकसित करने में सहायताकरती है। सारांश ,(केवल रूपरेखा)प्रगति विवरण ,अधिक जानने के लिए पढ़े एवं अंत में अभ्यास प्रश्न दिया गया है। जिसे पढ़कर शिक्षार्थी इस इकाई के बारे में ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे एवं दिए गए प्रश्न को सुलझा सकेंगे।

इकाई 6– 'कथा और कथेतर साहित्य का अनुवाद' इकाई विद्यार्थियों को गद्य साहित्य के विविध रूपों के अनुवाद से परिचित कराती है। इस इकाई के अंतर्गत विद्यार्थी कथा साहित्य तथा कथेतर रचनाओं के अनुवाद की विशेषताओं, शैलीगत भिन्नताओं और भाषिक संरचना को समझेंगे। इकाई का महत्व इस बात में निहित है कि यह विद्यार्थियों को भाव, विचार और तथ्य के संतुलित संप्रेषण की कला सिखाती है तथा उन्हें विभिन्न गद्य विधाओं के प्रभावी और सटीक अनुवाद के लिए सक्षम बनाती है। इस का अध्ययन छात्रों को इकाई से संबंधित संपूर्ण जानकारी देगा और वे प्रश्नों के उत्तर आसानी से दे सकेंगे।

इकाई 7 – 'आलोचना साहित्य का अनुवादअवधारणा और सीमाएँ :' इकाई विद्यार्थियों को आलोचनात्मक लेखन के अनुवाद की बौद्धिक जटिलताओं से परिचित कराती है। इस इकाई के माध्यम से विद्यार्थी आलोचना साहित्य की अवधारणा, उसके अनुवाद की प्रक्रिया तथा भाषिक, वैचारिक और सांस्कृतिक सीमाओं को समझेंगे। इकाई का महत्व इस तथ्य में निहित है कि यह विद्यार्थियों में वैचारिक स्पष्टता, तर्कपूर्ण अभिव्यक्ति और सटीक शब्दचयन की क्षमता विकसित करती है, जिससे वे आलोचनात्मक ग्रंथों का संतुलित और प्रभावी अनुवाद करना सीखते हैं। सारांशप्रगति , के)विवरणवल रूपरेखा ,(अधिक जानने के लिए पढ़े एवं अंत में अभ्यास प्रश्न दिया गया है। जिसे पढ़कर शिक्षार्थी इस इकाई के बारे में ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे एवं दिए गए प्रश्न को सुलझा सकेंगे।

इकाई 8 – 'विश्व साहित्य और तुलनात्मक दृष्टि में अनुवाद' इकाई विद्यार्थियों को वैश्विक साहित्यिक परंपराओं से जोड़ती है। इस इकाई के अंतर्गत विद्यार्थी विश्व साहित्य की अवधारणा, विभिन्न भाषाओं और संस्कृतियों के साहित्य के तुलनात्मक अध्ययन में अनुवाद की भूमिका को समझेंगे। इकाई का महत्व इस बात में निहित है कि यह विद्यार्थियों में अंतरसांस्कृतिक समझ, तुलनात्मक दृष्टि और व्यापक साहित्यिक चेतना का विकास करती है, जिससे वे अनुवाद को वैश्विक संवाद और साहित्यिक आदानप्रदान के माध्यम के रूप में देखना सीखते है। जिसे पढ़कर शिक्षार्थी इस इकाई - के बारे में ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे और विविध प्रश्नों काहल करने में सक्षम होंगे।

इकाई 9– 'भारतीय साहित्य की अवधारणा और अनुवाद' इकाई विद्यार्थियों को भारत की बहुभाषिक और बहुसांस्कृतिक साहित्यिक परंपरा से परिचित कराती है। इस इकाई के माध्यम से विद्यार्थी भारतीय साहित्य की अवधारणा, उसकी

विविध भाषाओं में रची गई कृतियों तथा उनके अनुवाद के महत्व को समझेंगे। इकाई का महत्व इस तथ्य में निहित है कि यह विद्यार्थियों में राष्ट्रीय सांस्कृतिक चेतना, भाषाई समन्वय और साहित्यिक एकता की समझ विकसित करती है, जिससे वे भारतीय साहित्य को व्यापक और समावेशी दृष्टि से परिचित होंगे। साथ ही पाठ के अंत तक शिक्षार्थी इस इकाई की मुख्य अवधारणाओं को समझ पाएंगे और संबंधित प्रश्नों का समाधान कर सकेंगे।

इकाई 10– 'तुलनात्मक साहित्यअनुवाद के संदर्भ में :' इकाई विद्यार्थियों को विभिन्न भाषाओं और साहित्यिक परंपराओं के तुलनात्मक अध्ययन से परिचित कराती है। इस इकाई के अंतर्गत विद्यार्थी अनुवाद की भूमिका, तुलनात्मक पद्धतियाँ तथा भाषिकसांस्कृतिक समानताओं और भिन्नताओं को समझेंगे। इकाई का महत्व इस बात में निहित है कि यह - विद्यार्थियों में विश्लेषणात्मक सोच, अंतरसांस्कृतिक संवेदनशीलता और आलोचनात्मक दृष्टि का विकास करती है, जिससे वे साहित्य को व्यापक, बहुभाषिक और वैश्विक परिप्रेक्ष्य में समझना सीखते हैं। अधिक जानने के लिए पढ़े एवं कुछ अभ्यास प्रश्न इकाई के अंत में दिया गया है। जिसे पढ़कर शिक्षार्थी तुलनात्मक साहित्य में अनुवाद की भूमिका के बारे में जानेंगे और प्रत्येक प्रश्न का उत्तर आसानी से दे पाएंगे।

इकाई 11 – 'बाल एवं किशोर साहित्य का अनुवाद' इकाई विद्यार्थियों को बच्चों और युवाओं के लिए रचित साहित्य के अनुवाद की विशिष्टताओं से परिचित कराती है। इस इकाई में विद्यार्थी बालसाहित्य की शैली-, भाषा, सांस्कृतिक संदर्भ और भावानुवाद की तकनीकों को सीखेंगे। इकाई का महत्व इस बात में निहित है कि यह विद्यार्थियों में संवेदनशीलता, रचनात्मकता और सरल, प्रभावी भाषा के प्रयोग की क्षमता विकसित करती है, जिससे वे बाल और किशोर साहित्य का सटीक एवं मनोहर अनुवाद करना जानेंगे। इस इकाई के अध्ययन से विद्यार्थियों को परीक्षाओं में पूछे जाने वाले विविध प्रश्नों को आत्मविश्वासपूर्वक हल करने में सहायता मिलेगी।

इकाई 12– 'साहित्य, संस्कृति और अनुवाद के संबंध' इकाई विद्यार्थियों को साहित्य और संस्कृति के अंतर्संबंध और अनुवाद में उनकी भूमिका से परिचित कराती है। इस इकाई के माध्यम से विद्यार्थी यह समझेंगे कि कैसे भाषा, परंपरा और सांस्कृतिक संदर्भ अनुवाद की प्रक्रिया और गुणवत्ता को प्रभावित करते हैं। इकाई का महत्व इस तथ्य में निहित है कि यह विद्यार्थियों में सांस्कृतिक संवेदनशीलता, भाषाई दक्षता और तुलनात्मक दृष्टि विकसित करती है, जिससे वे अनुवाद को केवल शब्दांतरण नहीं, बल्कि सांस्कृतिक संवाद के रूप में समझते हैं। साथ ही इस इकाई का अध्ययन कर शिक्षार्थी आवश्यक ज्ञान अर्जित करेंगे तथा प्रश्नों को सही ढंग से हल करने की योग्यता प्राप्त करेंगे।

इकाई 13 – 'साहित्य अनुवाद में भाषा की सरलता और शुद्धता का महत्व' इकाई विद्यार्थियों को अनुवाद में स्पष्ट, सरल और शुद्ध भाषा के उपयोग की आवश्यकता से परिचित कराती है। इस इकाई के माध्यम से विद्यार्थी यह समझेंगे कि कैसे भाषा की स्पष्टता भाव और अर्थ के सही संप्रेषण को सुनिश्चित करती है तथा अनुवाद को प्रभावी बनाती है। इकाई का महत्व इस तथ्य में निहित है कि यह विद्यार्थियों में भाषाई संतुलन, शैलीगत सजगता और भावसंवेदनशील - अनुवाद की क्षमता विकसित करती है, जिसे विद्यार्थी अभ्यास के दौरान अनुभव करते हैं। साथ ही विषय की मूल अवधारणाओं को आत्मसात करेंगे और उनका उपयोग प्रश्नों को हल करने में कर पाएंगे।

इकाई 14– 'डिजिटल युग में साहित्यनुवादनई प्रवृत्तियाँ और बहुभाषिक परिवेश :' इकाई विद्यार्थियों को तकनीकी प्रगति और बहुभाषिक वातावरण में साहित्यनुवाद की बदलती प्रक्रियाओं से परिचित कराती है। इस इकाई के माध्यम से विद्यार्थी डिजिटल प्लेटफॉर्म, अनुवाद सॉफ़्टवेयर और बहुभाषिक संवाद के संदर्भ में नई प्रवृत्तियों, अवसरों और चुनौतियों को समझेंगे। इकाई का महत्व इस बात में निहित है कि यह विद्यार्थियों में आधुनिक अनुवाद कौशल, वैश्विक दृष्टि और बहुभाषिक साहित्यिक समझ विकसित करती है, जिसे विद्यार्थी रचनात्मक अभ्यास के माध्यम से आत्मसात करते हैं। जब छात्र इस इकाई को पढ़ेंगे, तो वे इसके बारे में बेहतर समझ विकसित कर पाएंगे और उससे जुड़े प्रश्नों को हल करने में भी सक्षम हो जाएंगे।

इकाई 1 - साहित्यानुवाद

इकाई की रुपरेखा

1.1 उद्देश्य
1.2 प्रस्तावना
1.3 साहित्य अर्थ :, परिभाषा और स्वरूप
1.4 साहित्यिक अनुवाद की अवधारणा
1.5 साहित्य के अनुवाद का स्वरूप
1.6 साहित्यानुवादमें भाषा और शैली की भूमिका
1.7 साहित्य में सादृश्यमूलकता का अनुवाद
1.8 साहित्यानुवाद का महत्व
1.9 सारांश
1.10 प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा)
1.11 अधिक जानने के लिए पढ़ें
1.12 अभ्यास प्रश्न

1.1 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन से आप-

- साहित्य और साहित्यानुवाद की अवधारणा, स्वरूप और महत्त्व को स्पष्ट रूप से समझ सकेंगे।
- साहित्यिक विधाओं तथा उनके अनुवाद की प्रकृति और चुनौतियों का ज्ञान प्राप्त करेंगे।
- साहित्यानुवाद का स्वरूप समझ सकेंगे।
- साहित्यिक अनुवाद में भाषा, शैली, भाव और सौंदर्यबोध की भूमिका को पहचान सकेंगे।
- साहित्यिक अनुवाद को एक सर्जनात्मक और रचनात्मक प्रक्रिया के रूप में आत्मसात करने में सक्षम होंगे |

1.2 प्रस्तावाना

अनुवाद की रचनात्मकता और अभिव्यक्ति क्षमता को समझने और परखने का सबसे सशक्त माध्यम साहित्यिक अनुवाद है। अनुवाद के अनेक रूपजैसेतकनीकी अनुवाद -, वैज्ञानिक अनुवाद, प्रशासनिक अनुवाद इत्यादि होते हैंपरंतु साहित्यिक अनुवाद इन सबसे भिन्न और अधिक चुनौतीपूर्ण होता है। इसका मुख्य कारण यह है कि साहित्य का संबंध केवल भाषा से नहीं, बल्कि मानव की संवेदना, अनुभूति, कल्पना और भावजगत से भी होता है। इसलिए साहित्य का - साथ भावों और विचारों की सटीक अभिव्यक्त-अनुवाद करते समय शब्दों के साथि आवश्यक हो जाती है।

साहित्यिक अनुवाद केवल शब्दों के स्थानांतरण की प्रक्रिया नहीं हैबल्कि यह मूल रचना के सौंदर्य, भावात्मक प्रभाव और विचारधारा को दूसरी भाषा में पुनः सृजित करने का प्रयास है। एक साहित्यिक कृति में प्रयुक्त प्रतीक, बिंब, लय, अलंकार और सांस्कृतिक संकेत अनुवाद को और अधिक जटिल बना देते हैं। इसी कारण साहित्यिक अनुवादक से

यह अपेक्षा की जाती है कि वह मूल पाठ की आत्मा को गहराई से समझे और उसी संवेदना को लक्ष्य भाषा में जीवंत रूप में प्रस्तुत करें।

साहित्यिक अनुवाद की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि अनुवादक को स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा दोनों पर समान अधिकार हो। इसके साथसाथ उसे उस साहित्यिक विधाचाहे वह कविता हो-, कहानी हो, उपन्यास हो या नाटककी प्रकृति और शैली की भी समुचित समझ होनी चाहिए। केवल भाषिक ज्ञान पर्याप्त नहीं होताअनुवादक का सांस्कृतिक, सामाजिक और ऐतिहासिक चेतना से जुड़ा होना भी आवश्यक होता है। तभी वह मूल कृति के भाव और संदर्भों को सही ढंग से प्रस्तुत कर सकता है।

इस इकाई में साहित्यिक अनुवाद की मूलभूत अवधारणाओं पर विस्तार से विचार किया जाएगा। इसमें साहित्यिक अनुवाद के विभिन्न स्तरोंजैसे भाषिक स्तर, भावात्मक स्तर और सांस्कृतिक स्तर का विश्लेषण किया जाएगा। साथ ही साहित्य की विभिन्न विधाओं के अनुवाद से संबंधित विशेषताओं और समस्याओं पर भी चर्चा की जाएगी।

वास्तव में साहित्यिक अनुवाद एक सर्जनात्मक और सांस्कृतिक कर्म है। जब किसी एक भाषा की साहित्यिक रचना का अनुवाद दूसरी भाषा में किया जाता हैतब केवल भाषा ही नहीं बदलती, बल्कि उसके साथ जुड़ी संस्कृति, जीवनमूल्य - और सामाजिक अनुभव भी लक्ष्य भाषा की संस्कृति में प्रवेश करते हैं। इस प्रकार साहित्यिक अनुवाद विभिन्न संस्कृतियों के बीच सेतु का कार्य करता है और पारस्परिक समझ को बढ़ाता है।इसके अतिरिक्त साहित्यिक अनुवाद का एक नैतिक और सामयिक पक्ष भी होता है। अनुवादक को मूल लेखक की भावना और उद्देश्य के प्रति ईमानदार रहना होता है, साथ ही समकालीन पाठक की संवेदना का भी ध्यान रखना होता है। इस दृष्टि से साहित्यिक अनुवाद केवल तकनीकी कार्य न होकर एक जिम्मेदार बौद्धिक प्रक्रिया बन जाता है।

प्रस्तुत इकाई विषय से संबंधित है। इस इकाई के माध्यम से पाठक साहित्यानुवाद की मूल 'साहित्यानुवाद' अवधारणा, उसकी प्रकृति तथा उसके विविध आयामों से परिचित हो सकेंगे। इन आयामों के अंतर्गत साहित्य की व्युत्पत्तिपरक व्याख्या, उसकी परिभाषा, स्वरूप, भेद तथा साहित्यिक विधाओं का विवेचन किया गया है। साथ ही इस महत्त्वपूर्ण प्रश्न पर भी विचार किया गया है कि पारंपरिक अर्थ में शब्दों के बीच कहाँ समानता है 'काव्य' और 'साहित्य' और कहाँ भिन्नता।

इसके पश्चात् यह स्पष्ट किया गया है कि का अर्थ क्या है 'साहित्यानुवाद', उसके प्रमुख प्रकार कौनकौन से हैं। इस - साथ अर्थ एवं शैली के स्तर पर -इकाई के अध्ययन के उपरांत पाठक साहित्यानुवाद की संभावनाओं को समझने के साथ समतुल्यता की समस्या के संभावित समाधान भी प्रस्तुत कर सकेंगे। इकाई के अंत में साहित्यानुवाद के महत्व को विभिन्न संदर्भों में रेखांकित किया गया है। इस प्रकार, यह इकाई साहित्यानुवाद तथा उसके विविध पक्षों का संक्षिप्त किंतु सारगर्भित परिचय प्रदान करती है।

1.3 साहित्य अर्थ :, परिभाषा और स्वरूप

प्रत्यय के योग 'यत्' उपसर्ग और 'सम्' धातु से मानी जाती हैजिसमें 'धा' शब्द की व्युत्पत्ति 'साहित्य' संस्कृत में साथ '—धारण करना। इस प्रकार साहित्य का मूल अर्थ हुआ—धातु का अर्थ है 'धा' शब्द निर्मित हुआ है। 'साहित्य' से ।आचार्य र'शब्द और अर्थ का अविभाज्य सहभाव' अथवा 'रखना ामचंद्र शुक्ल के अनुसार- "साहित्य वही है जिसमें शब्द और अर्थ का ऐसा सामंजस्य हो कि वे एक"दूसरे के बिना अधूरे प्रतीत हों।-

इस परिभाषा से स्पष्ट होता है कि साहित्य में शब्द और अर्थ का सहजीवन अनिवार्य है।

साहित्य और मानव-हित-

भारतीय काव्यशास्त्र में साहित्य को लोकमंगल से जोड़कर देखा गया है। संस्कृत की उक्ति' -हितेन सह सहितं साहित्यम् -'इस तथ्य को पुष्ट करती है।आचार्य कुन्तक ने साहित्य को मानव—कल्याण से संबद्ध बताते हुए कहा है-

"साहित्य वह है जो सामान्य भाषा को विशेष अर्थवत्ता प्रदान कर मानवमन को उदात्त बनाता ह-ैै।अतः साहित्य केवल " सौंदर्य का साधन नहीं, बल्कि समाजोपयोगी चेतना का वाहक भी है।

वाङ्मय की संकल्पना-

संस्कृत का शब्द वाणी से निर्मित समस्त अभिव्यक्तियों का द्योतक है। इसमें साहित्यिक तथा 'वाङ्मय' ज्ञानात्मकदोनों प्रकार की रचनाएँ सम्मिलित होती हैं।आचार्य विशः्वनाथ प्रसाद मिश्र के अनुसार—"वाङ्मय मानव वाणी की समस्त लिखित और मौखिक अभिव्यक्तियों का सामूहिक रूप है।इस दृष्टि से वाङ्मय का क्षेत्र साहित्य की अपेक्षा " अधिक व्यापक है।

'Literature' शब्द की अवधारणा-

अंग्रेज़ी शब्द 'Literature' की उत्पत्ति लैटिन भाषा के 'Littera' से हुई हैजिसका अर्थ हैअक्षर। प्रारंभ में यह - शब्द सभी लिखित रचनाओं के लिए प्रयुक्त होता था, किंतु आधुनिक पाश्चात्य आलोचना में इसका अर्थ सीमित होकर सृजनात्मक और प्रभावकारी रचनाओं तक आ गया।

एफ—लीविस के अनुसार .आर ."Literature is a record of the finest human consciousness expressed through language."यह कथन साहित्य को मानवीय संवेदना की श्रेष्ठ अभिव्यक्ति के रूप में प्रतिष्ठित करता है।

साहित्य की परिभाषाएँ साहित्य की परिभाषा देते हुए डॉ—नगेंद्र लिखते हैं ."साहित्य वह कलात्मक अभिव्यक्ति है जिसमें जीवन के अनुभव भाषा के माध्यम से रूपायित होते हैं।"

इसी प्रकार डॉ—रामकुमार वर्मा के अनुसार . "साहित्य जीवन की अनुभूति का सौंदर्यपूर्ण चित्रण है।इन " परिभाषाओं से स्पष्ट है कि साहित्य का संबंध जीवन से गहराई से जुड़ा हुआ है।

साहित्य -जीवन की व्याख्या :

कई विद्वानों ने साहित्य को जीवन की व्याख्या और मूल्यांकन का माध्यम माना है।आई—रिचर्ड्स के अनुसार .ए . "Literature helps us to order our emotional responses to life."हिंदी साहित्य के संदर्भ में जयशंकर प्रसाद का मत है" -साहित्य मानव की अंतः चेतना का कलात्मक प्रस्फुटन है।"

अतः कहा जा सकता है कि साहित्य मानव जीवन की जटिलताओं को समझने और संवेदना को परिष्कृत करने का साधन बनता है।साहित्य शब्द और अर्थ के सजीव संयोग से निर्मित वह कला है जो जीवन का सौंदर्यपूर्ण, संवेदनशील और अर्थपूर्ण चित्र प्रस्तुत करती है। यह न केवल आनंद प्रदान करता हैबल्कि मानवहित-, सामाजिक चेतना और सांस्कृतिक मूल्यों को भी सुदृढ़ करता है।

1.4 साहित्यिक अनुवाद की अवधारणा

के संयोग से बना है। अतः साहित्यानुवाद की अवधारणा को 'अनुवाद' और 'साहित्य' शब्द 'साहित्यानुवाद' समझने के लिए इन दोनों शब्दों के अर्थ को स्पष्ट करना आवश्यक है। के विषय में पूर्ववर्ती इकाई में यह बताया 'अनुवाद' जा चुका है कि सामान्य अर्थ में अनुवाद का तात्पर्य एक भाषा में अभिव्यक्त विचारों और भावों को दूसरी भाषा में रूपांतरित करना है।

प्रत्येक साहित्यकार अपनी विशिष्ट कल्पनाशक्ति, अनुभूति और जीवनद-ृष्टि के आधार पर अपने विचारों को शब्दों में रूपायित करता है। इसी कारण साहित्यिक अभिव्यक्ति की शैली में विविधता दिखाई देती है। अभिव्यक्ति की इस भिन्नता के परिणामस्वरूप साहित्य की रचनाओं के स्वरूप, आकार और प्रस्तुति में अंतर उत्पन्न होता हैजिससे साहित्य की विभिन्न विधाओं का विकास हुआ है। कहानी, उपन्यास, कविता, नाटक, निबंध, आत्मकथा, यात्रावृत्तांत आदि - साहित्य की प्रमुख विधाएँ मानी जाती हैं।

इन विभिन्न विधाओं में रचित साहित्य हमें मुख्यतः तीन रूपों में प्राप्त होता है-

1. पद्य रूप

2. गद्य रूप

3. पद्यगद्य मिश्–रित रूप

कविता को सामान्यतः पद्य कहा जाता है, जबकि कहानी, उपन्यास, निबंध, नाटक आदि विधाएँ गद्य के अंतर्गत आती हैं। पद्य और गद्य के संयुक्त रूप में रचित साहित्य को परंपरागत रूप से कहा जाता है। यद्यपि साहित्य की 'चम्पू' शैली में ये तीनों रूप विद्यमान हैं-रचनातथापि प्रमुख रूप से गद्य और पद्य ही साहित्य की मूल संरचनाएँ मानी जाती हैं। इसी आधार पर साहित्य के अनुवाद को भी दो मुख्य वर्गों में विभाजित किया गया हैगद्यानुवाद और पद्यानुवाद। —

जब किसी एक भाषा में रचित सर्जनात्मक साहित्य को उसकी कलात्मकता, भाव संवेदना और-शैलीगत विशेषताओं के साथ किसी दूसरी भाषा में रूपांतरित किया जाता हैतो वह प्रक्रिया कहलाती है। इसे 'साहित्यानुवाद' भी कहा जाता है। साहित्यानुवाद केवल शब्दों के स्थानांतरण की प्रक्रिया नहीं हैबल्कि यह भावों 'साहित्यिक अनुवाद', अनुभूतियों और कलात्मक अभिव्यक्ति के पुनः सृजन का कार्य है।

जैसे साहित्यविशेष के -सृजन विभिन्न विधाओं में होता हैउसी प्रकार सर्जनात्मक साहित्य का अनुवाद भी विधा-—अलग नामों से जाना जाता है। उदाहरणस्वरूप-आधार पर अलग

कहानी, उपन्यास, निबंध आदि के अनुवाद को गद्यानुवाद

कविता और गीत के अनुवाद को पद्यानुवाद या काव्यानुवाद

नाटक के अनुवाद को नाट्यानुवाद

इसी प्रकार आत्मकथा, संस्मरण, यात्रावृत्तांत आदि विधाओं के अनुवाद को भी विधावार संबोधित किया जा - सकता है।

साहित्यानुवाद के संदर्भ में यह विशेष रूप से ध्यान देने योग्य तथ्य है कि साहित्य की प्रत्येक विधा का अपना स्वतंत्र स्वरूप और वैशिष्ट्य होता है। उदाहरण के लिएसंकेत-कविता में भाव—, प्रतीकात्मकता और लय का विशेष महत्व होता हैजबकि उपन्यास में कथानकविकास-, चरित्रचित्रण और सामाजिक यथार्थ प्रमुख होते हैं। अतः विभिन्न विधाओं में - रचित साहित्य का अनुवाद भीअपनीअपनी विशिष्ट चुनौतियाँ और अपेक्षाएँ लेकर आता है।-

यदि अनुवादक को किसी विधा विशेष की प्रकृति, उसकी कलात्मक मांगों और अभिव्यक्तिशैली का सम्यक ज्ञान - नहीं हैतो यह सीमा अनुवादक की मानी जाएगी, न कि साहित्यानुवाद प्रक्रिया की असंभाव्यता। उदाहरणतः यदि कोई अनुवादक कविता का अनुवाद केवल गद्यात्मक अर्थ तक सीमित रख देतो वह काव्य की आत्मा को संप्रेषित नहीं कर पाएगा।वास्तव मेंसाहित्यानुवादक के लिए आवश्यक है कि वह विधाविशेष की विषयवस्तु और अंतर्निहित भावों को - आत्मसात करते हुए कलात्मक अनुभूति के स्तर तक पहुँचे। उसे मूल रचना के कथानक, वर्णनशैली-, चरित्रों की मानसिकता और भाषिक सौंदर्य को लक्ष्य भाषा में इस प्रकार प्रस्तुत करना होता है कि मूल कृति की आत्मा सुरक्षित रहे।

इस प्रक्रिया में अनुवादक को मूल रचनाकार के व्यक्तित्व में प्रवेश करना पड़ता है। इसे विद्वानों ने परमान'स 'प्रवेश- कहा हैअर्थात अनुवादक को रचनाकार की मनोभूमि पर स्वयं को स्थापित कर, उसकी सर्जनात्मक चेतना को अनुभव करते हुएउसी प्रकार की कलात्मक अनुभूति को दूसरी भाषा में पुनः अभिव्यक्त करना होता है।उदाहरणस्वरूपयदि किसी कवि की कविता प्रकृतिसौंदर्य की सूक्ष्म अनु-भूतियों से भरी हैतो अनुवादक को केवल शब्दार्थ नहींबल्कि उस सौंदर्यबोध और - भावात्मक तरलता को भी लक्ष्य भाषा में जीवंत करना होगा। इसके लिए अनुवादक में पुनः सृजन की क्षमता का होना अनिवार्य है, जो मूल सृजन के समान ही सर्जनात्मक होती है।

साहित्यानुवाद की सफलता की वास्तविक कसौटी यह मानी जाती है कि अनूदित रचना को पढ़ते समय पाठक को यह अनुभव हो कि वह रचना मूलतः उसी भाषा में लिखी गई है, या मानो मूल रचनाकार ने स्वयं अपनी कृति को दूसरी भाषा में पुनः रचा हो।

यह भी स्मरणीय है कि विभिन्न साहित्यिक विधाओं में अनुभूति की प्रकृति भिन्नभिन्न होती है। कहीं यह अनुभूति - अपेक्षाकृत स्थूल होती है, तो कहीं अत्यंत सूक्ष्म, तरल और अमूर्त। अनुभूति की यही सूक्ष्मता साहित्यानुवाद को एक जटिल और चुनौतीपूर्ण कार्य बना देती है।

अतः कहा जा सकता है कि साहित्यिक अनुवाद- चाहे वह गद्य हो या पद्यक—ा मूल उद्देश्य दूसरी भाषा में समांतर कलात्मक अनुभूति को जाग्रत करना है। यह उद्देश्य तभी सफल होता है, जब अनुवादक को साहित्य की विधा-विशेष का गहन बोध हो और वह उस विधा की आत्मा को लक्ष्य भाषा में प्रभावी और सार्थक ढंग से प्रस्तुत कर सके।

1.5 साहित्य के अनुवाद का स्वरूप

साहित्यिक अनुवाद के स्वरूप को समझने के लिए यह आवश्यक है कि हम इसे एक बहुस्तरीय और सर्जनात्मक प्रक्रिया के रूप में देखें। यह केवल शब्दों के स्थानांतरण का कार्य नहीं हैबल्कि मूल कृति के भाव, विचार, संवेदना और सौंदर्यबोध को दूसरी भाषा में जीवंत रूप में पुनः रचने की प्रक्रिया है। साहित्य के अनुवाद का प्रथम और अत्यंत महत्त्वपूर्ण चरण मूल पाठ का गहन पठन है। अनुवादक को मूल कृति को केवल सतही रूप में नहीं, बल्कि मनोयोगपूर्वक, बारबार - और समग्रता में पढ़ना चाहिए। इस पठन में केवल भाषिक अर्थ को समझना पर्याप्त नहीं होता, बल्कि उसमें अंतर्निहित भाव, विचार, संवेदना, सामाजिकसांस्कृतिक संदर्भ और लेखक की दृष्टि को भी आत्मसात करना आवश्यक होता है।-

साहित्यिक अनुवाद की सबसे बड़ी कसौटी यही है कि अनूदित पाठ में मूल रचना के अर्थसाथ उसके -स्तर के साथ-भाव, विचार और संवेदनात्मक प्रभाव भी उसी तीव्रता और गहराई के साथ उपस्थित रहें। इसके लिए आवश्यक है कि अनुवादक को उस साहित्यिक विधा का समुचित ज्ञान होजैसे कविता—, कथा, नाटक या उपन्यास। आदर्श स्थिति यह मानी जाती है कि अनुवादक स्वयं उस विधा का रचनाकार हो या कम से कम अनुवाद से पूर्व उसने उस कृति को गहराई से समझने का प्रयत्न किया हो।

मूल पाठ के पठन के बाद साहित्यिक अनुवाद का दूसरा चरण पाठविश्लेषण का होता है। इस चरण में अनुवादक - पाठ के विभिन्न घटकों का सूक्ष्म विश्लेषण करता है। इसमें वाक्य, उपवाक्य, पदबंध, शब्दचयन-, बिंब, प्रतीक, अलंकार, छंद, लय और शैली आदि सभी तत्व शामिल होते हैं। पाठविश्लेषण के माध्यम से ही अनुवादक यह निर्धारित करता है कि - विन्यास अपनाया जाएजिससे अनूदित पाठ अपनी भाषा में स्वाभाविक और -लक्ष्य भाषा में किस प्रकार का रूप प्रभावशाली प्रतीत हो। इस स्तर पर अनुवादक का विवेक अत्यंत महत्त्वपूर्ण होता हैक्योंकि उसे यह निर्णय लेना होता है कि मूल पाठ की कौनसी विशेषता को अक्षुण्ण रखना है और किस स्तर पर लक्ष्य भाषा के अनुसार परिवर्तन आवश्यक है।-

इसके पश्चात साहित्यिक अनुवाद की प्रक्रिया में भाषान्तरण का चरण आता है। भाषान्तरण का अर्थ केवल शब्दों का रूपांतरण नहीं हैबल्कि मूल कृति के यानी उसकी आत्मा को सुरक्षित रखते हुए उसे लक्ष्य भाषा में प्रस्तुत करना 'सत्व' है। इस प्रक्रिया में अनुवादक को यह ध्यान रखना होता है कि मूल पाठ की संरचना, प्रवाह और संवेदनात्मक प्रभाव को अनावश्यक क्षति न पहुँचे। मूल रचना में जहाँ भाव का उत्कर्ष है, जहाँ तनाव या सौंदर्य का विशेष क्षण हैउन संवेदनशील स्थलों की पहचान कर उन्हें लक्ष्य भाषा में भी समान प्रभाव के साथ व्यक्त करना अनुवादक का दायित्व होता है।

इस प्रक्रिया का अगला महत्वपूर्ण चरण प्रतिस्थापन)Substitution) से संबंधित है। प्रतिस्थापन के अंतर्गत अनुवादक मूल पाठ के तत्वों को लक्ष्य भाषा की प्रकृति और संरचना के अनुरूप ढालता है। कई बार स्रोत भाषा की वाक्य-संरचना, पदबंध, मुहावरे या शब्दत्यों लक्ष्य भाषा में रखना संभव नहीं होता। ऐसी स्थिति-का-संगति को ज्यों- में अनुवादक को उन्हें बदलना या पुनर्गठित करना पड़ता है, ताकि लक्ष्य भाषा का प्रवाह, सहजता और स्वाभाविकता बनी रहे। कभी-

कभी मूल पाठ में उपस्थित कुछ शब्दों या वाक्यों को लक्ष्य भाषा में अनावश्यक मानकर हटाना भी पड़ता हैजबकि

उदाहरण के रूप में यदि अंग्रेज़ी का वाक्य हो -"She gave him a cold look."

तो इसका शब्दशः अनुवाद करना उपयुक्त नहीं होगा। हिंदी में इसका भावानुवाद इस प्रकार किया जा सकता है- "उसने उसे उपेक्षा भरी दृष्टि से देखा।"

यहाँ 'cold look' का शाब्दिक अनुवाद न करके उसके भाव को हिंदी की अभिव्यक्तिपरंपरा के अनुसार प्रस्तुत - किया गया है। इसी प्रकार, यदि हिंदी वाक्य हो—

"राहुल ने बात आई"गई कर दी।-

तो अंग्रेज़ी में इसका अनुवाद "Rahul ignored the matter" या "Rahul treated the matter casually" किया जा सकता है। यह प्रतिस्थापन ही अनुवाद को प्रभावी बनाता है।

साहित्यिक अनुवाद की प्रक्रिया का अंतिम चरण मूल पाठ और अनूदित पाठ का तुलनात्मक विश्लेषण है। इस चरण में अनुवादक यह परखता है कि अनूदित पाठ में मूल रचना का समग्र भाव, अर्थ, विचार और प्रभाव सुरक्षित रह पाया है या नहीं। इसमें यह भी देखा जाता है कि अनुवाद संदर्भानुकूल है या नहीं तथा वह लक्ष्य भाषा के पाठकों के लिए सहज , और ग्राह्य है या नहीं। यदि मूल कृति काव्य या नाटक हैतो छंद, लय और संवादात्मकता जैसे तत्वों पर विशेष ध्यान देना पड़ता हैताकि पाठक केवल अर्थ ही नहीं, बल्कि रस का भी आस्वादन कर सके।

इन सभी चरणों से गुजरने के बाद यह स्पष्ट हो जाता है कि साहित्यिक अनुवाद केवल भाषान्तरण नहीं, बल्कि एक सर्जनात्मक और रचनात्मक कर्म है। यही कारण है कि साहित्यिक अनुवाद को मौलिक लेखन के समकक्ष रखा जाता है। श्रेष्ठ साहित्यिक अनुवाद वही माना जाता है जिसमें मौलिक रचना का सा आस्वाद मिले। इसके लिए आवश्यक है कि अनुवादक कृति को केवल समझे ही नहीं, बल्कि उसे जगत में प्रवेश -भी। जब तक अनुवादक मूल रचना के भाव 'जिए' नहीं करता और उसे अपने देशकाल व सांस्कृतिक संदर्भ के अनुरूप पुनः सृजित नहीं करता, तब तक अनुवाद पूर्णतः रचनात्मक नहीं हो सकता। कभीकभी ऐसा भी देखा गया है कि सशक्त और संवेदनशील अनुवाद मूल कृति से भी अधिक - कम इतना तो आवश्यक ही है कि अनूदित रचना लक्ष्य भाषा और संस्कृति के भीतर -से-प्रभावशाली बन जाता है। कम विजातीय न लगेयही एक श्रेष्ठ साहित्यिक अनुवाद की सबसे बड़ी पहचान है।—

महत्वपूर्ण बिंदु

साहित्यानुवाद साहित्य और अनुवाद के संयोग से उत्पन्न वह सर्जनात्मक एवं कलात्मक प्रक्रिया है, जिसमें मूल साहित्यिक रचना के भाव, अनुभूति, संवेदना, शैली और सौंदर्य बोध को दूसरी भाषा में पुनः रचा जाता है। यह केवल शब्दों का यांत्रिक रूपांतरण नहीं, बल्कि विधाविशेष की आत्मा के अनुरूप समांतर कलात्मक अनुभूति का सृजन है। गद्य और पद्य - अपनी विशिष्ट चुनौतियाँ प्रस्तुत करता है। इसकी सफलता इस बात पर -जैसे विभिन्न रूपों में साहित्यानुवाद अपनी निर्भर करती है कि अनुवादक मूल रचनाकार के परमानस में प्रवेश कर उसकी सर्जनात्मक चेतना को लक्ष्य भाषा में प्रभावी, सहज और स्वाभाविक रूप में व्यक्त कर सके।

1.6 साहित्यानुवादमें भाषा और शैली की भूमिका

मनुष्य एक सृजनशील प्राणी है। वह अपने अनुभवों, भावनाओं, विचारों और उद्देश्यों को व्यक्त करने के लिए भाषा का उपयोग विभिन्न संदर्भों और परिस्थितियों में अलगभिन्न प्रयोग से जो –अलग ढंग से करता है। भाषा के इसी भिन्न– अर्थात अर्थ को भाषा की आत्मा माना जाएतो 'कथ्य' विविधता उत्पन्न होती हैवही भाषा की शैली कहलाती है। यदि

शैलीी उसका शरीर है। अर्थ और शैली के समन्वय से ही अभिव्यक्ति सजीव और प्रभावपूर्ण बनती है। यही कारण है कि साहित्य में भाषा और शैली को अभिन्न अंग के रूप में स्वीकार किया जाता हैविशेषतः सर्जनात्मक साहित्य के संदर्भ में।

अनुवाद मूलतः दो भाषाओं के बीच संपन्न होने वाली प्रक्रिया है। किंतु कोई भी दो भाषाएँ पूर्णतः समान नहीं होतीं। उनके व्याकरण, शब्दसंरचना-, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि और अभिव्यक्तिप्रणाली में स्वाभाविक अंतर पाया जाता है। इस -को लक्ष्य भ (अर्थ) कारण अनुवादक का प्रमुख दायित्व यह होता है कि वह स्रोत भाषा के कथ्यःाषा में यथासंभव निकट रूप में प्रस्तुत करे। इसके साथ ही उससे यह भी अपेक्षा की जाती है कि वह केवल अर्थ ही नहीं, बल्कि मूल पाठ की शैलीगत विशेषताओं को भी लक्ष्य भाषा में बनाए रखने का प्रयास करे, ताकि मूल रचना का भाव और प्रभाव सुरक्षित रह सके।

जिस प्रकार प्रत्येक व्यक्ति का स्वभाव, रुचि और व्यक्तित्व भिन्न होता हैउसी प्रकार साहित्यकारों की अभिव्यक्ति-दूसरे से अलग होती है। यद्यपि वे समान भाषा का प्रयोग करते हैंफिर भी उनकी रचनाओं में शैलीगत भिन्नता -शैली भी एक शब्द की व्युत 'शैली' स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।ृपत्ति का अर्थ स्वभाव 'शील' धातु से मानी जाती है। 'शील', प्रवृत्ति, आदत, झुकाव या चरित्र से है। साहित्य के क्षेत्र में यही रीति के रूप में प्रकट होता हैजिसे -लेखक की अभिव्यक्ति 'शील' हम शैली कहते हैं। इस प्रकार शैली लेखक के व्यक्तित्व और उसकी सर्जनात्मक चेतना की पहचान बन जाती है।

अंग्रेज़ी में ' के लिए 'शैली'Style' शब्द प्रयुक्त होता है। यह शब्द लैटिन भाषा के 'Stilus' से विकसित हुआ है, जिसका अर्थ था लेपित पट्टिकाओं या काग़ज़ पर लिखा जाता -। प्राचीन काल में इसी लौह लेखनी से मोम'लौह लेखनी' था। कालांतर में इस शबद का अर्थविस्तार हुआ और यह लेखन की विशिष्ट पद्धति या अभिव्यक्ति के ढंग का प्रतीक -दोनों का संबंध लेखन अथवा अभिव्यक्ति की पद्धति से जुड़ता है। 'स्टाइल' और 'शैली' बन गया। इस प्रकार

साहित्यकार अपनी अनुभूतियों और अनुभवों को सामान्यीकृत रूप में प्रस्तुत करके पाठकों तक प्रभावशाली ढंग से पहुँचाने के लिए भाषा के भीतर अपनी विशिष्ट शैली का निर्माण करता है। शैली लेखक के विचारों को सशक्त रूप प्रदान करती है। उल्लेखनीय है कि साहित्यिक शैली प्रायः सामान्य भाषामानकों से कुछ विचलन के माध्यम से सर्जनात्मक रूप -धारण करती है। ये विचलन शब्दचयन-, वाक्यविन्यास-, प्रतीक, बिंब, अलंकार आदि के स्तर पर दिखाई देते हैं। यही विचलन साहित्यिक भाषा को सामान्य बोलचाल की भाषा से अलग करता है और रचना को रसात्मक तथा प्रभावोत्पादक बनाता है।

शैली किसी भी साहित्यिक रचना को उसकी विशिष्ट पहचान प्रदान करती है। उदाहरण स्वरूप, हिंदी में 'देखना' 'देखा' क्रिया के लिए, 'निहारा', 'अवलोकन किया', 'झलक पाई', 'ताकाजैसे अनेक शब्द प्रयुक्त होते हैं। अर्थ के स्तर ' की क्रिया को व्यक्त करते हैं 'देखने' पर ये सभी, किंतु भाव और शैली के स्तर पर इनमें पर्याप्त अंतर है। इसी प्रकार अंग्रेज़ी में 'look' के लिए हिंदी में 'देखिए', 'ज़रूर देखना', 'कृपया अवलोकन करें', 'नज़र डालिएभिन्न शैलीगत -जैसे भिन्न ' प्रयोग संभव हैं। लेखक या अनुवादक अपनी शैलीगत आवश्यकता के अनुसार इनका चयन करता है।

साहित्यिक सृजन में शैली के अनेक रूप मिलते हैंजैसेव्यास शैली—, समास शैली, अलंकृत शैली, कोमलकांत पदावली युक्त शैली, मुहावरेदार शैली, व्यंग्यात्मक शैली आदि। इसके अतिरिक्त औपचारिक और अनौपचारिक शैली, संवादात्मक शैली, आँचलिक शैली, आत्मीय शैली तथा रूढ़िपरक शैली का भी प्रयोग किया जाता है। हिंदी में संस्कृतनिष्ठ शैली, उर्दूप्रभावित शैली-, हिंदुस्तानी शैली और अंग्रेज़ी मिश्रित शैली क्षेत्र के -भी देखने को मिलती हैं। विषय (इंग्लिश) अनुसार तकनीकी, वैज्ञानिक, कार्यालयी और वाणिज्यिक शैलियाँ भी विकसित हुई हैं। साहित्य की विधाओं के आधार पर कविता, कथा, उपन्यास और नाटक की अपनीअपनी विशिष्ट शैलियाँ होती हैं।इन सभी तथ्यों के आलोक में अनुवाद के -क्या अनुवाद में केवल कथ्य का रूपांतरण पर्याप्त है या मूल रचना की शैली का -संदर्भ में एक महत्वपूर्ण प्रश्न उठता है अनुवाद भी आवश्यक है ?

अनुवाद सिद्धांत के अनुसार, अनुवाद में अर्थ और शैली दोनों का स्थान महत्वपूर्ण है। अनुवादक को मूल रचना के भाव और अर्थ को अक्षुण्ण बनाए रखने के साथसाथ मूल शैली को भी यथासंभव सुरक्षित रखने का प्रयास करना चाहिए। - यदि स्रोत भाषा में कही गई बात को लक्ष्य भाषा में भिन्न शैली में प्रस्तुत किया जाएतो मूल जैसा प्रभाव उत्पन्न नहीं हो पाता। इसी संदर्भ में प्रसिद्ध पाश्चात्य अनुवादनाइडा का मत उल्लेखनीय है कि अनुवाद का उद्देश्य स्रोत .चिंतक यूजीन ए- दोनों स्तरों पर लक्ष्य भाषा में निकटतम सहज समतुल्य के रूप में प्रस्तुत करना है।—भाषा के संदेश को अर्थ और शैली

हालाँकि व्यवहार में यह कार्य अत्यंत कठिन हैक्योंकि दो भाषाओं की संरचना, व्याकरण, शब्दव्यवस्था-, सांस्कृतिक संदर्भ और शैलीगत परंपराएँ भिन्न होती हैं। इसी कारण नाइडा ने) 'निकटतम सहज समतुल्य'Natural Closest Equivalent) की अवधारणा प्रस्तुत की। इसका तात्पर्य यह है कि अनुवाद मूल के पूर्णतः समान नहीं हो सकताकिंतु वह उसके अत्यंत निकट पहुँच सकता है। इसी कारण अनुवाद में सामान्यतः अर्थ को प्राथमिक और शैली को द्वितीयक स्थान दिया जाता है। फिर भी श्रेष्ठ साहित्यिक अनुवाद वही माना जाता हैजिसमें अर्थ के साथसाथ मूल शैली की - झलकभी सुरक्षित रह सके।

अपनी प्रगति जांचें

प्रश्न 1.'साहित्यशब्द की व्युत्पत्ति क्या है और उसका मूल अर्थ क्या माना गया है '?

प्रश्न 2. साहित्यानुवाद से आप क्या समझते हैं?

प्रश्न 3. साहित्यानुवाद के प्रमुख प्रकार कौनकौन से हैं-?

प्रश्न 4. साहित्यिक अनुवाद में प्रतिस्थापन की भूमिका क्या है?

प्रश्न 5. साहित्यानुवाद में शैली का क्या महत्व है?

1.7 साहित्य में सादृश्यमूलकता का अनुवाद

साहित्यिक अनुवाद में सादृश्यमूलकता का विशेष महत्व है। सादृश्यमूलकता का आशय हैमूल भाषा में प्रयुक्त - उपमा, रूपक या तुलना को लक्ष्य भाषा में इस प्रकार प्रस्तुत करना कि उसका भाव, प्रभाव और सौंदर्य सुरक्षित रहे। यह मानकर चलना चाहिए कि साहित्यिक अनुवाद की नींव सादृश्य पर ही टिकी होती है। यदि सादृश्य का निर्वाह न किया जाए, तो अनुवाद केवल शब्दों का रूपांतरण बनकर रह जाता है और साहित्यिक प्रभाव समाप्त हो जाता है।

प्रत्येक भाषा में वस्तुओं, भावों और गुणों को व्यक्त करने के ढंग भिन्न हो सकते हैंकिंतु उनके मूल भाव प्रायः समान होते हैं। ऐसे में अनुवादक का दायित्व होता है कि वह मूल पाठ में प्रयुक्त सादृश्यों के स्थान पर लक्ष्य भाषा के अनुरूप, सांस्कृतिक रूप से संगत उपमानों की खोज करे। उदाहरण के लिए"अंग्रेज़ी वाक्य-As brave as a lion"का शाब्दिक अनुवाद करने के स्थान पर हिंदी में"-कहना अधिक स्वाभाविक और प्रभावी होगा।इसी तरह"सा वीर-सिंह"As clear as crystal"का उपयुक्त हिंदी सादृश्य "शीशे की तरह पारदर्शी"या हो सकता है।"एकदम स्पष्ट"

सादृश्यमूलकता का प्रयोग प्रायः उपमाओं और रूपकों में अधिक देखने को मिलता है। इसलिए इनके अनुवाद में सादृश्य की खोज अनिवार्य हो जाती है। यदि लक्ष्य भाषा में समान प्रभाव उत्पन्न करने वाला कोई सादृश्य उपलब्ध न होतो ऐसे में शाब्दिक अनुवाद की अपेक्षा भावानुवाद अधिक उपयुक्त होता है। अटपटे या असंगत सादृश्यों को यथावत् रखने से अनुवाद की साहित्यिक गरिमा प्रभावित होती है।उदाहरण के लिए"-Time is a thief"यदि इसे शाब्दिक रूप में समय " एक चोर है "कहा जाएतो अर्थ अस्पष्ट हो सकता है। इसके स्थान पर कहने से भाव "समय चुपचाप सब कुछ छीन लेता है" अधिक स्पष्ट और सादृश्य अधिक प्रभावशाली बनता है।

मूलतः सादृश्यमूलकता साहित्यिक अनुवाद की प्रभावशीलता को कई गुना बढ़ा देती है। सफल अनुवाद वही है जिसमें पाठक को यह अनुभव हो कि रचना उसकी अपनी भाषा और संस्कृति में ही जन्मी है।

1.8 साहित्यानुवाद का महत्व

साहित्यिक अनुवाद का मानव सभ्यता और संस्कृति के विकास में अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थान है। यह केवल एक भाषा की रचना को दूसरी भाषा में प्रस्तुत करने की प्रक्रिया नहीं है, बल्कि विभिन्न भाषाओं, संस्कृतियों, विचारधाराओं और संवेदनाओं के बीच सेतु का कार्य करता है। साहित्यिक अनुवाद के माध्यम से किसी एक भाषा या क्षेत्र की साहित्यिक धरोहर विश्वमानवता की साझा संपत्ति बन जाती है। इसके महत्त्व को निम्नलिखित बिंदुओं के माध्यम से स्पष्ट किया जा -
-सकता है

iभाषाओं और संस्कृतियों के बीच सेतु (-

साहित्यिक अनुवाद विभिन्न भाषाओं और संस्कृतियों को एकदूसरे से जोड़ता है। प्रत्येक भाषा अपने साथ विशिष्ट - सांस्कृतिक अनुभव, परंपराएँ और जीवनमूल्य लेकर आती है। अनुवाद के माध्यम से एक भाषा का साहित्य दूसरी भाषा - के पाठकों तक पहुँचता है, जिससे सांस्कृतिक आदानप्रेमचंद की कहानियों का -प्रदान संभव होता है।उदाहरणस्वरूप– अंग्रेज़ी और अन्य भारतीय भाषाओं में अनुवाद होने से भारतीय ग्रामीण जीवन, सामाजिक विषमताओं और मानवीय संवेदनाओं से विश्व के पाठक परिचित हो सके।

iiसाहित्य का विस्तार और प्रसार (-

किसी भी साहित्य की पहुँच उसकी भाषा तक सीमित रहती है। साहित्यिक अनुवाद उस सीमा को तोड़ता है और साहित्य को व्यापक पाठकवर्ग तक पहुँचाता है। इससे साहित्य का क्षेत्रीय या भाषायी दायरा बढ़कर राष्ट्रीय और - रवींद्रनाथ टैगोर की काव् -अंतरराष्ट्रीय स्तर तक फैल जाता है।उदाहरणस्वरूपयकृति गीतांजलि का अंग्रेज़ी अनुवाद होने - स्तरीय पहचान मिली और नोबेल पुरस्कार प्राप्त हुआ।-के कारण उन्हें विश्व

iii-साहित्यिक परंपराओं का विकास (

अनुवाद के माध्यम से विभिन्न भाषाओं की साहित्यिक शैलियाँ, विधाएँ और प्रयोग एकदूसरे को प्रभावित करते - हैं। इससे नई साहित्यिक प्रवृत्तियों का जन्म होता है और साहित्य की परंपरा समृद्ध होती है। उदाहरण स्वरूपयूरोपीय - शैली में नवीन प्रयोग संभव हुए।-उपन्यासों के हिंदी अनुवाद से हिंदी में उपन्यास विधा का विकास हुआ और कथा

iv-प्रदान–ज्ञान और विचारों का आदान (

साहित्य केवल मनोरंजन का साधन नहीं हैबल्कि वह विचारों, दर्शन और जीवनदृष्टि को भी अभिव्यक्त करता है। - दूसरे तक पहुँचती हैं। उदाहरण -परंपराएँ एक-साहित्यिक अनुवाद के माध्यम से विभिन्न समाजों के विचार और चिंतन रूसी लेखक टॉलस्टॉय और दोस्तोएव्स्की के उपन्यासों के हिंदी -स्वरूपअनुवाद से भारतीय पाठकों को मानवमनोविज्ञान - और सामाजिक संघर्षों की नई दृष्टि प्राप्त हुई।

vराष्ट्रीय और अ (ंतरराष्ट्रीय एकता की भावना-

साहित्यिक अनुवाद विभिन्न देशों और समाजों के बीच आपसी समझ और सहानुभूति को बढ़ाता है। यह मानवता की साझा संवेदनाओं को उजागर करता है और वैश्विक एकता की भावना को मजबूत करता है। उदाहरण स्वरूपविभिन्न - मानवता में शांति और मानवीय मूल्यों के प्रति जागरूकता उत्पन्न की।-विरोधी साहित्य ने विश्व-भाषाओं में अनूदित युद्ध

vi-भाषाओं का संवर्धन और समृद्धि (

अनुवाद के माध्यम से नई शब्दावली, अभिव्यक्तियाँ और शैलीगत प्रयोग भाषा में प्रवेश करते हैं। इससे भाषा का विकास और आधुनिकीकरण होता है। उदाहरण स्वरूपअंग्रेज़ी साहित्य के हिंदी अनुवाद से हिंदी में कई नए शब्द -, विचार और अभिव्यक्तिरूप विकसित हुए-, जिससे आधुनिक हिंदी गद्य अधिक समृद्ध हुआ।

vii-साहित्यकारों और पाठकों का विस्तार (

साहित्यिक अनुवाद लेखक को नए पाठक प्रदान करता है और पाठकों को नए लेखकों से परिचित कराता है। इससे साहित्यिक संवाद का दायरा बढ़ता है। उदाहरण स्वरूपहिंदी पाठकों के लिए गाब्रिएल गार्सिया मार्केस या हारुकी - मुराकामी जैसे लेखकों की रचनाएँ अनुवाद के कारण ही सुलभ हो सकीं।

viii-साहित्यिक सौंदर्य और रस का सार्वभौमिक विस्तार (

साहित्यिक अनुवाद के माध्यम से किसी एक भाषा का सौंदर्य, रस और संवेदना दूसरी भाषा में भी अनुभव की जा सकती है। यद्यपि पूर्ण समरूपता संभव नहीं होतीफिर भी भाव और रस का संप्रेषण अनुवाद का महत्वपूर्ण उद्देश्य होता है। उदाहरण स्वरूपसंस्कृत नाटकों के विभिन्न भाषाओं में अनुवाद से श्रृंगार -, करुण और वीर रस की अनुभूति व्यापक स्तर पर संभव हुई।

इस प्रकार साहित्यिक अनुवाद का महत्त्व बहुआयामी है। यह न केवल साहित्य के विस्तार और विकास में सहायक हैबल्कि सांस्कृतिक संवाद, मानवीय एकता और बौद्धिक समृद्धि का भी सशक्त माध्यम है। साहित्यिक अनुवाद के बिना विश्वसाहित्य की कल्पना अधूरी प्रतीत होती है।-

1.9 सारांश

इस इकाई के अंतर्गत साहित्य और साहित्यानुवाद मानव की सर्जनात्मक चेतना, भाषिक अभिव्यक्ति और सांस्कृतिक संवाद को अभिव्यक्त किया गया है । शब्द और अर्थ के अविभाज्य सहभाव को व्यक्त करता है। यह 'साहित्य' केवल मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि जीवनानुभव, संवेदना, सौंदर्यबोध और मानवहित की कलात्मक अभिव्यक्ति है। - भारतीय और पाश्चात्य विद्वानों कीपरिभाषाओं से यह सिद्ध होता है कि साहित्य जीवन की व्याख्या, मूल्यांकन और मानवीय चेतना के परिष्कार का माध्यम है। वाङ्मय की अवधारणा साहित्य से भी व्यापक हैजिसमें मानव वाणी की समस्त लिखित और मौखिक अभिव्यक्तियाँ सम्मिलित हैं।

साहित्यानुवाद साहित्य और अनुवाद के संयोग से निर्मित एक जटिल तथा सर्जनात्मक प्रक्रिया है। यह केवल शब्दों का एक भाषा से दूसरी भाषा में रूपांतरण नहीं, बल्कि मूल कृति के भाव, विचार, संवेदना, शैली और सौंदर्यबोध को लक्ष्य भाषा में पुनः सृजित करने का कार्य है। साहित्य विभिन्न विधाओंकहानी -, उपन्यास, कविता, नाटक, निबंध इत्यादि में रचा जाता है और इन्हीं विधाओं के आधार पर साहित्यानुवाद भी गद्यानुवाद, पद्यानुवाद, नाट्यानुवाद इत्यादि रूपों में विभाजित होता है। प्रत्येक विधा का अपना विशिष्ट स्वरूप और मांग होती हैइसलिए अनुवादक को विधा विशेष का गहन ज्ञान-होना अनिवार्य है।

साहित्यिक अनुवाद की प्रक्रिया बहुस्तरीय है। इसका प्रथम चरण मूल पाठ का गहन और मनोयोगपूर्ण पठन हैजिसमें अनुवादक केवल भाषिक अर्थ ही नहींबल्कि भाव, विचार, सामाजिकसांस्कृतिक संदर्भ और लेखक की दृष्टि को - विश्लेषण क-आत्मसात करता है। इसके बाद पाठ ा चरण आता है, जहाँ शब्दचयन-, वाक्यविन्यास-, बिंब, प्रतीक, अलंकार, लय और शैली का सूक्ष्म अध्ययन किया जाता है। भाषान्तरण के चरण में अनुवादक मूल कृति की आत्मा को सुरक्षित रखते हुए उसे लक्ष्य भाषा में प्रस्तुत करता है। इस प्रक्रिया में प्रतिस्थापन का विशेष महत्व है, जिसके माध्यम से स्रोत भाषा की संरचनाओं और मुहावरों को लक्ष्य भाषा की प्रकृति के अनुरूप ढाला जाता है।

भाषा और शैली साहित्यिक अनुवाद के मूल आधार हैं। शैली लेखक के व्यक्तित्व और सर्जनात्मक चेतना की पहचान होती है। केवल अर्थ का अनुवाद पर्याप्त नहीं होता; मूल शैली को यथासंभव सुरक्षित रखना भी आवश्यक है। इसी संदर्भ में यूजीन एकी अवधारणा महत्वपूर्ण हैजिसके अनुसार अनुवाद को अर्थ 'निकटतम सहज समतुल्य' नाइडा की . दोनों स्तरों पर मूल के अत्यंत निकट और स्वाभाविक होना चाहिए। यद्यपि पूर्ण समानता संभव नहीं—और शैली, फिर भी श्रेष्ठ अनुवाद वही है जिसमें मूल रचना का प्रभाव और रस सुरक्षित रह सके।

साहित्यानुवाद के लिए अनुवादक को करना पड़ता हैअर्थात् रचनाकार की मनोभूमि में प्रवेश कर 'प्रवेश-परमानस' उसकी सर्जनात्मक अनुभूति को लक्ष्य भाषा में पुनः जाग्रत करना होता है। साहित्यानुवाद का महत्त्व अत्यंत व्यापक है --यह भाषाओं और संस्कृतियों के बीच सेतु बनाता हैसाहित्य के प्रसार और विकास में सहायक होता हैविचारों के आदान साहित्य की -प्रदान को संभव करता है और मानवीय एकता की भावना को सुदृढ़ करता है। साहित्यिक अनुवाद विश्व आधारशिला है और इसके बिना साहित्य की सार्वभौमिकता की कल्पना अधूरी प्रतीत होती है।

✓ 1.10 प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा)

प्रश्न का उत्तर 1 :' साहित्यधातु से मानी जाती है 'धा' शब्द की व्युत्पत्ति ', जिसमें प्रत्यय का 'यत्' उपसर्ग और 'सम्' शब्द और अर्थ का अ—योग है। इसका मूल अर्थ हैविभाज्य सहभाव अथवा साथ' रखना।'

प्रश्न 2 का उत्तर : जब किसी एक भाषा में रचित सर्जनात्मक साहित्य को उसकी भावात्मकता, कलात्मकता और शैलीगत विशेषताओं के साथ किसी दूसरी भाषा में रूपांतरित किया जाता है, तो उसे साहित्यानुवाद कहते हैं। इसमें केवल शब्दों का अनुवाद नहीं होता, बल्कि मूल रचना की अनुभूति और सौंदर्य का पुनःसृजन किया जाता है।

प्रश्न 3 का उत्तर : साहित्य की विधाओं के आधार पर साहित्यानुवाद के प्रमुख प्रकार निम्नलिखित हैं -i – गद्यानुवाद. कहानी, उपन्यास, निबंध आदि गद्य विधाओं का अनुवाद।

ii – (काव्यानुवाद) पद्यानुवाद .कविता और गीत आदि पद्य विधाओं का अनुवाद।

प्रश्न 4 का उत्तर : प्रतिस्थापन के माध्यम से स्रोत भाषा के शब्दों, वाक्यसंरचनाओं और मुहावरों को लक्ष्य भाषा की -प्रकृति के अनुरूप ढालकर अनुवाद को सहज, स्वाभाविक और प्रभावी बनाया जाता है।

प्रश्न 5 का उत्तर : साहित्यानुवाद में शैली का महत्व इसलिए है क्योंकि शैली रचना के भाव, प्रभाव और लेखक के व्यक्तित्व को प्रकट करती है। केवल अर्थ का अनुवाद करने से मूल रचना का सौंदर्य और प्रभाव पूर्ण रूप से व्यक्त नहीं हो पाता।

🔍 1.11 अधिक जानने के लिए पढ़ें

- तिवारी, भोलानाथलोकभारती प्रकाशन। :इलाहाबाद ,अनुवाद विज्ञान (2011) .
- नगेंद्र ,(2010)साहित्य का विवेचननेशनल पब्लिशिंग हाउस। :नई दिल्ली ,
- मिश्र, विश्वनाथ प्रसाद ज्ञानमंडल प्रकाशन। :वाराणसी ,साहित्य सिद्धांत .(2008)
- वर्मा, रामकुमार ,(2012)साहित्य और समाजराजकमल प :नई दिल्ली ,ाकाशन।
- शुक्ल, रामचंद्र ,(2015)हिंदी साहित्य का इतिहासनागरी प्रचारिणी सभा। :नई दिल्ली ,
- सिंह, नामवर राजकमल प्रकाशन। :नई दिल्ली ,साहित्य की पहचान (2009)
- Bassnett, S. (.(2014Translation studies (4th ed.). London, UK: Routledge.
- Leavis, F. R. (.(1962The great tradition. London, UK: Chatto & Windus.
- Nida, E. A. (.(1964Toward a science of translating. Leiden, Netherlands: E. J. Brill.
- Newmark, P. (.(1988A textbook of translation. New York, NY: Prentice Hall.
- Richards, I. A. (.(1929Practical criticism. London, UK: Routledge.

- Steiner, G. (.(1998After Babel: Aspects of language and translation (3rd ed.). Oxford, UK: Oxford University Press.

⑦ 1.12 अभ्यास प्रश्न

-संक्षिप्त प्रश्नों के उत्तर लिखिए (क)

1. साहित्य और वाङ्मय में अंतर स्पष्ट कीजिए।
2. साहित्यिक अनुवाद को सर्जनात्मक कर्म क्यों माना जाता है?
3. साहित्यिक अनुवाद की प्रक्रिया के प्रमुख चरणों का संक्षिप्त वर्णन कीजिए।
4. भाषा और शैली का साहित्यिक अनुवाद में क्या महत्व है?
5. गद्यानुवाद और पद्यानुवाद में अंतर उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।
6. यूजीन एकी अवधारणा स्पष्ट कीजिए। 'निकटतम सहज समतुल्य' नाइडा की .
7. साहित्यिक अनुवाद में मूल पाठ के गहन पठन की आवश्यकता पर प्रकाश डालिए।

-निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए (ख)

1. साहित्यिक अनुवाद का स्वरूप स्पष्ट करते हुए उसकी सर्जनात्मक विशेषताओं पर चर्चा कीजिए।
2. विभिन्न साहित्यिक विधाओं के संदर्भ में साहित्यानुवाद की चुनौतियों का विवेचन कीजिए।
3. साहित्यिक अनुवाद में शैलीसंरक्षण की समस्या पर विस्तार से चर्चा कीजिए।-
4. साहित्यिक अनुवाद के महत्त्व को उदाहरणों सहित स्पष्ट कीजिए।
5. भाषा, शैली और संस्कृति के संबंध को साहित्यिक अनुवाद के संदर्भ में स्पष्ट कीजिए।
6. प्रतिस्थापन की प्रक्रिया को उदाहरण सहित समझाइए ।
7. इस कथन की विवेचना कीजिए।—'श्रेष्ठ साहित्यिक अनुवाद वही है जिसमें मूल रचना का सा आस्वाद मिले'

शब्दकोश-

1. सर्जनात्मकरचनात्मक :, सृजनशील, कल्पनाशील, नवोन्मेषी।
2. संवेदनाअनुभूति :, भावना, संवेदनशीलता, भावबोध।
3. सौंदर्यबोधरसबोध :, सौंदर्यचेतना-, कलाबोध, सौंदर्यानुभूति।
4. परमानसप्रवेश-मनोभूमि :प्रवेश-, चेतनासमावेश-, मानसिक तादात्म्य, भावात्मक एकात्मता।
5. प्रतिस्थापनस्थानापन्न :, प्रतिस्थिति, परिवर्तन, रूपांतरण।
6. समांतरसमानांतर :, तुलनीय, समकक्ष, अनुरूप।
7. संरचनाढाँचा :, बनावट, संगठन, विन्यास।
8. लयताल :, गति, प्रवाह, छंदात्मकता।
9. प्रभावोत्पादकअसरदार :, प्रभावशाली, मार्मिक, प्रेरक।
10. विजातीयअसंगत :, पराया, भिन्न, अप्राकृतिक।

*** ***** ***

ईकाई 2 - साहित्यानुवाद की प्रक्रिया, प्रकार और चुनौतियाँ

इकाई की रुपरेखा

2.1 उद्देश्य
2.2 प्रस्तावना
2.3 अनुवाद प्रक्रिया के प्रमुख चरण
2.4 साहित्यानुवाद की प्रक्रिया
  2.4.1 पाठ-अध्ययन
  2.4.2 पाठ-विश्लेषण
  2.4.3 भाषांतरण
  2.4.4 प्रतिस्थापन
  2.4.5 तुलनात्मक विश्लेषण
2.5 साहित्यानुवाद के प्रकार
  2.5.1 काव्यानुवाद
  2.5.2 कथा साहित्य का अनुवाद
  2.5.3 नाट्यानुवाद
  2.5.4 कथेतर साहित्य का अनुवाद
2.6 अनुवाद की चुनौतियाँ
2.7 साहित्यानुवाद की चुनौतियाँ
  2.7.1 गद्य साहित्य के अनुवाद की चुनौतियाँ
  2.7.2 पद्य साहित्य के अनुवाद की चुनौतियाँ
2.8 सारांश
2.9 प्रगति विवरण (केवल रुपरेखा)
2.10 अधिक जानने के लिए पढ़े
2.11 अभ्यास प्रश्न

2.1 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन से आप-

- साहित्यानुवाद की प्रक्रिया को जान पाएंगे।
- साहित्यानुवाद के विभिन्न चरणों को क्रमबद्ध रूप में पहचान सकेंगे तथा उसके स्वरूप को स्पष्ट रूप से समझ पाएंगे।
- साहित्य के अनुवाद के विविध प्रकारों का परिचय प्राप्त कर उनके बीच अंतर को समझ सकेंगे तथा उपयुक्त उदाहरणों के माध्यम से उनका विवेचन कर सकेंगे।
- साहित्यानुवाद की चुनौतियों से परिचित होंगे।

2.2 प्रस्तावाना

प्रस्तुत इकाई में हम साहित्यानुवाद के महत्व,उसकी जटिल एवं बहुस्तरीय प्रक्रिया,उसके विभिन्न प्रकारों तथा साहित्यानुवाद में अपनाई जाने वाली रणनीतियों पर विस्तार से विचार करेंगे। साथ ही इस इकाई के माध्यम से अनुवादक की भूमिका, प्रक्रिया, प्रकार और उसकी चुनौतियों को समझने का प्रयास किया जाएगा।यह सर्वविदित है कि साहित्य मानव जीवन का एक अनिवार्य और सशक्त पक्ष है। साहित्य न केवल मनोरंजन का साधन है, बल्कि वह मनुष्य के बौद्धिक, भावनात्मक और नैतिक विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। साहित्य के माध्यम से मनुष्य अपने अनुभवों, संवेदनाओं, संघर्षों और जीवन-दृष्टि को अभिव्यक्त करता है। यही कारण है कि साहित्य मनुष्य को अधिक संवेदनशील, विवेकशील और मानवीय बनाने में सहायक सिद्ध होता है।

हम सभी ने अपने अध्ययन-जीवन में विभिन्न उद्देश्यों से साहित्य का अध्ययन किया है। कभी पाठ्यक्रम के अंतर्गत,कभी रुचि, आनंद या ज्ञानवृद्धि के लिएकिंतु सामान्यतः हम इस तथ्य पर अधिक ध्यान नहीं देते कि जो कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक या निबंध हम पढ़ते हैंवे मूलतः किस भाषा में रचे गए थे । वस्तुतः हम अनजाने ही अनेक भाषाओं के साहित्य से परिचित हो जाते हैं। चाहे वह बांग्ला, गुजराती, उर्दू, कन्नड़, मराठी, तमिल या अन्य भारतीय भाषाओं का साहित्य हो अथवा अंग्रेजी, फ्रेंच, जर्मन, रूसी, जापानी, स्पेनिश जैसी विदेशी भाषाओं की रचनाओं तक हमारी पहुँच अनुवाद के माध्यम से ही संभव हो पाती है।

साहित्यानुवाद ने विभिन्न भाषाओं और संस्कृतियों के बीच सेतु का कार्य किया है। अनुवाद के कारण ही एक भाषा में रचित साहित्य दूसरी भाषा के पाठकों तक पहुँच पाता है और इस प्रकार साहित्यिक, सांस्कृतिक तथा वैचारिक आदान-प्रदान संभव होता है। आज हम विश्व साहित्य की जिन महान कृतियों से परिचित हैंउनमें से अधिकांश को हमने अनुवाद के माध्यम से ही पढ़ा या समझा है।केवल लिखित साहित्य ही नहीं, बल्कि हमारी अनेक फिल्में, नाटक, धारावाहिक और वेब-सीरीज भी विभिन्न भारतीय और विदेशी साहित्यिक कृतियों से प्रेरित या रूपांतरित होती हैं। फिल्मांकन,नाट्य रूपांतरण और पटकथा-लेखन भी अनुवाद की व्यापक प्रक्रिया के अंतर्गत आते हैं,जहाँ मूल रचना को नए माध्यम और नई भाषा में ढालना पड़ता है।

साहित्यानुवाद केवल भाषा-परिवर्तन की प्रक्रिया नहीं हैबल्कि यह एक सृजनात्मक, संवेदनशील और जिम्मेदार कार्य है। प्रस्तुत इकाई में हम साहित्यानुवाद के महत्व को समझने के साथ-साथ उसकी प्रक्रिया में आने वाली कठिनाइयों, विभिन्न प्रकारों, अपनाई जाने वाली रणनीतियों तथा अनुवादक की भूमिका और दायित्वों का सम्यक् अध्ययन करेंगे। इससे पाठक न केवल साहित्यानुवाद की सैद्धांतिक समझ विकसित कर सकेगा बल्कि उसके व्यावहारिक पक्षों से भी परिचित हो पाएगा।

2.3 अनुवाद प्रक्रिया के प्रमुख चरण

यदि अनुवाद की किसी कसौटी की बात की जाएतो सर्जनात्मक साहित्य का अनुवाद निस्संदेह उसकी सबसे बड़ी परीक्षा माना जा सकता है। यह कथन किसी प्रकार की अतिशयोक्ति नहीं है। अनुवाद के विविध रूपों में साहित्यिक अनुवाद न केवल सबसे महत्वपूर्ण है, बल्कि सर्वाधिक जटिल भी है। अनेक विद्वानों का यह मत रहा है कि सर्जनात्मक साहित्य का पूर्णतः सफल अनुवाद संभव नहीं है । किंतु यदि इस धारणा को पूरी तरह स्वीकार कर लिया जाएतो साहित्यानुवाद की समस्त संभावनाएँ और अपेक्षाएँ स्वतः ही समाप्त हो जाती हैं। वास्तव में यह अधिक उपयुक्त होगा कि साहित्यिक अनुवाद को असंभव न मानकर कठिन किंतु साध्य प्रक्रिया के रूप में देखा जाए।

अनुवाद की प्रक्रिया में स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा का सम्यक् ज्ञान अनिवार्य है। एक अच्छे अनुवादक से यह अपेक्षा की जाती है कि वह दोनों भाषाओं की शब्द-संपदा, व्याकरणिक संरचना और भाषिक प्रयोगों से भली-भाँति

परिचित हो। किंतु जैसे ही अनुवादक साहित्यानुवाद के क्षेत्र में प्रवेश करता है, उससे अपेक्षित योग्यताओं का दायरा और भी विस्तृत हो जाता है।

उदाहरणस्वरूप-यदि किसी फ्रेंच उपन्यास का हिंदी में अनुवाद किया जाना हो, तो केवल फ्रेंच और हिंदी भाषा का ज्ञान पर्याप्त नहीं होगा। अनुवादक को फ्रांस की सामाजिक संरचना, जीवन-मूल्यों, प्रतीकों, मुहावरों और सांस्कृतिक संदर्भों की भी समझ होनी चाहिए। यदि यह सांस्कृतिक ज्ञान सतही या अपूर्ण होगातो अनुवाद में अर्थ-विकृति (distortion of meaning) की संभावना बनी रहेगी। इसी कारण कहा जाता है कि साहित्यिक अनुवाद अत्यंत कठिन कार्य है।

साहित्यानुवाद के स्वरूप को समझने के लिए आवश्यक है कि अनुवाद प्रक्रिया को क्रमबद्ध चरणों में देखा जाए। विभिन्न अनुवाद-चिंतकों ने इस प्रक्रिया पर गंभीर विचार करते हुए इसके अलग-अलग प्रारूप प्रस्तुत किए हैं। इनमें युजीननायडा, पीटर न्यूमार्क तथा बाथगेट के विचार विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

युजीननायडा अनुवाद को एक वैज्ञानिक और व्यवस्थित प्रक्रिया मानते हैं। उनके अनुसार अनुवाद तीन प्रमुख चरणों में संपन्न होता है— विश्लेषण (Analysis), अंतरण (Transfer) और पुनर्गठन (Restructuring)। नायडा का मत है कि प्रत्येक भाषा-संरचना के दो स्तर होते हैं- अभ्यंतर संरचना (Deep Structure) और बाह्य संरचना (Surface Structure)। अभ्यंतर संरचना के स्तर पर मूल पाठ का भाव और संदेश सार्वभौमिक होता है, जबकि बाह्य संरचना के स्तर पर अलग-अलग भाषाएँ उसी संदेश को व्यक्त करने के लिए भिन्न-भिन्न भाषिक साधनों का प्रयोग करती हैं। अनुवादक का कार्य इस गहन संरचना को समझकर उसे लक्ष्य भाषा की उपयुक्त बाह्य संरचना में ढालना होता है।

पीटर न्यूमार्क अनुवाद प्रक्रिया को अपेक्षाकृत सरल ढंग से दो मुख्य अवस्थाओं में विभाजित करते हैं। उनके अनुसार अनुवाद में-(क) मूल पाठ और अनूदित पाठ के बीच शब्द-स्तरीय या अंतरक्रमिक संबंधतथा(ख) मूल पाठ के अर्थ को समझकर लक्ष्य भाषा में उसका प्रभावी अभिव्यक्तिकरणये दोनों पहलू अत्यंत महत्वपूर्ण होते हैं। न्यूमार्क का जोर इस बात पर है कि अनुवाद केवल शब्दों का स्थानांतरण नहींबल्कि अर्थ और प्रभाव का पुनर्सृजन है।

वहीं बाथगेट द्वारा प्रस्तुत अनुवाद प्रक्रिया का प्रारूप अधिक व्यापक और व्यावहारिक है। उन्होंने अनुवाद को एक बहुस्तरीय प्रक्रिया मानते हुए इसके सात चरण बताए हैं— समन्वयन, विश्लेषण, बोधन, पारिभाषिक अभिव्यक्तीकरण, पुनर्गठन, पुनरीक्षण और पर्यालोचन। इस दृष्टिकोण में अनुवाद के पश्चात् उसके मूल्यांकन और संशोधन को भी आवश्यक माना गया है, जो साहित्यिक अनुवाद की गुणवत्ता को सुनिश्चित करता है।

2.4 साहित्यानुवाद की प्रक्रिया

अनुवाद के चरणसमन्वयन, विश्लेषण, बोधन, पारिभाषिक अभिव्यक्तीकरण, पुनर्गठन, पुनरीक्षण और पर्यालोचन किसी भी साहित्यिक अनुवाद के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। साहित्यिक अनुवाद करते समय अनुवादक को इन प्रत्येक चरणों पर गहरी संवेदनशीलता, सर्जनात्मकता और विवेक के साथ विचार करना होता है। तभी अनुवाद न केवल भाषिक रूप से शुद्ध होता हैबल्कि मूल कृति की आत्मा को भी सुरक्षित रख पाता है।

इन तीनों अनुवाद-चिंतकों के विचारों को समाहित करते हुए साहित्यानुवाद की प्रक्रिया को पाँच प्रमुख चरणों में समझा जा सकता है-

- पाठ-अध्ययन – मूल साहित्यिक कृति का ध्यानपूर्वक और संवेदनशील अध्ययन
- पाठ-विश्लेषण – भाषा, शैली, भाव, प्रतीक और सांस्कृतिक संदर्भों का विश्लेषण
- भाषांतरण – मूल भावों का लक्ष्य भाषा में रूपांतरण
- प्रतिस्थापन – उपयुक्त शब्दों, मुहावरों और सांस्कृतिक तत्वों का चयन
- तुलनात्मक विश्लेषण – मूल पाठ और अनूदित पाठ की तुलना एवं संशोधन

2.4.1 पाठ-अध्ययन

साहित्यानुवाद की प्रक्रिया का पहला और आधारभूत चरण पाठ-अध्ययन है। इस चरण में अनुवादक मूल पाठ को संपूर्णता मेंबिना किसी पूर्व निष्कर्ष केबार-बार पढ़ता है। इस समग्र अध्ययन के माध्यम से वह रचना की विषय-वस्तु, भाव-भूमि, संरचना, उद्देश्य तथा रचनाकार की दृष्टि को समझने का प्रयास करता है।

यह विशेष रूप से ध्यान रखने योग्य है कि सर्जनात्मक साहित्य की भाषा सामान्य अथवा गैर-सर्जनात्मक भाषा से सर्वथा भिन्न होती है। इसमें केवल विचार नहींबल्कि भाव, संवेदना, प्रतीक और सांस्कृतिक संकेत भी निहित होते हैं। उदाहरणस्वरूप-यदि प्रेमचंद की किसी कहानी का अंग्रेज़ी में अनुवाद किया जा रहा हो, तो केवल कथानक को समझ लेना पर्याप्त नहीं होगाग्रामीण जीवन, सामाजिक विषमता और मानवीय करुणा जैसे तत्वों को भी आत्मसात करना होगा।

यह संभव है कि मूल लेखक ने अर्थ के अनेक स्तर रचना में निहित किए हों और अनुवादक सभी स्तरों तक न पहुँच पाए। किंतु कभी-कभी गहन अध्ययन के परिणामस्वरूप अनुवादक कुछ ऐसी अर्थछायाओं को भी पहचान लेता है-, जो मूल पाठ में अप्रत्यक्ष रूप से विद्यमान होती हैं। ऐसी स्थिति में अनुवाद अधिक प्रभावशाली बन सकता है। फिर भी अनुवादक को यह ध्यान रखना चाहिए कि वह मूल रचना की सीमाओं और आत्मा का अतिक्रमण न करें। पाठ-अध्ययन के उपरांत ही अनुवादक पाठ-विश्लेषण की ओर अग्रसर होता है।

2.4.2 पाठ-विश्लेषण

पाठ-विश्लेषण का चरण अनुवाद प्रक्रिया का वह बिंदु है जहाँ अनुवादक अपनी अनुवाद-रणनीति निर्धारित करता है। यह प्रक्रिया बाह्य से अधिक आंतरिक होती हैजिसमें अनुवादक एक विशेष मानसिक अवस्था तक पहुँचता है। इस चरण में उसे यह स्पष्ट करना होता है कि अनुवाद किस उद्देश्य से किया जा रहा है और लक्षित पाठक वर्ग कौन-सा है।

उदाहरण के लिए-यदि तुलसीदास की रामचरितमानस का अनुवाद आधुनिक हिंदी या किसी विदेशी भाषा में किया जा रहा होतो अनुवादक को यह तय करना होगा कि भाषा शास्त्रीय रखी जाए या समकालीन पाठक के अनुकूल सरल बनाई जाए। इसी प्रकार पाठक की आयु, बौद्धिक स्तर और आवश्यकता भी अनुवाद की भाषा और शैली को प्रभावित करती है।पाठ-विश्लेषण के अंतर्गत यह निर्णय भी लिया जाता है कि अनुवाद का उद्देश्य केवल कथ्य को प्रस्तुत करना है या रचना की शैली, शिल्प और भाषिक सौंदर्य को भी सुरक्षित रखना है। साथ ही अनुवादक को यह भी स्पष्ट करना होता है कि वह संबंधित साहित्यिक विधाजैसे कविता, कहानी या नाटक—के प्रति किस दृष्टिकोण को अपनाएगा। इन्हीं निर्णयों के आधार पर अनुवाद की नीति निर्मित होती है।

समकालीन संदर्भ में भाषा के समरूपीकरण की समस्या ने इस चरण को और जटिल बना दिया है। उदाहरणस्वरूप-यदि किसी आदिवासी कवि की कविता का अनुवाद किया जा रहा होतो यह प्रश्न उठता है कि क्या उसकी विशिष्ट भाषिक संरचना को यथावत रखा जाए या मुख्यधारा की भाषा में ढाल दिया जाए। यह एक ऐसा बिंदु है जहाँ सिद्धांत और व्यवहार के बीच मतभेद स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं।

2.4.3 भाषांतरण

भाषांतरणसाहित्यानुवाद की प्रक्रिया का तीसरा और अत्यंत चुनौतीपूर्ण चरण है। इस चरण में अनुवादक मूल भाषा के कथ्य को अपनी पूर्व निर्धारित रणनीति के अनुसार लक्ष्य भाषा में रूपांतरित करता है। यहाँ केवल शब्दों का अनुवाद नहींबल्कि भाव, संकेत और अर्थछायाओं का भी अंतरण किया जाता है।इस प्रक्रिया में उपयुक्त शब्द--चयन, सार्थक वाक्य-संरचना, लक्ष्य भाषा के मुहावरों का प्रयोग तथा कथ्य के साथ ईमानदारी जैसे तत्वों पर विशेष ध्यान दिया जाता है।

उदाहरण के लिए-यदि किसी उर्दू ग़ज़ल का हिंदी में अनुवाद किया जा रहा हो, तो केवल अर्थ देना पर्याप्त नहीं होगा उसमें निहित लय और भावात्मक गहराई को भी यथासंभव सुरक्षित रखना होगा।

आधुनिक अनुवाद-चिंतन में अनुवादक की भूमिका को लेकर व्यापक बहस हुई है। उत्तर-आधुनिक विचारकों के अनुसार अनुवादक की दृश्यता को नकारा नहीं जा सकता। साथ ही मूल लेखक की मौलिकता को बनाए रखना भी अनिवार्य है। इस स्थिति में अनुवादक को संतुलन का मार्ग अपनाना पड़ता हैताकि पाठक को सहज और प्रामाणिक अनुवाद प्राप्त हो सके।

2.4.4 प्रतिस्थापन

भाषांतरण के पश्चात् प्रतिस्थापन का चरण आता हैजो प्रायः उसी के साथ समानांतर रूप से चलता है। इस चरण में अनुवादक यह जाँचता है कि स्रोत भाषा की वाक्य-रचना, पदबंध, अर्थछाया और प्रवाह को लक्ष्य भाषा में कितनी सफलता से प्रतिस्थापित किया गया है।साथ ही यह भी देखा जाता है कि अनुवाद में दोनों भाषाओं और संस्कृतियों के साथ न्याय हुआ है या नहीं। यहीं सर्जनात्मक और गैर-सर्जनात्मक साहित्य के अनुवाद के बीच मूल अंतर स्पष्ट होता है। गैर-सर्जनात्मक साहित्य में विचार-संप्रेषण पर्याप्त हो सकता है, किंतु सर्जनात्मक साहित्य में भाव, लय और सौंदर्य की निरंतरता भी आवश्यक होती है।

उदाहरण के लिए-यदि किसी लोककथा का अनुवाद किया जा रहा हो, तो उसमें निहित लोक-जीवन की सहजता और कथन-शैली को बनाए रखना अनिवार्य है। प्रतिस्थापन का उद्देश्य यही होता है कि अनुवाद लक्ष्य भाषा में स्वाभाविक प्रतीत हो और पाठक को मूल रचना जैसा ही अनुभव प्रदान कर सके।

2.4.5 तुलनात्मक विश्लेषण

तुलनात्मक विश्लेषण अथवा मूल्यांकन साहित्यानुवाद की अंतिम और सबसे कठिन अवस्था मानी जाती है। इस चरण में अनुवादक मूल पाठ और अनूदित पाठ को आमने-सामने रखकर उनकी तुलना करता है। यह तुलना केवल भाषिक या संरचनात्मक स्तर पर ही नहीं होती, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भों के आधार पर भी की जाती है।आधुनिक अनुवाद-चिंतक लॉरेंस वेनुटी अनुवादक की दृश्यता पर बल देते हैं, जबकि गायत्री चक्रवर्ती स्पीवाक मूल पाठ की सांस्कृतिक विशिष्टताओं को संरक्षित रखने की पक्षधर हैं। इन विचारों के आलोक में अनुवादक को किसी एक पाठ के प्रति नहीं, बल्कि स्वयं पाठ और उसके उद्देश्य के प्रति ईमानदार होना चाहिए।

उदाहरणस्वरूप-यदि दलित साहित्य या स्त्री आत्मकथाओं का अनुवाद किया जा रहा हो, तो केवल घटनाओं का वर्णन पर्याप्त नहीं होगा ; उस समुदाय की अनुभूति, संघर्ष और अभिव्यक्ति की शैली भी अनुवाद में स्पष्ट रूप से उभरनी चाहिए। वर्तमान वैश्विक परिप्रेक्ष्य में, जब विभिन्न संस्कृतियाँ एक-दूसरे के संपर्क में आ रही हैं, अनुवाद एक सशक्त सर्जनात्मक माध्यम के रूप में उभरकर सामने आता है।

2.5 साहित्यानुवाद के प्रकार

सृजनात्मक साहित्य का क्षेत्र अत्यंत व्यापक है। इसके अंतर्गत गद्य और पद्य—दोनों प्रकार का साहित्य सम्मिलित होता है। कहानी, उपन्यास, कविता, नाटक, निबंध, आत्मकथा, जीवनी इत्यादि सभी विधाएँ सृजनात्मक साहित्य की परिधि में आती हैं। सृजनात्मक साहित्य के अनुवाद के लिए अनुवादक से कुछ विशिष्ट योग्यताओं की अपेक्षा की जाती हैक्योंकि प्रत्येक विधा की अपनी संरचना, भाषा और सौंदर्यशास्त्र होता है। इस खंड में सभी विधाओं की चर्चा न करते हुए

मुख्यतः काव्यानुवाद, कथानुवाद, नाट्यानुवाद तथा कथेतर साहित्य के अनुवाद पर विचार किया जाएगा। साथ ही सृजनात्मक साहित्य के अभिन्न अंग मुहावरे और लोकोक्तियों के अनुवाद से जुड़ी समस्याओं पर भी चर्चा की जाएगी।

2.5.1 काव्यानुवाद

कविता का अनुवाद साहित्यानुवाद का सबसे कठिन और चुनौतीपूर्ण रूप माना जाता है । अन्य साहित्यिक विधाओं की तुलना में कविता का अनुवाद अधिक जटिल इसलिए है क्योंकि इसमें केवल अर्थ का ही नहीं, बल्कि भाव, संकेत, बिंब, प्रतीक, छंद, लय, सांस्कृतिक संदर्भ और काव्य-सौंदर्य का भी अनुवाद करना होता है। इस कारण कई विद्वान कविता के अनुवाद को लगभग असंभव मानते हैं।वास्तव में कविता का अनुवाद लक्ष्य भाषा में उसकी पुनर्रचना जैसा होता है। अनुवादक को मूल कविता के भाव-जगत में प्रवेश कर उसे नई भाषा में पुनर्जीवित करना पड़ता है । इसलिए यह माना जाता है कि यदि कविता का अनुवाद कोई कवि करे तो वह अधिक प्रभावी हो सकता हैक्योंकि कवि कविता की संवेदना और रचनात्मकता को अधिक गहराई से समझ सकता है। यद्यपि यह अनिवार्य नियम नहीं है और कई गैर-कवि अनुवादकों ने भी उत्कृष्ट काव्यानुवाद किए हैं।

कविता के अनुवादक का सहृदय होना अत्यंत आवश्यक है, क्योंकि यहाँ अनुवाद केवल शब्दों या वाक्यों का नहीं होता, बल्कि पंक्तियों के बीच की चुप्पी, मौन और संकेतों का भी होता है । उदाहरणस्वरूप-यदि रवींद्रनाथ ठाकुर या महादेवी वर्मा की कविता का अनुवाद किया जाए, तो उसमें निहित भावुकता और सूक्ष्म संवेदनाओं को सुरक्षित रखना अनुवादक के लिए सबसे बड़ी चुनौती होती है।

2.5.2 कथा साहित्य का अनुवाद

कथा साहित्य का अनुवाद भी सर्जनात्मक साहित्य के अंतर्गत एक अत्यंत जटिल कार्य है। कहानी और उपन्यास—दोनों ही कथा साहित्य की प्रमुख विधाएँ हैं। इनकी भाषा अत्यंत लक्षणात्मक और सांस्कृतिक रूप से समृद्ध होती है। कथा साहित्य की भाषा अपने समाज और परिवेश से गहराई से जुड़ी होती है, जिसके कारण इसमें मुहावरे, लोकोक्तियाँ, क्षेत्रीय शब्दावली और स्थानीय बोलियाँ प्रचुर मात्रा में मिलती हैं।

उदाहरण के लिए-फणीश्वरनाथ रेणु का मैला आँचल, श्रीलाल शुक्ल का राग दरबारी, राही मासूम रज़ा का आधा गाँव, भीष्म साहनी का तमस, कृष्णा सोबती का मित्रोमरजानी या मैत्रेयी पुष्पा का चाक-- ये सभी रचनाएँ अपने-अपने सामाजिक और सांस्कृतिक परिवेश की जीवंत प्रस्तुति हैं। इन कृतियों का अनुवाद करते समय अनुवादक के सामने केवल भाषा की ही नहीं, बल्कि उस परिवेश और संस्कृति को लक्ष्य भाषा में संप्रेषित करने की भी चुनौती होती है।अतः कथा साहित्य के अनुवाद के लिए अनुवादक को न केवल भाषिक दक्षता, बल्कि सामाजिक-सांस्कृतिक समझ भी अनिवार्य रूप से होनी चाहिए।

2.5.3 नाट्यानुवाद

नाटक साहित्य की अन्य विधाओं से भिन्न एक दृश्य काव्य है। इसकी विशेषता केवल पाठ में नहींबल्कि मंचीय प्रस्तुति और संवादों में निहित होती है। यही कारण है कि नाट्यानुवाद करते समय अनुवादक को विशेष सावधानी बरतनी पड़ती है।नाट्यानुवादक के लिए दोनों भाषाओं का ज्ञान पर्याप्त नहीं होता। उसे स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषादोनों की नाट्य परंपराओं, रंगमंचीय तकनीकों और संवाद शैली की समझ भी होनी चाहिए। उदाहरणस्वरूप-यदि शेक्सपीयर के नाटकों या

कालिदास के अभिज्ञानशाकुंतलम् का अनुवाद किया जाएतो केवल भाषा का रूपांतरण पर्याप्त नहीं होगामंचीय प्रभाव और संवादों की सजीवता को भी बनाए रखना होगा।

नाटक का मंचन एक सतत प्रक्रिया होती है, जिसे बीच में रोका नहीं जा सकता। इसलिए अनुवादक को यह ध्यान रखना पड़ता है कि अनुवादित संवाद सहज, प्रभावी और मंच पर बोले जाने योग्य होंताकि दर्शक अंत तक नाटक से जुड़े रहें।

2.5.4 कथेतर साहित्य का अनुवाद

कथेतर साहित्य में निबंध, आलोचना, समीक्षा, आत्मकथा, जीवनी, संस्मरण, यात्रा-वृत्तांत, रेखाचित्र और रिपोर्ताज जैसी विधाएँ सम्मिलित होती हैं। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने निबंध को गद्य की कसौटी माना है। स्पष्ट है कि निबंध लेखन जितना बौद्धिक कार्य है, उसका अनुवाद भी उतना ही बौद्धिक और चुनौतीपूर्ण होता है।आलोचना और समीक्षा में अनुवादक को आलोचक की तरह गहन अध्ययन और विश्लेषण करना पड़ता है। वहीं आत्मकथा और जीवनी में लेखक के व्यक्तित्व, जीवन-संघर्ष और मानसिक अवस्था को लक्ष्य भाषा में उसी प्रामाणिकता के साथ प्रस्तुत करना आवश्यक होता है।

कथेतर साहित्य के अनुवाद में भी मुहावरे और लोकोक्तियाँ विशेष समस्या उत्पन्न करती हैं। ये लोकजीवन के अनुभवों से उपजी होती हैं, इसलिए इनका सांस्कृतिक संदर्भ अत्यंत व्यापक होता है। उदाहरणस्वरूप-हाथ पर हाथ धरे बैठना– To sit idle

नौ दो ग्यारह होना– To run away quickly

घर का भेदी लंका ढाए– An insider causes the greatest damage

दाल में कुछ काला है– Something is fishy

इन उदाहरणों में अनुवादक ने लक्ष्य भाषा से निकटतम समतुल्य खोजने का प्रयास किया है। किंतु कई बार ऐसा समतुल्य उपलब्ध नहीं होता। ऐसी स्थिति में भावानुवाद के माध्यम से मूल अर्थ को पाठक तक पहुँचाना ही उपयुक्त होता है।

अपनी प्रगति जांचें

प्रश्न 1.साहित्यानुवाद को सबसे जटिल अनुवाद क्यों माना जाता है?

प्रश्न 2.. काव्यानुवाद को सबसे कठिन साहित्यानुवाद क्यों माना जाता है ?

प्रश्न 3. साहित्यानुवाद में पाठ-अध्ययन क्यों आवश्यक है?

प्रश्न 4. कथा साहित्य के अनुवाद में अनुवादक के सामने प्रमुख चुनौती क्या होती है?

प्रश्न 5. मैथ्यू ऑर्नल्ड के अनुसार कविता के अनुवाद की प्रमुख शर्त क्या है?

2.6 अनुवाद की चुनौतियाँ

अनुवाद केवल दो भाषाओं के बीच शब्दों का रूपांतरण नहीं हैबल्कि यह दो भिन्न संस्कृतियों, जीवन-दृष्टियों और सामाजिक संदर्भों के बीच संवाद स्थापित करने की एक सशक्त प्रक्रिया है। यह संवाद जितना आवश्यक और उपयोगी हैउतना ही जटिल और चुनौतीपूर्ण भी है। इसी कारण अनुवाद के संदर्भ में प्रायः यह कहा जाता है कि 'अनुवाद एक कठिन, लगभग असंभव कार्य है।' विशेष रूप से सर्जनात्मक साहित्यऔर उसमें भी कविता के अनुवाद के

संदर्भ में यह कथन अधिक सटीक प्रतीत होता है, क्योंकि कविता में भाव, लय, प्रतीक, बिंब और सांस्कृतिक संकेत गहराई से जुड़े होते हैं।

फिर भीअनुवादक अपनी भाषिक दक्षता, संवेदनशीलता, रचनात्मक प्रतिभा और पाठ के प्रति निष्ठा के बल पर इस 'लगभग असंभव' कार्य को संभव बनाता है। किसी भी पाठ का सफल अनुवाद तभी हो सकता है जब अनुवादक पाठ की प्रकृति, भाषा, संस्कृति, विषयवस्तु और शैली- इन सभी तत्वों के प्रति सजग और संवेदनशील हो। अनुवाद करते समय अनुवादक के सामने अनेक प्रकार की चुनौतियाँ उपस्थित होती हैंजिनका सामना करते हुए उसे मूल भाषा और लक्ष्य भाषादोनों के साथ न्याय करना होता है तथा रचना की मूल आत्मा को सुरक्षित रखना होता है। अनुवाद कार्य के दौरान सामने आने वाली प्रमुख चुनौतियाँ इस प्रकार हैं—

- सबसे पहली और बुनियादी चुनौती यह है कि अनुवादक को केवल दो भाषाओं का ज्ञान ही नहींबल्कि दोनों भाषाओं से जुड़ी संस्कृतियों की भी गहरी समझ होनी चाहिए। उदाहरण के लिएयदि किसी अंग्रेज़ी कहानी में 'थैंक्सगिविंग डिनर' का उल्लेख है, तो उसका अनुवाद केवल शब्दों में करना पर्याप्त नहीं होगाबल्कि उसके सांस्कृतिक संदर्भ को भी लक्ष्य भाषा के पाठक के लिए स्पष्ट करना होगा।

- अनुवाद की भाषा में सहजता, स्पष्टता और प्रवाह बनाए रखना भी एक बड़ी चुनौती है। यदि अनुवाद बोझिल,कृत्रिम या अत्यधिक शब्दशः हो जाएतो पाठक का रस भंग हो जाता है। जैसे किसी उर्दू ग़ज़ल का हिंदी अनुवाद करते समय यदि भाषा स्वाभाविक न हो, तो मूल रचना का सौंदर्य नष्ट हो सकता है।दो भाषाओं का ज्ञान होने के साथ-साथ उनकी प्रकृति को समझना भी आवश्यक है। प्रत्येक भाषा की अपनी संरचना, अभिव्यक्ति-शैली और व्याकरणिक विशेषताएँ होती हैं। उदाहरण के लिए-अंग्रेज़ी में संक्षिप्त वाक्य अधिक प्रभावी होते हैं, जबकि हिंदी में अपेक्षाकृत विस्तार स्वीकार्य होता है । इस अंतर को समझे बिना किया गया अनुवाद प्रभावहीन हो सकता है।

- भाषा और व्यवहार की सूक्ष्म बारीकियों की समझ अनुवाद के लिए अत्यंत आवश्यक है। नाते-रिश्तों के शब्द, संबोधन, मुहावरे, लोकोक्तियाँ और सांस्कृतिक संकेत भाषा को जीवंत बनाते हैं। जैसे- हिंदी का मुहावरा 'दाँत खट्टे करना' का शाब्दिक अनुवाद अंग्रेज़ी में अर्थहीन हो जाएगा। ऐसे में अनुवादक के लिए उपयुक्त समतुल्य अभिव्यक्ति खोजना एक बड़ी चुनौती होती है।

- प्रत्येक पाठ किसी न किसी विशेष कालखंड में रचा जाता है। यह आवश्यक नहीं कि उसका अनुवाद उसी समय में किया जाए। अनुवादक के सामने यह प्रश्न उपस्थित होता है कि वह भाषा और शैली को किस काल-संदर्भ में रखकर अनुवाद करे। उदाहरणस्वरूप-किसी मध्यकालीन हिंदी काव्य का आधुनिक हिंदी में अनुवाद करते समय भाषा को समकालीन बनाना या मूल काल की छाया बनाए रखना—यह एक कठिन निर्णय होता है।

- पाठ की शैली भी अनुवाद की एक महत्वपूर्ण चुनौती है । चाहे वह कथा-साहित्य होकविता हो या नाटक—हर रचना की अपनी विशिष्ट शैली होती है । अनुवादक को मूल पाठ की शैली और प्रभाव को यथासंभव बनाए रखना होता है । उदाहरण के लिए-यदि मूल पाठ में व्यंग्यात्मक शैली हैतो अनुवाद में भी व्यंग्य का प्रभाव बना रहना चाहिए ।

- अनुवादक के लिए यह अत्यंत आवश्यक है कि वह अपनी क्षमता और सीमाओं को पहचाने। केवल आर्थिक लाभ या शीघ्रता में किसी भी विषय या विधा का अनुवाद कर लेना न केवल अनुवाद की गुणवत्ता को प्रभावित करता हैबल्कि पाठक के साथ भी अन्याय करता है ।

- विषय-विशेष से संबंधित अनुवाद करते समय अनुवादक को उस विषय में उपलब्ध नवीनतम ज्ञान से परिचित रहना चाहिए। जैसे- विज्ञान, तकनीक या विधि से जुड़े पाठों के अनुवाद में अद्यतन पारिभाषिक शब्दावली का ज्ञान अनिवार्य है।
- इसके साथअनुवादक को यह भी ज्ञात होना चाहिए कि विषय-विशेष से संबंधित सहायक साधनजैसे- शब्दकोश, पारिभाषिक शब्दावलियाँ, संदर्भ ग्रंथ इत्यादिकहाँ और कैसे उपलब्ध हैं। इन संसाधनों का उचित उपयोग अनुवाद की गुणवत्ता को बेहतर बनाता है।

अतः स्पष्ट है कि अनुवाद कार्य एक अत्यंत जटिल और श्रमसाध्य प्रक्रिया है। अनुवादक को अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, किंतु धैर्य, संयम और निरंतर अभ्यास के माध्यम से वह एक प्रभावी और सार्थक अनूदित पाठ का निर्माण कर सकता है।

महत्वपूर्ण बिंदु

साहित्यानुवाद केवल एक भाषा के शब्दों को दूसरी भाषा में रूपांतरित करने की प्रक्रिया नहीं हैबल्कि यह दो भाषाओं, संस्कृतियों और संवेदनात्मक संसारों के बीच संवाद स्थापित करने का सृजनात्मक कार्य है। इसकी प्रक्रिया में पाठ-अध्ययन, पाठ-विश्लेषण, भाषांतरण, प्रतिस्थापन और तुलनात्मक मूल्यांकन जैसे चरण आते हैंजिनमें अनुवादक की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण होती है। काव्य, कथा, नाटक और कथेतर साहित्यप्रत्येक विधा का अनुवाद अपनी विशिष्ट चुनौतियाँ प्रस्तुत करता है। पद्य साहित्य में लय, छंद, रस और प्रतीकों को सुरक्षित रखना कठिन होता हैजबकि गद्य साहित्य में सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ, शैली और भाषा-प्रवाह का संतुलन आवश्यक होता है। मुहावरों और लोकोक्तियों का अनुवाद विशेष सांस्कृतिक समझ की माँग करता है। अतःसाहित्यानुवाद एक संवेदनशील, बौद्धिक और रचनात्मक कर्म हैजिसमें निष्ठा का अर्थ मूल रचना की आत्मा के प्रति ईमानदारी है।

2.7 साहित्यानुवाद की चुनौतियाँ

साहित्यानुवाद सदैव से एक अत्यधिक चुनौतीपूर्ण कार्य रहा है। इसलिए साहित्यानुवाद करने से पूर्व अनुवादक को अपनी पात्रता की निष्पक्ष जाँच कर लेनी चाहिए। साहित्य के अनुवाद के लिए केवल भाषिक ज्ञान पर्याप्त नहीं है, बल्कि अनुवादक का सहृदय होना भी आवश्यक है, ताकि वह रचनाकार की मनःस्थिति, संवेदना और भावलोक तक पहुँच - सके।अनुवाद करते समय पाठ का गहन अध्ययन करना और उसकीविविध अर्थछवियों को समझने का प्रयास करना - अनिवार्य है। एक ही शब्द या पंक्ति के अनेक अर्थ हो सकते हैं, और सही अर्थ का चयन अनुवादक की सूझ-बूझ पर निर्भर करता है।

अनुवादक को अपने अनुवाद के प्रति तटस्थ और निरपेक्ष रहना चाहिए। तटस्थता के माध्यम से ही वह अपने कार्य का निष्पक्ष मूल्यांकन कर सकता है। यदि पुनरीक्षण के दौरान किसी अन्य विद्वान या संपादक द्वारा सुझाव दिए जाएँ, तो अनुवादक को उन्हें खुले मन से स्वीकार करने के लिए तैयार रहना चाहिए।

2.7.1 गद्य साहित्य के अनुवाद की चुनौतियाँ

संस्कृत काव्यशास्त्र में आचार्य दंडी ने गद्य को कवियों की कसौटी कहा है। यह कथन इस तथ्य को रेखांकित करता है कि गद्य लेखन जितना सूक्ष्म, सघन और चुनौतीपूर्ण हैउतना ही उसका अनुवाद भी। गद्य साहित्य का अनुवाद केवल दो

भाषाओं के बीच शब्दों का स्थानांतरण नहीं हैबल्कि यह दो संस्कृतियों, दो सामाजिक संरचनाओं, लेखक की संवेदनशीलता, उसकी मानसिक अवस्था तथा पाठ के पूर्वपाठ और अंतर्पाठ के बीच संवाद स्थापित करने की प्रक्रिया है। इस दृष्टि से गद्य साहित्य का अनुवाद एक अत्यंत जटिल और बौद्धिक कार्य है ।

गद्य साहित्य का सृजन स्वयं में एक कठिन रचनात्मक प्रक्रिया है। अतः उसके अनुवाद में अनुवादक को भाषा, भाव और संदर्भ ये तीनों स्तरों पर विशेष सतर्कता बरतनी पड़ती है। गद्य साहित्य के अंतर्गत कथा साहित्य, कथेतर साहित्य तथा नाटक जैसी विविध विधाएँ आती हैं और प्रत्येक विधा की अपनी विशिष्ट चुनौतियाँ होती हैं।

(क) कथा साहित्य के अनुवाद की चुनौतियाँ

कथा साहित्य के अंतर्गत कहानी और उपन्यास को सम्मिलित किया जाता है। कथा साहित्य की मूल विशेषताएँ हैं — कल्पनाशीलता, भावात्मकता, संवेदनशीलता, भाषा की लाक्षणिकता तथा तथ्य और यथार्थ का संतुलित मिश्रण। सामान्यतः यह मान लिया जाता है कि सर्जनात्मक साहित्य पूर्णतः कल्पना पर आधारित होता है, किंतु वास्तविकता यह है कि प्रत्येक कथा रचना का स्रोत किसी न किसी सामाजिक, ऐतिहासिक या राजनीतिक यथार्थ में निहित होता है।

उदाहरणस्वरूप-

फणीश्वरनाथ रेणु का मैला आँचल, भीष्म साहनी का तमस, उदय प्रकाश की कहानियाँ, या अमृता प्रीतम का पिंजर ये सभी रचनाएँ अपने समय की सामाजिक और राजनीतिक सच्चाइयों से गहराई से जुड़ी हुई हैं। इनका अनुवाद करते समय अनुवादक के सामने यह चुनौती होती है कि वह मूल कृति की सामाजिक चेतना, भावनात्मक गहराई और भाषा की आत्मा को लक्ष्य भाषा में सुरक्षित रख सके।भाषा बाह्य रूप से भले ही अभिव्यक्ति का माध्यम प्रतीत होती होकिंतु उसके भीतर अनेक सांस्कृतिक, सामाजिक और ऐतिहासिक परतें छिपी होती हैं। मुहावरे, लोक-प्रयोग, क्षेत्रीय शब्द और सांस्कृतिक संकेत कथा साहित्य को विशिष्ट बनाते हैं। इनका अनुवाद करते समय अनुवादक को केवल भाषा नहीं, बल्कि उस भाषा से जुड़ी संस्कृति और लोक-परंपराओं की भी गहरी समझ होनी चाहिए।

अतः कहा जाता है कि भारतीय भाषाओं के बीच अनुवाद अपेक्षाकृत सरल होता है, जबकि भारतीय और विदेशी भाषाओं के बीच अनुवाद अधिक चुनौतीपूर्ण। इसका कारण भाषिक भिन्नता से अधिक सांस्कृतिक दूरी है।

(ख) कथेतर साहित्य के अनुवाद की चुनौतियाँ

आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने आचार्य दंडी के कथन को आगे बढ़ाते हुए लिखा है कि 'यदि गद्य लेखकों की कसौटी हैतो निबंध गद्य की कसौटी है।' निबंध, आलोचना, समीक्षा, यात्रा-वृत्तांत और संस्मरण जैसी विधाएँ कथेतर साहित्य के अंतर्गत आती हैं।निबंध लेखन मूलतः एक बौद्धिक और विश्लेषणात्मक प्रक्रिया है । इसलिए उसका अनुवाद भी उतना ही बौद्धिक श्रम और विवेक की अपेक्षा करता है। निबंध की भाषा में प्रायः तर्क, संकेत, व्यंजना और वैचारिक गहराई होती है। ऐसे में अनुवादक को पाठ का बार-बार पाठ करना पड़ता है और उसके अंतर्निहित विचार-तंत्र को समझना पड़ता है।आलोचना और समीक्षा साहित्य वस्तुतः किसी रचना का पुनर्पाठ और उसका मूल्यांकन होती हैं। इसलिए इनके अनुवाद के लिए अनुवादक को आलोचक जैसी दृष्टि और साहित्यिक उपकरणों की समझ होना आवश्यक है। अनुवादक से यह अपेक्षा की जाती है कि उसकी समझ भी मूल लेखक के समकक्ष हो, ताकि वह विचारों के सूक्ष्म अंतर को लक्ष्य भाषा में सही रूप में व्यक्त कर सके।

यात्रा-वृत्तांत और संस्मरणों के अनुवाद में लेखक की अनुभूति, दृष्टिकोण और भावात्मक संलग्नता को समझना अत्यंत आवश्यक है। अनुवादक को लेखक की मनोभूमि में उतरकर ही ऐसे पाठों का सफल अनुवाद करना होता है।

(ग) नाटक के अनुवाद की चुनौतियाँ

नाट्य साहित्य गद्य और पद्य दोनों रूपों में उपलब्ध हैकिंतु यहाँ गद्य नाटक के अनुवाद की चुनौतियों पर विचार किया जा रहा है। कथा साहित्य की भाँति नाटक में भी कथानक, पात्र, भावात्मकता और भाषा की लाक्षणिकता होती हैपरंतु नाटक की कुछ विशिष्ट विशेषताएँ उसे कथा साहित्य से अलग करती हैं।संवाद, अभिनेयता, मंचीयता, संगीत और

प्रकाश व्यवस्था नाटक के प्रमुख तत्व हैं। नाटक का अनुवाद करते समय अनुवादक को केवल पाठ नहींबल्कि उसके संभावित मंचन को भी ध्यान में रखना पड़ता है। संवाद नाटक के प्राणतत्त्व होते हैं — वे छोटे, तीखे और प्रभावशाली होते हैं। अनुवादक के लिए यह एक बड़ी चुनौती होती है कि लक्ष्य भाषा में भी संवाद उतने ही सशक्त और मंचोपयोगी बन सकें।

यद्यपि संगीत और प्रकाश व्यवस्था शब्दों से परे होते हैंफिर भी भाषा की कसावट और संवादों की प्रभावशीलता नाटक को सफल बनाती है। अनुवादक को भावपक्ष और शिल्पपक्ष दोनों के बीच संतुलन स्थापित करना पड़ता है।

(घ) मुहावरे और लोकोक्तियों के अनुवाद की चुनौती

गद्य साहित्य की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता उसकी लाक्षणिक भाषा है। मुहावरे और लोकोक्तियाँ इस लाक्षणिकता को सजीव बनाती हैं। इनके अनुवाद में शाब्दिक समानता प्रायः असफल हो जाती है, इसलिए भावानुवाद का सहारा लेना आवश्यक होता है।

उदाहरण के लिए हिंदी मुहावरा :आसमान सिर पर उठाना

शाब्दिक अंग्रेजी अनुवाद :

Lift the sky on one's head

भावात्मक समतुल्य :

Make a big hue and cry

इसी प्रकार-

हिंदी मुहावरा :

ऊँट के मुँह में जीरा

अंग्रेजी समतुल्य :

A drop in the ocean

इन उदाहरणों से स्पष्ट है कि मुहावरों का सही अनुवाद शब्दकोश से नहींबल्कि सांस्कृतिक समझ से संभव होता है।

2.7.2 पद्य साहित्य के अनुवाद की चुनौतियाँ

पद्य साहित्य का अनुवाद गद्य के अनुवाद की तुलना में अधिक जटिल और चुनौतीपूर्ण माना जाता है। इसका मुख्य कारण यह है कि कविता केवल विचारों की अभिव्यक्ति नहीं होतीबल्कि उसमें भाव, रस, लय, छंद, नाद, प्रतीक और सांस्कृतिक संकेत एक साथ अंतर्निहित रहते हैं। इन सभी तत्त्वों को लक्ष्य भाषा में सुरक्षित रखना अनुवादक के लिए एक कठिन कार्य होता है।

कविता के अनुवाद को लेकर विभिन्न विद्वानों ने भिन्न-भिन्न मत प्रस्तुत किए हैं। उन्नीसवीं शताब्दी के प्रसिद्ध आलोचक और अनुवादक मैथ्यू ऑर्नल्ड का मानना था कि कविता का अनुवाद करते समय अनुवादक को मूल रचना के प्रति पूर्ण निष्ठावान होना चाहिए। उनके अनुसार अनुवादक को कवि के मानसिक संसार, उसकी सामाजिक-सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, सकी शैली और उसकी काव्य-दृष्टि को यथासंभव लक्ष्य भाषा में स्थानांतरित करना चाहिए।

इसके विपरीतउत्तर-आधुनिक अनुवाद चिंतक आंद्रेलेफेवेयर कविता के अनुवाद को rewriting या अपवर्तन की प्रक्रिया मानते हैं, जिसमें अनुवादक सामाजिक-सांस्कृतिक दबावों और साहित्यिक परंपराओं के अनुसार मूल पाठ को पुनः रचता है। वहीं सुजित मुखर्जी कविता के अनुवाद को नवसृजन या new writing की संज्ञा देते हैं। दूसरी ओरएजरा पाउंड का मत है कि यदि कविता के अनुवाद में उसका मूल उत्स या केंद्रीय भाव सुरक्षित रह जाएतो अनुवाद को सफल माना जाना चाहिए।

मैथ्यू ऑर्नल्ड अपनी प्रसिद्ध पुस्तक On Translating Homer में लिखते हैं- "Union of the translator with his original, which alone can produce a good translation."अर्थात् अनुवादक का मूल रचना के साथ

गहन एकीकरण ही एक श्रेष्ठ अनुवाद को जन्म देता है। इसी आधार पर उन्होंने होमर के अनेक अंग्रेज़ी अनुवादकों की आलोचना भी की।

इन सैद्धांतिक मतों के आलोक में पद्य साहित्य के अनुवाद की प्रमुख चुनौतियों को निम्नलिखित बिंदुओं के अंतर्गत समझा जा सकता है —

1. शिल्प और शैली के स्तर पर चुनौती

कविता में कथ्य जितना महत्त्वपूर्ण होता हैउतना ही महत्त्व उसका शिल्प और शैली भी रखते हैं। कविता की पहचान उसके छंद, लय, तुक, ध्वनि-सौंदर्य और नादात्मकता से होती है। अनुवाद करते समय यदि केवल अर्थ को सुरक्षित रखा जाए और शिल्प की उपेक्षा कर दी जाएतो कविता का सौंदर्य नष्ट हो जाता है।उदाहरण के लिएरवीन्द्रनाथ ठाकुर की प्रसिद्ध पंक्तियाँ देखें-

"यदि तोर डाक सुने केऊ ना आए
तोबेएकला चलो रे"

इस कविता का हिंदी अनुवाद यदि केवल अर्थ के स्तर पर किया जाएतो वह प्रभावहीन हो सकता है। एक प्रभावशाली अनुवाद में लय और आवाहन की भावना को भी सुरक्षित रखना आवश्यक है-

यदि कोई तुम्हारी पुकार न सुने,
तब भी तुम अकेले आगे बढ़ते रहो।

यहाँ अनुवादक ने मूल कविता के प्रेरणात्मक स्वर और लयात्मक प्रवाह को बनाए रखने का प्रयास किया है। अतः स्पष्ट होता है कि पद्य अनुवाद में शिल्प और शैली की अनदेखी नहीं की जा सकती।

2. शीर्षक के स्तर पर चुनौती

कविता का शीर्षक केवल नाम मात्र नहीं होताबल्कि वह कविता के भाव-लोक और विषय-वस्तु की दिशा तय करता है। इसलिए कविता के अनुवाद में शीर्षक का अनुवाद भी अत्यंत सावधानी से किया जाना चाहिए।उदाहरणस्वरूप- पाब्लोनेरूदा की कविता "Tonight I can write the saddest lines" का हिंदी अनुवाद यदि केवल शाब्दिक रूप में "आज रात मैं सबसे दुखी पंक्तियाँ लिख सकता हूँ" किया जाएतो भाव की तीव्रता कुछ हद तक कम हो जाती है। कई अनुवादकों ने इसका भावानुवाद करते हुए शीर्षक रखा —

"आज की रात : विषाद की पंक्तियाँ"

यह शीर्षक कविता के अंतर्निहित अवसाद और स्मृति-बोध को अधिक प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करता है। इससे स्पष्ट होता है कि शीर्षक के स्तर पर भी अनुवादक को आवश्यकतानुसार रचनात्मक स्वतंत्रता लेनी पड़ती है।

3. शब्द और अभिव्यक्ति के स्तर पर चुनौती

कविता में प्रयुक्त शब्द केवल अपने शब्दकोशीय अर्थ के लिए नहीं होते, बल्कि वे प्रतीकात्मक, भावात्मक और सांस्कृतिक अर्थ भी धारण करते हैं। इसलिए कविता का शब्दानुवाद प्रायः अपर्याप्त सिद्ध होता है।उदाहरण के लिएविलियम वर्ड्सवर्थ की पंक्ति देखें-

"My heart leaps up when I behold
A rainbow in the sky"

यदि इसका शाब्दिक अनुवाद किया जाए-

"जब मैं आकाश में इंद्रधनुष देखता हूँ, मेरा हृदय उछल पड़ता है"

तो भाव तो पहुँचता हैकिंतु काव्यात्मकता सीमित रह जाती है। भावानुवाद में इसे इस प्रकार भी प्रस्तुत किया जा सकता है-

"आकाश में इंद्रधनुष दिखते ही

मेरा मन आनंद से भर उठता है।"

यहाँ अनुवादक ने शब्द के स्थान पर भाव और अनुभूति को प्राथमिकता दी है। यही पद्य अनुवाद की सबसे बड़ी चुनौती और विशेषता दोनों है।

अतः कह सकते हैं कि पद्य साहित्य का अनुवाद केवल भाषा-परिवर्तन की प्रक्रिया नहींबल्कि एक सृजनात्मक और संवेदनशील कर्म है। इसमें अनुवादक को मूल कविता के भाव, रस, शिल्प और सांस्कृतिक संदर्भों के साथ संतुलन बनाते हुए लक्ष्य भाषा में एक नईप्रभावशाली कविता रचनी होती है। निष्ठा का अर्थ यहाँ शब्दों की नकल नहींबल्कि कविता की आत्मा के प्रति ईमानदारी है।

2.8 सारांश

प्रस्तुत इकाई में साहित्यानुवाद की प्रक्रिया, प्रकार तथा उससे जुड़ी विविध चुनौतियों का सम्यक् और विस्तृत अध्ययन किया गया है। इकाई के प्रारंभ में यह स्पष्ट किया गया है कि साहित्य केवल मनोरंजन का साधन नहींबल्कि मानव जीवन के बौद्धिक, भावनात्मक और नैतिक विकास का एक सशक्त माध्यम है। साहित्य के माध्यम से मनुष्य अपने अनुभवों, संवेदनाओं और जीवन-दृष्टि को अभिव्यक्त करता हैऔर साहित्यानुवाद इन अनुभवों को एक भाषा से दूसरी भाषा तक पहुँचाने का कार्य करता है।

साहित्यानुवाद ने विश्व साहित्य की अवधारणा को साकार रूप दिया है। विभिन्न भारतीय और विदेशी भाषाओं में रचित महान साहित्यिक कृतियाँ अनुवाद के माध्यम से ही व्यापक पाठक-वर्ग तक पहुँच सकी हैं। इस प्रक्रिया ने भाषाओं और संस्कृतियों के बीच संवाद को संभव बनाया है तथा साहित्यिक, सांस्कृतिक और वैचारिक आदान-प्रदान को गति प्रदान की है।

इकाई में गद्य साहित्य के अनुवाद की विशेष चुनौतियों पर विस्तार से चर्चा की गई है। कथा साहित्यतथाकथेतर साहित्य और नाटकइन सभी विधाओं की प्रकृति भिन्न होने के कारण उनके अनुवाद की समस्याएँ भी भिन्न होती हैं। कथा साहित्य में सामाजिक यथार्थ, सांस्कृतिक संदर्भ, लोक-भाषा और भावनात्मक गहराई को सुरक्षित रखना एक बड़ी चुनौती है। कथेतर साहित्य में वैचारिक स्पष्टता, तर्क-संगति और लेखक की बौद्धिक दृष्टि को लक्ष्य भाषा में संप्रेषित करना आवश्यक होता है। नाट्य साहित्य के अनुवाद में संवादों की मंचीयता, अभिनेयता और प्रभावशीलता पर विशेष ध्यान देना पड़ता है।इसके अतिरिक्त मुहावरों, लोकोक्तियों, लाक्षणिक भाषा और सांस्कृतिक संकेतों का अनुवाद साहित्यानुवाद की सबसे जटिल समस्याओं में से एक हैजहाँ शाब्दिक अनुवाद के स्थान पर भावानुवाद अधिक उपयुक्त सिद्ध होता है। विषय-वस्तु और शिल्प के संतुलन को बनाए रखना अनुवादक की सृजनात्मक क्षमता और साहित्यिक समझ की कसौटी है।

अतः यह इकाई साहित्यानुवाद को एक यांत्रिक प्रक्रिया न मानकर उसे एक सृजनात्मक, संवेदनशील और उत्तरदायित्वपूर्ण कार्य के रूप में स्थापित करती है। यह न केवल सैद्धांतिक समझ प्रदान करती हैबल्कि साहित्यानुवाद के व्यावहारिक और सांस्कृतिक पक्षों से भी परिचित कराती है।

✓ 2.9 प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा)

प्रश्न 1 का उत्तर: क्योंकि साहित्यानुवाद में केवल भाषा का नहीं, बल्कि भाव, शैली और संस्कृति का भी रूपांतरण करना पड़ता है, जिससे इसकी जटिलता बढ़ जाती है।

प्रश्न 2 का उत्तर: क्योंकि काव्यानुवाद में अर्थ के साथ-साथ भाव, लय, छंद, बिंब और सांस्कृतिक संदर्भों का भी अनुवाद करना पड़ता है।

प्रश्न 3 का उत्तर: क्योंकि पाठ-अध्ययन के बिना मूल रचना की विषय-वस्तु, भाव और सांस्कृतिक संदर्भों को समझना संभव नहीं होता।

प्रश्न 4 उत्तर: कथा साहित्य के अनुवाद में भाषा के साथ-साथ सामाजिक और सांस्कृतिक परिवेश को लक्ष्य भाषा में संप्रेषित करना सबसे बड़ी चुनौती होती है

प्रश्न 5 का उत्तर: मैथ्यू ऑर्नल्ड के अनुसार अनुवादक का मूल रचना के साथ गहन एकीकरण और कवि की शैली व भाव के प्रति निष्ठा ही अच्छे कविता-अनुवाद की प्रमुख शर्त है।

2.10 अधिक जानने के लिए पढ़ें

- नगेन्द्र, (2009), साहित्य का अनुवाद, नई दिल्ली, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास।
- परसाई, हरिशंकर, (2011), निबंध और गद्य शिल्प, भोपाल, मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी।
- मिश्र,विद्यानिवास, (2007), भारतीय काव्यशास्त्र और अनुवाद, नई दिल्ली, साहित्य अकादमी।
- शुक्ल, रामचंद्र, (2012), हिंदी साहित्य का इतिहास, वाराणसी,नागरी प्रचारिणी सभा।
- सिंह, नामवर, (2010), अनुवाद और आलोचना, नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन।
- सहाय, रघुवीर, (2008), अनुवाद की समस्याएँ, नई दिल्ली, वाणी प्रकाशन।
- Bassnett, S. (2014). Translation Studies (4th ed.). London: Routledge.
- Catford, J. C. (1965). A Linguistic Theory of Translation. London: Oxford University Press.
- Lefevere, A. (1992). Translation, Rewriting and the Manipulation of Literary Fame. London: Routledge.
- Nida, E. A. (1964). Toward a Science of Translating. Leiden: E. J. Brill.
- Newmark, P. (1988). A Textbook of Translation. New York: Prentice Hall.
- Venuti, L. (1995). The Translator's Invisibility: A History of Translation. London: Routledge.

2.11 अभ्यास प्रश्न

(क) संक्षिप्त प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

1. साहित्यानुवाद को "कठिन किंतु साध्य" प्रक्रिया क्यों कहा जाता है? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।
2. साहित्यानुवाद की प्रक्रिया को क्रमबद्ध चरणों में समझाइए।
3. युजीननायडा के अनुवाद सिद्धांत को स्पष्ट करते हुए उसके तीन प्रमुख चरणों का नाम लिखिए।-
4. पाठ-अध्ययन और पाठ-विश्लेषण साहित्यानुवाद में क्यों आवश्यक हैं?
5. साहित्यानुवाद में भाषांतरण की भूमिका पर चर्चा कीजिए।
6. गद्य साहित्य के अनुवाद को जटिल और बौद्धिक कार्य क्यों माना जाता है?
7. मुहावरों और लोकोक्तियों का अनुवाद एक समस्या क्यों है?

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए -

1. काव्यानुवाद को साहित्यानुवाद का सबसे कठिन रूप क्यों माना जाता है ? उदाहरण सहित विवेचना कीजिए।
2. पद्य साहित्य के अनुवाद में शिल्प और शैली की समस्या पर विस्तार से चर्चा कीजिए।
3. कविता के शीर्षक और शब्द-चयन के स्तर पर आने वाली चुनौतियों को उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।
4. कथा साहित्य के अनुवाद में सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भों की भूमिका पर प्रकाश डालिए।
5. कथेतर साहित्य (निबंध, आलोचना, आत्मकथा) के अनुवाद की प्रमुख चुनौतियों का विवेचन कीजिए।
6. नाट्यानुवाद में संवाद, मंचीयता और अभिनेयता के महत्व को स्पष्ट कीजिए।
7. अनुवाद कार्य में भाषा और संस्कृति के संबंध को स्पष्ट करते हुए प्रमुख चुनौतियों की चर्चा कीजिए।

शब्दकोश

1. बहुस्तरीय : बहुआयामी, बहुपरत, विविधस्तरीय, जटिल
2. भाषांतरण: अनुवाद, रूपांतरण, शब्दांतरण, भाषा-परिवर्तन
3. प्रतिस्थापन : स्थानापन्न, विकल्प-स्थापन, परिवर्तन, प्रतिसंस्थापन
4. अर्थ-विकृति: अर्थभ्रंश, विकार, विक्षेप, भ्रांति
5. लाक्षणिकता : व्यंजना, संकेतात्मकता, प्रतीकात्मकता, अर्थगर्भिता
6. सहृद: रसिक, भावुक, संवेदनशील, रसग्राही
7. अभिनेयता: अभिनययोग्यता, नाट्यात्मकता, प्रस्तुति-योग्यता, सजीवता

*** ***** ***

इकाई 3 - सृजनात्मक और ज्ञान : विज्ञान आधारित साहित्य का अनुवाद- आयाम और विशेषताएँ

इकाई की रुपरेखा

3.1 उद्देश्य
3.2 प्रस्तावना
3.3 सृजनात्मक और ज्ञान विज्ञान अनुवाद की आवश्यकता-
3.4 सृजनात्मक और ज्ञानविज्ञान साहित्यानुवाद कीदृष्टि-
3.5 सृजनात्मक और ज्ञानविज्ञान साहित्यानुवाद की शैलीगत विशेषताएँ-
3.6 सृजनात्मक औरज्ञानविज्ञान साहित्यानुवाद में समानता और विषमता के आयाम-
3.7 सृजनात्मक और ज्ञानविज्ञान साहित्यानुवाद-
3.8 सारांश
3.9 प्रगति विवरण क)ेवल रूपरेखा(
3.10 अधिक जानने के लिए पढ़ें
3.11 अभ्यास प्रश्न

3.1 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन से आप-

- सृजनात्मक और ज्ञानविज्ञान अनुवाद की आवश्यकता को समझेंगे।-
- उसकीदृष्टिसे परिचित होंगे।
- सृजनात्मक और ज्ञानविज्ञान साहित्यानुवाद की शैलीगत विशेषताएँजान पाएंगे।-
- सृजनात्मक औरज्ञानविज्ञान साहित्यानुवाद में समानता को जान सकेंगे।-
- सृजनात्मक औरज्ञानविज्ञान साहित्यानुवाद में अंतर को समझ पाएंगे।-

3.2 प्रस्तावाना

अनुवाद की सृजनात्मक क्षमता और रचनात्मक सामर्थ्य की सबसे सशक्त एवं विश्वसनीय कसौटी साहित्यिक अनुवाद को माना जाता है। अनुवाद के विभिन्न प्रकारों में साहित्यिक अनुवाद न केवल सर्वाधिक महत्वपूर्ण हैबल्कि अपनी जटिलता, संवेदनशीलता और बहुस्तरीय प्रकृति के कारण एक विशिष्ट स्थान भी रखता है। साहित्य का अनुवाद मात्र शब्दों या वाक्यों का भाषिक रूपान्तरण नहीं होताअपितु यह भावों, अनुभूतियों, कल्पनाओं और विचारसंरचनाओं - साथ भावार्थ-के सूक्ष्म हस्तांतरण की प्रक्रिया है। इस प्रकार साहित्यिक अनुवाद में भाषा के शाब्दिक अर्थ के साथ, रस, शैली और सांस्कृतिक संदर्भों का भी विशेष महत्व होता है।

साहित्यिक अनुवाद से यह अपेक्षा की जाती है कि वह मूल रचना की आत्मा, संवेदना और भावात्मक गहराई को लक्ष्य भाषा में यथासंभव सुरक्षित रखे। इसलिए एक साहित्यिक अनुवादक से केवल भाषिक दक्षता ही नहींबल्कि

साहित्यिक संवेदनशीलता, रचनात्मक दृष्टि तथा सांस्कृतिक समझ की भी अपेक्षा की जाती है। मूल कृति में निहित लेखक की अनुभूतिउसका वैचारिक अभिप्राय और उसकी अभिव्यक्तिशैली को लक्ष्य भाषा में उसी प्रभाव और प्रभावोत्पादकता - के साथ प्रस्तुत करना साहित्यिक अनुवाद की सबसे बड़ी चुनौती है। यह कार्य वही अनुवादक सफलतापूर्वक कर सकता है जो न केवल मूल भाषा और लक्ष्य भाषा पर समान अधिकार रखता हो, बल्कि संबंधित साहित्यिक विधा और दोनों भाषाओं की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से भी भलीभाँति परिचित हो।-

साहित्यिक अनुवाद की प्रक्रिया से गुजरते हुए यह स्पष्ट होता है कि यह एक बहुस्तरीय और जटिल कार्य है। इस इकाई में साहित्यिक अनुवाद की मूलभूत प्रक्रियाओं, उसके विभिन्न स्तरों तथा साहित्य की प्रमुख विधाओंजैसे- कविता, कथा, नाटक और गद्यके अनुवाद की विशेषताओं और समस्याओं पर विचार किया जाएगा। इसके साथसाथ यह भी - विवेचित किया जाएगा कि साहित्यिक अनुवाद किस प्रकार केवल भाषिक कार्य न होकर एक व्यापक सांस्कृतिक रूपान्तरण की प्रक्रिया बन जाता हैजिसमें एक संस्कृति के अनुभवों और मूल्यों का दूसरी संस्कृति में पुनर्संयोजन किया जाता है।

वस्तुतः साहित्यिक अनुवाद अपने मूल स्वरूप में एक सृजनात्मक, सांस्कृतिक और वैचारिक कर्म है। भाषिक विनिमय के माध्यम से जब किसी भिन्न भाषा और संस्कृति की साहित्यिक कृति को लक्ष्य भाषा में प्रस्तुत किया जाता हैतब अनुवादक एक प्रकार से दो संस्कृतियों के बीच सेतु का निर्माण करता है। इस दृष्टि से साहित्यिक अनुवाद न केवल सांस्कृतिक होता है, बल्कि वह अपने समय, समाज और नैतिक मूल्यों से भी गहराई से जुड़ा होता है। अतः साहित्यिक अनुवाद का दायित्व केवल साहित्य तक सीमित न रहकर व्यापक सामाजिक और मानवीय सरोकारों से भी संबद्ध हो जाता है।

यह इकाई उपर्युक्त सभी पक्षों की गहन जाँचविज्ञान अनुवाद के आयाम -पड़ताल करते हुए सृजनात्मक और ज्ञान- एवं विशेषताओं को समझने का प्रयास करेगीताकि सृजनात्मक और ज्ञानविशेषता और अंतर ,विज्ञान अनुवाद आयाम- को समझा जा सके।

3.3 सृजनात्मक और ज्ञान विज्ञान अनुवाद की आवश्यकता-

सृजनात्मक अनुवाद के लिए अनुवादक को मूल कृति से बारबार गुजरना पड़ता है और उसे उसके सांस्कृतिक - बार जीन-परिवेश सहित बारा पड़ता है । पात्रों की संवेदना, उनके संघर्ष, सामाजिक परिस्थितियाँ और जीवनदृष्टि को - बोध के साथ जोड़कर ही अनुवाद को जीवंत बनाया जा सकता है । अनुवादक को यह भी सजग रहना होता -अपने अनुभव है कि वह मूल कृति के उन प्रसंगों या विवरणों को अनावश्यक रूप से न उभारे, जो केन्द्रीय विषयवस्तु की संप्रेषणीयता में - बाधा उत्पन्न करते हों। सृजनात्मक अनुवाद में वही तत्व प्रमुख होते हैं जो कृति को उसकी सम्पूर्ण तीव्रता और प्रभाव के साथ पाठक तक पहुँचाते हैं।

इस क्रम में अनुवादक को रचनाकार के मानस में प्रवेश करना पड़ता है उस समय —, परिस्थितियों और मानसिक अवस्थाओं को समझना होता है जिनसे प्रेरित होकर रचना का सृजन हुआ। जब तक अनुवादक रचनाकार के तत्कालीन सामाजिक, सांस्कृतिक और वैचारिक परिवेश को समझने का प्रयास नहीं करता, तब तक सृजनात्मक अनुवाद की संभावना क्षीण बनी रहती है। रचना की समग्र सांस्कृतिक निर्मिति को समझ लेने के बाद ही अनुवादक उसके भाषिक विन्यास, संवाद, मुहावरों और व्यंजना को अपने समय और संदर्भ के अनुकूल ढाल पाता है ।

चूंकि साहित्यिक अनुवाद एक प्रकार का सांस्कृतिक रूपान्तरण भी हैइसलिए अनुवादक को मूल कृति की संस्कृति, लोकाचार, परंपराओं और सामाजिक संरचना का ज्ञान होना अत्यंत आवश्यक है। उदाहरणस्वरूपयदि रूसी साहित्य का - अनुवाद किया जा रहा है, तो वहाँ के सामाजिक यथार्थ, वर्गसंघर्ष और मानवीय संबंधों की प्रकृति को समझे बिना - अनुवाद अधूरा रह जाएगा। इसी प्रकार, यदि फ्रांसीसी या अफ्रीकी साहित्य का अनुवाद हिंदी में किया जाता हैतो वहाँ की

ऐतिहासिक पीड़ा, उपनिवेशवाद का प्रभाव और सांस्कृतिक चेतना को भारतीय संदर्भों से जोड़कर प्रस्तुत करना आवश्यक हो जाता है।

हिंदी में सृजनात्मक अनुवाद की एक समृद्ध परंपरा रही है। उदाहरण के लिएअल्बेयर कामू के उप-न्यास द स्ट्रेंजर का हिंदी अनुवाद कई अनुवादकों ने किया है, जिनमें से कुछ अनुवाद मूल कृति की दार्शनिक बेचैनी और अस्तित्ववादी दृष्टि को भारतीय पाठकों के लिए अधिक सहज बना देते हैं। इसी प्रकार गब्रिएल गार्सिया मार्केस की रचनाओं के हिंदी अनुवादों में लैटिन अमेरिकी जीवनबोध को भारतीय संवेदना के निकट लाने का सफल प्रयास दिखाई देता है। इन अनुवादों में मूल - कृति की केन्द्रीयता सुरक्षित रहते हुए भी भाषा और सांस्कृतिक प्रस्तुति ऐसी होती है कि पाठक को किसी प्रकार का विजातीय बोध नहीं होता।

अतः अनुवादक की सृजनात्मकता का आधार मूल कृति की समग्र सांस्कृतिक समझ और उसे अपने देशकाल के अनुरूप बरतने की क्षमता है । यह गुण साहित्यिक अनुवाद के लिए केवल आवश्यक ही नहींबल्कि अनिवार्य है। इसी के माध्यम से अनुवाद एक स्वतंत्र साहित्यिक कृति के रूप में प्रतिष्ठा प्राप्त करता है।

ज्ञानविज्ञा–न आधारित साहित्य आधुनिक मानव सभ्यता के बौद्धिक विकास का आधार है। मानव समाज की प्रगति केवल भावनात्मक या सृजनात्मक चेतना से ही नहींबल्कि तर्क, तथ्य और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी होती है। ज्ञान–विज्ञान साहित्य के माध्यम से मनुष्य प्रकृति, समाज, तकनीक और स्वयं अपने अस्तित्व को समझने का प्रयास करता है। यह साहित्य मानव को अंधविश्वास, रूढ़ियों और अवैज्ञानिक सोच से मुक्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।ज्ञान–विज्ञान आधारित साहित्य की आवश्यकता इसलिए भी है क्योंकि यह शिक्षा और शोध को सुदृढ़ बनाता है। विज्ञान, चिकित्सा, प्रौद्योगिकी, अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र, इतिहास और दर्शन जैसे विषयों से संबंधित साहित्य विद्यार्थियों और शोधकर्ताओं को नवीन विचारों और खोजों से परिचित कराता है। इससे ज्ञान का क्रमिक विकास संभव होता है और समाज में नवाचार की प्रवृत्ति बढ़ती है।

यह साहित्य सामाजिक और राष्ट्रीय विकास से भी प्रत्यक्ष रूप से जुड़ा हुआ है। कृषि, स्वास्थ्य, पर्यावरण, उद्योग और प्रशासन से संबंधित ज्ञान समाज के व्यावहारिक जीवन को बेहतर बनाता है। जब नागरिक वैज्ञानिक सोच से युक्त होते हैंतब वे अधिक जागरूक, विवेकशील और उत्तरदायी बनते हैं । इससे लोकतांत्रिक मूल्यों को भी बल मिलता है। यह ज्ञान–विज्ञान आधारित साहित्य भाषाओं के विकास में भी सहायक होता है। नए शब्द, पारिभाषिक शब्दावली और अवधारणाएँ भाषा को समृद्ध करती हैं। अतः ज्ञानविज्ञान साहित्य मानव समाज के बौद्धिक–, सामाजिक और सांस्कृतिक विकास के लिए अनिवार्य है।

3.4 सृजनात्मक और ज्ञानविज्ञान साहित्यानुवाद कीदृष्टि-

साहित्यिक अनुवाद में सृजनात्मकता तभी संभव हो पाती है जब अनुवादक अनुवाद के लिए कृति का चयन अत्यंत सोच समझकर करता है। वास्तव में किसी रचना का चयन ही अनुवाद प्रक्रिया का-प्रथम और सबसे महत्वपूर्ण चरण माना जा सकता है। यह चयन केवल सुविधा या संयोग पर आधारित न होकर एक स्पष्ट दृष्टि से प्रेरित होना चाहिए। अनुवाद की गुणवत्ता और उसकी सृजनात्मक क्षमता इस बात पर निर्भर करती है कि अनुवादक किस दृष्टिकोण से किसी कृति को अपनाता है।

यह दृष्टि अनेक स्तरों पर काम करती है। जैसेसंवेदना के कितनी अनुकूल हैजिस -वह कृति अनुवादक की भाषा - विधा में रचना लिखी गई है उससे उसका कितना आत्मीय संबंध हैतथा वह रचना अनुवादक के सामाजिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक अनुभवों से किस सीमा तक जुड़ती है। यदि कोई रचना अनुवादक के आंतरिक अनुभवजगत को स्पर्श नहीं करतीतो उसका अनुवाद केवल यांत्रिक भाषांतरण बनकर रह जाता है। इसी समग्र समझ और संवेदनशील चयन को हम अनुवाद की कह सकते हैंजो अनुवाद की सफलता या असफलता का निर्धारण करती है। 'दृष्टि'

उदाहरण के लिएयदि कोई अनुवादक ग्रामीण जीवन- के अनुभवों से परिचित है और वह किसी लोककथा या - ग्राम्य उपन्यास का अनुवाद करता हैतो वह पात्रों की भाषा, भावनाओं और सांस्कृतिक संकेतों को अधिक जीवंत ढंग से प्रस्तुत कर सकता है। इसके विपरीतयदि वही अनुवादक केवल प्रकाशक के दबाव या समय की कमी के कारण किसी अपरिचित शहरी आधुनिक कविता का अनुवाद करता हैतो उससे मूल रचना की पुनसृष्टि की अपेक्षा नहीं की जा सकती। तात्कालिक मजबूरी में किया गया अनुवाद प्रायः मूल कृति की आत्मा को ग्रहण करने में असफल रहता है।

सृजनात्मक अनुवाद तभी संभव है जब अनुवादक अपने कार्य को केवल शब्दों के रूपांतरण के रूप में न देखकर एक नई सृजनात्मक चुनौती के रूप में स्वीकार करें। जब तक अनुवादक इस मानसिकता के साथ कार्य नहीं करता कि उसे मूल रचना के समान प्रभाव उत्पन्न करना हैतब तक उसका अनुवाद सृजनात्मक नहीं बन सकता । इस पूरी प्रक्रिया में अनुवाद के प्रति उसकी दृष्टि निर्णायक भूमिका निभाती है।इसके साथसाथ स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा की समग्र समझ भी - अनुवादक के लिए अनिवार्य है। केवल भाषाई ज्ञान पर्याप्त नहीं होताबल्कि दोनों भाषाओं की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, भावात्मक संरचना और अभिव्यक्ति की परंपराओं की समझ भी आवश्यक होती है। जब अनुवादक उपयुक्त दृष्टि के साथ कृति का चयन करता है और दोनों भाषाओं की गहन समझ रखता हैतभी उसकी अनूदित रचना मूल कृति की सृजनात्मक पुनसृष्टि के रूप में सामने आती है।

ज्ञानविज्ञान साहित्य का अनुवाद मानव समाज में ज्ञान के प्रसार और बौद्धिक विकास का– एक अत्यंत महत्वपूर्ण माध्यम है। विज्ञान, प्रौद्योगिकी, समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र, इतिहास, दर्शन और शिक्षा जैसे क्षेत्रों में रचित साहित्य सामान्यतः ज्ञानात्मक साहित्य की श्रेणी में आता है। इस प्रकार के साहित्य का उद्देश्य सौंदर्यबोध या भावात्मक अनुभूति से- अधिक तथ्य, विचार और सूचनाओं का स्पष्ट संप्रेषण होता है। इसलिए ज्ञानविज्ञान साहित्यानुवाद की दृष्टि सृजनात्मक साहित्य – विज्ञान साहित्य के अनुवाद में अनुवादक की प्रमुख जिम्मेदारी यह होती है कि मूल पाठ –के अनुवाद से भिन्न होती है।ज्ञान में निहित तथ्यों, अवधारणाओं और तर्कों को लक्ष्य भाषा में पूरी सटीकता के साथ प्रस्तुत किया जाए। यहाँ अर्थ की शुद्धता और संप्रेषण की स्पष्टता सर्वोपरि होती है। शब्दों के चयन में भावात्मकता या अलंकरण के स्थान पर तकनीकी उपयुक्तता और पारिभाषिक शुद्धता को महत्व दिया जाता है। उदाहरण के लिएवैज्ञानिक शब्दावली-, प्रशासनिक पदनाम या दार्शनिक अवधारणाओं का अनुवाद करते समय मान्य और प्रचलित शब्दों का प्रयोग आवश्यक होता है।

ज्ञानविज्ञान साहित्यानुवाद की दृष्टि से भाषा सरल–, स्पष्ट और एकार्थक होनी चाहिए। जटिल वाक्य संरचनाओं, अस्पष्ट उपमाओं या बहुअर्थी शब्दों से बचना आवश्यक माना जाता है, क्योंकि इससे अर्थ का भ्रम उत्पन्न हो सकता है। इस प्रकार के अनुवाद में शैली गौण होती है और उद्देश्य यह होता है कि पाठक बिना किसी बाधा के विषयवस्तु को समझ - सके।

ज्ञानविज्ञान साहित्यानुवाद एक सांस्कृतिक और सामाजिक उत्–तरदायित्व भी निभाता है। इसके माध्यम से वैश्विक ज्ञान स्थानीय भाषाओं तक पहुँचता है और शिक्षा का लोकतंत्रीकरण संभव होता है। इस दृष्टि से अनुवादक केवल भाषांतर करने वाला नहींबल्कि ज्ञान का सेतुविज्ञान साहित्यानुवाद की मूल दृष्टि अर–निर्माता होता है। अतः ज्ञान-ोथप्रधान-, तथ्यात्मक और जनोपयोगी होती है, जो समाज के बौद्धिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

3. 5 सृजनात्मक और ज्ञानविज्ञान साहित्यानुवाद की शैलीगत विशेषताएँ-

साहित्यिक सृजन में रचनाशैली के माध्यम से ह-शैली की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। रचना-ी लेखक अपने विचार, भाव और दृष्टि को विशिष्ट रूप प्रदान करता है। शैली वस्तुतः भाषा के चयन, वाक्यविन्यास-, शब्दसंयोजन-, अलंकार, बिंब, प्रतीक और लयात्मकता आदि के समन्वय से निर्मित होती है। इसी कारण साहित्यिक रचनाएँ केवल कथ्य के स्तर पर ही नहींबल्कि शैली के स्तर पर भी अपनी अलग पहचान स्थापित करती हैं।

व्याकरणिक आधार पर शैली को व्यास शैली, समास शैली, अलंकृत शैली, कोमलकांत पदावली युक्त शैली, गुंफित शैली, मुहावरेदार शैली, व्यंग्यात्मक शैली आदि अनेक नामों से जाना जाता है। इन शैलियों के माध्यम से भाषा कभी गंभीर और दार्शनिक रूप धारण करती हैतो कभी सहज, संवादात्मक और व्यंग्यपूर्ण बन जाती है। उदाहरण के लिएआचार्य - शुक्ल की आलोचनात्मक भाषा व्यास शैली से युक्त मानी जाती हैजबकि हरिशंकर परसाई की रचनाओं में व्यंग्यात्मक और मुहावरेदार शैली प्रमुख रूप से दिखाई देती है।रचनाकार अपने लेखन में संप्रेषण की दृष्टि से औपचारिक अथवा अनौपचारिक शैली, संवादात्मक शैली या आत्मीय शैली का चयन करता है। कई बार रचना को स्थानीय रंग प्रदान करने के लिए आँचलिक शब्दावली का प्रयोग भी किया जाता है। उदाहरण के तौर परके उपन्यासों में मैथि 'रेणु' फणीश्वरनाथ-ली और आंचलिक हिंदी का मिश्रण भाषा को विशिष्ट पहचान प्रदान करता है।

यदि हिंदी भाषा की अभिव्यक्ति शैलियों पर विचार किया जाएतो संस्कृतनिष्ठ शैली, अरबी फारसी मिश्रित शैली-(उर्दू), सामान्य बोलचाल की हिंदुस्तानी शैली तथा अंग्रेज़ी मिश्रित शैली स्पष्ट (हिंग्लिश)रूप से देखी जा सकती हैं। इसके अतिरिक्तविषयक्षेत्र के आधार पर कार्यालयी-, वाणिज्यिक, तकनीकी और वैज्ञानिक शैलियाँ भी विकसित हुई हैं। साहित्य की विभिन्न विधाओं जैसेउपन्यास -, कहानी, नाटक और कविता के अनुसार भी शैली में भिन्नता दृष्टिगोचर होती है। कविता छंदोबद्ध या मुक्त छंद में तथानाटक संवादात्मक रूप में और उपन्यास गद्यात्मक विस्तार के साथ प्रस्तुत होता है।

शैली की इस विविधता के कारण अनुवादक के सामने यह महत्वपूर्ण प्रश्न खड़ा होता है कि क्या अनुवाद में केवल स्रोत भाषा के कथ्य को स्थानांतरित करना पर्याप्त है या मूल रचना की शैली का अनुवाद करना भी आवश्यक है। अनुवाद के सिद्धांतों पर विचार करने से यह स्पष्ट होता है कि अनुवाद केवल अर्थांतरण नहींबल्कि शैलीसंप्रेषण का भी प्रयास है।-

अनुवाद दो भाषाओं के बीच संपन्न होने वाली एक जटिल सृजनात्मक प्रक्रिया है। इसमें स्रोत भाषा की आत्मा अर्थात दोनों को लक्ष्य भाषा में प्रस्तुत करना होता है। अनुवादक का दायित्व होता 'शैली' और उसके शरीर अर्थात 'अर्थ' है कि वह मूल भाव को अक्षुण्ण रखते हुए मूल शैली को भी यथासंभव सुरक्षित रखे। सैद्धांतिक दृष्टि से यह अपेक्षा की जाती है कि स्रोत भाषाकी शैलीगत विशेषताएँ लक्ष्य भाषा के पाठ में भी प्रतिबिंबित हों।

इस संदर्भ में पाश्चात्य अनुवादनाइडा का कथन विशेष रूप से उल्लेखनीय है। उनके अनुसार .चिंतक यूजीन ए-, "अनुवाद का उद्देश्य स्रोत भाषा के संदेश को अर्थ और शैली दोनों स्तरों पर लक्ष्य भाषा में निकट —तम सहज समतुल्य के रूप में पुनर्सृजित करना है।इसका आशय यह है कि अनुवाद में अर्थ को प्राथमिकता दी जाती है ", किंतु शैली को पूर्णतः नजरअंदाज भी नहीं किया जा सकता।

फिर भी यह सत्य है कि दो भाषाओं की संरचना, व्याकरण, शब्दसंपदा-, सांस्कृतिक संदर्भ और शैलीगत परंपराएँ भिन्न होती हैं। उदाहरण के लिएअंग्रेज़ी की संक्षिप्त और संयत शैली का हूबहू हिंदी में अनुवाद करने पर भाषा कृत्रिम लग - सकती है। अतःसंस्कृतनिष्ठ हिंदी की गूढ़ शैली को अंग्रेज़ी में पूरी तरह व्यक्त करना कठिन हो जाता है। यही कारण है कि निकटतम सहज स' नाइडा कीमतुल्यकी अवधारणा अनुवादक को व्यावहारिक समाधान प्रदान करती है। '

ज्ञानात्मक साहित्य में तथ्य और विचार की प्रधानता होती है। इसलिए वहाँ शैली अपेक्षाकृत गौण हो जाती है । उदाहरण के लिए" -Global warming increases average temperature."का अनुवादवैश्विक ऊष्मीकरण औ"सत तापमान को बढ़ाता है।"

सीधे और स्पष्ट रूप में किया जाता है। इसके विपरीत, सृजनात्मक साहित्य में शैली रचना की आत्मा होती है। कविता, कहानी या नाटक में भाव, बिंब, प्रतीक और लय के बिना रचना का प्रभाव नष्ट हो जाता है।

सृजनात्मक साहित्य और विशेष रूप से काव्यानुवाद में शैली का अनुवाद एक चुनौतीपूर्ण कार्य बन जाता है। छंद, अलंकार, नादसौंदर्य और प्रतीकात्मक भाषा को लक्ष्य भाषा में उसी प्रभाव के साथ प्रस्तुत करना प्रायः असंभव होता है। - " -उदाहरण के लिएThe moon weeps silently on the river."का अनुवाद केवलचाँद नदी पर च"ुपचाप रोता है।सौंदर्य पूरी तरह स्थानांतरित नहीं हो पाता।-कह देने से भाव तो आ जाता हैकिंतु मूल की लय और ध्वनि"

रचनाकार द्वारा एक ही रचना में विभिन्न शैलियों का प्रयोग अनुवादक की कठिनाई को और बढ़ा देता है। शैलीगत भेद को लक्ष्य भाषा में सुरक्षित रखना तभी संभव हैजब अनुवादक मूल लेखक की मानसिकता से तादात्म्य स्थापित करे। उदाहरणस्वरूपएलियट के नाटकों का अनुवाद .एस .इब्सन के नाटकों का अनुवाद करते समय प्रतीकात्मकता और टी- नगेंद .करते समय आध्यात्मिक संकेतों को समझना आवश्यक है। इसी तरहआचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी या डॉ्र के निबंधों की शैलीगत सूक्ष्मताओं को समझे बिना सार्थक अनुवाद संभव नहीं है।

अनुवाद में शैली की समस्या युगविशेष से भी जुड़ी होती है। प्रश्न यह उठता है कि किसी प्राचीन या मध्यकालीन - च-रचना का अनुवाद युगीन भाषा में किया जाए या समकालीन भाषा में। उदाहरण के लिएंदबरदाई के 'पृथ्वीराज रासो' या मिल्टन की कविताओं का अनुवाद करते समय भाषा और शैली के चयन में अनुवादक को विशेष संवेदनशीलता और विवेक का परिचय देना पड़ता है।

वस्तुतः अनुवादक को यह स्वीकार करना पड़ता है कि अर्थ का संप्रेषण अपेक्षाकृत सरल है, किंतु शैली का पूर्ण संप्रेषण संभव नहीं है। लक्ष्य भाषा की प्रकृति के प्रतिकूल शैली पाठक को बोझिल लग सकती है। इसलिए अनुवादक को अपनी सृजनात्मक क्षमता का उपयोग करते हुए स्रोत भाषा से मिलतीजुलती-, किंतु लक्ष्य भाषा के अनुकूल शैली का चयन करना चाहिए। यही संतुलन सफल साहित्यानुवाद की पहचान बनता है।

महत्वपूर्ण बिंदु

सृजनात्मक और ज्ञानात्मक साहित्य का अनुवाद केवल भाषापरिवर्तन नहींबल्कि भाव-, संस्कृति और दृष्टि का संवेदनशील रूपांतरण है। अनुवाद की प्रक्रिया पाठपाठन से आरंभ होती हैजिसमें अनुवादक सहृदय पाठक बनकर मूल - कृति के भाव, शैली और अंतर्ध्वनि को आत्मसात करता है। इसके बाद भाषांतरण, प्रतिस्थापन और तुलनात्मक परीक्षा के चरण आते हैंजिनके माध्यम से अनूदित पाठ को मूल के समकक्ष स्थापित किया जाता है।ज्ञानात्मक साहित्य का अनुवाद तथ्यात्मक स्पष्टता और अर्थशुद्धता पर आधारित होता हैजबकि सृजनात्म-क साहित्य का अनुवाद भाव, कल्पना और सौंदर्य के पुनसृजन की माँग करता है। इस कारण सृजनात्मक अनुवाद अपेक्षाकृत अधिक जटिल होता है। कविता, कथा और नाटक जैसी विधाओं में भाव, बिंब और प्रतीक की भूमिका निर्णायक होती हैजिन्हें लक्ष्य भाषा में समान प्रभाव के साथ प्रस्तुत करना चुनौतीपूर्ण कार्य है।इस संदर्भ में साहित्यिक अनुवाद को कहा जाता है 'पुनसृजन', जहाँ अनुवादक मूल रचना की आत्मा को सुरक्षित रखते हुए लक्ष्य भाषा में उसकी नई सृजना करता है। अनुवादक का कार्य दो भाषाओं और संस्कृतियों के बीच सेतु बनना है। जब अनुवाद को एक सांस्कृतिक और सर्जनात्मक कर्म के रूप में समझा जाता है, तभी वह सार्थक, पठनीय और प्रभावशाली बन पाता है।

3. 6 सृजनात्मक औरज्ञानविज्ञान साहित्यानुवाद में समानता और विषमता के आयाम-

मानव सभ्यता के विकास के साथसाथ मनुष्य द्वारा अर्जित ज्ञान और अनुभूति का विशा-ल भंडार साहित्य के रूप में सुरक्षित होता आया है। यह साहित्य दो प्रमुख धाराओं में प्रवाहित होता हैविज्ञान या ज्ञानात्मक साहित्य और -ज्ञान - सृजनात्मक साहित्य। ज्ञानात्मक साहित्य का संबंध मनुष्य की बौद्धिक जिज्ञासा, वैज्ञानिक चेतना और वैचारिक विकास से होता हैजबकि सृजनात्मक साहित्य मानवीय संवेदना, भावनाओं और कल्पनाशील अनुभूतियों की अभिव्यक्ति करता है। इन्हीं दो धाराओं के अनुरूप साहित्यानुवाद भी ज्ञानात्मक अनुवाद और सृजनात्मक अनुवाद के रूप में सामने आता है।

हालाँकि दोनों प्रकार के अनुवादों के उद्देश्य और प्रकृति भिन्न हैं, फिर भी उनके बीच कुछ मूलभूत समानताएँ और स्पष्ट असमानताएँ पाई जाती हैं।

समानता

- ज्ञानात्मक और सृजनात्मक साहित्य के अनुवाद में पहली और सबसे महत्वपूर्ण समानता अनुवाद की मूल परिभाषा से जुड़ी है। अनुवाद का तात्पर्य एक भाषा में निहित अर्थ, विचार और भाव को दूसरी भाषा में निकटतम सहज समतुल्य के रूप में प्रस्तुत करना है। यह सिद्धांत ज्ञानात्मक और सृजनात्मक दोनों प्रकार के साहित्य पर समान रूप से लागू होता है।
- उदाहरण के लिए" -अंग्रेज़ी का वाक्य-Education shapes human personality."का अनुवादशिक्षा मानव " व्यक्तित्व का निर्माण करती है।संप्रेषण को -किया जाएगा। यहाँ शब्दशः अनुवाद न करते हुए अर्थ" प्राथमिकता दी गई है। यही सिद्धांत कविता, कहानी या नाटक के अनुवाद में भी लागू होता है।
- दूसरी समानता भाषा की संरचना और व्याकरणिक व्यवस्था से संबंधित है। प्रत्येक भाषा की अपनी वाक्य-संरचना, विरामविन्यास होता है। अनुवादक को चाहे वह वैज्ञानिक लेख का -चिह्नों की परंपरा और अनुच्छेद-अनुवाद कर रहा हो या कविता का, इन संरचनात्मक तत्वों का समान रूप से ध्यान रखना पड़ता है।उदाहरण के तौर परअंग्रेज़ी में-Subject + Verb + Objectका क्रम सामान्य है"—The teacher explained the concept."जिसका हिंदी अनुवाद होगा"-शिक्षक ने अवधारणा को समझाया।"
- तीसरी समानता संप्रेषण से जुड़ी है। अनुवाद का प्रमुख उद्देश्य पाठक तक आशय को स्पष्ट और सहज रूप में पहुँचाना है। यदि अनुवादक मूल लेखक के अभिप्राय को सही ढंग से नहीं समझतातो ज्ञानात्मक साहित्य में अर्थ-भंग हो जाता है।-दोष उत्पन्न होता है और सृजनात्मक साहित्य में भाव
- चौथी समानता शैली के संरक्षण में दिखाई देती है। दोनों ही प्रकार के अनुवादों में यह अपेक्षा की जाती है कि मूल लेखक की अभिव्यक्तिशैली यथासंभव बनी रह-े। उदाहरण के लिएयदि मूल अंग्रेज़ी पाठ सरल और सहज -हैतो हिंदी अनुवाद अनावश्यक रूप से संस्कृतनिष्ठ या जटिल नहीं होना चाहिए।
- पाँचवीं समानता पाठक वर्ग के विचार से जुड़ी है। अनुवादक को यह ध्यान रखना होता है कि अनूदित पाठ किस स्तर के पाठकों के लिए है। बालपाठकों- के लिए लिखे गए ज्ञानात्मक लेख और बालदोनों की भाषा -कविता-सरल होनी चाहिए।

विषमता

इन समानताओं के बावजूद ज्ञानात्मक और सृजनात्मक साहित्य के अनुवाद में अनेक गहरे अंतर भी दिखाई देते हैं-

- सबसे बड़ा अंतर विषयवस्तु के स्तर पर है। ज्ञानात्मक साहित्य तथ्य-, सिद्धांत और सूचनाओं पर आधारित होता है। इसके विपरीत, सृजनात्मक साहित्य भाव, अनुभूति और कल्पना पर आधारित होता है। तथ्य मूर्त और निश्चित होते हैं, जबकि अनुभूति अमूर्त और तरल होती है।उदाहरण के लिए" -Water boils at °100C." का हिंदी अनुवाद होगा" -पानी डिग्री सेल्स 100ियस पर उबलता है।यहाँ कोई भावात्मक छूट संभव नहीं है।वहीं दूसरी " ओर, कविता की पंक्ति"My heart is a wandering bird."का अनुवादमेरा हृदय भटका हुआ पंछी " प्रतीकात्मक अर्थ ग्रहण करते हैं। 'पंछी' और 'हृदय' किया जा सकता है। यहाँ"है।
- दूसरा अंतर अनुवादक की मानसिकता से जुड़ा है। ज्ञानात्मक साहित्य के अनुवादक के लिए विषयविशेष का -"कंप्यूटर विज्ञान में प्रयुक्त-ज्ञान अनिवार्य होता है। उदाहरण के लिएvirus"का अनुवाद करना संदर्भ के 'विषाणु' अनुसार उचित या अनुचित हो सकता है। वहींसृजनात्मक साहित्य में अनुवादक की कल्पनाशीलता और सौंदर्यबोध अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है।
- तीसरा अंतर अनुवाद की प्रेरणा में है। ज्ञानात्मक साहित्य का अनुवाद ज्ञानविस्तार के उद्देश्य -प्रसार और सूचना-से किया जाता है। इसके विपरीत, सृजनात्मक साहित्य का अनुवाद अनुवादक की आंतरिक प्रेरणा और सांस्कृतिक संवाद की भावना से किया जाता है।

- चौथा अंतर जोड़नेछोड़ने की स्वतंत्रता में दिखाई देता। ज्ञानात्मक साहित्य में तथ्यात्मक शुद्धता सर्वोपरि होती - है, इसलिए इसमें किसी भी प्रकार का जोड़घटाव त्रुटि माना जाता है। जबकि सृजनात्मक साहित्य में भावात्मक - प्रभाव बनाए रखने के लिए सीमित स्वतंत्रता स्वीकार्य होती है।
- पाँचवाँ अंतर भाषा"-प्रवृत्ति का है। ज्ञानात्मक साहित्य की भाषा एकार्थी होती है। जैसे-force"= बलजबकि सृजनात्मक साहित्य में शब्द बहुअर्थी होते हैं।जैसे"-आगक्रोध", प्रेम, विद्रोह या विनाश सभी का संकेत हो सकती है।

इसी कारण सृजनात्मक साहित्य का अनुवाद मात्र अनुवाद न होकर पुनसृजन)Transcreation) कहलाता है।

अपनी प्रगति जांचें

प्रश्न 1. अनुवाद को सर्जनात्मक बनाने के लिए अनुवादक में किन गुणों का होना आवश्यक है?

प्रश्न 2. लोकोक्तियाँ सर्जनात्मक अनुवाद में किस प्रकार सहायक होती हैं?

प्रश्न 3. सर्जनात्मक साहित्य का अनुवाद ?क्यों कहा जाता है 'पुनसृजन'

प्रश्न 4. ज्ञानात्मक साहित्य में जोड़घटाव क्यों स्वीकार्य नहीं है-?

प्रश्न 5. ज्ञानात्मक और सर्जनात्मक साहित्य के अनुवाद में शैली की भूमिका में क्या अंतर है?

3. विज्ञान-सृजनात्मक और ज्ञान 7साहित्यानुवाद

अनुवाद एक जटिल और बहुआयामी प्रक्रिया है। इसे केवल शब्दों का रूपांतरण नहीं कहा जा सकता। वास्तव में अनुवादस्रोत भाषा में निहित अर्थ, भाव और शैली को लक्ष्य भाषा में उनके निकटतम सहज समतुल्य रूप में पुनः प्रस्तुत करने का प्रयास है। यह कार्य अपने आप में कठिन हैकिंतु सृजनात्मक साहित्य के अनुवाद में यह कठिनाई और अधिक बढ़ जाती है।

सृजनात्मक साहित्य मूलतः होता है। इसमें भावनाएँ 'आनंद का साहित्य', कल्पनाएँ, अनुभूतियाँ तथा सौंदर्यबोध - प्रमुख भूमिका निभाते हैं। बिंबों, प्रतीकों, लक्षणा और व्यंजना के माध्यम से व्यक्त ये सूक्ष्म तत्त्व रचना को बहुस्तरीय अर्थ प्रदान करते हैं। अनुवादक के सामने सबसे बड़ी चुनौती यह होती है कि वह इन अनुभूतियों को लक्ष्य भाषा के पाठक के भीतर उसी प्रकार उद्बुद्ध कर सकेजैसा मूल रचना में संभव हुआ है।

उदाहरण के लिए किसी-कविता में केवल प्राकृतिक दृश्य नहीं होताबल्कि वह जीवन की 'डूबता हुआ सूरज' ' अंत का संकेत भी हो सकता है। यदि अनुवादक इसे केवल-क्षणभंगुरताविरह या आशाsetting sun' के रूप में यांत्रिक ढंग से प्रस्तुत कर देतो भाव स्तर पर रचना कमजोर पड़ सकती है। ऐसे में अनुवादक-को लक्ष्य भाषा में ऐसा प्रतीकात्मक समतुल्य खोजना पड़ता हैजो समान अनुभूति जगा सके।

डॉनगेंद्र ने सृजनात्मक साहित्य के अनुवाद की इस जटिलता को रेखांकित करते हुए कहा है कि भाव और कल्पना . का संप्रेषण नहींबल्कि उद्बोधन किया जा सकता है। साहित्यकार पाठक के चित्त मंे अपनी अनुभूति को स्थानांतरित नहीं करताबल्कि उसकी समानांतर अनुभूति को जाग्रत करता है। इसलिए अनुवादक का दायित्व भी यही होता है कि वह मूल अनुभूति के समानांतर अनुभूति लक्ष्य भाषा में उत्पन्न करे।इसी संदर्भ में अनेक विद्वानों ने यह मत व्यक्त किया है कि सृजनात्मक साहित्य का अनुवाद वस्तुतः अनुवाद नहींबल्कि पुनसृजन या ट्रांसक्रिएशन होता ह। जब अनुवादक किसी कहानी, कविता या उपन्यास का अनुवाद करता है, तो वह अनजाने में अपनी भाषिक संस्कारिता, सांस्कृतिक अनुभव और

संवेदनात्मक पूँजी को भी उसमें जोड़ देता है। परिणामस्वरूप अनूदित रचना लक्ष्य भाषा में मूल रचना का नया जीवन ग्रहण करती है।

काव्यानुवाद के क्षेत्र में यह तथ्य और भी अधिक स्पष्ट हो जाता है। कविता को सृजनात्मक साहित्य का सार कहा गया हैजिसमें भाषा अत्यंत सांद्र, बिंबात्मक और अनन्य होती है। कविता की यह अनन्यता उसे शब्दशः अनूदित किए जाने से रोकती है। फिर भी इसका यह अर्थ नहीं कि कविता का अनुवाद सर्वथा असंभव है। यह असंभव न होकर दुस्साध्य अवश्य है।सृजनात्मक साहित्य के अनुवाद में अनुवादक को पहले सहृदय पाठक बनकर रचना को आत्मसात करना पड़ता है। इसके बाद वह सर्जक की भूमिका में उतरकर उस रचना की लक्ष्य भाषा में पुनः सृष्टि करता है। इस प्रक्रिया में वह केवल शब्दार्थ तक सीमित नहीं पात्रों की मानसिकता, प्रतीकात्मकता और अंतर्निहित अर्थस्तर-ोां तक पहुँचने का प्रयास करता है।

यह पुनसृजन मौलिक लेखन नहीं है और न ही इसमें अनुवादक को यह स्वतंत्रता है कि वह मूल रचना की आत्मा को नष्ट कर दे। सफल सृजनात्मक अनुवाद वही है जिसमें मूल रचना का भाव, शैली और सौंदर्य यथासंभव सुरक्षित रहता है। अतःसृजनात्मक साहित्य का अनुवाद संभव तो है, लेकिन यह अत्यंत चुनौतीपूर्ण और सृजनात्मक प्रतिभा की माँग करने वाला कार्य है।

ज्ञानविज्ञान साहित्यानुवाद की संभावना को लेकर लंबे समय तक यह धारणा रही है कि वैज्ञानिक और तकनीकी – वैज्ञानिक अध्ययन और व्यावहारिक -साहित्य का अनुवाद अत्यंत कठिन या लगभग असंभव है। किंतु आधुनिक भाषा विज्ञान साहित्यानुवाद–अनुभव यह सिद्ध करते हैं कि ज्ञानन केवल संभव हैबल्कि अत्यंत आवश्यक भी है। ज्ञानविज्ञान – साहित्य का मूल उद्देश्य तथ्यों, अवधारणाओं और सूचनाओं का स्पष्ट संप्रेषण होता हैऔर यही तत्व अनुवाद को व्यवहार्य बनाते हैं।ज्ञानविज्ञान आधारित साहित्य में भाषा का प्रयोग प्रायः सीधा–, तार्किक और एकार्थक होता है। इसमें भावात्मकता या लाक्षणिकता का स्थान अपेक्षाकृत कम होता है। इसलिए यदि अनुवादक को स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा का समुचित ज्ञान हो तथा विषय से संबंधित पारिभाषिक शब्दावली पर पकड़ होतो सटीक और प्रभावी अनुवाद संभव है। उदाहरण के लिएचिकित्सा-, भौतिकी, कंप्यूटर विज्ञान या समाजशास्त्र जैसे विषयों की सामग्री का अनुवाद आज विश्व की अनेक भाषाओं में सफलतापूर्वक किया जा रहा है।

हालाँकि ज्ञानविज्ञान साहित्यानुवाद में कुछ चुनौतियाँ अवश्य आती हैं । कई बार लक्ष्य भाषा में उपयुक्त – पारिभाषिक शब्दों का अभाव होता हैजिससे अनुवादक को नए शब्द गढ़ने या व्याख्यात्मक अनुवाद का सहारा लेना पड़ता है। इसके अतिरिक्त, सांस्कृतिक और शैक्षणिक भिन्नताएँ भी अनुवाद प्रक्रिया को प्रभावित करती हैं।फिर भीइन सीमाओं के बावजूद यह स्पष्ट है कि ज्ञानज–विज्ञान साहित्यानुवाद पूर्णतः संभव है। विषय–ज्ञान, भाषिक दक्षता और वैज्ञानिक दृष्टिकोण के समन्वय से अनुवादक ज्ञानविज्ञान साहित्य को व्यापक पाठक वर्ग तक सफलतापूर्वक – पहुँचा सकता है।

3.8 सारांश

प्रस्तुत इकाई के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि साहित्यिक अनुवाद एक अत्यंत व्यंजक, सूक्ष्म और सृजनात्मक प्रक्रिया है। इसके तात्विक पक्षों को समझे बिना सृजनात्मक अनुवाद संभव नहीं हो सकता। अनुवाद की प्रक्रिया का पहला और अनिवार्य चरण हैजो अनुवाद का वास्तविक प्रस्थान बिंदु माना जाता है। जब तक अनुवादक मूल कृति 'पाठन-पाठ' को मनोयोगपूर्वक पढ़कर आत्मसात् नहीं करतातब तक वह उसके भाव, लय और अंतर्निहित अर्थस्तरों को ग्रहण नहीं कर - की प्रक्रिया से गुजरती है। इस चरण में अनुवादक का मुख्य दायित्व यह होता 'भाषांतरण' पाठन के बाद कृति-सकता।पाठ भाष-यदि मूल रचना में लोक-है कि वह मूल पाठ के भाषाई स्वत्व की रक्षा करे। उदाहरण के लिएा, क्षेत्रीय शब्द या

विशिष्ट वाक्यविन्यास प्रयुक्त हैं-, तो अनुवादक को लक्ष्य भाषा में उनके समतुल्य रूप तलाशने होते हैंन कि उन्हें साधारण या सपाट भाषा में बदल देना चाहिए।

इसके उपरांत ज-का चरण आता हैजिसमें अनुवादक अनूदित पाठ को मूल कृति के भाव 'प्रतिस्थापन'गत से मिलाकर देखता है। यहाँ यह जाँचा जाता है कि अनुवाद मूल की आंतरिक संरचना, कथ्य और संवेदना से संगति बनाए हुए है या नहीं। उदाहरणस्वरूपयदि किसी कहानी में प्रतीकात्मक संकेतों के माध्यम से सामाजिक विडंबना व्यक्त की गई हैतो - अनुवादक को यह देखना होता है कि वही प्रभाव लक्ष्य भाषा में भी उत्पन्न हो रहा है या नहीं।अनुवाद 'तुलनात्मक परीक्षा' दोष -सामने रखकर उनके गुण-की अंतिम और निर्णायक अवस्था है। इस चरण में मूल पाठ और अनूदित पाठ को आमने का मूल्यांकन किया जाता है। इस प्रक्रिया के दौरान अनुवादक यह सुनिश्चित करता है कि कहीं अर्थ का अनावश्यक ह्रासविस्तार या विकृति तो नहीं हो गई है।

इस पूरी प्रक्रिया में यह आवश्यक है कि अनुवादक मूल लेखक के मानस को समझे और कृति को अपने भीतर आत्मसात् करे। साथ हीवह लक्ष्य भाषा और संस्कृति की परिस्थितियों को भी ध्यान में रखेताकि अनूदित रचना पाठकों के लिए स्वाभाविक और संप्रेषणीय बन सके। प्रस्तुत इकाई में यह भी स्पष्ट किया गया है कि मुहावरों, लोकोक्तियों, शैली, कथ्य और रचना की समग्र लय को समझे बिना साहित्यिक अनुवाद संभव नहीं है।इसके अतिरिक्तविभिन्न साहित्यिक विधाओंजैसे कविता, कहानी, उपन्यास और नाटकके अनुवाद में आने वाली समस्याओं और जटिलताओं पर भी विचार किया गया है। अनुवाद और रूपांतरण के अंतर को स्पष्ट करते हुए यह बताया गया है कि साहित्यानुवाद केवल भाषिक क्रिया न होकर एक सांस्कृतिक रूपांतरण भी है। उदाहरण के लिएविशेष से जुड़े पर्व या प-किसी समाज -रंपरा का अनुवाद करते समय अनुवादक को उसके सांस्कृतिक संदर्भ को भी लक्ष्य भाषा में स्पष्ट करना पड़ता है।

साहित्य को सामान्यतः सृजनात्मक और ज्ञानात्मक साहित्य के रूप में विभाजित किया जाता है। यद्यपि 'साहित्य' शब्द का प्रयोग प्रायः सृजनात्मक साहित्य के लिए हीकिया जाता है, फिर भी मानव जीवन के सर्वांगीण विकास में दोनों प्रकार के साहित्य का समान महत्व है। दोनों के स्वरूप और उद्देश्यों में भिन्नता होने के कारण इनके अनुवाद की प्रक्रिया, दृष्टिकोण और अपेक्षाएँ भी भिन्न हो जाती हैं।ज्ञानात्मक साहित्य की तुलना में सृजनात्मक साहित्य का अनुवाद अधिक कठिन माना जाता है और सृजनात्मक साहित्य की विभिन्न विधाओं में काव्यानुवाद को सबसे अधिक जटिल और दुःसाध्य माना गया है। इसके बावजूद, अनुवादक ही वह सेतु है जो मानव के बौद्धिक और मानसिक विकास के लिए इन दोनों प्रकार के साहित्य को विभिन्न भाषाओं और संस्कृतियों तक पहुँचाता है।

✓ 3.9 प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा)

प्रश्न का उत्तर 1 : सृजनात्मक अनुवाद के लिए अनुवादक में दोनों भाषाओं का ज्ञान, संबंधित साहित्यिक विधा की समझ, सांस्कृतिक संवेदनशीलता और रचनाकार के मानस को आत्मसात करने की क्षमता आवश्यक है। बिना इन गुणों के अनुवाद केवल भाषिक रूपान्तरण बनकर रह जाता है।

प्रश्न का उत्तर 2 : लोकोक्तियाँ समाज के सामूहिक अनुभव और सांस्कृतिक चेतना की अभिव्यक्ति होती हैं। इनके माध्यम से अनुवाद में लोकजीवन और सामाजिक यथार्थ का समावेश होता है। सही लोकोक्तियों का चयन अनुवाद को सांस्कृतिक रूप से प्रामाणिक बनाता है।

प्रश्न का उत्तर 3 : सृजनात्मक साहित्य का अनुवाद पुनसृजन इसलिए कहा जाता है क्योंकि अनुवादक केवल शब्दों का रूपांतरण नहीं करता, बल्कि मूल रचना की भावनात्मक और सौंदर्यात्मक अनुभूति को लक्ष्य भाषा में नए रूप में जीवित करता है। इसमें अनुवादक की भाषिक संस्कारिता और सृजनात्मक प्रतिभा भी सम्मिलित होती है।

प्रश्न का उत्तर 4 : ज्ञानात्मक साहित्य तथ्य और यथार्थ पर आधारित होता है। इसमें किसी भी प्रकार का जोड़-घटाव अर्थ-विकृति उत्पन्नकर सकता है। अनुवादक का दायित्व मूल सूचना को ज्यों का त्यों लक्ष्य भाषा में प्रस्तुत करना होता है। इसलिए यहाँ सृजनात्मक स्वतंत्रता की कोई गुंजाइश नहीं होती।

प्रश्न का उत्तर 5 : ज्ञानात्मक साहित्य में तथ्य और विचार की प्रधानता होती है, इसलिए वहाँ शैली गौण हो जाती है। इसके विपरीतसृजनात्मक साहित्य में शैली भाव, बिंब और सौंदर्य को अभिव्यक्त करती है। अतः सृजनात्मक साहित्य में शैली का अनुवाद अधिक महत्वपूर्ण और चुनौतीपूर्ण होता है।

3.10 अधिक जानने के लिए पढ़ें

- दुबे, शिवकुमार ,(2010) सिद्धांत : सृजनात्मक अनुवाद ,और व्यवहारमध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी। :भोपाल ,
- नगेंद्र, डॉ(.संपा) .,)2001(, अनुवाद विज्ञान नेशनल पब्लिशिंग हाउस। :नई दिल्ली ,सिद्धांत और अनुप्रयोग :
- मिश्र, विद्यानिवास ,(2002)लोकभारती प्रकाशन। :इलाहाबाद ,भारतीय साहित्य और अनुवाद ,
- रांग्रा, रणवीर ,(2004)राजकमल प्रकाशन। :नई दिल्ली ,समस्याएँ और समाधान : कथा साहित्य का अनुवाद ,
- वर्मा, रामविलास ,(1998)वाणी प्रकाशन। :नई दिल्ली ,साहित्य और अनुवाद ,
- सिंह, नामवर ,(2007)राजकमल प्रकाशन। :नई दिल्ली ,साहित्य की पहचान ,
- Bassnett, S. (2014) ,Translation Studies (4th ed.) ,London: Routledge.
- Catford, J. C. (1965),A Linguistic Theory of Translation ,London: Oxford University Press.
- Nida, E. A. (1964) ,Toward a Science of Translating ,Leiden: E. J. Brill.
- Newmark, P. (1988) ,A Textbook of Translation ,London: Prentice Hall.
- Toury, G. (1995) ,Descriptive Translation Studies and Beyond ,Amsterdam: John Benjamins Publishing Company .

3.अभ्यास प्रश्न 11

-संक्षिप्त प्रश्नों के उत्तर लिखिए (क)

1. सृजनात्मक और ज्ञानात्मक साहित्य के स्वरूपगत अंतर को उदाहरण सहित समझाइए।
2. ज्ञानात्मक और सृजनात्मक साहित्य के अनुवाद में पाई जाने वाली समानताओं का विवेचन कीजिए।
3. सृजनात्मक साहित्य के अनुवाद को पुनसृजन)Transcreation) क्यों कहा जाता है ? विद्वानों के मतों के आधार पर स्पष्ट कीजिए।
4. काव्यानुवाद को साहित्यिक अनुवाद की सबसे कठिन विधा क्यों माना जाता है? कारण स्पष्ट कीजिए।
5. साहित्यिक अनुवाद में भाषा की लाक्षणिकता और व्यंजनात्मकता का क्या महत्व है?
6. साहित्यानुवाद को सांस्कृतिक रूपांतरण क्यों कहा जाता है? अपने शब्दों में समझाइए।
7. सृजनात्मक साहित्य के अनुवाद में जोड़नेछोड़ने की सीमा पर आलोच-नात्मक टिप्पणी कीजिए।

-निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए (ख)

1. ज्ञानात्मक साहित्य के अनुवाद में विषयज्ञान का महत्व स्पष्ट कीजिए।-

2. सृजनात्मक और ज्ञानात्मक साहित्य के अनुवाद में भाषाप्रवृत्ति के अंतर को स्पष्ट कीजिए।-
3. साहित्यिक अनुवाद में मुहावरों और लोकोक्तियों के अनुवाद की समस्याओं पर प्रकाश डालिए।
4. 'अनुवाद सरल कार्य नहीं है'- इस कथन की सृजनात्मक साहित्य के संदर्भ में समीक्षा कीजिए।
5. सृजनात्मक अनुवाद की सफलता या विफलता किन कारकों पर निर्भर करती है?
6. ज्ञानात्मक साहित्य के अनुवाद में एकार्थता बनाए रखना क्यों आवश्यक है?
7. सृजनात्मक और ज्ञानात्मक साहित्य मानव जीवन के विकास में कैसे सहायक हैं? अनुवाद की भूमिका स्पष्ट कीजिए।

शब्दकोश-

1. ज्ञानात्मकतथ्यपरक :, बौद्धिक, सूचनात्मक, शिक्षाप्रद।
2. पुनसृजनपुनर्रचना :, नवसर्जना, ट्रांसक्रिएशन, पुनर्निर्माण।
3. पर्यायवाची :भावुक, संवेदनशील, रसिक, भावग्राही।
4. लाक्षणिकतासंकेतार्थ :, प्रतीकात्मकता, व्यंजना, सांकेतिकता।
5. व्यंजनात्मकताध्वन्यर्थ :, भावसूचना-, सांकेतिक अर्थ, निहितार्थ।
6. प्रतीकचिह्न :, संकेत, रूपक, बोधक।
7. प्रतिस्थापनस्थानापन्न :, विकल्प, प्रतिसंस्थापन, रूपांतरण।
8. शैली :लेखनढंग-, अभिव्यक्तिपद्धति-, भाषाशैली, कथनशैली-।
9. अंतर्ध्वनिनिहितार्थ :, गूढ़ार्थ, संकेतार्थ, भावध्वनि।
10. पठनीयसुलभ :, रुचिकर, ग्राह्य, बोधगम्य।

*** ***** ***

इकाई 4 - काव्यानुवाद

इकाई की रुपरेखा

4.1 उद्देश्य
4. 2 प्रस्तावना
4. 3 काव्य का अर्थ एवं स्वरूप अनुवाद :
4. 4 काव्य और अनुवाद का अन्तःसम्बन्ध
4. 5 काव्यनुवाद की चुनौतियाँ
4.6 काव्यनुवाद में ध्यान देने वाले बिंदु
4.7 काव्यनुवाद और सृजन
4.8 सारांश
4. 9 प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा)
4. 10 अधिक जानने के लिए पढ़ें
4. 11 अभ्यास प्रश्न

4.1 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन से आप-

- काव्य का अर्थ एवं स्वरूप के बारे में जान सकेंगे।
- काव्य और अनुवाद के अन्तःसंबंध के बारे में ज्ञान प्राप्त करेंगे।
- काव्यनुवाद के चुनौतियों के विविध पक्ष का जान सकेंगे।
- काव्यनुवाद के समय ध्यान देने वाले विभिन्न बिन्दुओं को जानेंगे।
- काव्यनुवाद और सृजन प्रक्रिया से अवगत होंगे।

4. 2 प्रस्तावना

अधिकतर विश्व का प्रारम्भिक साहित्य मुख्य रूप से पद्य रूप में रचा गयाऔर काव्य लंबे समय तक साहित्य की सबसे प्रभावी विधा के रूप में प्रतिष्ठित रहा। वास्तव में एक लम्बे दौर तक साहित्य शब्द का प्रयोग काव्य के लगभग समानार्थी रूप में होता रहाक्योंकि अधिकांश रचनाएँ काव्यात्मक शैली में ही निर्मित की जाती थीं। हालांकि भारतीय परंपरा में टीकाएँ, भाष्य तथा व्याख्याविधाओं का सुविकसित रूप -संबंधी ग्रंथ गद्य में लिखे जाने की धारा भी मौजूद थीपरंतु गद्य-आधुनिक काल की उपज माना जाता है। आधुनिक युग में पहुँचकर ही साहित्य की अवधारणा का दायरा व्यापक परंपरा अत्यंत विस्तृत रह-हुआ।काव्य की सृजनीइसलिए उसके अनुवाद भी बड़े पैमाने पर किए गए। प्राचीन महाकाव्यकार होमर हों या मिल्टन, कीट्स, शेली, वर्ड्सवर्थ तथा रॉबर्ट फ्रॉस्टसभी द्वारा रचित काव्य साहित्य का व्यापक -अनुवाद हुआ; इसी तरह आधुनिक युग में मेरी ऑलिवर, माया एंजेलो और एमिली डिकिंसन की काव्यओं का भी दुनिया भर में विपुल अनुवाद किया गया। अनुवाद की सैद्धांतिक चर्चाओं में भी मुख्य रूप से काव्यअनुवादसे जुड़ी दिक्कतों-, संभावनाओं और अनुवादकों द्वारा अपनाई गई विविध कार्यरणनीतियों को केंद्र में रखा गया।-

प्रस्तुत इकाई में आपका अध्ययन मुख्य रूप से काव्य के अनुवाद से जुड़े विभिन्न सवालों और पहलुओं पर केंद्रित रहेगा। यहाँ काव्य की प्रकृति क्या है, उसकी मूल विशेषताएँ क्या हैंसाहित्य में उसका स्थान क्यों महत्त्वपूर्ण हैइन - अनुवादकी कठिनाइयों तथा विविध परिस्थितियों में अनुवादकों द्वारा-साथ काव्य-बातों के साथअपनाई जाने वाली विभिन्न पद्धतियों पर विस्तार से चर्चा की जाएगी। इस प्रकार आप काव्य और उसके अनुवाद से सम्बंधित अनेक आयामों को अधिक स्पष्ट और व्यापक रूप में समझ सकेंगे।

4. 3 काव्य का अर्थ एवं स्वरूपअनुवाद :

काव्य मनुष्य में मानवीय कल्पना व प्रेम का भाव विकसित करता है । निराश जनमानस में आशा का संचार करता है । मनुष्य जीवन को सरस बनता है । मनुष्य अपने अनुभवों और अनुभूतियों को किसी न किसी रूप में व्यक्त करना चाहता है। कई बार वह अपने भावों को सीधे शब्दों में नहीं कह पाता, तब संगीत, रंग, संकेत या अभिनय का सहारा लेता है। काव्य भी भावाभिव्यक्ति का ऐसा ही सशक्त माध्यम है। इसमें सौंदर्य और भावना की सहज प्रस्तुति होती हैजो पाठक के मन को सरलता से स्पर्श करती है। कविता साहित्य की अत्यंत प्राचीन विधा है और अधिकांश प्राचीन भारतीय ग्रंथ पद्य रूप में ही रचे गए हैं।

कविता की परिभाषा और स्वरूप को समझने का प्रयास प्राचीन काल से होता आया है। संस्कृत काव्यशास्त्र में कहा गया है— "शब्दार्थौ सहितौ काव्यम्", अर्थात शब्द और अर्थ के सुंदर सामंजस्य को काव्य कहा जाता है। इसी आधार पर आचार्यों ने काव्य की आत्मा खोजने का प्रयास किया। किसी ने रस को, किसी ने ध्वनि को, किसी ने अलंकार, रीति या वक्रोक्ति को कविता का मूल तत्त्व माना।हिंदी साहित्य के आधुनिक काल में कविता की परिभाषा में परिवर्तन आया। अलंकार और छंद का बंधन ढीला पड़ गया और मुक्त छंद की कविता प्रचलित हुई। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने कविता को मानव-हृदय से जोड़ते हुए कहा-"हृदय की मुक्ति की साधना के लिए मनुष्य की वाणी जो शब्दविधान करती - आई हैउसे कविता कहते हैं।" उनके अनुसार कविता मनोवेगों को जाग्रत करती है और वस्तुओं को मूर्त रूप में सामने ले - आती है।आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी ने भी कवित ा को भावप्रधान मानते हुए कहा-"कविता का लोक प्रचलित अर्थ वह वाक्य है, जिसमें भावावेश हो, कल्पना हो, पदलालित्य हो तथा प्रयोजन की सीमा समाप्त हो चुकी हो।" स्पष्ट है कि कविता में भावना, कल्पना और सौंदर्य का विशेष महत्त्व होता है।

काव्य के तत्त्वों को समझने के लिए उसे दो भागों में बाँटा गया हैभावपक्ष और कलापक्ष। भावपक्ष में कवि का - कथ्य, रस और विचारदृष्टि आती है। कवि कविता के माध्यम से क्या कहना चाहता हैउसकी संवेदना का स्रोत क्या है और - यह सब भावपक्ष में शामिल होता है। रस पाठक के-परंपरा से जुड़ा है-वह किस चिंतन भीतर छिपे भावों को जाग्रत करता है और कविता से तादात्म्य स्थापित कराता है। कल्पना भी भावपक्ष का अनिवार्य अंग हैजिसके माध्यम से असंभव को भी सजीव बना दिया जाता है।

कलापक्ष कविता की अभिव्यक्तिशैली-शैली से संबंधित है। इसमें भाषा-, छंद, अलंकार, प्रतीक और बिंब आते हैं। कविता की भाषा संक्षिप्त, लयात्मक और प्रभावपूर्ण होती है। आधुनिक कविता में छंद और अलंकार अनिवार्य नहीं रह गए, किंतु प्रतीक और बिंब का प्रयोग विशेष रूप से दिखाई देता है। प्रतीक के माध्यम से एक वस्तु के द्वारा दूसरी बात कही जाती हैजबकि बिंब भाषा के सहारे स्थिति का चित्र उपस्थित करता है। मूलतः कविता भाव और कला दोनों के संतुलन से निर्मित होती है। कविता को सही रूप में समझने के लिए उसके सभी अवयवों पर ध्यान देना आवश्यक हैक्योंकि यही तत्त्व मिलकर कविता को प्रभावशाली और स्मरणीय बनाते हैं।

कविता का अनुवाद साहित्य की उन विधाओं में आता है जिसे सबसे उलझनभरा और जटिल समझा गया है। कई अनुवादक और विचारक तो इसे लगभग असंभव कार्य घोषित कर देते हैं। यदि कोई यह कह दे कि कविता का अनुवाद करना कठिन नहींबल्कि असंभव हैतो भी यह अतिशयोक्ति नहीं लगेगी। रॉबर्ट फ्रॉस्ट की प्रसिद्ध उक्ति है कि कविता वही "

उनके " वहींरूसी कवि जोसेफ ब्रॉडस्की का दृष्टिकोण इससे बिल्कुल भिन्न है "होते खो जाती है।-है जो अनुवाद होते .के.तमिल संगम साहित्य के अनुवादक और कवि ए "अनुसार कविता वह है जो अनुवाद के पश्चात भी शेष बची रहती है। रामानुजन भी कविता के अनुवाद को स्वभावतः असंभव मानते हैं।दरअसल, जो विद्वान कविता के अनुवाद को असंभव समझते हैंवे अनुवाद को केवल ज्योंत्यों रूपांतरण तक सीमित कर देते हैं। वे यह नहीं समझते कि अनुवाद अनेक बार -का-कर्म-नया रचना—पुनर्सृजन या नवसृजन—का रूप ले लेता है। भाषा, शिल्प और अभिव्यक्ति की कठोरता ही उन्हें अनुवाद को असंभव प्रतीत करवाती है। पर यदि हम भारतीय भक्ति परंपरा की ओर देखेंतो पाएँगे कि रामकथा, श्रीमद्भागवत जैसे ग्रंथों के कई भाषाई संस्करण सीधे अनुवाद नहींबल्कि मूल कथानक पर आधारित नवीन रचनात्मक रूपांतरण हैं। उत्तर-आधुनिक अनुवादसिद्धांतकार लेफेवेयर इसे rewriting और सुजित मुखर्जी इसे new writing कहते हैं।

ऑक्टावियो पाज़ का मानना है कि अनुवाद किसी भी रचना को उसके मूल पाठ की सीमाओं से मुक्त कर देता है। वे कहते हैं कि कविता वह है जो रूपांतरित हो चुकी है। इसी विचार को आगे बढ़ाते हुए वॉल्टर बेंजामिन अपने संग्रह The Task of the Translator में लिखते हैं कि अनुवाद किसी रचना का उत्तरजीवन)afterlife) होता है। जब अनुवादक किसी कृति को उसके समय, स्थान और सांस्कृतिक परिधियों से बाहर निकालकर नए समाज में पुनरार्पित करता है, तब वह कृति नए रूप में पुनर्जीवित हो उठती है।

चीन के आठवीं सदी के कवि ली पो की कविताओं के अनुवादक एजरा पाउंड ने इसी विचार को व्यवहार में उतारा। वे उन्नीसवीं सदी में ली पो की रचनाओं को अनुवादित कर वैश्विक साहित्य में पुनः स्थापित कर देते हैं। कविता-अनुवाद पर पाउंड का दृष्टिकोण अत्यंत सकारात्मक है। अपने निबंध How to Read a Poem में वे कविता की भाषा को तीन क्षेत्रों में बाँटते हैं(रूपक संबंधी पक्ष) मेलापोइया -, फोनोपोइया कविता) तथा लोगोपोइया (स्वर और ध्वनि का पक्ष) । पाउंड के अनुसार यदि इन तीनों में से कम से कम लोगोपो(का बौद्धिक पक्षइया अनुवाद में सुरक्षित रह जाएतो अनुवाद सार्थक माना जा सकता है।

इसी प्रकार अनुवाद सिद्धांतकार एंड्रे लेफेवेयर कविता के अनुवाद के लिए छह प्रमुख पद्धतियाँ बताते हैंसहज -अनुवाद, शाब्दिक अनुवाद, पद्य से गद्य में परिवर्तन, छंदबद्ध अनुवाद, लयआधारित अनुवाद-, ध्यनिगत अनुवाद तथा पद्य से पद्य में अनुवाद। ये पद्धतियाँ कविता की संरचना, समय, प्रयोजन और अनुवाद के लक्ष्य के अनुसार विविध विकल्प प्रदान करती हैं। पाउंड की तरह लेफेवेयर भी स्वीकार करते हैं कि कठिन से कठिन कविता का अनुवाद इन तकनीकों द्वारा संभव हो सकता है।एजरा पाउंड का यह विचार कि मेलापोइया, फोनोपोइया और लोगोपोइया तीनों का अनुवाद हो जाए तो यह आदर्श हैकिन्तु यदि ऐसा संभव न हो तो केवल लोगोपोइया का संप्रेषण भी पर्याप्त हैठीक इसी दिशा में लेफेवेयर की -पद्धतियाँ भी संकेत करती हैं।वॉल्टर बेंजामिन का कथन कि अनुवाद किसी रचना को पुनर्जीवन देता हैकविता के संदर्भ में सबसे अधिक सार्थक प्रतीत होता है। कविता को अक्सर अनुवाद के माध्यम से किसी बिल्कुल नईऔर कई बार अनजान, भाषा और संस्कृति में नया जीवन मिलता है ।

4.:काव्य और अनुवाद का अन्त:सम्बन्ध 4

ज्ञानप्रधान साहित्य के अनुवाद से जहाँ मनुष्य के विवेक और बौद्धिक क्षमताएँ विस्तृत होती हैंवहीं काव्य जैसे रागात्मक साहित्य का रूपान्तर मानव की भीतरी संवेदनाओं को निखारने और उन्हें परिमार्जित करने में अनिवार्य बन जाता है। कवि की जो अनुभूति अपने उच्चतम रूप में काव्य बनकर प्रकट होती हैउसे दूसरी भाषा में सुरक्षित रखना अनुवादक के लिए अत्यधिक चुनौतीपूर्ण होता हैक्योंकि काव्य साहित्य की सबसे सृजनशील विधा है। वास्तव में काव्य कवि की भावनात्मक दुनिया का कलात्मक रूपांतरण है। काव्यानुवाद का सबसे बड़ा लक्ष्य यह है कि विश्व की श्रेष्ठ और कालजयी रचनाएँ भाषाभेद से परे हर पाठक तक पहुँचें। इसीलिए प्रत्येक काल का साहित्यकार अनेक कठिनाइयों से जूझते हुए भी -

दूसरी भाषाओं की विलक्षण कृतियों को अपनी भाषा में रूपान्तरित कर अपने साहित्य–समाज के सामने प्रस्तुत करता रहा है।

यद्यपि काव्य–अनुवाद की परंपरा बहुत पुरानी है, फिर भी अधिकांश अनुवादक मूल रचना की सृजनात्मक ऊँचाई तक पहुँच ही नहीं पातेअधिकतर लोग केवल अनुकरण या व्याख्या की सीमाओं में घिरे रह जाते हैं। केवल कुछ दुर्लभ प्रतिभाएँ ही पुनःसर्जन की ऊँचाइयों तक पहुँचकर काव्य को नए रूप में पुनर्जीवित कर पाती हैं। विद्वानों का लगभग सर्वसम्मत मत है कि काव्यानुवाद अत्यन्त जटिल कार्य हैक्योंकि हर भाषा की साहित्यिक संवेदना अपनी विशिष्टता, अपनी ध्वनि, अपने सांस्कृतिकसंघटन तथा इतिहासबोध के कारण दूसरी भाषा में सरलता से रूपान्तरित नहीं हो पाती।भोला-नाथ तिवारी इस संदर्भ में कहते हैं कि काव्यानुवाद का उद्देश्य काव्य के निकटतम समतुल्य रूप को प्रस्तुत करना है। उनके अनुसार काव्य का अस्तित्व उन शब्दों में निहित है जिनसे वह व्यक्त होती है। शब्द मात्र अर्थवाहक न होकर अपने में स्वयं - एक ध्वनि, एक संगीत, एक संस्कार और एक सांस्कृतिक पृष्ठभूमि समेटे होते हैं।

काव्यानुवाद की प्रक्रिया में अनुवादक पहले स्रोतभाषा की कृति को पढ़कर उसका सतही और गहन दोनों स्तरों - पर अर्थ ग्रहण करता हैफिर काव्यशास्त्रीय तत्वों—जैसे बिंब, प्रतीक, अलंकार—की पहचान करता है। इसके बाद वह रसानुकूल भाषाचयन-, शब्दविन्यास और अभिव्यक्ति की अनेक संभावनाओं को परखकर उनका अनुशीलन करता हैऔर - भाषा में रूपांतरित करता है। यह कार्य कठिन इसलिए -तत्पश्चात् भावों के पुनर्व्यवस्थापन के माध्यम से काव्य को लक्ष्य बनता है कि काव्य का बड़ा हिस्सा ध्वन्यार्थ, व्यंग्यार्थ, संकेत और गूढ़ार्थ पर आधारित होता है। इन सूक्ष्म तत्वों को दूसरी भाषा में प्रभावपूर्ण ढंग से उभारना केवल दक्ष अनुवादक के बस की बात है।

काव्य की शैली, उसकी लय, उसकी ध्वनिये सब उसकी आत्मा का निर्माण करते हैं। अनुवादक को इन तत्वों - परिवर्तन के-को भी भाषा दौरान यथासंभव सुरक्षित रखना होता है। हर भाषा की संरचना अलग रूप में विकसित हुई हैउदाहरण के लिए मलयालम द्रविड़ परंपरा से जुड़ी हुई भाषा है, जबकि हिन्दी आर्यसांस्कृतिक धारा की। दोनों भाषाओं - के सांस्कृतिक संस्कार अलग हैं, इसलिए काव्य जैसे अत्यन्त सूक्ष्म साहित्यिक रूप का अनुवाद विशेष रणनीतियों और बहुस्तरीय दृष्टिकोण की माँग करता है।काव्य में शब्दों से अधिक उनका अन्तर्निहित आशय महत्त्वपूर्ण होता है। यही कारण है कि अनुवादक को केवल अर्थ ही नहीं, बल्कि काव्य का वातावरण, उसका लयवैभव-, उसका संगीत, और उसका सम्पूर्ण सौन्दर्य भी लक्ष्यसीधे अनुवाद न होकर लगभग नई रचना की तरह -भाषा में पहुँचाना पड़ता हैऔर यह कार्य सीधे- होता है। अनुवाद–चिन्तन के क्षेत्र में काव्य–अनुवाद पर बहुत चर्चा हुई है। काव्य-दर्शन का एक मत है कि काव्य कभी- तैसी उतर आती है-की-कभी बिना किसी श्रम के जैसेऔर उस पर किसी भी प्रकार का हस्तक्षेप उसकी संरचना को बिगाड़ देता है। कालरिज का प्रसिद्ध कथन है कि काव्य "श्रेष्ठ शब्दों का सर्वोत्तम विन्यास" है।

प्रकृतार्थ में ऐसा विरले ही होता है कि काव्य निर्मित रूप में सहज उतर आए। प्रायः उसके शिल्प को गढ़ना पड़ता हैआवेग थमने के बाद उसे पुनःस्मरण और पुनर्संयोजन की प्रक्रिया से गुजरना पड़ता है। वर्ड्सवर्थ का मत है कि काव्य को शांत क्षणों में 'recollect' किया जाता है, पुनःसज्जित किया जाता है। जब भाव, विचार और बिंब नए संयोजन में ढलते हैं, तभी एक उत्कृष्ट काव्य अंतिम रूप में सामने आती हैऔर इस अंतिम रूप से कोई छेड़छाड़ उसकी एकता को तोड़ देती है। अनुवाद इसी छेड़छाड़ का नाम हैइसलिए अनुवादक अनिवार्य रूप से एक संपादक की भूमिका में भी आ जाता है।अनुवादक चाहता है कि श्रेष्ठ काव्य–रचनाओं को अपनी भाषा में लाकर वह उसे समृद्ध करेपरन्तु महान काव्यएँ स्वयं में इतने संतुलित शिल्प में ढली होती हैं कि उनमें परिवर्तन की गुंजाइश बहुत कम मिलती है। आलोचकों का एक पक्ष कहता है कि काव्य वह है जो अनुवाद में नष्ट हो जाएजबकि अनुवादकसमुदाय का एक अन्य पक्ष यह मानता है कि काव्य वह है - जो अनुवाद की परीक्षासहकर भी अपनी शक्ति बनाए रखे। शब्दव्यवस्था और ध्वनि-–अनुगूँज को काव्य की आत्मा मानने वाले पहले समूह के हैंजबकि फलितार्थ को मूल मानने वाले दूसरे समूह में आते हैं।

यदि हम पहले समूह के सिद्धान्त को मान भी लेंतब भी अनुवाद से मुँह मोड़ना संभव नहीं है। कुछ 'वर्जनाएँ' तो तोड़नी ही पड़ती हैंजैसे आदम–हव्वा का सेब न तोड़ते तो आगे की गाथाएँ कैसे बनतीं? सीता लक्ष्मणरेखा न लाँघतीं तो - आगे की कथा कहाँ होती? यदि अनुवाद का कार्य रोक दिया जाए तो नोबेल और ज्ञानपीठ जैसे पुरस्कार सार्थक ही न रहेंनिर्णायकों को सभी भाषाओं में पू्रवीण होना पड़ेसमर्पित पत्रिकाएँ -अनुवादक,साहित्य पाठ्यक्रमों से लुप्त हो जाए-विश्व, बंद हो जाएँऔर कवि केवल अपनी भाषा तक सीमित रह जाएँ। सांस्कृतिक आदान–प्रदान और अन्तर–पाठीय संवाद रुक जाए, और विश्वनागरिकता का भाव समाप्त हो जाए।-

अनुवादक वे लोग हैं जो दो संस्कृतियों के बीच सेतु का निर्माण करते हैं। उनका योगदान इतना व्यापक है कि यदि अनुवादक न होते तो आधुनिकता और उत्तरआधुनिकता जैसी साहित्यिक धाराएँ अपने वर्तमान रूप में न उभर पातीं-; न एलियट संसार तक पहुँचते, न येट्स, और न ही रवीन्द्रनाथ। रूसी और बांग्ला साहित्य ने विश्व के साहित्यिक मानस का विस्तार किया हैऔर यह सब अनुवाद के माध्यम से ही सम्भव हुआ। सामान्य रचनाएँ भी यदि किसी सक्षम अनुवादक के हाथ आ जाएँ तो अधिक परिष्कृत रूप में सामने आती हैं। हालाँकि इसका उलटा भी सत्य हैदुर्बल अनुवाद किसी श्रेष्ठ - रचना को भी क्षति पहुँचा सकता है। इसीलिए अनुवाद एक अत्यन्त जिम्मेदार प्रक्रिया हैगम्भीर भी और रोचक भी।

4. 5 काव्यनुवाद की चुनौतियाँ

काव्य के अनुवाद को लेकर समयसमय पर अनेक विद्वानों ने भिन्न मत प्रकट किए हैं। होमर के अनुवादक मैथ्यू - ऑर्नल्ड का विश्वास था कि अनुवादक को मूलकृति के प्रति पूर्ण निष्ठावान रहना चाहिए। उनके अनुसार अनुवाद में कवि के मानसिक संसार, शैली, सांस्कृतिकऐतिहासिक स्थितियों और भावभूमि को जस का तस पुनर्सृजित करना आवश्यक है। - अपनी पुस्तकOn Translating Homer में वे लिखते हैं—"union of the translator with his original, which alone can produce a good translation"अर्थात् अनुवादक का मूल से गहरा एकत्व ही श्रेष्ठ अनुवाद की शर्त है। - इसी आधार पर उन्होंने चैपमैन, पोप और न्यूमैन की आलोचना की।इसके विपरीत उत्तर-आधुनिक विचारक लेफ़ेवेर काव्य- ' अनुवाद कोrewritingकहते हैंजब'कि सुजित मुखर्जी इसे 'new writingयानी नवसृजन के रूप में देखते हैं। एजरा ' पाउंड का मत है कि यदि अनुवाद में'मूल उत्स' बच जाए तो अनुवाद सफल माना जा सकता है।

काव्य) अनुवाद की जटिलता इस तथ्य में निहित है कि इसमें भाव-content) और शिल्प)form) दोनों का संतुलित रूपांतरण आवश्यक होता है। नीचे काव्यअनुवाद के प्रमुख पक्षों और चुनौतियों का संक्षिप्त विवेचन दिया गया है।-

1. काव्य का भावपक्ष:

भावपक्ष काव्य की अनुभूति, कथ्य और भाववस्तु का द्योतक है। किसी भी रचना का मूल्य उसके भाव और - शिल्प के सामंजस्य से निर्धारित होताहै। अनुवाद में प्रथम अपेक्षा यही रहती है कि भावपक्ष की सार्थकता अक्षुण्ण बनी रहे, क्योंकि संप्रेषण का मूल केंद्र भाव ही होता है। अतः अनुवादक को लक्षित भाषा में वही संवेदनाएँ पुनर्स्थापित करने हेतु अत्यधिक सावधानी रखनी पड़ती है।

2. काव्य का शिल्पपक्ष:

काव्य में रूप, रस, गंध, स्पर्श और दृश्य के संवेदनात्मक अनुभव भाषा, छंद, बिंब और लय के सहारे व्यक्त होते हैं—ये सभी काव्य के शिल्प का आधार हैं।विचार कितना भी सशक्त होयदि भाषाव्यवस्था सुंदर न हो तो उसका प्रभाव - क्षीण हो जाता है।अनुवाद में शिल्पपक्ष ही सबसे अधिक कठिनाई पैदा करता है। फ्रांसीसी कवि विक्टर ह्यूगो ने कहा भी है—"translation in verse seems to me something absurd, impossible."

3. नाद) सौंदर्य-Sound Aesthetics):

काव्य की ध्वनि, गति, लय और गेयता उसका मूल गुण है। छंदबद्ध या छंदमुक्त, किसी भी रूप में नादसौंद-र्य का अनुवाद अत्यंत दुष्कर है। यही कारण है कि काव्यकभी लगभग असंभव माना जाता है।-अनुवाद को कभी-

4. लक्षणा और व्यंजना:

काव्यभाषा का आकर्षण उसके लाक्षणिक और व्यंजक प्रयोगों में निहित है।लक्षणा-—जहाँ शब्द अपने सामान्य अर्थ से हटकर नया, जीवंत अर्थ देता है।व्यंजनाजहाँ शब्द पाठक के मन में सूक्ष्म-, रमणीय या सांस्कृतिक अर्थ जगाते हैं।अनुवाद में इन दोनों का रूपांतरण सहज नहीं है। अनुवादक को ऐसे शब्द ढूंढ़ने पड़ते हैं जो उसी कल्पनाचित्र को फिर से - उभार सकें।

उदाहरण:

"Now Heaven Walks on Earth" -"अहा, पृथ्वी पर स्वर्ग विचरण कर रहा है।"

"अहो लब्ध नेत्रनिर्वाणम्।"-"अहा, नेत्रों को निर्वाण प्राप्त हो गया है।"

उर्दू का प्रसिद्ध शेर—

"तुम मेरे पास होते हो गोया जब कोई दूसरा नहीं होता" (मोमिन(

हिंदी में केवल कहा जा सकता हैपर मूल रूप में ही इसकी व्यंजना अधिक स "मानो" को "गोया"ंप्रेष्य बनती है।

5. उपमान और प्रतीक:

उपमान और प्रतीक दोनों ही सांस्कृतिक संदर्भों से जुड़े होते हैं। अतः इनके अनुवाद में सांस्कृतिक अंतर बड़ी भूमिका निभाता है।

उदाहरण

भारतीय भाषाओं में "हिम" शब्द सौम्यता का संकेत देता हैपर अंग्रेज़ी "snow" कठोर ठंड का भाव लिए होता है।

"cold wind" का अनुवाद "शीतल समीर" नहीं किया जा सकता।

"दीप" और "तिलक" के सांस्कृतिक अर्थ "earthen lamp" या "vermillion mark" कहने से नष्ट हो जाते हैं।

संदर्भानुसार "He is the hope of the family" या "Symbol of Glory" जैसे विकल्प उचित होते हैं।कुछ प्रतीकात्मक शब्द—अमृत, विष, स्वर्ग, नरक—अनुवादभाषा में समान प्रभाव देते हैं।-

"वेदी" के लिए "altar" उपयुक्त रूप से अर्थव्यंजक है।

6. बिंब)Imagery):

काव्य में दृश्य, ध्वनि, स्वाद, स्पर्श और गंधबिंब प-इन पाँच प्रकार के बिंब प्रयुक्त होते हैं।दृश्य -ृायः सरलता से अनूदित हो जाते हैं:Rosy cheeks गुलाबी गाल-, Blue skyनीला आकाश-, Dark nightकाली रात।-

स्वाद :बिंब-Sweet voiceमधुर स्वर-, Bitter remarkकड़वी बात।-

स्पर्श :बिंब-Silken touchरेशमी स्पर्श।-

गंध :बिंब-Stinking atmosphereदुर्गंधपूर्ण वातावरण।-

7. अलंकार:

अर्थालंकार और शब्दालंकार दोनों ही अनुवाद की चुनौती बढ़ाते हैं।सादृश्य पर आधारित अलंकारों)simile-based) का अनुवाद आसान हैपर अतिशयोक्ति और वैषम्यआधारित अलंकार कठिनाई उत्पन्न करते हैं।-

उदाहरण:

"He is adept in killing by kindness."-"वह दयामाया के द्-वारा मारने में सिद्धहस्त है।"यहाँ वैषम्य स्पष्ट हैइसलिए अनुवाद संभव है।

सूक्ष्म अलंकारों में अनुवादक को भाषा के संस्कार और सांस्कृतिक संकेतों पर विशेष ध्यान देना पड़ता है ।

8. छंद और लय:

छंद काव्य का अभिन्न अंग है। भारतीय भाषाओं और संस्कृत में छंदविधान सम-ान होने से अनुवाद आसान हो जाता हैपर अंग्रेज़ी जैसे भाषाओं में स्थिति भिन्न है।

उदाहरण:

"In sooth I know not why I am so sad"

"मैं जानता नहीं कि मैं इतना उदास क्यों हूँ।"

दोनों की लयरचनात्मक-संरचना एक जैसी नहीं रह सकती। इसलिए अनुवादक को मूल लय की अनुसर्जना-पुनर्निर्माण—का सहारा लेना पड़ता है।निराला द्वारा मिल्टन की लय का और पंत द्वारा स्विनबर्नटेन्सन की लय का प्रयोग - यही प्रक्रिया है।

काव्य को हमेशा अत्यंत सूक्ष्म संवेदनाओं की विधा माना गया हैइसलिए काव्यअनुवाद को भी अत्यंत कठिन - कार्य समझा गया है।फिर भी यदि अनुवाद आवश्यक होतो भाव, शिल्प, नाद, बिंब और प्रतीकों के संतुलन को ध्यान में रखते हुए अनुवाद संभव है।

अपनी प्रगति जांचें

प्रश्न 1.काव्य का उद्देश्य क्या है?

प्रश्न 2. ? का अर्थ क्या है "शब्दार्थौ सहितौ काव्यम"

प्रश्न 3. आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने काव्य को किस प्रकार परिभाषा किया है ?

प्रश्न 4. काव्य के तत्व को कितने भागों बांटा गया है ?

प्रश्न 5. "कविता वही है जो अनुवाद होते होते खो जाती है"-यह उक्ति किसकी है

4.6 काव्यनुवाद में ध्यान देने वाले बिंदु

किसी भी काव्यानुवादक से जब काव्यानुवाद की प्रक्रिया के विषय में पूछा जाता हैतो सामान्यतः यही निष्कर्ष सामने आता है कि काव्य का अनुवाद अत्यंत जटिल और चुनौतीपूर्ण कार्य है। काव्यानुवादक सृजन की दोहरी प्रक्रिया से गुजरता हैपहले मूल काव्य को गहराई से आत्मसात करना और फिर उसे दूसरी भाषा में पुनः सृजित करना। इसके- बावजूद वह प्रायः इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि उच्च कोटि की साहित्यिक कृतियों का अनुवाद मूल की कला, सौंदर्य और भाव-संवेदना को अक्षुण्ण रखते हुए करना लगभग असंभव है।

गद्य साहित्य के अनुवाद में अर्थगत समतुल्यता किसी सीमा तक संभव हो जाती हैकिंतु काव्य में यह कार्य और भी कठिन हो जाता है। काव्य में शब्दों के भीतर निहित संस्कारगत अर्थ, उनकी ध्वन्यात्मकता, भावबोध, विचारसंरचना-, लय, छंद और संपूर्ण संरचनात्मक वैशिष्ट्ययेे सभी तत्व अनुवादक के लिए बड़ी चुनौती बन जाते हैं। इसलिए काव्यानुवाद - में पूर्ण समतुल्यता एक आदर्श मात्र है; व्यवहार में वह अत्यंत दुष्कर है। काव्यानुवाद की प्रक्रिया को मुख्यतः निम्नलिखित चरणों में समझा जा सकता है

1. शब्द संस्कार और शब्द चयन:

प्रत्येक भाषा के शब्दों की अपनी विशिष्ट प्रकृति और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि होती है। किसी शब्द के एकाधिक अर्थ और उनकी बहुस्तरीय छायाएँ संदर्भ के अनुसार बदलती हैं। उदाहरणस्वरूप रहीम का दोहा-

"रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून।
पानी गए न ऊबरे, मोती, मानस, चून।"

यहाँ 'पानी' शब्द तीन भिन्न अर्थों में प्रयुक्त हुआ हैमोती के लिए चमक -, मनुष्य के लिए सम्मान और चूने के लिए जल। इन अर्थों को केवल संदर्भ के माध्यम से ही समझा जा सकता है। इसी प्रकार 'जल' और 'पानी', 'अक्षत' और 'चावल' जैसे शब्दों के संस्कारगत भेद अनुवादक को सजगता से समझने होते हैं।

काव्यानुवाद में शब्दचयन अनुवादक की निजी संवेदनशीलता और क्षमता पर निर्भर करता है। उसे- यह तय करना होता है कि वह शब्दानुवाद करेगा या भावानुवाद, बोलचाल की भाषा अपनाएगा या साहित्यिकतथा शब्द की आंतरिक शक्ति को किस गहराई तक समझेगा। प्रत्येक शब्द का अपना इतिहास, परंपरा और भावावेग होता है, जिसे ध्यान में रखकर ही उसका चयन किया जाना चाहिए।

इसी तरह संस्कृत के 'धर्म' शब्द का अंग्रेज़ी में केवल Religion कहना पर्याप्त नहीं है, क्योंकि 'धर्म' में कर्तव्य, नैतिकता और जीवन पद्धति का व्यापक भाव निहित है। इसी प्रकार उर्दू काव्य में-'इश्क़' केवल प्रेम नहीं, बल्कि आत्मिक समर्पण और पीड़ा का भी द्योतक होता है।अनुवादक को यह निर्णय लेना होता है कि शब्दानुवाद किया जाए या भावानुवाद, और कौनसा शब्द मूल भाव को अधिक प्रामाणिक रूप से संप्रेषित कर सकता है।-

2. कथ्य एवं भाव तत्व का निर्वाह:

काव्य का प्राण उसका कथ्य होता हैजिसमें भाव, विचार, कल्पना और अनुभव का समन्वय होता है। काव्यानुवादक को कथातत्त्व-, चरित्र, भाव और विचार—इन सभी का संतुलन बनाए रखना होता है। उदाहरण:
रवीन्द्रनाथ ठाकुर की पंक्ति"Where the mind is without fear and the head is held high"का अनुवाद करते समय अनुवादक को केवल भयरहित मन ही नहींबल्कि आत्मसम्मान औ-र राष्ट्रीय चेतना के भाव को भी सुरक्षित रखना होता है। अतः केवल शाब्दिक नहींवैचारिक अनुवाद आवश्यक है।

भाव और विचार की समतुल्य प्रस्तुति अनुवाद की सबसे बड़ी चुनौती है। उदाहरण के लिएफिट्ज़जेरल्ड की अंग्रेज़ी रूबाइयों का मैथिलीशरण गुप्त द्वारा किया गया अनुवाद मूल के विचार-तत्त्व को सुरक्षित रखता है-

मूल:

Here with a hoaf of bread beneath the Bough
A Flask of wing, a Blik of verse-and Thou
Beside me singing in the wilderness.
And wilderness is Paradise enow.

अनुवाद:

इस तरू तले कहीं खाने को रोटी का टुकड़ा हो एक,
पीने को मधु पात्र पूर्ण हो करने को हो काव्यविवेक।-
तिस पर इस सन्नाटे में तुम बैठ बगल में गाती हो,
तो नंदनसम इसी विजन में मुझे स्वर्ग का हो अभिषेक।-

इसी प्रकार वर्डसवर्थ की काव्य का अनुवाद यतीन्द्र कुमार ने वैचारिक स्तर पर अत्यंत सफलतापूर्वक किया है

मूल:

Heaven lies about us in our infaricy
Shades of the prison-house begin to close upon the growing Boy.

अनुवाद:

बसता स्वर्ग हमारे चारों ओर, हमारी शैशव वय में
कारागृह की छायाएँ लगती है घिरने, ज्योंज्यों वह कैशोर्य रूप में लगता बढ़ने।-

3. विचार तत्व की समतुल्यता:

प्रत्येक भाषा की अपनी वाक्यसंरचना होती है। हिंदी सामान्यतः कर्ता-–कर्म–क्रिया के क्रम पर आधारित हैजबकि अंग्रेज़ी में कर्ता–क्रिया–कर्म का क्रम प्रचलित है। इस संरचनात्मक भिन्नता का अनुवाद में विशेष ध्यान रखना आवश्यक है। यदि भाषा की प्रकृति के विपरीत संरचना अपनाई जाए, तो काव्य-सौंदर्य क्षीण हो जाता है। साथ ही विराम-

‘ एलियट की काव्य .एस .विन्यास की भूमिका भी काव्य के सूक्ष्म अर्थ को प्रभावित करती है।टी-चिह्नों और पंक्तिThe Hollow Men का हिंदी अनुवाद करते समय’‘खोखलेपन’ को केवल व्यक्तित्व की रिक्तता न मानकर आधुनिक सभ्यता की आत्मिक शून्यता के रूप में प्रस्तुत करना आवश्यक है।

महत्वपूर्ण बिंदु

काव्य के मूल तत्वों के आधार पर घटनाविधान का अनुवाद अपेक्षाकृत सरल होता हैक्योंकि उसका स्वरूप मूर्त होता है। -इसके विपरीत विचार सूक्ष्म होते हैं, इसलिए उनका भाषांतरण कठिन माना जाता हैयद्यपि निरंतर बौद्धिक अभ्यास से उन्हें स्पष्ट किया जा सकता है। भाव और अनुभूति सूक्ष्म होने के साथ तरल भी होते हैंजिससे उनका अनुवाद अधिक जटिल हो जाता है। फिर भी मानवीय चेतना के माध्यम से भावभाषा के अनुवाद हे-संप्रेषण आंशिक रूप से संभव है। काव्य-तु अनुवादक को दोनों भाषाओं की लाक्षणिकव्यंजनात्मक शक्तियों-, बिंबों के ऐन्द्रिय आधार तथा सांस्कृतिक अनुकूलता की गहरी समझ आवश्यक होती है।

4. संरचनात्मक एवं भाषिक भिन्नताएँ:

भिन्न भाषाओं की वाक्यरचना-, लिंग, काल, क्रियाअलग होती है। -चिह्नों की व्यवस्था अलग-रूप और विराम-इन संरचनात्मक भिन्नताओं के कारण काव्य के अनुवाद में मूल संरचना को बनाएरखना प्रायः संभव नहीं) जापानी हाइकु:होता।उदाहरण5-7-5 वर्णसंख्या बनाए रखना -का हिंदी या अंग्रेज़ी में अनुवाद करते समय वर्ण (संरचना-चि-कठिन होता है। अतः अनुवादक भाव और दृश्यत्रण को प्राथमिकता देता है, न कि मात्र संरचना को।

काव्य में प्रयुक्त विदेशी शब्दों, पदबंधों और मुहावरों का अनुवाद अत्यंत सावधानी से किया जाना चाहिए। अंग्रेज़ी से हिंदी में आए अनेक प्रयोग अब स्वीकृत और प्रचलित हो चुके हैं, जैसे—

Golden Touchसुनहला स्पर्श-

Broken heartहृदय-भग्न-

Golden dreamस्वर्ण स्वप्न-

Heavenly lightस्वर्गीय प्रकाश-

Dreamy smileस्वप्निल मुस्कान-

Silveryरूपहला।-

5. संरचना:परक एवं लयात्मक दृष्टि-

काव्य की लय, छंद और तुक उसके सौंदर्य का आधार होती है। काव्यानुवाद में मूल छंद को बनाए रखना प्रायः संभव नहीं होताइसलिए अनुवादक नई भाषा में समान प्रभाव उत्पन्न करने वाली संरचना का चयन करता है।

उदाहरण:

मीर की ग़ज़लों का अंग्रेज़ी अनुवाद करते समय बहर और क़ाफ़ियारदीफ़ बनाए रखना कठिन है-, किंतु यदि करुणा और विरह की तीव्रता सुरक्षित रह जाए, तो अनुवाद सार्थक माना जाता है।साहित्य में संरचना उसका अभिन्न अंग होती है और काव्य में यह लय के माध्यम से व्यक्त होती है। तुक, छंद और लय काव्य को विशिष्ट बनाते हैं। निराला की ‘राम की शक्ति पूजा’ इसका सशक्त उदाहरण है। ऐसी जटिल और बहुस्तरीय संरचना का अनुवाद अन्य भाषा में यथावत् कर पाना लगभग असंभव है।

वर्डसवर्थ की पंक्ति-

‘Thou child of joy shout round me

Let me hear thy shouts.-का यतीन्द्र कुमार द्वारा किया गया अनुवाद देखें ’

ओ, प्रफुल्लता के बालक रे !
चारों ओर उठा किलकारी,
मैं भी तो सुन लूं अब तेरे
हर्ष उन्माद घनेरे ।

यहाँ अनुवादक ने संरचनात्मक पुनर्गठन करते हुए 'shout' के लिए 'किलकारी' और 'shouts' के लिए 'हर्ष-उन्माद' जैसे काव्यात्मक प्रयोग किए हैं। संबोधन, पंक्तिपरिवर्तन के माध्यम से उन्होंने मूल आशय-विन्यास और शब्द-, अर्थ और लय को नई संरचना में सफलतापूर्वक ढाला है। यही काव्यानुवाद की सृजनात्मक उपलब्धि है।

काव्यानुवाद एक यांत्रिक या मात्र भाषिक प्रक्रिया नहीं, बल्कि सृजनात्मक पुनर्संरचना की प्रक्रिया है।इसमें अनुवादक पाठक, कवि और दो भाषाओं की संस्कृतियों के बीच सेतु का कार्य करता है। शब्दसंस्कार-, भावनिर्वाह-, विचारसमतुल्यता-, संरचनात्मक अनुकूलन और सांस्कृतिक बोध—इन सभी का संतुलन साधे बिना काव्यानुवाद संभव नहीं है। पूर्ण समतुल्यता काव्यानुवाद का आदर्श अवश्य है, किंतु व्यवहार में वह अप्राप्य है। इसलिए श्रेष्ठ काव्यानुवाद वही है जो मूल काव्य की आत्मा को सुरक्षित रखते हुए लक्ष्य भाषा में एक स्वतंत्र और प्रभावशाली काव्यरचना के रूप में - प्रतिष्ठित हो सके।

4.7 काव्यनुवाद और सृजनात्मक प्रक्रिया

काव्यानुवाद का प्रमुख उद्देश्य विश्व साहित्य की अमर कृतियों को विभिन्न भाषाई समाजों तक पहुँचाना है। अनुवादक की दृष्टि से देखें तो जिस प्रकार ज्ञानात्मक साहित्य का अनुवाद मानव के बौद्धिक विकास में सहायक होता हैउसी प्रकार काव्य जैसे रागात्मक साहित्य का अनुवाद उसकी संवेदनाओं, भावनाओं और अंतर्वृत्तियों को समृद्ध करता है। इस अर्थ में काव्यानुवाद केवल भाषांतरण नहींबल्कि सांस्कृतिक और भावनात्मक सेतु का निर्माण है।प्रत्येक युग का साहित्यकार अनेक भाषिक, सांस्कृतिक और शिल्पगत कठिनाइयों के बावजूद अन्य भाषाओं की महान रचनाओं को अपनी भाषा में रूपांतरित कर सहृदय समाज को सौंपता है। यह कार्य पाठकों को वैश्विक साहित्य से जोड़ता है और अनुवादक के लिए एक प्रकार का रचनात्मक पुण्यकर्म बन जाता है।-

काव्यानुवाद में छायानुवाद का सर्वाधिक चर्चित उदाहरण उमर खैयाम की रुबाइयों का एडवर्ड फिट्ज़ेराल्ड द्वारा किया गया अंग्रेज़ी रूपांतरण है। हरिवंश राय बच्चन की मधुशाला भी इन्हीं रुबाइयों से प्रेरित एक सृजनात्मक रूपांतरण हैजिसमें मूल की शिल्पगत सीमाओं से मुक्त होकर एक स्वतंत्र काव्यकृति का निर्माण हुआ है।-

उदाहरण:

Here with a loaf of bread beneath the bough,
A flask of wine, a Book of Verse-and thou
Beside me singing in the wilderness-
And wilderness is paradise enow.
)Quatrain XI, The Rubaiyat of Omar Kayyam (1859), translated by Edward Fitzgerald)

फिट्ज़ेराल्ड के अनुवाद के पाँच संस्करण)1859, 1968, 1872, 1879, 1889) प्रकाशित हुए, जिनमें रुबाइयों की संख्या और स्वरूप में निरंतर परिवर्तन होता रहा। के संस्करण मे 1889ं यही रुबाई इस प्रकार परिवर्तित हुई—

A book of verses underneath the Bough,
A jug of wine, a loaf of bread and thou
Beside me singing in the Wilderness.

मैथिलीशरण गुप्त ने के संस्करण के आधार पर इसका हिंदी अनुवाद किया 1859, जो मूल के अत्यंत निकट है—

इस तरु तले कहीं खाने को रोटी का टुकड़ा हो एक
पीने को मधु पात्र पूर्ण हो
करने को हो काव्यविवेक-
तिस पर इस सन्नाटे में तुम बैठ बगल में गाती हो,
तो नंदनसम इसी विजन में-
तुझे स्वर्ग का हो अभिषेक।

फिट्ज़ेराल्ड स्वयं ईकॉवेल को लिखे पत्र में स्वीकार करते हैं कि उनक .बी.े अनुवाद शाब्दिक नहीं हैं-
"My translations will interest you from its form… very un-literal as it is… Better a live sparrow than a stuffed eagle."

यह कथन स्पष्ट करता है कि काव्यानुवाद में पुनःसृजन अनिवार्य है। लेफेवेयर के rewriting सिद्धांत के अनुसार यह अनुवाद मूल से इतना भिन्न हो गया कि वह एक स्वतंत्र रचना का रूप ले लेता है। उत्तरऔपनिवेशिक आलोचना में - इसेmanipulation भी कहा गया है, किंतु यही परिवर्तन अनुवाद को जीवंत बनाता है।कविता के अनुवाद की कोई एक निश्चित रणनीति नहीं होती। अनुवादक को पहले कविता के भावलोक में प्रवेश करना होता हैफिर लक्ष्यभाषा में उसका अंतरण, पुनर्गठन और पुनरीक्षण करना होता है। इस प्रक्रिया में अनुवादक यह भी तय करता है कि मूल रचना के साथ कितनी सृजनात्मक स्वतंत्रता आवश्यक है।

बर्तोल्त ब्रेख्त की कविता Future Generations का अनुवाद इसका सशक्त उदाहरण है।

मूल कविता :(अंग्रेज़ी)

I confess this
I have no hope
the blind talk about an escape.
I see when the errors are consumed
the nothing will sit next to us
as our last companion

उर्दू:हिंदी अनुवाद/

मैं यह कबूल करता हूं
मुझे कोई उम्मीद नहीं है,
अंधे लोग बचने की बात करते हैं।
मैं देखता हूँ कि जब गलतियाँ मिट जाएँगी,
तो शून्य ही हमारा अंतिम साथी बनकर
हमारे बगल में बैठेगा।

विस्तारित अनुवाद:

आने वाली नस्लों के लिए
मुझे ये ऐतराफ है…
आखिरी खला हमारा हमकिश है आखिरी

यह अनुवाद बकुल देव द्वारा किया गया भावानुवाद हैजिसमें मूल की अंतिम पंक्तियों का विस्तार अनुवादक की काव्यात्मक क्षमता और भाषायी प्रभाव को उजागर करता है।

अन्य उदाहरण:

रवींद्रनाथ ठाकुर की गीतांजलि का अंग्रेज़ी अनुवादजिसमें मूल बांग्ला कविताएँ भावात्मक पुनःसृजन के रूप में सामने आती हैं।

पाब्लो नेरूदा की कविताओं के हिंदी अनुवादजहाँ मूल का राजनीतिक और मानवीय ताप नई भाषा में समान प्रभाव छोड़ता है।

काव्यानुवाद एक प्रकार का अनुसृजन है। इसमें अनुवादक शब्दों से अधिक भाव, लय और सौंदर्य को महत्व देता है। यही कारण है कि सफल काव्यानुवाद मूल के समानांतर एक नई, जीवंत और स्वतंत्र काव्यकृति के रूप में स्थापित - हो जाता है।

4.8 सारांश

काव्य को साहित्य की सबसे जटिल विधा माना जाता हैइसलिए उसका अनुवाद भी सहज कार्य नहीं है। फिर भी आरंभ से ही विभिन्न परंपराओं, शैलियों और विधियों के माध्यम से अनुवाद होता आया है। आश्चर्य यह है कि जिन विद्वानों ने काव्यानुवाद को असंभव बतायाउन्होंने स्वयं भी व्यापक स्तर पर कविता का अनुवाद किया और पाठकों को विश्व कविता से जोड़ा। आज हमारे वैचारिक विकास और सांस्कृतिक चेतना के निर्माण में अनूदित विश्व कविता की निर्णायक भूमिका दिखाई देती है।

काव्य के अनुवाद की प्रक्रिया में अनुवादकों को अनेक प्रकार की कठिनाइयों का सामना करना पड़ता हैकिंतु उन्होंने इन समस्याओं से निपटने के लिए विविध उपाय और प्रक्रिया भी विकसित की हैं। प्रस्तुत अध्ययन में विभिन्न कविताओं और उनके अनुवादों के उदाहरणों के माध्यम से इन्हीं प्रक्रिया को स्पष्ट किया गया है। रचनात्मक साहित्य का अनुवाद तथ्यपरक साहित्य की तुलना में अधिक दुष्कर होता है और कविता का अनुवाद तो एक प्रकार की साधना ही है।काव्यानुवाद करते समय अनुवादक मूल रचना की विषयवस्तु और अभिव्यक्ति शैली को अलग अलग स्तरों-पर समझता है। अनुभूति और विचार काव्य के मूल तत्व हैं, जबकि बिंब, प्रतीक, अलंकार और छंद उसकी शैली को आकार देते हैं। मूलतःकाव्य का अनुवाद केवल शब्दांतरण न होकर भावार्थ की रक्षा करते हुए नई भाषा में रचना का पुनर्सृजन है।

✓ 4. 9 प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा)

प्रश्न :का उत्तर 1 काव्य मनुष्य में मानवीय कल्पना व प्रेम का भाव विकसित करता है । निराश जनमानस में आशा का संचार करता है । मनुष्य जीवन को सरस बनता है । मनुष्य अपने अनुभवों और अनुभूतियों को किसी न किसी रूप में व्यक्त करना चाहता है। कई बार वह अपने भावों को सीधे शब्दों में नहीं कह पाता, तब संगीत, रंग, संकेत या अभिनय का सहारा लेता है। काव्य भी भावाभिव्यक्ति का ऐसा ही सशक्त माध्यम है।

प्रश्न :का उत्तर 2 "शब्दार्थौ सहितौ काव्यम्", अर्थात शब्द और अर्थ के सुंदर सामंजस्य को काव्य कहा जाता है।

प्रश्न :का उत्तर 3आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने कविता को मानव-हृदय से जोड़ते हुए कहा-"हृदय की मुक्ति की साधना के लिए मनुष्य की वाणी जो शब्दविधान करती आई हैउसे कविता कहते हैं।-" उनके अनुसार कविता मनोवेगों को जाग्रत करती है और वस्तुओं को मूर्त रूप में सामने ले आती है।

प्रश्न :का उत्तर 4 काव्य के तत्त्वों को समझने के लिए उसे दो भागों में बाँटा गया हैभावपक्ष और कलापक्ष। -

प्रश्न :का उत्तर 5 रॉबर्ट फ्रॉस्ट की प्रसिद्ध उक्ति है ।

4. 10 अधिक जानने के लिए पढ़ें

- गोस्वामी, कृष्ण कुमार, अनुवाद विज्ञान की भूमिका, नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन।
- टंडन, पूरनचंद, अनुवाद के विविध आयाम, दिल्ली, तक्षशिला प्रकाशन।
- नगेंद्र (.सं), अनुवाद 1993, सिद्धांत एवं अनुप्रयोग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली।
- श्रीवास्तव, रवींद्रनाथ, एवं गोस्वामी, कृष्ण कुमार (.सं), 1995, अनुवाद सिद्धांत और समस्याएँ, दिल्ली, आलेख प्रकाशन।
- Bathgate, R. H., 1981, Studies of Translation Model I&II: The
- Newmark, Peter, 1981, Approaches to Translation, Oxford, Pergamon Press.
- Nida, E. A., 1964, Towards a Science of Translating, Leiden.
- Bassnet, Susan, (1980), Translation Studies, London and New York, Routledge.
- Venuti, Lawrence (ed.). (2000), The Translation Studies Reader, London & New York, Routledge.
- Baker, Mona, (ed.), (1998), Encyclopedia of Translation Studies, London & New York, Routledge.

4. अभ्यास प्रश्न 11

संक्षिप्त प्रश्नों के उत्तर (क)लिखिए-

1. वॉल्टर बेंजामिन ने अपने संग्रह 'The Task of the Translation? में काव्यनुवाद के संबंध में क्या कहां है'
2. एन्द्रे लेफे वेयर ने अनुवाद की छः प्रमुख पद्धतियाँ क्या क्या बताई है ?
3. आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जी ने काव्य को किस प्रकार परिभाषित किया है ?
4. काव्य के संबंध में कालरिज का प्रसिद्ध कथन क्या है ?
5. 'On Translating Homerके लेखक का नाम लिखिए।'

ख-निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए(

1. काव्य का अर्थ एवं स्वरूप पर लेख तैयार कीजिए।
2. काव्यनुवाद और अनुवाद का अंतसम्बन्ध पर एक आलेख प्रस्तुत कीजिए।
3. काव्यनुवाद की चुनौतियों को विविध उदाहरण के माध्यम से स्पष्ट कीजिए।
4. काव्यनुवाद के समय किन किन बिंदुओं का ध्यान आवश्यक है उदाहरण सहित लिखिए।
5. काव्यनुवाद और सृजन से आप क्या समझते हैअपने शब्दों में लिखिए।-

शब्दकोश:

1. भावाभिव्यक्ति: भाव प्रकट करना।
2. सामंजस्य: तालमेल, अनुकूलता, अनुरूपता, या मेलजोल-

3. पुनः सृजन: किसी चीज़ को दोबारा, नए सिरे से बनाना या उसका पुनर्निर्माण करना, या किसी पुरानी चीज़ को फिर से जीवंत करन
4. दुष्कर:जिसे करना कठिन हो,मुश्किलकठिन, या दुःसाध्य
5. वैचारिक विचारों या :सिद्धांतों से संबंधित या उन पर आधारित होना
6. समतुल्यतासमान होने की स्थिति या गुणवत्ता :, जिसमें मूल्य, कार्य, अर्थ, शक्ति या महत्व में समानता होती है

*** ***** ***

इकाई 5 - नाटक और दृश्य साहित्य का अनुवादस्वरूप और प्रविधियाँ :

इकाई की रुपरेखा

5.1 उद्देश्य
5. 2 प्रस्तावना
5. 3 नाटक अर्थ और नाट्य शिल्प की अवधारणा ,परंपरा :
5. 4 भारतीय नाट्य परंपराउद्भव विकास और आधुनिक स्वरूप :
5. 5 नाट्यानुवाद रचनात्मक यात्रा :
5.6 नाट्यानुवाद में सांस्कृतिकभाषिक संतुलन एवं चुनौतियाँ ,
5.7 हिंदी रंगमच पर भारतीय और विदेशी नाटकों का अनुवादपरंपरा : और विविधता
5. 8 दृश्य माध्यम प्रकार और विशेषताएँ .स्वरूप :
5. 9 दृश्य साहित्य और अनुवाद
5. 10 सारांश
5.11 प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा)
5. 12 अधिक जानने के लिए पढ़ें
5. 13 अभ्यास प्रश्न

5.1 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन से आप-

- सर्वप्रथम नाटक का अर्थ ,परिभाषा एवं स्वरूप के बारे में ज्ञान प्राप्त करेंगे ।
- भारतीय नाट्य परंपरा के उद्भव विकास और आधुनिक स्वरूप के बारे में जानेंगे ।
- नाटक और अनुवाद के अंतः संबंध के बारे में जानकारी प्राप्त करेंगे ।
- नाट्यानुवाद के रचनात्मक यात्रा की विविध पहलुओं से अवगत होंगे ।
- नाट्यानुवाद में सांस्कृतिक भाषिक संतुलन ,एवं चुनौतियाँ बारे में जानेंगे ।
- हिंदी रंगमच पर भारतीय और विदेशी नाटकों का अनुवाद की परंपरा और विविधता से परिचित होंगे ।

5. 2 प्रस्तावना

नाटक और दृश्य साहित्य साहित्य की वह सशक्त विधा हैजो शब्दों के साथसाथ दृश्य-, ध्वनि, अभिनय और मंचीय प्रस्तुति के माध्यम से मानव अनुभवों को अभिव्यक्त करती है। नाटक, फ़िल्म, दूरदर्शन धारावाहिक, रेडियो नाटक तथा वेब माध्यम जैसे दृश्य साहित्य रूपों का मूल उद्देश्य दर्शक से सीधा संवाद स्थापित करना होता है। ऐसे में इन विधाओं का अनुवाद केवल भाषिक रूपांतरण नहीं रह जाता, बल्कि यह एक सृजनात्मक, सांस्कृतिक और प्रदर्शनात्मक प्रक्रिया बन जाता है। इसी कारण नाटक और दृश्य साहित्य का अनुवाद साहित्यिक अनुवाद की एक विशिष्ट और चुनौतीपूर्ण इकाई के रूप में उभरता है।

प्रस्तुत इकाई में नाटक और दृश्य साहित्य अनुवाद के स्वरूप तथा प्रविधियों का क्रमबद्ध अध्ययन किया जाएगा। इसमें नाटक अनुवाद की प्रकृति, संवादों की मंचोचित भाषा, पात्रों की मानसिकता, भावाभिव्यक्ति तथा दर्शकप्रतिक्रिया - जैसे पक्षों पर विचार किया जाएगा। दृश्य साहित्य के संदर्भ में फ़िल्म और टेलीविज़न अनुवाद, डबिंग, सबटाइटलिंग, वॉइसओवर-, समय और दृश्य अनुकूलन जैसी तकनीकों का अध्ययन भी इस इकाई का प्रमुख भाग होगा। इसके साथ-साथ सांस्कृतिक संदर्भों, मुहावरों, हास्य और स्थानीय संवेदनाओं के अनुवाद की समस्याओं और संभावनाओं पर भी ध्यान दिया जाएगा। साथ ही अनुवाद का महत्व इस इकाई में विशेष रूप से इसलिए रेखांकित है क्योंकि इसके माध्यम से एक भाषा और संस्कृति का नाट्य एवं दृश्य साहित्य दूसरी भाषा और समाज तक पहुँचता है। अनुवाद न केवल साहित्यिक आदानप्रदान को संभव बनाता हैबल्कि विविध संस्कृतियों के बीच संवाद-, सहिष्णुता और समझ को भी विकसित करता है। एक सफल नाटक या दृश्य साहित्य अनुवाद वही हैजो मूल रचना की आत्मा, प्रभाव और संप्रेषणीयता को बनाए रखते हुए लक्ष्यभाषा के दर्शकों के लिए उसे जीवंत बना सके। प्रस्तुत इकाई नाटक और दृश्य साहित्य अनुवाद की सैद्धांतिक - साथ-समझ के साथउसकी व्यावहारिक प्रविधियों, चुनौतियों और रचनात्मक संभावनाओं को समग्र रूप में प्रस्तुत करती है।

5.,परंपरा :नाटक 3 अर्थ और नाट्य शिल्प की अवधारणा

नाटक भारतीय संस्कृति की अत्यंत प्राचीन, समृद्ध और बहुआयामी कला है। इसकी महत्ता इसी तथ्य से स्पष्ट होती है कि इसे केवल साहित्यिक विधा न मानकर जीवन की समग्र अभिव्यक्ति का माध्यम स्वीकार किया गया है। भारतीय परंपरा के अनुसार ब्रह्मा ने चारों वेदों से तत्व ग्रहण कर नाट्य को 'पंचम वेद' के रूप में प्रतिष्ठित किया। ऋग्वेद से पाठ्य, सामवेद से गान, यजुर्वेद से अभिनय और अथर्ववेद से रस ग्रहण कर नाट्यशास्त्र की रचना हुई। शिव के ताण्डव और पार्वती के लास्य ने नृत्य के माध्यम से नाट्य को गति और सौंदर्य प्रदान किया, जबकि भरतमुनि ने अपने सौ पुत्रों के सहयोग से इसके व्यावहारिक स्वरूप को मंच पर प्रस्तुत किया। इस प्रकार नाटक देव, मानव और समाज—तीनों को जोड़ने वाली कला बन गया।

'नाट्य' शब्द का मूल अर्थ अभिनय है। अभिनय मानव की सहज और आदिम प्रवृत्ति हैजिसका प्रमाण हमें दैनिक जीवन में सर्वत्र मिलता है। छोटे बच्चे खेलखेल मे-ं बड़ों की नकल करते हैंउनकी चालढाल और वाणी का - अनुकरण कर आनंद प्राप्त करते हैं। यही प्रवृत्ति आगे चलकर सामाजिक व्यवहार का रूप ले लेती है। व्यस्क व्यक्ति भी कभी अनजाने, तो कभी जानबूझकर दूसरों का अनुकरण करते हैं। दार्शनिक दृष्टि से यदि देखा जाए तो संपूर्ण मानव जीवन को एक प्रकार का अभिनय कहा जा सकता हैक्योंकि समाज और संस्कृति की मर्यादाओं में बंधा मनुष्य अपने वास्तविक भावों को छिपाकर परिस्थिति के अनुसार विभिन्न भावों का प्रदर्शन करता है।प्राचीन आचार्यों ने इसी अनुकरण को नाटक का मूल तत्त्व माना है। उनके अनुसार नाटक जीवन की प्रतिकृति हैऐसी प्रतिकृति जो कलात्मक रूप ग्रहण कर दर्शक के हृदय - में रस की अनुभूति कराती है। जब यह अनुकरण कथानक, संवाद, पात्र और मंचीय संरचना से जुड़ता हैतब दृश्यकाव्य के - वाचन नहीं-रूप में नाटक का जन्म होता है। इसलिए नाटक केवल कथा, बल्कि दृश्य, श्रव्य और भावात्मक अनुभव का समन्वय है।संस्कृत आचार्यों में भरतमुनि नाटक के सर्वप्रमुख व्याख्याता हैं। उनका प्रसिद्ध सूत्र है—

"त्रैलोक्यस्य सर्वस्य नाट्यभावानुकीर्तनम्"अर्थात नाटक तीनों लोकों के समस्त भावों का अनुकरण है। धनंजय - ने नाटक को अवस्थानुकृतिकहा और वस्तु (कथानक), नेता तथा रस को नाटकों के भेदक तत्त्व माना। इन्हीं के (नायक) आधार पर रूपक के दस भेद माने गए। इससे स्पष्ट होता है कि भारतीय नाट्यचिंतन अत्यंत व्यवस्थित और वैज्ञानिक रहा है।

पाश्चात्य नाट्यचिंतन में अरस्तू का स्थान विशेष है। उन्होंने त्रासदी के छह तत्त्व स्वीकार किए—कथानक", चरित्रचित्रण-, विचारतत्त्व-, पदरचना-, दृश्य|विधान और गीत-" उनके अनुसार नाटक मानव क्रियाओं की अनुकृति है,

जिसका उद्देश्य करुणा और भय के माध्यम से भावशुद्धि करना है। सिसरो ने भी नाटक को जीवन की अनुकृति (कैथार्सिस) और प्रकृति का पूर्ण प्रतिबिंब माना। इस प्रकार भारतीय और पाश्चात्य दोनों परंपराओं में नाटक को जीवन के निकटस्थ रूप के रूप में स्वीकार किया गया है।

नाट्य शब्द की व्युत्पत्ति पर विद्वानों में पर्याप्त सहमति दिखाई देती है। पाणिनि के अनुसार 'नाट्य' शब्द 'नत्' धातु से व्युत्पन्न हैजिसका अर्थ है" अभिनय करना। रामचंद्र शुक्ल ने भी-'नाट्' धातु को इसका मूल माना है और स्पष्ट किया है कि 'नृत्त', 'नृत्य' और 'नाट्य'—तीनों शब्द इसी धातु से विकसित हुए हैं|" कोशों में नाट्य के अर्थ नृत्य", गीत, अभिनय, स्वांग, चरित्रप्रदर्शन और दृश-्य|काव्य के रूप में दिए गए हैं-" नालंदा विशाल शब्द सागर के अनुसार नाट्य " नटों का कार्य हैजिसमें नृत्य, गीत और अभिनय सम्मिलित हैं |"

परिभाषाओं की दृष्टि से मानक हिंदी कोश नाटक को ऐसी साहित्यिक रचना मानता हैजिसमें किसी घटना या स्थिति का इस प्रकार चित्रण हो कि उसका मंच पर सहज अभिनय किया जा सके। श्यामसुंदरदास के अनुसार काव्य -दृश्य" वही है जिसमें नाट्य की प्रधानता होजिसे देखा जा सके, जिसका अभिनय संभव हो और जिससे विशेष रस की अनुभूति हो। संस्कृत आचार्यों ने इसी दृश्य काव्य को-'रूपक' कहा है |"

नाटक की संपूर्ण संरचना नाट्य शिल्प पर आधारित होती है।-'शिल्प' शब्द 'शिल्' धातु से निर्मित है, जिसका अर्थ है—बनाना, गढ़ना या रचना करना। प्राचीन ग्रंथों, जैसे पाणिनि की अष्टाध्यायी और बौद्ध साहित्य में, शिल्प शब्द का प्रयोग उपयोगी तथा ललितदोनों प्रकार की कलाओं के लिए हुआ है। कौ-षीतकी ब्राह्मण में नृत्य और गीत को भी शिल्प की श्रेणी में रखा गया है।सामान्य अर्थ में शिल्प किसी वस्तु को हाथ से बनाकर तैयार करने की कला हैकिंतु साहित्य और नाटक में शिल्प का अर्थ व्यापक हो जाता है। यहाँ शिल्प से आशय उस कलात्मक ढंग से हैजिसके माध्यम से रचनाकार अपने भावों और विचारों को सशक्त, प्रभावी और सौंदर्यपूर्ण रूप में प्रस्तुत करता है। नाट्यशिल्प में कथानक की संरचना-, संवादयोजना-, पात्रों की बनावट, मंचविन्यास-, दृश्यनिष्पत्तिसम्मिलित होते हैं।-परिवर्तन और रस-

मूलतः नाटक जीवन का कलात्मक अनुकरण है। यह मानव और मानवेतर दोनों प्रकृतियों के भावों को रूपायित करता है और दर्शक में आनंद तथा रस की उत्पत्ति करता है। नाटक की प्राचीनता, उसकी दार्शनिक आधारभूमि और विकसित नाट्यशिल्प यह सिद्ध करते हैं कि नाटक केवल मनोरंजन का साधन नहींबल्कि जीवन-, समाज और संस्कृति की गहन अभिव्यक्ति है।

5.भारतीय नाट्य परंपर 4ाउद्भव विकास और आधुनिक स्वरूप :

साहित्य की विविध विधाओं में नाटक एक ऐसी सशक्त और जीवंत विधा हैजो जीवन को प्रत्यक्ष अनुभूति के रूप में प्रस्तुत करती है। नाटक केवल पढ़ने की वस्तु नहींबल्कि मंच, अभिनय, संवाद और दृश्यव्-यवस्था के माध्यम से दर्शक के मन और संवेदना पर गहरा प्रभाव छोड़ने वाली कला है। लोकमनोरंजन के रूप में इसकी भूमिका अत्यंत प्राचीन - रही है और आज भी यह समाज की चेतना को जाग्रत करने का प्रभावशाली माध्यम बना हुआ है।नाटक को सामूहिक कला कहा जाता हैक्योंकि इसमें लेखक, अभिनेता, निर्देशक, संगीतकार, मंचसज्जाकार और दर्शक-—सभी की सहभागिता आवश्यक होती है। यही कारण है कि यह विधा मानव जीवन के अत्यंत निकट प्रतीत होती है। नाटक जीवन का दर्पण हैजिसमें सत्य, संवेदना, संघर्ष और भावनाएँ सजीव रूप में उभरती हैं। विश्व की लगभग सभी भाषाओं और संस्कृतियों में नाटक किसी न किसी रूप में विद्यमान रहा है। यह केवल साहित्यिक विधा ही नहींबल्कि एक विशिष्ट रंगमंचीय दृश्यकला भी है।-

आचार्य भरतमुनि ने नाटक को ऐसी समन्वयात्मक कला माना हैजिसमें ज्ञान, विद्या, शिल्प, कला, कर्म और योगएक साथ समाहित हैं। इसी कारण भारतीय परम्परा में नाटक को अत्यंत सम्मान प्राप्त है। भारतीय नाट्य परम्परा की जड़ें अत्यंत प्राचीन हैं। ऋग्वेद के संवादसूक्त, यजुर्वेद में 'शैलूष' शब्द का प्रयोग, सामवेद की संगीतप्रधान प्रकृति तथा

महाव्रतस्तोम जैसे अवसरों पर होने वाले नृत्य गान इस-परम्परा की प्राचीनता को प्रमाणित करते हैं। वाल्मीकि रामायण और महाभारत में भी नाटकीय तत्त्वों और संवादात्मक प्रसंगों की भरपूर उपस्थिति मिलती है।

भरतमुनि का नाट्यशास्त्र भारतीय नाट्य परम्परा का आधार ग्रंथ है। इसमें नाटक की रचना, अभिनय, रस, भाव, रंगमंच और रंगशाला से संबंधित सूक्ष्म नियमों का विस्तृत विवेचन मिलता है। यह स्पष्ट करता है कि भरतमुनि से पूर्व नाटक विकसित अवस्था में पहुँच चुका थातभी उसके लिए नियम और सिद्धांत निर्धारित करने की आवश्यकता पड़ी। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से मनुष्य अनुकरणशील प्राणी है। दूसरों की वेशभूषा, हावभाव-, चालढाल और क्रियाओं का अनुकरण - कला के मूल में निहित है।-करके उसे आनंद और संतोष की अनुभूति होती है। यही प्रवृत्ति नाट्य

आदिम अवस्था मेंजब भाषा का विकास नहीं हुआ थातब मानव अपने अनुभवोंदुःख-, भय, हर्ष और आश्चर्य- को शारीरिक मुद्राओं, संकेतों और नृत्यात्मक चेष्टाओं द्वारा व्यक्त करता था। आगे चलकर देवताओं को प्रसन्न करने, फसल की खुशी मनाने या सामूहिक उत्सवों के अवसर पर नृत्य और गीत की परम्परा विकसित हुई। कालान्तर में इनमें ताल, लय, भाव और अनुकरण का समावेश हुआ। जब इन क्रियाओं में जीवनघटनाओं और स-ंवादों का प्रवेश हुआ, तब नाटक का वास्तविक स्वरूप सामने आया। अभिनय, नृत्त, नृत्य, संगीत, कथानक, पात्र और संवाद—इन सबके समन्वय से नाटक का जन्म हुआ।

प्रारम्भिक नाटक अव्यवस्थित रहे होंगेजिनमें घटनाओं का क्रम, पात्रों का विकास और दृश्यविधान स्पष्ट नहीं - रहा होगा। धीरेधीरे नाटक में व्यवस्था-, संतुलन और कलात्मकता आई। इसी प्रक्रिया में नाटक के विविध प्रकार और रूप विकसित हुए। मानव सभ्यता के विकास के साथशिल्प भी परिष्कृत होता गया। भारतीय नाट्य परम्परा ने -साथ नाट्य- नृत्त, नृत्य और गीत से आरंभ होकर अनेक विकास चरण पार-करते हुए परिपक्वता प्राप्त की।पाश्चात्य परम्परा में नाटक का उद्भव प्राचीन यूनान में माना जाता है। यूनानी ट्रेजडी का संबंध डायोनिसस देवता के उत्सवों से थाजहाँ गीत और नृत्य के माध्यम से करुणा और वेदना की अभिव्यक्ति होती थी। प्रारम्भ में ट्रेजडी में अभिनय गौण और गीतनृत्य प्रमुख थे-, किंतु समय के साथ अभिनय का महत्व बढ़ा। अरस्तु ने ट्रेजडी की सैद्धांतिक व्याख्या प्रस्तुत की, जिसने पश्चिमी नाट्यचिंतन को - दिशा दी।

हिंदी नाटक का वास्तविक विकास आधुनिक काल में हुआ। भारतेन्दु हरिश्चंद्र को हिंदी नाटक का जनक माना जाता हैक्योंकि उनके पूर्व लिखी गई अधिकांश रचनाएँ नाट्यरूप की अपेक्षा काव्यात्मक थीं। भारतेन्दु ने हिंदी नाटक को - न केवल स्पष्ट शिल्प और कथ्य दिया, बल्कि उसे सामाजिक चेतना से भी जोड़ा। उनके नाटकों में भारतीय परम्परा और पाश्चात्य तकनीक का संतुलित समावेश मिलता है। प्रताप नारायण मिश्र, बालकृष्ण भट्ट, बद्री नारायण चौधरी, लाला श्रीनिवास दास आदि ने इस परम्परा को आगे बढ़ाया।

जयशंकर प्रसाद के आगमन से हिंदी नाटक में गुणात्मक परिवर्तन आया। उनकी भाषा अधिक सांकेतिक, भावगर्भित और काव्यात्मक हुई। शिल्प की दृष्टि से भी उन्होंने नाटक को सुदृढ़ आधार दिया। स्कन्दगुप्त, चन्द्रगुप्त, ध्रुवस्वामिनी जैसे नाटक ऐतिहासिक होते हुए भी समकालीन समस्याओं से जुड़े हैं। यद्यपि उनके नाटक मंच की अपेक्षा पाठ्य रूप में अधिक प्रभावी माने गए, फिर भी उन्होंने हिंदी नाटक को गहराई प्रदान की।

प्रसादोत्तर काल में नाटक अधिक बौद्धिक और पाठ्यप्रधान होता गया। भुवनेश्वर, लक्ष्मीनारायण मिश्र, उपेन्द्रनाथ अश्क, वृन्दावनलाल वर्मा आदि ने सामाजिक यथार्थ, मनोवैज्ञानिक द्वंद्व और शिल्पगत प्रयोगों पर बल दिया। स्वतंत्र्योत्तर काल में हिंदी नाटक ने नई चेतना प्राप्त की। धर्मवीर भारती का अंधायुग, मोहन राकेश का आषाढ़ का एक दिन और आधे-अधूरे, विजय तेंदुलकर, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, विष्णु प्रभाकर, नरेन्द्र कोहली, सुरेन्द्र वर्मा जैसे नाटककारों ने आधुनिक मानव की विडम्बनाओं, संघर्षों और अस्मिता के प्रश्नों को मंच पर सशक्त रूप में प्रस्तुत किया।

अंततः भारतीय नाट्य परम्परा निरन्तर विकासशील रही है। भारतेन्दु युग से लेकर आज तक नाटक ने समय, समाज और संवेदना के अनुरूप अपने रूप बदले हैं। आज भी हिंदी नाटक नए प्रयोगोंनए कथ्य और नए शिल्प के साथ

आगे बढ़ रहा है और मानव जीवन के और अधिक निकट आता जा रहा है। यही उसकी सबसे बड़ी शक्ति और सार्थकता है।

अपनी प्रगति जांचें

प्रश्न 1: भारतीय परंपरा में नाट्य को क्यों कहा गया है 'पंचम वेद'? इसके निर्माण में चारों वेदों का क्या योगदान माना गया है?

प्रश्न 2: 'नाट्यशब्द का मूल अर्थ क्या है '?

प्रश्न 3: अरस्तू के अनुसार त्रासदी के प्रमुख तत्त्व कौनकौन से हैं-?

प्रश्न 4:आचार्य भरतमुनि ने नाटक को किस प्रकार की कला माना है? उनके नाट्य संबंधी दृष्टिकोण को स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न 5: भारतीय नाट्य परंपरा में भरतमुनि के नाट्यशास्त्र का क्या महत्व है?

प्रश्न 6:जयशंकर प्रसाद के आगमन से हिंदी नाटक में किस प्रकार का परिवर्तन आया? उनकी भाषा की विशेषताएँ लिखिए।

5. 5 नाट्यानुवादरचनात्मक यात्रा :

नाट्यानुवाद केवल एक भाषा के नाटक को दूसरी भाषा में बदलने की प्रक्रिया नहीं है, बल्कि यह एक जटिल और सृजनात्मक कार्य हैजिसमें भाषा के साथसाथ रंगमंच-, संस्कृति और अभिनय की संवेदनशील समझ अनिवार्य होती है। इसका उद्देश्य यह होता है कि स्रोत भाषा में रचा गया नाटक लक्ष्य भाषा के दर्शकों के लिए भी उतना ही प्रभावशाली, विश्वसनीय और जीवंत लगे, जितना वह मूल भाषा में था। इस दृष्टि से नाट्यानुवाद एक प्रकार का रचनात्मक पुनर्निर्माण है, जिसमें अनुवादक, निर्देशक और अभिनेता सभी की सृजनात्मकता सम्मिलित होती है।

सामान्य अनुवाद और नाट्यानुवाद में मूलभूत अंतर है। जहाँ सामान्य अनुवाद मुख्यतः पाठ की अर्थवत्ता और भाषिक शुद्धता पर केंद्रित होता हैवहीं नाट्यानुवाद को अभिनेय होना आवश्यक है। नाटक केवल पढ़े जाने के लिए नहीं लिखा जाताबल्कि मंच पर प्रस्तुत होने के लिए रचा जाता है। इसलिए नाट्यानुवाद में संवादों का प्रवाहपात्रों का चरित्र-चित्रण, मंचनिर्देश-, गति, देह भाषा और दृश्यात्मकता विशेष महत्व रखते हैं। यदि-अनुवाद इन तत्वों की उपेक्षा करता हैतो वह केवल पाठ तक सीमित रह जाता है और मंच पर निष्प्रभावी सिद्ध होता है।

प्रसिद्ध नाट्यालोचक नेमिचंद्र जैन ने नाटक के अनुवाद की कठिनाई को उसकी विधागत प्रकृति से जोड़ा है। उनके अनुसारनाटक केवल संवादों की कथा नहीं है, बल्कि ऐसी रचना है जिसे अभिनेता मंच पर दर्शकों के सामने प्रस्तुत कर सकें। जो रचना अभिनेय नहीं है, वह नाटक की श्रेणी में नहीं आती। इसी कारण नाटक का अनुवाद करना सामान्य साहित्यिक अनुवाद की तुलना में अधिक कठिन कार्य है। अनुवादक को न केवल दोनों भाषाओं का ज्ञान होना चाहिए, बल्कि रंगमंचीय व्यवहार, अभिनय की प्रक्रियाओं और संभव हो तो मूल नाटक की रंगपरंपरा से भी परिचित होना चाहिए।-

नाटक के संवाद अपने आप में पूर्ण नहीं होतेवे पात्रों की गतियों, अंगपरिचालन-, मुखाभिनय और मंचीय क्रियाओं से गहराई से जुड़े होते हैं। यदि अनुवादक को इन व्यावहारिक पक्षों का अनुभव नहीं हैतो वह भावानुकूल शब्द-रचना नहीं कर सकता। परिणामस्वरूप ऐसा अनुवाद केवल शब्दानुवाद बनकर रह जाता हैजिसे -चयन और प्रभावी संवाद पाठ्यानुवाद कहा जाता है। कई बार ऐसे अनुवाद पढ़ने में आकर्षक लगते हैंपर मंचन के समय वे दर्शकों स ेजुड़ नहीं पाते।

इसके विपरीतजो अनुवाद पढ़ने और मंचनदोनों में सफल होता हैवही वास्तविक अर्थों में नाट्यानुवाद कहलाता - है। यह अनुवाद मूल नाटक के रस, प्रभाव और दृश्यात्मकता को ध्यान में रखते हुए किया जाता है। इसमें वाक्यरचना और -

शब्दों में आवश्यक परिवर्तन किए जाते हैंताकि लक्ष्य भाषा में वही नाटकीय प्रभाव उत्पन्न हो सके। यह प्रक्रिया शब्दानुवाद नहींबल्कि अनुसृजन है।आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का कथन कि "नाटक दृश्यकाव्य होने के नाते रंगमंच पर ही पूर्ण होता है" अनूदित नाटकों पर भी समान रूप से लागू होता है। केवल पढ़ने योग्य नाटक या उसका अनुवाद वस्तुतः एक साहित्यिक पाठ मात्र रह जाता है। नाटक की सार्थकता मंच पर उसके सजीव रूप में प्रकट होती है।

अतः नाट्यानुवाद की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि वह भाषा, संस्कृति और रंगमंचतीनों के बीच संतुलन स्थापित कर पाए या नहीं। जो अनुवाद मंच की व्यवहारिकता को समझते हुए किया जाता है, वही दर्शकों को बाँध पाता है और नाटक को वास्तविक जीवन प्रदान करता है। यही नाट्यानुवाद की सच्ची कसौटी है।

5.6 नाट्यानुवाद में सांस्कृतिकभाषिक संतुलन एवं चुनौतियाँ ,

नाटक एक दृश्यात्मक विधा हैइसलिए उसका अनुवाद अत्यंत जटिल और चुनौतीपूर्ण कार्य माना जाता है। अनुवादक को केवल शब्दों के पर्याय नहीं खोजने होतेबल्कि ऐसे वाक्यविन्यास गढ़ने पड़ते हैं जो लक्ष्य भाषा की प्रकृति - और रंगमंचीय परंपरा के अनुकूल हों। नाट्य भाषा में दृश्यात्मकता, अभिनय, गति और संवाद एकदूसरे में गुंथे होते हैं। इन्हें - अलग कर देने पर नाटक की संपूर्ण संरचना प्रभावित होती है। नाटक की भाषा लिखित होते हुए भी मूलतः मौखिक होती हैअतः उसका अनुवाद भी बोलचाल की सहज लय से युक्त होना चाहिए। नाटक की रंगमंचीयता ही उसे अन्य साहित्यिक विधाओं से भिन्नबनाती है। इसी संदर्भ में कहा गया है-

"There is enormous difference between a play and any other form of literature-A play is not really a piece of literature for reading. A true play is three dimensional. It is literature that walks and talks before our eyes."

नाटक की यह त्रिआयामिता नाट्यानुवाद की सबसे बड़ी चुनौती है। कार्यव्यापार-, अभिनय शैली, संवादों का उतारये सभी तत्व नाटक में अविभाज्य रूप से जुड़े रहते हैं। इसलिए अनुवादक को मूल नाटक के -चढ़ाव और मौन- रंगमंचीय पक्ष, उसकी संरचना और लक्ष्य भाषा की रंगपरंपर-ा की गहरी समझ होनी चाहिए। नाटक का चयन भी एक समस्या हैक्योंकि हर साहित्यिक नाटक मंचन योग्य नहीं होता।नाट्यानुवाद केवल भाषिक ज्ञान का कार्य नहीं हैबल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक संदर्भों की समझ भी अपेक्षित करता है। पात्रों के संवादों में मूल और लक्ष्य समाज का परिवेश प्रतिबिंबित होना चाहिए। मौन, भावनिर्देशों को आत्मसात कर उन्हें लक्ष्य भाषा में पुनःसृजित -भंगिमा और रंग- अधूरे में मौन की भूमिका और उसका अंग्रेज़ी -करना अनुवादक की रचनात्मक जिम्मेदारी है। मोहन राकेश के आधे ' अनुवादHalfway Houseइसका उदाहरण है'।

शेक्सपियर जैसे नाटककारों के अनुवाद में यह चुनौती और बढ़ जाती है। इस संदर्भ में रघुवीर सहाय का कथन उल्लेखनीय है-

"शेक्सपियर की भाषा कहींकहीं इतनी सरल है कि मानो अपने युग के आडंबर के बीच वह रचनात्मक अद्वितीयता - की एक चमक हो…"अतः नाट्यानुवादक से अपेक्षा है कि वह भाषासाथ रंगमंचीय संवेदना रखे-दक्षता के साथ-, जिससे कथा, चरित्र और वातावरण को परतपरत प्रभावी रूप में प्रस्तुत किया जा सके।-दर-

1. कथावस्तु:

नाटक अभिनेय विधा हैइसलिए उसके अनुवाद में सूजनात्मक प्रतिभा के साथ मंचीय कला की समझ भी अनिवार्य हो जाती है। मूलतः नाटक नाटककार की सौन्दर्यानुभूति का भाषिक विन्यास होता है और नाट्यानुवाद उसी विन्यास का किसी अन्य भाषा में सर्जनात्मक अंतरण है। कथावस्तुसंयोजन-, रंगशिल्प-, भाषिक बनावट, वातावरण- इन सभी दृष्टियों से नाटक कविता और कथात्मक साहित्य से-निर्मिति और चरित्रांकनभिन्न होता है। नाटक की कथावस्तु न

तो कविता जैसी संश्लिष्ट होती है और न उपन्यासकहानी की तरह वर्णनात्मक-; वह घटनाओं और स्थितियों के क्रम से, विश्लेषण और संश्लेषण के बीच गतिशील रहते हुए, प्रत्यक्ष रूप में सामने आती है।

नाट्यानुवाद में विषयवस्तु की गहन समझ और उसके मर्म तक पहुँचना अनुवादक के लिए आवश्यक है। उसे मूल कथानक को लक्ष्य भाषा के देशकाल, सामाजिक संदर्भ और भाषिक स्वभाव के अनुरूप ढालना होता है, ताकि भाव, विचार और प्रसंग पूरी तीव्रता से अभिव्यक्त हो सकें। भारतेंदु द्वारा The Merchant of Venice का दुर्लभ बंधु के रूप में किया गया रूपांतरण इसका सशक्त उदाहरण है। उन्होंने नाटक को भारतीय परिवेश देकर पुनर्रचना की और मैत्री के उदात्त आदर्श को केंद्र में रखते हुए शीर्षक तक परिवर्तित किया। नामों और स्थलों में ध्वन्यात्मक साम्य रखते हुए भारतीयकरण किया गयावेनिस वंशपुर-, एंटोनियो अनता, पोर्शिया पुरश्री और शाइलॉक शैलाक्ष बने।

Portia: You know I say nothing to him, for he understands not me, nor I him he hath neither Latin, French nor Italian and You will come into the cowit and swear that I have a poor penny worth in the English. He is a proper man's picture, but alas, who can converse with a dumbshow? How oddlyis he suited I think he bought his doubt in Italy, his round hosein French, his bonnet in Germany and his behavior everywhere.

पुरश्री तुम जानती हो कि मैं उसको कुछ कह नहीं सकती क्योंकि न वह मेरी बात समझता है, न मैं उसकी। वह न हिंदी जानता है, न ब्रजभाषा, न मारवाड़ी…

यहाँ विदेशी भाषाओं और वेशभूषा का स्थान भारतीय भाषाओं और परिधानों ने लिया-, तथा ईसाईयहूदी द्वंद्व - जैनी धार्मिक वैमनस्य में रूपांतरित किया गया। इसी-को आर्यतरह गोगोल के The Government Inspector को मुद्राराक्षस ने आला अफसर के रूप में भारतीय संदर्भों में ढाला।

नाट्यानुवाद दो भाषाओं के बीच कथानक-रूपांतरण का कार्य हैजहाँ भाषिक समतुल्यता के साथ सामाजिक-सांस्कृतिक संतुलन साधना पड़ता है। इसी मध्यम मार्ग का समर्थन रघ ुवीर सहाय करते हैं—मैंने मैकबैथ और बरनम वन " तथा उसके वाहक जन को मुख्य मान कर स्कॉटलैंड और इंग्लैंड के राजवंशगत और देशकालपरक सभी सन्दर्भ छोड़ दिए हैं… पात्रों के नाम यथावत रखते हुए भी कथा को सर्वजनीन बनाना चाहा है और सप्रयास देशीकरण तो नहीं ही किया है।"

2. संवाद:

नाटक पूरी तरह संवादों के माध्यम से प्रकट होने वाली साहित्यिक विधा है। पात्रों के आपसी वार्तालाप से ही कथावस्तु उद्घाटित होती है और नाटक का विकास होता है। नाट्य संवाद लिखित होते हुए भी बोले जाने और मंच पर अभिनीत होने की क्षमता से युक्त होते हैंयही इसकी सबसे बड़ी विशेषता है। आहार्य, आंगिक, वाचिक और सात्विक अभिनय की श्रृंखलाबद्धता संवादों में ही प्रकट होती है। संवाद कई स्तरों पर अर्थ व्यक्त करते हैंइसलिए अनुवादक के लिए संवादों की भाषा, रचना और अर्थवत्ता का सटीक निर्वाह करना आसान कार्य नहीं है। अनुवादक को संवादों के भीतर और उनके परिप्रेक्ष्य में निहित भाव, संदर्भ और ध्वन्यार्थ समझकर उन्हें लक्ष्य भाषा में पुनःस्थापित करना आवश्यक होता है।

नाटक की शैली और प्रकार के अनुसार संवाद का स्वरूप बदलता रहता है। उदाहरण के रूप में कालिदास की अभिज्ञानशाकुंतलम् का हिंदी और अंग्रेजी अनुवाद देखा जा सकता है। मूल पाठ में शकुंतला गतिभंग करती है और कहती हैकण्व वत्से (इति परवर्तते) (को नु क्यू ऐसो निवसने मे माज्जै को नु खल्वेश निवसने मे सज्जते। (गतिभंगरूपयित्वा): ।हिंदी अनुवाद में इसे संवादित रूप देते हुए लिखा गया—चलने में र) ुकावट का अनुभव करती हुईयह कौन मेरा !अरे (आँचल खींच रहा है? (पीछे मुड़करकण्व वत्से (, कुशा के पीछे काँटे से छिदे हुए मुँह को तेल से सहलाया था, वही फॉन, जो हाथ में दिये अनाज से प्यार से खिलता था, मार्ग रोककर खड़ा हो गया है।

इसी तरह मोहन राकेश के आधेअधूरे म- ें संवाद पात्रों की समझ, बेचैनी और अधूरेपन को प्रकट करते हैं। मूल संवाद:

स्त्रीउसकी आर्थिक स्थिति ठीक है :?

बड़ी लड़कीहाँ। :

स्त्रीसेहत :?

बड़ी लड़कीबहुत अच्छी। :

पुरुष एकसब कुछ अच्छा ही अच्छा है। (बिना देखे) :

अंग्रेजी अनुवाद:

The woman: Is he short of money?

The older Girl: No

The Woman: Is he unwell?

The older Girl: No

The First Man: No! No! (Without looking up) No problem at all.

नाट्य संवादों में कभी एक शब्द कई वाक्यों का कार्य करता हैऔर कभी कई छोटे वाक्यों को जोड़कर मानसिक स्थितियों को दर्शाना पड़ता है। अनुवादक को संवादों में लय, भाव और अर्थ की गतिशीलता बनाए रखनी होती है। किसी भी संवाद में किए गए असावधानीपूर्ण परिवर्तन नाटक और नाटककार के साथ अन्याय कर सकते हैं। उदाहरण के लिए मराठी नाटक विवाह का बंधन में हास्यव्यंग्य के माध्यम से सामाजिक वैवाहिक रीति-यों को दर्शाया गया है, लेकिन हिंदी अनुवाद में संवादों की अनावश्यक कटौती ने नाटक की मूल संवेदना और कथ्य को प्रभावित किया।

3.भाषा:

भाषा नाटक की सबसे महत्वपूर्ण आधारशिला होती है। नाटककार अपनी भाषा के माध्यम से कथानक, चरित्र और घटनाओं को दर्शकों के समक्ष प्रस्तुत करता है। किसी नाटक का कथ्य जिस युग या काल से संबंधित होता हैउसकी भाषाशैली भी उसी समय की प्रतीत होती है। नाट्य भाषा कभी काव्यात्मक और अलंकृत होती हैकभी सामान्य बोलचाल - जैसी, कभी संवादात्मक और कभी स्वगत होती है। रंगदर्शन में नेमिचंद्र जैन ने नाट्यानुवाद में भाषा संबंधी समस्याओं पर लिखा है कि संवादों का पात्रानुकूल होना अनुवाद में सबसे बड़ी चुनौती है। इस समस्या के दो विरोधाभासी पक्ष हैं। एक ओर भाषा इतनी सूक्ष्म और अभिव्यंजनापूर्ण होनी चाहिए कि विभिन्न पात्रों की व्यक्तित्व की परतें दिखाई दें। दूसरी ओरयह भाषा सामान्य बोलचाल से बहुत अलग नहीं हो सकती।

नाटकीय संवाद पात्रों के लिए सहज और स्वाभाविक होते हुए भी कलात्मक और निखरे रूप में लिखे जाते हैं। दुर्भाग्यवशकई अनूदित नाटकों में यह विशेषता नष्ट हो जाती है। अधिकांश अनूदित नाटकों में पात्र एक जैसीसाहित्यिक और शुद्ध भाषा बोलते हैंजिससे उनकी विशिष्टता समाप्त हो जाती है। नाट्य भाषा तीन स्तरों—सूच्य, प्रतीकात्मक और अभिनेय—पर काम करती है। अनुवादक को लक्ष्य भाषा में इन्हीं गुणों की आवश्यकता होती है।जब नाटक का कोई भाग कठिन हो और उपयुक्त शब्द न मिलेंतो अनुवादक को शब्द निर्माण या क्षेत्रीय भाषाओं की सहायता लेनी चाहिए। यदि तब भी उपयुक्त शब्द न मिले तो उसे छोड़ देना बेहतर है। कभीकभी मूल शब्दों का उच्चारण रखा जा सकता है-, बशर्ते नाटक की संवेदना प्रभावित न हो। मराठी, तमिल, मलयालम जैसे कई भारतीय नाटकों के सफल हिंदी अनुवाद भाषा संबंधी बाधाओं को पार करने का उदाहरण हैं। गिरीश कर्नाड़, लंकेश, आद्य रंगाचार्य, गोपाल कृष्णनन और एमनंदी जैसे .आर. नाटककारों के अनूदित नाटक हिंदी में सफल हुए हैं।'तुगलक' नाटक की प्रसिद्धि भी इसके विभिन्न भाषाओं के अनुवादों पर आधारित है।अनूदित पाठ में भाषा शैली की विविधता बनी रहनी चाहिए, अन्यथा नाटक का मूल सौंदर्य समाप्त हो जाता है।

:रंगमच एवं अभिनेता 4

रंगमंच नाटक का मूल माध्यम है। बिना मंचन के नाटक की उपयोगिता और नाट्यानुवाद की सार्थकता सीमित रह जाती है। नाट्यानुवाद का अर्थ है कि स्रोत भाषा के नाटक को उसकी सभी विशेषताओं के साथ लक्ष्य भाषा में इस तरह प्रस्तुत किया जाए कि वह रंगमंच पर उतनी ही प्रभावशाली हो जितना मूल नाटक। नाटककार जिस शैली और रंगमंचीय रूप का चयन करता है, उसका असर नाटक की संरचना, संवाद और चरित्र निर्माण पर पड़ता है। अनुवादक के लिए इन तीनों तत्वों को बनाए रखना अनिवार्य होता है।नाटक और रंगमंच परस्पर आश्रित हैं। नाट्य लेखन में मिश्रित अभिनय तत्वों के कारण ही नाटक का मंचन संभव होता है। अलग भाषा और संस्कृति के नाटक का अनुवाद करना और उसे अभिनेयता के साथ प्रस्तुत करना चुनौतीपूर्ण कार्य है। कथावस्तु, संवाद, देशकाल, वातावरण, भाषा शैली और अभिनेयता सभी का ध्यान अनुवादक को रखना पड़ता है। अनूदित नाटक तब तक सफल नहीं माना जा सकता जब तक वह रंगमंच पर दर्शकों को मूल नाटक के समान आकर्षित न करे।

पात्रों और परिस्थितियों के अनुसार भाषा की पकड़, मुहावरे और आंचलिक शब्दों का सही प्रयोग अनुवादक की सफलता के लिए महत्वपूर्ण है। विशेषकर निचले वर्ग के पात्रों के संवादों में तद्भव, देशज और बोलचाल की भाषा में निहित लय और भावाभिव्यंजना बनाए रखना चुनौतीपूर्ण होता है। देशकाल और वातावरण की सटीक प्रस्तुति दृश्य उपकरण और प्रकाश योजना से होती है। हास्य और व्यंग्य का अनुवाद भावानुवाद के माध्यम से मूल प्रभाव पैदा करता है। काव्य नाटकों में स्वरसंगीत-, पदरचना, छंद और बिंब योजना अनुवाद में मुख्य चुनौतियाँ हैं।ऐसे सफल नाट्यानुवाद के उदाहरण भी हैं। गिरीश कर्नाड़ के 'तुगलक' का मंचन इब्राहीम अल्काजी ने किया। उनके नाटक 'रक्त कल्याण' का अनुवाद रामगोपाल बजाज ने किया, जिसमें पैंतीस से अधिक पात्र होने के बावजूद कथानक और दृश्यबंध सुगठित हैं। निर्देशक कभीसी परिवर्तन करते हैं-कभी छोटी-, जैसे वसंत देव ने 'जाति ही पूछो साधु की' में नाटक का अंत बदलकर नया बिंब प्रस्तुत किया, बिना मूल कथानक को प्रभावित किए।

5. देशकाल:

हर भाषा अपने देश और समाज में विकसित होती है। इस कारण उसकी रचना पर उस क्षेत्र की संस्कृति, रीति-रिवाज और सामाजिक परिवेश का प्रभाव स्वाभाविक होता है। नाट्यानुवाद केवल भाषायी समस्याओं तक सीमित नहीं हैइसमें लक्ष्य भाषा के समाज और संस्कृति का पुनर्निर्माण भी आवश्यक है। दूसरे शब्दों में, अनुवादक को नाटक के संदर्भ, परिस्थितियाँ, संकेत और सामाजिकसांस्कृतिक वातावरण को लक्ष्य भाषा में जीवंत करना होता है।विदेशी भाषा और -संस्कृति से भारतीय भाषा में अनुवाद करते समय सतर्कता और सूक्ष्मता अत्यधिक महत्वपूर्ण होती है। स्रोत भाषा का परिवेश, जब लक्ष्य भाषा के लिए नया होता हैतो इसे अनुकूल बनाना चुनौतीपूर्ण हो जाता है। उदाहरणतः "ग्रीक भाषा के नाटक का अनुवाद अगर हिंदी में कर रहे हैं तो ग्रीक की रूढ़ियों, आचारविचार-, संबोधन आदि का भी अनुवाद हिंदी में करना है। हिंदी प्रदेश के लिए ये विदेशी शब्द, तथ्य जब परिचित ही नहीं, तब हिन्दी में उनके ची शब्द नहीं मिल सकते। फिर ग्रीक संस्कृति को आधुनिक शब्दों में प्रस्तुत करना मुश्किल है। शेक्सपियर के कई ऐतिहासिक नाटकों के अनुवाद में भी यही समस्या है। ईसाई समय की धार्मिक एवं सांप्रदायिक रूढ़ियों, राजनैतिक एवं सामाजिक व्यवस्था आदि का भी सही चित्रण अनुवाद में लाना बड़ी चुनौती का काम है।

असली सफलता उन्हीं अनुवादकों को मिलती है जिन्होंने स्रोत और लक्ष्य दोनों भाषाओं के परिवेशगत अंतर को समझा और उसे सटीक रूप से अनुवाद में प्रस्तुत किया। भारत जैसे विविध भाषापरिवेश वाले देश मेंएक भाषा से दूसरी -भाषा में अनुवाद करते समय संवादों में परिवेश की भिन्नता का ध्यान रखना अनिवार्य है। विजय तेंदुलकर, गिरीश कर्नाड़, बादल सरकार, शंभु मित्र जैसे नाटककारों के सफल अनुवाद इस चुनौती को पार करने के उदाहरण हैं।नाट्यानुवाद में देशकाल और संस्कृति का सही चित्रण न केवल भाषा को प्रभावी बनाता है, बल्कि नाटक को रंगमंच पर सफल और प्रासंगिक भी बनाता है।

अपनी प्रगति जांचें

प्रश्न 4: आचार्य भरतमुनि ने नाटक को किस प्रकार की कला माना है? उनके नाट्य संबंधी दृष्टिकोण को स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न 5: भारतीय नाट्य परंपरा में भरतमुनि के नाट्यशास्त्र का क्या महत्व है?

प्रश्न 6: जयशंकर प्रसाद के आगमन से हिंदी नाटक में किस प्रकार का परिवर्तन आया? उनकी भाषा की विशेषताएँ लिखिए।

5.7 हिंदी रंगमच पर भारतीय और विदेशी नाटकों का अनुवादपरंपरा और विविधता :

पिछले पंद्रहबीस वर्षों में हिंदी रंगमंच पर नाटकों के अनुवाद की प्रक्रिया व्यापक और तीव्र रूप से विकसित हुई - है। हिंदी अनुवाद ने विभिन्न भारतीय भाषाओं के नाटकों को दर्शकों तकपहुँचाने का प्रभावी माध्यम बनाया। इसी कारण, हिंदी अनुवाद के जरिए भारतीय भाषाओं में परस्पर अनुवाद की प्रवृत्ति भी बढ़ी। संस्कृत, उर्दू, बांग्ला, मराठी, कन्नड़, तमिल, गुजराती और मलयाली जैसी भाषाओं के नाटक हिंदी रंगमंच पर अत्यंत लोकप्रिय हुए।

1. संस्कृत नाटकों का अनुवाद:

संस्कृत नाटकों का हिंदी में अनुवाद खड़ी बोली के विकास के साथ ही शुरू हुआ। आज संस्कृत का महत्व कुछ कम हुआ हैफिर भी इन नाटकों का अनुवाद और मंचन लगातार जारी है। सुप्रसिद्ध निर्देशक व कारंत ने भास के नाटक .व. 'उरूभंग' और 'स्वप्नवासवदत्ता' का अनुवाद किया और इन्हें सफलतापूर्वक मंचित भी किया।नाट्यालोचक नेमिचंद्र जैन ने उर्मिभूषण गुप्ता के साथ मिलकर बोधायन के 'भगवदज्जुकम', महेन्द्रविक्रम वर्मन के हास्य नाटक 'मतविलास' और वत्सराज के 'हास्यचूड़ामणि' का अनुवाद किया। संस्कृत नाटकों के अनुवाद में केवल भाषा का ज्ञान ही पर्याप्त नहीं है। मूल भाषा की समझ, व्याकरण और शैली का सही प्रयोग, सामाजिकसांस्कृतिक संदर्भ और रंगकला की पकड़ भी अत्यंत - आवश्यक है। यही कारण है कि नेमिचंद्र जैन ने संस्कृत के प्राध्यापक उर्मिभूषण गुप्ता को अनुवाद में सहयोगी बनाया।

कई संस्कृत नाटकों का हिंदी में विभिन्न बोलियों में अनुवाद भी हुआ। शूद्रक के 'मृच्छकटिकम्' का हरीश निगम ने और कालिदास के 'मालविकाग्निमित्रम्' का सत्यव्रत सिन्हा ने मालवी बोली में किया। हबीब तनवीर ने 'मृच्छकटिकम्' का लाजवाब मंचन 'माटी गाड़ी' के नाम से किया। इन अनुवादों और मंचनों में बोलियों के प्रयोग ने नाटकों में एक विशेष चमक और अंतरंगता दीजिसने दर्शकों का ध्यान आकर्षित किया।

2. बांग्ला नाटकों का अनुवाद:

बांग्ला के सुप्रसिद्ध नाटककार बादल सरकार के नाटकों का हिंदी अनुवाद हिंदी रंगमंच की बड़ी उपलब्धि माना जाता है। उनके लगभग सभी नाटकों का अनुवाद हो चुका है और ये मंच पर अत्यंत सफल रहे हैं।प्रतिभा अग्रवाल ने बादल सरकार के 'इंद्रजीत', 'पगला घोड़ा', 'तीसरी शताब्दी', 'बड़ी आजी' और 'राम, श्याम यद्' का उत्कृष्ट अनुवाद किया। इन अनुवादों ने हिंदी रंगमंच पर बांग्ला नाटकों की भावनात्मक गहराई और सामाजिक संवेदनशीलता को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया।

बांग्ला नाटकों के हिंदी अनुवाद ने यह साबित किया कि भाषा की बाधा नाटकों के मूल भाव और संदेश को रोक नहीं सकती। इन अनुवादों के माध्यम से हिंदी रंगमंच ने सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक मुद्दों पर गहरी समझ विकसित की।

3. मराठी नाटकों का अनुवाद:

मराठी नाटकों की हिंदी रंगमंच पर लोकप्रियता अद्वितीय रही है। कई बार दर्शक यह पहचान ही नहीं पाते कि वे हिंदी नहीं, मराठी नाटक देख रहे हैं।विजय तेंदुलकर, गोविंद पुरुषोत्तम देशपांडे और महेश उलकुंचवार के लगभग सभी नाटकों का हिंदी अनुवाद उपलब्ध है। वसंत देव ने इन नाटकों का सफल अनुवाद किया। तेंदुलकर के चर्चित नाटकों जैसे

'सखाराम बाइंडर', 'घासीराम कोतवाल', 'कन्यादान', 'मीता की कहानी (मित्रांची गोष्ठ)', 'खामोश अदालत', 'गिद्ध' और 'जाति ही पूछो साधु की' का हिंदी अनुवाद और मंचन किया गया। इसी तरह जीदेशपांडे और महेश उलकुंचवार के कई .पी. नाटकों का हिंदी अनुवाद हुआ।इन अनुवादों ने मराठी समाज और संस्कृति की सूक्ष्मताओं को हिंदी में जीवंत रूप से प्रस्तुत किया। दर्शकों को नाटकीय अनुभव के साथसाथ सांस्कृतिक अंतर्दृष्टि भी प्राप्त हुई।-

4. अन्य भारतीय भाषाओं के नाटकों का अनुवाद:

कन्नड़, तमिल और गुजराती नाटकों का अनुवाद भी हिंदी रंगमंच पर सफल रहा।कन्नड़ के आद्य रंगाचार्य का 'सुनो जनमेजय' और गिरीश कर्नाड के 'तुगलक' तथा 'हयवदन' का अनुवाद लोकप्रिय रहा। ब कारंत ने .व.'भीष्मविजय यक्षगान' का हिंदी अनुवाद किया और कवि रघुवीर सहाय ने यक्षगान के पदों का अनुवाद किया।

मलयाली नाटककार कावालय नारायण पाझणकर के 'पशुगायत्री' का हिंदी अनुवाद भारतरत्न भारथव ने किया और दिल्ली में सफल मंचन हुआ। इसी नाटक का मेवाड़ी अनुवाद भानु भारती ने किया।

राजस्थानी भीलों के पारंपरिक अनुष्ठान आधारित गवटी नाट्य शैली में अनुवाद भी दर्शकों के बीच रोचक और आकर्षक साबित हुआ।

5. विदेशी नाटकों का अनुवाद:

हिंदी रंगमंच ने शेक्सपियर, ग्रीक त्रासदियों, इतालवी, रूसी, फ्रांसीसी, जर्मन, जापानी और स्पेनिश नाटकों का भी अनुवाद किया।शेक्सपियर के कई नाटकों का हिंदी अनुवाद हुआ। हरिवंश राय बच्चन ने 'ओथेलो' का पथबद्ध अनुवाद किया।ग्रीक त्रासदियों जैसे सेफोक्लीज के 'ओडीपस', यूरोपाइड्स के 'ओरेस्ट्स' (मातृहंता और एस्कीलस के ('प्रोमीथियस' का अनुवाद बल्लभ सिद्धार्थ ने किया।मध्ययुगीन इतालवी लेखक गोल्डोनी के हास्य नाटक 'ए सर्वेंट ऑफ टू मास्टर्स' का अनुवाद 'नौकर शैतान मालिक हैरान' के रूप में मंचित हुआ।

1970–के दशक में रूसी साहित्य का ह 80िंदी अनुवाद व्यापक रूप से हुआ। टॉल्सटाय, गोगोल, गोर्की और चेखव के नाटक हिंदी में उपलब्ध हुए। टॉल्सटाय की 'पावर ऑफ डार्कनेस' का रूपांतरण जैनेन्द्र कुमार ने 'पाप और प्रकाश' के नाम से किया। चेखव के नाटकों का अनुवाद राजेन्द्र यादव ने किया। गोगोल के 'इंस्पेक्टर जनरल' का मुद्राराक्षस ने 'आला अफसर' नाम से नौटंकी शैली में मंचित किया।

आधुनिक विदेशी नाटककारों में जर्मन ब्रेश्ट, स्पेनिश लोर्का, फ्रांसीसी अल्बेर कामू और जापानी कुरोसावा प्रमुख हैं। ब्रेश्ट के 'डेयरकाउकाजिशे काइडेक्राइज' का अनुवाद 'खड़िया का घेरा', 'द्राइगोशेन ओपेर' का 'तीन टके का स्वांग' और 'उद इचरूकिंडर' का 'हिम्मतमाई' नाम से हुआ। लोर्का के नाटक 'यर्मा', 'ब्लड बेडिंग', 'श्याममेकर्स प्रॉडीजियस बाइफ' का अनुवाद हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं में भी हुआ। कामू के नाटक 'कलिगुला', 'न्याप्रिय' और 'अर्थदोष' का हिंदी अनुवाद शरद चंद्रा ने फ्रेंच से किया। जापानी नाटक 'रासोमन' हिंदी में अत्यंत लोकप्रिय रहा।

इन अनुवादों और मंचनों ने हिंदी रंगमंच में विविधता और गहराई दोनों का समावेश किया। दर्शकों को विभिन्न देशों की सांस्कृतिक, सामाजिक और राजनीतिक छटा का अनुभव हुआ। हिंदी अनुवाद ने न केवल भारतीय भाषाओं को जोड़ने का कार्य कियाबल्कि विदेशी नाटकों के माध्यम से रंगमंच को वैश्विक दृष्टिकोण और नई कल्पनाओं से भी समृद्ध किया।हिंदी रंगमंच पर नाटकों का अनुवाद न केवल भाषाओं के बीच पुल बनाने का माध्यम बना है, बल्कि दर्शकों को विविध सांस्कृतिक और सामाजिक अनुभव भी प्रदान करता है। संस्कृत, बांग्ला, मराठी, कन्नड़, मलयाली और विदेशी भाषाओं के नाटकों का हिंदी में अनुवाद रंगमंच की समृद्ध परंपरा को और विस्तारित करता है। इन अनुवादों ने मूल भाव, सामाजिकसांस्कृतिक संदर्भ और नाटकीयता को संरक्षित- रखते हुए दर्शकों के सामने प्रस्तुत किया। हिंदी अनुवाद ने भारतीय और वैश्विक नाटकों को जोड़कर रंगमंच में विविधता, गहराई और समकालीन सजीवता प्रदान की है।

5.दृश्य माध् 8यमप्रकार और विशेषताएँ ,स्वरूप :

दृश्य माध्यम वे साधन हैं जिनके माध्यम से केवल देखने योग्य सामग्री लोगों तक पहुँचाई जाती है। यह शिक्षा, सूचना और मनोरंजन के क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इस माध्यम में दृश्य सामग्री ही प्रधान होती है और इसकी आकर्षक प्रस्तुति दर्शकों पर गहरा प्रभाव डालती है।दृश्य सामग्री विभिन्न प्रकार की होती है और इसे बनाने के लिए अलग:अलग तकनीकों और उपकरणों का प्रयोग किया जाता है। इनमें प्रमुख हैं-

वीडियो फुटेज: यह कैमरों द्वारा रिकॉर्ड की जाने वाली चलित दृश्य सामग्री होती है। आजकल वीडियो फुटेज बनाने के लिए पेशेवर कैमरों से लेकर स्मार्टफोन तक का उपयोग किया जाता है।

फिल्म फुटेज: परंपरागत फिल्मआधारित कैमरों से बनाई जाने वाली सामग्री को फिल्म फुटेज कहते हैं। इसका उपयोग - मुख्यतः सिनेमा और उच्च बजट वाले टेलीविजन कार्यक्रमों में किया जाता है। फिल्म फुटेज की गुणवत्ता वीडियो फुटेज से बेहतर मानी जाती थीलेकिन अब इलेक्ट्रॉनिक सिनेमा कैमरों ने इसकी जगह ले ली है।

छायाचित्र: स्थिर दृश्य या फोटोग्राफ का उपयोग समाचार, डॉक्युमेंट्री और अन्य दृश्य परियोजनाओं में किया जाता है। छायाचित्रों के माध्यम से जटिल जानकारी को सरल और आकर्षक तरीके से प्रस्तुत किया जा सकता है।

ग्राफिक्स और एनिमेशन: ग्राफिक्स में चार्ट, नक्शे, आंकड़े और अन्य दृश्य तत्व शामिल होते हैं। एनिमेशन कंप्यूटर की सहायता से बनाए गए गतिशील दृश्य हैं। यह बच्चों के कार्टून, शैक्षिक कार्यक्रम और दुर्घटनाओं या घटनाओं के विवरण प्रस्तुत करने में उपयोगी है। एनिमेशन 2D और 3D दोनों प्रकार के हो सकते हैं।

दृश्य प्रभाव: कंप्यूटर सॉफ़्टवेयर की मदद से ऐसे दृश्य बनाए जाते हैं जो वास्तविक नहीं होते। इन्हें आकर्षक बनाने और सामग्री की प्रभावशीलता बढ़ाने के लिए प्रयोग किया जाता है।

दृश्य माध्यमों के प्रमुख प्रकार हैं:

1. फिल्म सबसे पुराना और :प्रभावशाली माध्यम। बड़े पर्दे और सिनेमा हॉल का वातावरण इसे विशेष बनाता है।
2. टेलीविजनलोकप्रिय और व्यापक रूप से इस्तेमाल होने वाला माध्यम। समय के साथ तकनीक के विकास के साथ : इसे लगातार बदला गया।
3. वीडियो प्लेयरपहले वीडियो कैसेट :, सीडी, डीवीडी, ब्लू रे-का प्रयोग होता था। अब फ्लैश मेमोरी और क्लाउड संग्रहण के माध्यम से भी वीडियो सामग्री देखी जा सकती है।
4. ऑनलाइन माध्यमइंटरनेट के माध्यम से कंप्यूटर :, लैपटॉप और स्मार्टफोन पर वीडियो सामग्री देखी जा सकती है। ओटीटी प्लेटफ़ॉर्म जैसे नेटफ्लिक्स, अमेज़न प्राइम और यूट्यूब इस क्षेत्र में लोकप्रिय हैं।

दृश्य माध्यम की विशेषताएँ है कि यह अत्यंत प्रभावशाली और रोचक होता है।जटिल जानकारी को सरल और स्पष्ट रूप में प्रस्तुत करने की क्षमता रखता है।शिक्षा, सूचना और मनोरंजन के क्षेत्र में व्यापक प्रभाव डालता है। मूलतःदृश्य माध्यम ने सूचना और मनोरंजन के क्षेत्र में अपनी विशेष पहचान बनाई है और भविष्य में ऑनलाइन और डिजिटल तकनीक के माध्यम से इसकी महत्ता और बढ़ती जाएगी ।

5. 9 दृश्य साहित्य और अनुवाद

'रूपांतरण' शब्द का मूल अर्थ किसी वस्तु, व्यक्ति या घटना को नए रूप में ढालने या परिवर्तित करने से संबंधित है। यह केवल भौतिक रूप में परिवर्तन नहींबल्कि अनुभव, दृष्टिकोण और संवेदना के स्तर पर भी कार्य करता है। जब हम किसी कथा, उपन्यास या पात्र को बारबार उसी रूप में देखते हैंतो हमारे मन में ताजगी की अनुभूति कम होने लगती है। - इसलिए साहित्यमें रूपांतरण का प्रयास इस ताजगी और नवीनता की अनुभूति पैदा करता है। रूपांतरण का संबंध केवल

रूप बदलने तक सीमित नहीं हैयह साहित्यिक रचनाओं की गहन समझ और उनके भावों, दृष्टिकोणों और अर्थों के नवप्रस्तुतीकरण से भी जुड़ा है।

साहित्यिक रूपांतरण का उद्देश्य किसी मौलिक पाठ को नए पाठक वर्ग या नए सामाजिकसांस्कृतिक संदर्भ में - प्रासंगिक बनाना होता है। इसे अंग्रेजी मेंAdaptation कहा जाता है। यह प्रक्रिया न केवल साहित्यिक रचनाओं के अंतरविधागत रूपांतरण जैसे उपन्यास से नाटक), कविता से गद्य तक सीमित रहती हैबल्कि मौलिक पाठ (के भाव और संदेश को बनाए रखते हुए उसे नए पाठकों के दृष्टिकोण और अनुभव के अनुरूप ढालने का कार्य भी करती है।

वर्तमान समय में मानव मिजाज और सामाजिकसांस्कृतिक संदर्भ तीव्र गति से बदल रहे हैं। इस परिवर्तनशीलता - ने साहित्यिक रूपांतरण की प्रक्रिया को और अधिक आवश्यक और जटिल बना दिया है। साहित्यिक रचनाओं में पात्रों, कथानक, घटनाओं और सामाजिक परिवेश का यथार्थ चित्रण उनके अनुवाद और रूपांतरण के लिए चुनौतीपूर्ण होता है। यही कारण है कि आधुनिक अनुवाद और रूपांतरण में केवल शब्दों का परिवर्तन नहींबल्कि भाव, दृष्टिकोण और सांस्कृतिक संदर्भों का अनुकूलन भी शामिल होता है।अनुवाद और रूपांतरण के बीच सूक्ष्म अंतर होता है। अनुवाद में मूल पाठ के शब्द और अर्थ संरचना का प्रत्यक्ष रूपांतरण होता हैजबकि रूपांतरण में सांस्कृतिक संदर्भ, सामाजिक पृष्ठभूमि और कथानक का स्थानीयकरण भी शामिल होता है। उदाहरण स्वरूपशेक्सपियर के नाटकों का भारतीय मंचन केवल भाषाई : अनुवाद नहीं थाइसमें पात्रों, संवादों और परिस्थितियों का भारतीय संदर्भ में रूपांतरण भी शामिल था। इसी प्रकारवाल्मीकि रामायण के आधार पर तैयार किए गए स्थानीय संस्करण, जैसे कार्बी रामायण, केवल अनुवाद नहीं थेबल्कि भारतीय सामाजिकसांस्कृतिक परिवेश और स्थानीय परंपराओं के अनुरूप रूपांतरण थे।-

महत्वपूर्ण बिंदु

साहित्यिक रूपांतरण में मुख्य रूप से तीन प्रकार की प्रक्रिया होती है:

1. पाठगत रूपांतरण – इसमें एक साहित्यिक विधा को दूसरी विधा में परिवर्तित किया जाता है। उदाहरण के लिए, उपन्यास से नाटक, कहानी से कविता, या कविता से गद्य का रूपांतरण। यह प्रक्रिया मौलिक अर्थ और संरचना को बनाए रखते हुए साहित्यिक शैली के अनुरूप होती है।
2. माध्यमगत रूपांतरण – इसमें साहित्यिक पाठ को नए माध्यम में प्रस्तुत करने के लिए उसके रूप और संरचना में अनुकूलन किया जाता है। उदाहरण स्वरूप, उपन्यास या कहानी को ऐसे ढंग से प्रस्तुत करना कि वह नए पाठकों या विद्यार्थियों के लिए सहज और रोचक लगे।
3. संयुक्त रूपांतरण – इसमें पाठगत और माध्यमगत दोनों प्रकार के रूपांतरण शामिल होते हैं। यह प्रक्रिया मौलिक पाठ की भावनाओं और संदेश को बनाए रखते हुए उसे नए दृष्टिकोण और सांस्कृतिक संदर्भ में पुनर्निर्मित करती है।

रूपांतरण की प्रक्रिया में सबसे पहला कदम होता है पाठ का चयनजो मूल रूप से उसकी प्रकृति और उद्देश्य पर निर्भर करता है। पाठ का चयन इसलिए महत्वपूर्ण है कि केवल वही पाठ रूपांतरण के योग्य होता है जिसमें कथानक, पात्र और घटनाओं की संपूर्णता को नए रूप में प्रस्तुत किया जा सके। चयन के बादस्रोत पाठ में आवश्यक परिवर्तनों की पहचान की जाती है। यह परिवर्तनों की प्रकृति केवल भाषा तक सीमित नहीं होतीबल्कि इसमें समय, स्थान, सामाजिक संदर्भ और पात्रों की मनोदशा को भी शामिल किया जाता है।

उपन्यास और कहानी का रूपांतरण करने की प्रक्रिया में विशेष सावधानी बरतनी पड़ती है। उपन्यास अपने विस्तार और गहन विवरण के कारण अधिक जटिल होता हैजबकि कहानी अपेक्षाकृत संक्षिप्त और केंद्रित होती है। इसलिए उपन्यास के रूपांतरण में यह तय करना जरूरी होता है कि किस कथानक, संदेश या चरित्र को नाटक या नए रूप में स्थान

दिया जाए। कहानी के रूपांतरण में अधिकांशतः संपूर्ण कथा को एक छोटी और सघन संरचना में ढाला जा सकता है।रूपांतरण में केवल कथ्य और पात्रों का परिवर्तन ही नहीं होताबल्कि मौखिक और दृश्यप्रस्तुति के तत्वों का समावेश - भी आवश्यक होता है। प्राचीन भारतीय साहित्य में महाकाव्यों और पुराणों का मौखिक पाठ और अभिनीत प्रस्तुतियाँ इस प्रक्रिया का उत्तम उदाहरण हैं। रामायण, महाभारत और भगवद्गीता जैसी रचनाएँ केवल पढ़ी नहीं जाती थींबल्कि विभिन्न शैलियों में उनका अभिनय और प्रस्तुति भी होता था। इसी प्रक्रिया में कथानक का विस्तार, पात्रों का चित्रण, भाषा और संगीत का उपयोग स्थानीय संदर्भ के अनुसार बदल जाता था।

कार्बी रामायण इसका एक विशेष उदाहरण है। असम के कार्बी समुदाय में यह संस्करण स्थानीय परिदृश्य, कृषि और सांस्कृतिक जीवन के अनुरूप ढाला गया। सीता का झूम कृषि में दक्ष होना, पात्रों का स्थानीय परिवेश और दैनिक जीवन का विवरण वाल्मीकि रामायण से भिन्न था। इसी प्रकार तुलसीकृत रामचरितमानस, कंब रामायण, कृतिवास रामायण और रंगनाथ रामायण में भी स्थानीय संदर्भ और सामाजिक परिवेश के अनुसार रूपांतरण किए गए हैं। इस प्रकार, रूपांतरण केवल अर्थ का परिवर्तन नहींबल्कि साहित्यिक संरचना, माध्यम और सांस्कृतिक संदर्भ का पुनर्निर्माण भी है।

अनुवाद और रूपांतरण का महत्व केवल साहित्य के क्षेत्र तक सीमित नहीं है। यह साहित्यिक संवेदनाओं को नए पाठक वर्ग तक पहुँचाने और सांस्कृतिक संवाद स्थापित करने का माध्यम है। विशेष रूप से दृश्य साहित्य मेंअनुवाद और रूपांतरण पाठकों और दर्शकों को मौलिक संदेश और भावनाओं की प्रत्यक्ष अनुभूति का अवसर प्रदान करते हैं। बिना रूपांतरण के साहित्यिक रचनाएँ केवल पाठक वर्ग तक सीमित रह जाती हैंजबकि रूपांतरण उन्हें विविध सामाजिक और सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्यों में जीवंत करता है।

उपन्यास, कहानी और कविता के रूपांतरण में मुख्य चुनौती यह है कि मौलिक पाठ की संवेदनाएँ, पात्रों की मनोदशा और कथानक की गहनता को बनाए रखते हुए उसे संक्षिप्त और सुसंगठित रूप में प्रस्तुत किया जाए। इस प्रक्रिया में लेखक, रूपांतरणकार और संपादक की सूझबूझ और सृजनात्मक क्षमता महत्वपूर्ण होती है। रूपांतरण केवल साहित्य - का पुनर्लेखन नहीं है; यह सांस्कृतिक और बौद्धिक संवाद की कला है।अंततः, साहित्यिक रूपांतरण का उद्देश्य मौलिक रचना को नए संदर्भ में जीवंत और प्रासंगिक बनाना है। यह प्रक्रिया केवल भाषाई अनुवाद तक सीमित नहीं रहती, बल्कि इसमें कथ्य, पात्र, समय, स्थान और भावनाओं का स्थानीयकरण भी शामिल होता है। दृश्य साहित्य के क्षेत्र में अनुवाद और रूपांतरण, पाठक और लेखक के बीच पुल का कार्य करते हैं। यह न केवल साहित्य की पहुंच बढ़ाते हैंबल्कि इसे सांस्कृतिक और भावनात्मक रूप से समृद्ध भी बनाते हैं।साहित्यिक रूपांतरण और अनुवाद इसलिए केवल तकनीकी प्रक्रिया नहींबल्कि सृजनात्मक और संवेदनात्मक प्रयास हैंजो मौलिक रचना की गहराई को नए रूप में पुनः प्रस्तुत करते हैं और पाठकों को एक नई अनुभूति प्रदान करते हैं।

साहित्यिक कृतियों—जैसे उपन्यास, कहानी या नाटक—का टेलीविजन और सिनेमा में रूपांतरण केवल शब्दों का प्रतिलिपिकरण नहीं हैबल्कि एक रचनात्मक और तकनीकी प्रक्रिया है। रूपांतरण में कथानक, पात्र, समय, स्थान और संवाद में आवश्यक परिवर्तन किए जाते हैं ताकि दर्शक इसे सहजता से समझ सकें और दृश्य माध्यम की सीमाओं के अनुसार कहानी प्रभावी ढंग से प्रस्तुत हो। धारावाहिकों में श्रृंखलाबद्धता, भावनात्मक गहराई और पारिवारिक प्रसंग पर जोर होता हैजबकि फिल्मों में कथानक की सघनता, दृश्यात्मक तकनीक और संवाद की प्रभावशीलता प्रमुख होती है।

यह रूपांतरण एक प्रकार का अनुवाद कार्य भी है। साहित्यिक भाषा और शैली को दृश्य भाषा में अनुवादित करना आवश्यक होता है। इसमें लंबे उपन्यास या कहानी को सीमित समय में प्रस्तुत करने के लिए मुख्य कथानक को प्राथमिकता देना, उपकथाओं और सहायक पात्रों का समायोजन करना, संवादों को दैनिक भाषा में ढालना और दृश्य प्रभाव बढ़ाने के लिए तकनीकी उपकरणों का प्रयोग करना शामिल है। अनुवाद कार्य केवल भाषा का नहीं, बल्कि भाव, अर्थ और शैली का भी होता हैजिससे मूल पाठ की आत्मा बनी रहती है और दर्शक उसे नए रूप में अनुभव कर सकें।

इस दृष्टि सेसाहित्यिक रूपांतरण और अनुवाद कार्य आपस में जुड़े हुए हैं। जैसे अनुवादक एक भाषा को दूसरी भाषा में सहजता और प्रभाव के साथ परिवर्तित करता हैवैसे ही पटकथा लेखक साहित्यिक पाठ को दृश्यश्रव्य माध्यम में - अनुकूलित करता है। दोनों ही प्रक्रियाएँ मूल संदेश और भाव को संरक्षित रखते हुए माध्यम और दर्शक के अनुरूप अनुकूलन करती हैं। मूलतःटेलीविजन और सिनेमा में साहित्यिक रूपांतरण न केवल कहानी का प्रस्तुतीकरण हैबल्कि एक रचनात्मक अनुवाद कार्य भी हैजो साहित्य की गहराई को नए दृष्टिकोण और व्यापक दर्शक समुदाय तक पहुँचाता है।

5. 10 सारांश

अनुवाद दो अलग भाषाओं के बीच का सृजनात्मक प्रक्रिया हैजिसमें स्रोत भाषा की अभिव्यक्तियों और भावों को लक्ष्य भाषा में सटीक रूप से प्रस्तुत किया जाता है। किसी भी रचना का मूल अर्थ ही अनुवाद का संदेश माना जाता है। साहित्यिक अनुवाद तकनीकी या समाचार शैली के अनुवाद से अलग होता है क्योंकि इसमें केवल शब्दों का रूपांतरण नहीं बल्कि शैली, रचनात्मकता और लेखक की व्यक्तिगत अभिव्यक्ति का समावेश भी आवश्यक होता है।नाटक का अनुवाद अन्य साहित्यिक विधाओं से विशेष रूप से भिन्न है। यह पूरी तरह संवादों पर आधारित मंचीय विधा हैजहां विवरण सीमित और भावनाओं की प्रस्तुति संवादों के माध्यम से होती है। इसलिए अनुवादक को संवादों की भावात्मक सटीकता बनाए रखते हुए लक्ष्य भाषा में समतुल्य अभिव्यक्तियाँ ढूंढनी होती हैं। नाटक की भाषा दो आयामों पर निर्भर करती हैसाहित्यिक दृष्टि से शब्द और वाक्य-, और रंगमंचीय दृष्टि से अभिनय, हावभाव और लय। इन दोनों आयामों के - संतुलन के बिना नाटक का अनुवाद अधूरा रहता है।

आज के युग में तकनीकी और दृश्य माध्यमों के विकास ने पाठक या दर्शक की संवेदनाओं और सौंदर्यबोध को तेजी से प्रभावित किया है। लोग साहित्य को केवल पढ़ने या देखने तक सीमित नहीं रखते, बल्कि उसे अन्य रूपों में अनुभव करना चाहते हैं। इसी कारण नाटक और अन्य साहित्यिक विधाओं का अनुवाद या रूपांतरण केवल रचनात्मक चुनौती नहीं, बल्कि रोजगार और व्यवसाय का साधन भी बन गया है। देखा जा सकता है किनाटक और दृश्य साहित्य का अनुवाद संवादात्मक, मंचीय और रचनात्मक दृष्टि से विशिष्ट होता हैजिसमें भाव, शैली और प्रदर्शन की आवश्यकताओं का समन्वय अनिवार्य है।

5.(केवल रूपरेखा) प्रगति विवरण 11

प्रश्न :का उत्तर 1 भारतीय परंपरा के अनुसार ब्रह्मा ने चारों वेदों से तत्व ग्रहण कर नाट्य को 'पंचम वेद' के रूप में प्रतिष्ठित किया। ऋग्वेद से पाठ्य, सामवेद से गान, यजुर्वेद से अभिनय और अथर्ववेद से रस ग्रहण कर नाट्यशास्त्र की रचना हुई।

प्रश्न :का उत्तर 2 'नाट्य' शब्द का मूल अर्थ अभिनय है।

प्रश्न :का उत्तर 3 अरस्तू ने त्रासदी के छह तत्त्व स्वीकार किए—कथानक, चरित्रचित्रण-, विचारतत्त्व-, पदरचना-, दृश्य- | विधान और गीत

प्रश्न :का उत्तर 4 आचार्य भरतमुनि ने नाटक को ऐसी समन्वयात्मक कला माना हैजिसमें ज्ञान, विद्या, शिल्प, कला, कर्म और योगएक साथ समाहित हैं।

प्रश्न :का उत्तर 5 भरतमुनि का नाट्यशास्त्र भारतीय नाट्य परम्परा का आधार ग्रंथ है।

प्रश्न :का उत्तर 6 जयशंकर प्रसाद के आगमन से हिंदी नाटक में गुणात्मक परिवर्तन आया। उनकी भाषा अधिक सांकेतिक, भावगर्भित और काव्यात्मक हुई।

5.अधिक जानने के लिए पढ़ें 12

- Nida, E. A. (1964). Toward a science of translating. Leiden: Brill.
- Catford, J. C. (1965). A linguistic theory of translation. Oxford: Oxford University Press.
- Newmark, P. (1988). A textbook of translation. New York: Prentice Hall.
- Jakobson, R. (1959). On linguistic aspects of translation. In R. Brower (Ed.), On translation (pp. 232–239). Harvard University Press.
- Venuti, L. (1995). The translator's invisibility: A history of translation. London: Routledge.
- शुक्ल, आनन्द कुमार) .2015). आचार्य रामचंद्र शुक्ल का अनुवादलोकभारती प्रकाशन। :वाराणसी .कर्म-
- गोपीनाथन, जी) .2011). अनुवादराजकमल प्रकाशन। :नई दिल्ली .सिद्धांत और प्रयोग :
- गोस्वामी, के) .के .2010). अनुवादसिद्धांत और दृष्टि :कोणलोकभारती प्रकाशन। :इलाहाबाद .
- सेठी, हरीश कुमार) .2014). ई–अनुवाद और हिंदीवाणी प्रकाशन। :नई दिल्ली .
- सेठी, हरीश कुमार) .2011). अनुवाद सिद्धांत और व्यवहारज्ञान प्रकाशन। :नई दिल्ली .
- नगेन्द्र) .2010). अनुवाद विज्ञानकिताब :नई दिल्ली .सिद्धांत और अनुप्रयोग : महल।

5.अभ्यास प्रश्न 13

-संक्षिप्त प्रश्नों के उत्तर लिखिए (क)

1. प्रसादोत्तर काल के चार नाट्यकारों के नाम लिखिए।
2. सामान्य अनुवाद और नाट्यानुवाद में क्या अंतर है?
3. नाट्यानुवाद का उद्देश्य क्या है?
4. नाट्यलोचक नेमिचन्द्र जैन ने नाट्यानुवाद की कठिनाइयों के बारे में क्या कहां था ?
5. नाट्यानुवाद के समय अनुवादक को ध्यान देने वाले दो बिंदु के बारे में बताए।

-निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए (ख)

1. नाटक की परंपरा और शिल्प की अवधारणा पर आलेख प्रस्तुत कीजिए|
2. भारतीय नाट्य परंपरा के उद्भव| विकास और आधुनिक स्वरूप पर प्रकाश डालिए ,
3. नाट्यानुवाद की रचनात्मक यात्रा पर एक आलेख प्रस्तुत कीजिए |
4. नाट्यानुवाद में सांस्कृतिक भाषिक संतुलन एवं चुनौतियाँ को उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए |
5. हिंदी रंगमच पर भारतीय और विदेशी नाटकों का अनुवाद की परंपरा और विविधता को अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए |
6. दृश्य माध्यम के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए दृश्य साहित्य और अनुवाद पर एक आलेख प्रस्तुत कीजिए |

शब्दकोश:

1. अस्मिता| अपनी सत्ता का भाव :
2. कसौटी| जाँच ,परख :
3. आत्मसात अपने में :समाहित करना |

4. आडंबर| दिखवा :
5. संश्लिष्ट| मिला हुआ ,मिश्रित :
6. समतुल्यता| एक जैसा ,समान :
7. विवरण| स्पष्ट करना ,व्यख्या :

इकाई 6 - कथा और कथेतर साहित्य का अनुवाद

इकाई की रुपरेखा

.61 उद्देश्य
6.2 प्रस्तावना
6.3 कथा साहित्य संवेदना और अनुवाद ,संस्कृति ,अर्थ :
6.4 भारतीय कथा साहित्य में अनुवाद की जीवंत परंपरा
6.5 कथा साहित्य और अनुवाद की सांस्कृतिक सन्दर्भ
.66 कथासाहित्य में अनुवाद की चुनौतियाँ-
.67 कथा साहित्य का अनुवाद पुनःसृजन की जिम्मेदारी और रणनीतियाँ :
6.8 कथेतर साहित्य और अनुवाद
6.9 कथेतर साहित्य की प्रमुख विशेषताएँ और उनके अनुवाद की चुनौतियाँ
6.10 सारांश
6.11 प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा)
6.12 अधिक जानने के लिए पढ़ें
6.13 अभ्यास प्रश्न

.61 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन से आप:

- कथा साहित्य के अर्थ संवेदना और अनुवाद के बारे में जानकारी प्राप्त करेंगे। ,संस्कृति ,
- भारतीय कथा साहित्य में अनुवाद की जीवंत परंपरा को समझ सकेंगे।
- कथा साहित्य और अनुवाद की सांस्कृतिक सन्दर्भ के विविध पहलुओं से अवगत होंगे
- कथा साहित्य में अनुवाद की चुनौतियाँ के बारे में जानेंगे।-
- कथा साहित्य का अनुवादपुनःसृजन की जिम्मेदारी और रणनीतियाँ से : परियच प्राप्त करेंगे।
- कथेतर साहित्य और अनुवाद से परिचित होंगे।
- कथेतर साहित्य की प्रमुख विशेषताएँ और उनके अनुवाद की चुनौतियों को जानेंगे।

6.2 प्रस्तावना

सर्जनात्मक साहित्य को सामान्यतः दो प्रमुख वर्गों में बाँटा जाता हैकथा साहित्य और कथेतर साहित्य। क-था साहित्य वह साहित्य है जिसमें भाव, कल्पना और आख्यान की प्रधानता होती है। उपन्यास और कहानी इसकी प्रमुख विधाएँ हैं। हालांकि इसमें सामाजिक, ऐतिहासिक और सांस्कृतिक यथार्थ का चित्रण मिलता हैइसका उद्देश्य केवल सूचना देना नहीं होता। यह पाठक के मन में अनुभवों और भावनाओं को प्रभावशाली ढंग से उतारने का माध्यम बनता है। कथा साहित्य की विशेषता इसकी भाषा की शैली, सौंदर्य और कल्पनाशील प्रस्तुति में निहित होती है, जो इसे पठनीय और

संवेदनशील बनाती है।वहींकथेतर साहित्य में तथ्यात्मकता और यथार्थ प्रमुख होते हैं। इसमें निबंध, संस्मरण, यात्रावृत्तांत-, डायरी, जीवनी, पत्रलेखन जैसी विधाएँ आती हैं। यह साहित्य जीवन में घटित घटनाओं और अनुभवों का लेखाजोखा - प्रस्तुत करता है। यद्यपि इसमें भाव और शैली की उपस्थिति होती हैपरंतु इसका मुख्य उद्देश्य समाज और व्यक्ति की वास्तविकताओं का स्पष्ट और तथ्यपरक चित्रण करना है।

अनुवाद के संदर्भ मेंकथा और कथेतर साहित्य दोनों ही अपनी विशेषताओं के अनुसार संवेदनशील दृष्टिकोण की मांग करते हैं। विशेषकर कथा साहित्य के अनुवाद में केवल शब्दों का अनुवाद नहीं, बल्कि रचना की आत्मा, भाव, कल्पना और भाषा का सौंदर्य भी स्थानांतरित करना आवश्यक होता है। इस कारण इसे पुनःसृजन या नवसृजन कहा जाता है। कथेतर साहित्य का अनुवाद अधिक तथ्यप्रधान होता है, लेकिन इसमें भी शैली और भावनात्मक प्रस्तुति का ध्यान रखना महत्वपूर्ण होता है। इस प्रकार, दोनों प्रकार के साहित्य का अनुवाद सावधानी, संवेदनशीलता और रचनात्मक दृष्टिकोण के साथ किया जाना चाहिए।

संवेदना और अनुवाद ,संस्कृति ,अर्थ :कथा साहित्य 6.3

विश्व की भिन्नभिन्न भाषाओं के बीच अनुवाद के माध्यम से जो संवाद और समन्वय का संबंध विकसित होता - हैवही भाषा और साहित्य की उदार संस्कृति को जन्म देता है। आज के वैश्विक परिदृश्य में जब संसार के किसी भी कोने में कोई महत्वपूर्ण घटना घटती हैतो हम उसे तुरंत जानना चाहते हैं। उदाहरण के लिएअंग्रेजी कवयित्री लुईस ग्लक या उससे पहले पोलिश कथाकार ओल्गा तोकार्चुक को साहित्य का नोबेल पुरस्कार मिलने की घोषणा के साथ ही विश्व भर में अपनीअपनी भाषाओं में उनकी कृतियों को पढ़ने की जिज्ञासा तीव्र हो जाती है। यह स्थिति स्वयं अनुवाद की आवश्यकता - और उसके महत्व को प्रमाणित करती है।

अनुवाद ही वह माध्यम है जो दो संस्कृतियों के बीच पुल का कार्य करता है। इसके द्वारा हम अनुभव करते हैं कि संपूर्ण विश्व एक साझा समाज है और समस्त साहित्य मानवीय भावनाओं का आख्यान है। अनुवाद संवाद की संभावना भी है और उन संभावनाओं की पारस्परिकता भी। ज्ञान के क्षेत्र में अनुवाद विषयबोध के विस्तार के लिए आवश्यक हैजबकि - साहित्यिक अनुवाद भाषा और संरचना की बहुस्तरीय अर्थव्यंजक क्षमताओं का उदाहरण प्रस्तुत करता है।कथा साहित्य - बहुलता को विस्तृत कर समय के लंबे अंतराल में भी उसे -जीवन की सघन अभिव्यक्ति है और उसका अनुवाद उसकी अर्थ बहुलता किसी रचना को दूसरी भाषा में मान्यता दिलाने-प्रासंगिक बनाए रखता है। यही अर्थका आधार बनती है। कथा साहित्य में कथा के साथसाथ पात्रों-, चरित्रचित्रण और परिवेश निर्माण का भी समान महत्व होता है। यह विधा सरल न - होकर बहुपरतीय होती हैजिसमें पात्रों का जीवन उनके अनुभवों, संवेदनाओं और परिस्थितियों के समन्वय से आकार लेता है। लेखक सामाजिक पृष्ठभूमि और पात्रों को बड़ी सावधानी से एक सूत्र में पिरोता है।

समय पूरे आख्यान के लिए कैनवस का कार्य करता है और उसी पृष्ठभूमि पर पात्र अपने मानवीय स्वभाव और संवेदना के साथ उभरते हैं। लेखक की विचारधारा, दृष्टिबोध, शैली और भाषा का चुनाव कथा में उसके हस्ताक्षर की तरह उपस्थित रहता है। समय और समाज की नब्ज को थामते हुए लेखक पात्रों की धड़कन पाठक तक पहुँचाता है। इसी जीवंतता को अनुवादक को दूसरी भाषा में सुरक्षित और संप्रेषित करना होता है।इस कारण कथा साहित्य के अनुवाद के लिए केवल भाषायी दक्षता पर्याप्त नहींबल्कि गहरी सांस्कृतिक समझ भी अनिवार्य है। अनुवादक को मूल पाठ के अर्थ को ग्रहण करने के साथसाथ उसे दूसरी भाषा में इस प्रकार रूपांतरित करना होता है कि पाठक मूल लेखक के मंतव्य से जुड़ - सके। यह धारणा कि कथा साहित्य का अनुवाद कविता की अपेक्षा सरल हैआंशिक रूप से सही होते हुए भी पूर्णतः सत्य नहीं है। कथा साहित्य की संरचना उतनी ही जटिल होती है और उसकी व्यंजकता अनेक स्तरों पर कार्य करती है।

कई बार कथा साहित्य में अंतःपाठीयता का सहारा लिया जाता हैजहाँ एक पाठ का अर्थ दूसरे पाठ के संदर्भ से खुलता है। ऐसे में अनुवादक को सभी संदर्भों का सम्यक वहन करना पड़ता है। जादुई यथार्थवाद या फैंटसी में भी, भले ही

कार्यकारण श्रृंखला स्पष्ट न होफिर भी आंतरिक सूत्र बना रहता है जिसे अनुवाद में बचाए रखना आवश्यक है।इसका - हैजिसमें विक्टोरिया म 'वॉरेन हेस्टिंगस का साँड़' सशक्त उदाहरण उदय प्रकाश की कहानी ेमोरियल की पेंटिंग, औपनिवेशिक दस्तावेज़ और लॉर्ड क्लाइव की चिट्ठी जैसे अनेक अंतःपाठ मिलकर अतीत और वर्तमान के बीच अद्भुत आख्यान रचते हैं। इस कहानी के अंग्रेज़ी, हंगेरियन, उर्दू और मराठी अनुवाद—क्रमशः रॉबर्ट एहुयुक्स्टेड ., मारिया नागेषि, हैदर सैयद जाफरी और जयप्रकाश सावंत द्वारा—इस बात का प्रमाण हैं कि विविध पद्धतियों के बावजूद सभी अनुवादकों को इसके संदर्भगत विस्तार के कारण विशेष परिश्रम करना पड़ा। यही अनुवाद की सृजनात्मक चुनौती और उसकी सांस्कृतिक महत्ता है।

6.4 भारतीय कथा साहित्य में अनुवाद की जीवंत परंपरा

कथा साहित्य के अनुवाद की परंपरा अत्यंत प्राचीन और बहुआयामी रही है। यदि हम लोककथाओं की दुनिया में झाँकेंतो पाएँगे कि लगभग एक ही कथा भिन्नअलग रूपों में विद्यमान है। यह तथ्य -भिन्न भाषाओं और क्षेत्रों में अलग-संकेत देता है कि वाचिक परंपरा के दौर से ही कथाओं क ा निरंतर आदानप्रदान होता रहा है। कभी ये कहानियाँ एक - भाषा से दूसरी भाषा में मौखिक रूप में पहुँचती थींतो कभी उनके भाषिक रूपांतरण किए जाते थे। यह प्रक्रिया अपने आप में अनुवाद का ही प्रारंभिक स्वरूप कही जा सकती है।प्रिंटिंग प्रेस के आगमन और गद्य साहित्य के विकास के साथ अनुवाद एक व्यवस्थित साहित्यिक गतिविधि के रूप में स्थापित हुआ। उपनिवेशवाद के समय, विशेषकर औपनिवेशिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए, भारतीय भाषाओं से अंग्रेजी में बड़े पैमाने पर अनुवाद किए गए। वहीं भारतेंदु युग में संस्कृत और अंग्रेजी से हिंदी में अनेक महत्वपूर्ण अनुवाद हुए। इस काल में केवल भाषा का ही नहींबल्कि विधाओं का भी अंतरण हुआ। उदाहरणस्वरूप शेक्सपियर के नाटक:'द टेंपेस्ट' का हिंदी की पहली कहानी 'इंदुमती' के रूप में रूपांतरण उल्लेखनीय है। शेक्सपियर के नाटकों के हिंदी अनुवाद रांगेय राघव, अमृतराय और रघुवीर सहाय जैसे वरिष्ठ साहित्यकारों ने किए।

हिंदी में रूसी साहित्य के अनुवादों की भी एक सशक्त परंपरा रही है। लियो टॉलस्ताय, दोस्तोवस्की, गोर्की, नाबोकोव और चेखव जैसे लेखकों की रचनाएँ हिंदी पाठकों के बीच अत्यंत लोकप्रिय हुईं। इसी क्रम में विश्व साहित्य के अनेक क्लासिक रचनाकार—फ्रांज काफ्का, अल्बर्ट कामू, गैब्रिएल गार्सिया मारखेज, चार्ल्स डिकेंस, टॉमस हार्डी, सार्त्र, सिमोन द बोउआर, ओरहान पामुक और चिनुआ अचेबे—हिंदी में उपलब्ध हैं।भारतीय भाषाओं के बीच भी अनुवाद की समृद्ध परंपरा रही है। साहित्य अकादमी और भारतीय ज्ञानपीठ जैसी संस्थाओं ने भारतीय भाषाओं के बीच अनुवाद को प्रोत्साहित किया। रवींद्रनाथ ठाकुर, अमृता प्रीतम, मंटो, शिवाजी सावंत, दया पवार, प्रतिभा राय, रमाकांत रथ, इंदिरा गोस्वामी और कमला दास जैसे रचनाकार अनुवाद के माध्यम से केवल अपनी भाषा तक सीमित नहीं रहे, बल्कि भारतीय साहित्य की साझा परंपरा के प्रतिनिधि बने।

इसी तरह हिंदी साहित्य की अनेक महत्वपूर्ण कृतियाँ अन्य भारतीय भाषाओं, अंग्रेजी और विश्व की भाषाओं में अनूदित हुई हैं। प्रेमचंद की लोकप्रियता तो विश्वव्यापी है। जैनेंद्र, अज्ञेय, यशपाल, फणीश्वरनाथ रेणु, भीष्म साहनी, कृष्णा सोबती, कुँवर नारायण, निर्मल वर्मा, उदय प्रकाश, कृष्ण बलदेव वैद, मन्नू भंडारी, मृदुला गर्ग और असगर वजाहत जैसे लेखकों की रचनाओं के अंग्रेजी अनुवाद उपलब्ध हैं।भूमंडलीकरण के बाद की ग्लोबल दुनिया में अंग्रेजी के लोकप्रिय साहित्य को हिंदी में पढ़ने की माँग तेज़ी से बढ़ी है। चेतन भगत, देवदत्त पटनायक, रविंद्र सिंह और जेरी पिंटो जैसे लेखकों की अंग्रेजी पुस्तकों के हिंदी अनुवाद मूल कृतियों की तरह ही लोकप्रिय हैं। इसके अतिरिक्त अमिताव घोष, सलमान रुश्दी, अरुंधति रॉय और झुंपा लाहिड़ी जैसे लेखक हिंदी अनुवादों के माध्यम से हिंदीभाषी पाठकों में भी उतने ही चर्चित हैं।-

आज लगभग सभी प्रमुख प्रकाशन समूह अनुवादित साहित्य को प्राथमिकता दे रहे हैं। बाज़ार, पाठक रुचि और साहित्यिक संवाद—तीनों स्तरों पर कथा साहित्य के अनुवाद की केंद्रीय भूमिका स्थापित हो चुकी है। स्पष्ट है कि अनुवाद

केवल भाषा परिवर्तन नहीं, बल्कि साहित्यिक संस्कृतियों के बीच सेतु का कार्य करता है। निम्नलिखित तालिका में कुछ महत्वपूर्ण कृतियों के नाम और उनके अनुवादक के नाम प्रस्तुत है:

कथा साहित्य के हिंदी अनुवाद :

अनुदित रचनाओं का शीर्षक	स्रोत भाषा	लेखक	अनुवादक
इलियट	ग्रीक	होमर	रमेश चन्द्र सिन्हा
राग पहाड़ी	अंग्रेजी	नमिता गोखले	पुष्पेश पन्त
स्वीकार	रुसी	मैक्सिको गोर्की	उपमा ऋचा
मुक़दमा	जर्मन	फ्रांज काफ्का	राजकुमार मोहन
एडल्टरी	ब्राजीलियन भाषा	पाओलो कोएलो	दिनेश शर्मा
युद्ध और शांति	रुसी	लियो तोल्स्तोय	वल्ल्लभ सिद्धार्थ
शास्त्र विदाई	अंग्रजी	अर्नेस्ट हेमिंग्वे	अजय चौधरी

हिंदी कथा साहित्य के अंग्रेजी अनुवाद:

अनुदित रचना का शीर्षक	लेखक	अनुवादक
Tamas	Bhishm Sahni	Translated by the Author Himself
Listen Girl	Krishna Sobti	Shivanath
Basanti	Bhishm Sahni	Shveta Sarda
Topi Shukla	Rahi Masoom Raza	Meenakshi Shivraman
Raag Daebari	Shrilal Shukl	Gillian Wright
Zindaginama	Krishna Sobti	Neer Kanwal Mani and Moyna Majumdar

भारतीय कथा साहित्य के अंग्रेजी अनुवाद:

अनुदित रचना का शीर्षक	स्रोत भाषा	लेखक	अनुवाद
Titu Mir	बांग्ला	Mahashweta Devi	Rimi B Chatterjee
Those Days	बांग्ला	Sunil Gangopadhyay	Aruna Chakraborty
Samskara	कन्नड़	UR Ananthamurthy	A.K. Ramanujan
Written in Tears	असमिया	Arupa Patangia Kalita	Ranjita Biswas
Cobalt Blue	मराठी	Sachin Kundalkar	Jerry pinto
Breast Stories	बांग्ला	Mahashweta Devi	Gayatri Chakravorty Spivak and Samik Bandhopadhyay

भारतीय कथा साहित्य के हिंदी अनुवाद:

कहानी उपन्यास/	भाषा	रचनाकार	अनुवादक
अमृत फूल	उड़िया	मनोज दास	सुधा
हिन्दू	मराठी	भालचंद्र नेमाड़े	गोरख थोरात
देवदास	बांग्ला	शरतचंद्र चट्टोपाध्याय	हंस कुमार तिवारी
संस्कार	कन्नड़	यू आनंदमूर्ति.आर.	चंद्रकांत कुसनूर
अवस्था	कन्नड़	यू आनंदमूर्ति.आर.	भालचंद्र जयशेट्टी
घर और बाहर	बांग्ला	रवीन्द्रनाथ टैगोर	इलाचंद जोशी
टेढ़ी लकीर	उर्दू	इस्मत चुगताई	शबनम रिजवी

6.5 कथा साहित्य और अनुवाद की सांस्कृतिक सन्दर्भ

कथा साहित्य मूलतः वर्णन और विवरण पर आधारित होता है। चरित्र, परिवेश, भाषा और सांस्कृतिक संकेत—ये सभी मिलकर कथा को उसका विशिष्ट रूप देते हैं। ऐसे में जब किसी रचना का अनुवाद किया जाता हैतो अनुवादक के सामने केवल भाषा का प्रश्न नहीं होताबल्कि उस पूरे सांस्कृतिक संदर्भ को समझने और संप्रेषित करने की चुनौती होती हैजिसमें वे चरित्र विकसित होते हैं। यही कारण है कि कई बार यह कहा जाता है कि कुछ रचनाएँ अनुवाद के दायरे से बाहर हैं। अनुवाद की सैद्धांतिक भाषा में इसे 'अननुवाद्य' कहा जाता है।

उत्तरऔपनिवेशिक समय मेंअनुवाद के बढ़ते महत्त्व के साथ यह दृष्टि भी विकसित हुई कि जिसे अब तक - अननुवाद्य माना जाता रहा हैउसेअनुवाद्य बनाने की कोशिश की जानी चाहिए। मार्गरिट जुल कोस्टा अपने प्रसिद्ध निबंध में इस बात पर ज़ोर देती हैं कि अनुवाद की सफलता इस पर निर्भर करती है 'ट्रांसलेटिंग द अनट्रांस्लेटेबल :माइंड द गैप' कि अनुवादक उपलब्ध अनेक विकल्पों में से किस विकल्प को चुनता है।यह चुनाव केवल शाब्दिक अर्थ की समानता पर आधारित नहीं होता, बल्कि सांस्कृतिक सामीप्य और भावार्थ की पकड़ पर निर्भर करता है। कई बार कोई छोटीसी बात - भी अत्यंत महत्त्वपूर्ण हो जाती है। इसलिए अनुवादक के लिए यह उचित नहीं कि वह सांस्कृतिक कठिनाइयों से बचने के लिए उन संदर्भों को छोड़ दे या अनदेखा कर दे। किसी भी भाषा के साहित्यिक मानचित्र में दूसरी भाषा की रचना की स्वीकृति अनुवाद की संभावनाओं में निहित होती हैऔर यह संभावना तभी सुदृढ़ होती है जब सांस्कृतिक आशय को ठीक से समझा और प्रस्तुत किया जाए।

हिंदी के प्रतिष्ठित रचनाकार कुँवर नारायण ने अपने निबंध अनुवादकों की ऐतिहासिक देन की ओर में अनुवाद की लंबी परंपरा की ओर ध्यान दिलाया है। वे विशेष रूप से कुमारजीव 344)–द्वारा बौद्ध ग्रंथों के चीनी भाषा में (.ई 413 किए गए अनुवादों के ऐतिहासिक महत्त्व को रेखांकित करते हैं। कुँवर नारायण लिखते हैं कि कुमारजीव ने चीनी भाषा में बुद्ध के विचारों के लिए एक विशिष्ट स्थान बनाया। यह कार्य मात्र भाषांतरण नहीं थाबल्कि उसमें उच्चकोटि की रचनात्मकता निहित थी। इस रचनात्मकता ने न केवल चीनी भाषा को समृद्ध कियाबल्कि बुद्ध के विचारों को एक नए देशकाल और भाषा में प्रतिष्ठित किया—लाओत्से और कन्फ्यूशियस के समकक्ष, उनके नीचे नहीं। कुँवर नारायण की यह स्थापना अत्यंत महत्त्वपूर्ण है कि अनुवादक का कार्य दूसरी भाषा में मूल लेखक के लिए एक रचनात्मक स्थान बनाना हैताकि अनूदित लेखक लक्ष्य भाषा के साहित्यिक परंपरा में सम्मानजनक स्थान पा सके। यह तभी संभव है जब अनुवादक लक्ष्य भाषा के साहित्यिक संस्कारों और सांस्कृतिक संदर्भों की गहरी समझ रखता हो।इस दृष्टि को स्पष्ट करने के लिए चिनुआ अचेबे के उपन्यास Arrow of God का एक उदाहरण देखा जा सकता है:

"The custom of Umuaro was well known and he did not require the priest of Idemili to instruct him- Every Umuaro child knows that if a man kills the python inadvertently, he must placate Idemili by arranging a funeral for the snake almost as elaborate as a man's funeral…"
इस अंश का हिंदी अनुवाद इस प्रकार किया गया है:

एस वाई उमुआरों के रीति रिवाज वह बखूबी जानता था… अगर कोई गलती से अजगर को मार देता है तो इडेमिली को शांत करने के लिए उसे साँप का श्राद्ध कर्म वैसे ही करना होगा जैसे आदमियों का श्राद्धकर्म किया जाता है-… देवता का बाण), अनुवाद: अच्युतानंद मिश्र(

यहाँ 'साँप का श्राद्ध कर्म' एक विशुद्ध सांस्कृतिक संदर्भ है। भारतीय संस्कृति में भले ही साँप की पूजा होती हो, पर उसे मार देने पर श्राद्ध करने की परंपरा नहीं है। इसी प्रकार उपन्यास के शीर्षक Arrow of God का अनुवाद 'ईश्वर का बाण' न होकर 'देवता का बाण' किया गया हैक्योंकि यहाँ 'गॉड' एक निजी और समुदायविशेष का देवता हैन कि - सार्वभौमिक ईश्वर। यह चयन सांस्कृतिक अर्थ को बनाए रखने का उदाहरण है।

पहले समय में ऐसे सांस्कृतिक संदर्भों को स्पष्ट करने के लिए फुटनोट का सहारा लिया जाता थालेकिन इससे मूल रचना से अधिक नोट्स हावी हो जाते थे। समकालीन अनुवाद में यह प्रयास होता है कि संदर्भ को वाक्य के भीतर ही स्पष्ट कर दिया जाए। मनीषा कुलश्रेष्ठ की कहानी केयर ऑफ स्वातघाटी के अंग्रेजी अनुवाद में अनामिका ने ऐसा ही किया। हिंदी में वाक्य है-'राजा जनक के नौ रत्नों में एक रत्न गार्गी।' इसका अनुवाद करते हुए उन्होंने लिखा:"Gargi, one among the Navratnas, the nine precious jewels in King Janak's Court."यहाँ 'नवरत्न' के सांस्कृतिक अर्थ को वाक्य के भीतर ही खोल दिया गया है।

अनुवाद की जटिलताओं का एक बड़ा उदाहरण कृष्णा सोबती का उपन्यास जिंदगीनामा है। इस उपन्यास में पंजाब की संस्कृति, बोलीमिले हैं कि यह हिंदी पाठकों के लिए भी चुनौतीपूर्ण रहा -बानी और लोक मुहावरे इस तरह घुले- है। कई आलोचकों ने इसकी भाषा पर आपत्ति की, लेकिन कृष्णा सोबती का आग्रह था कि भाषा का प्रश्न दरअसल भाषा के जनतंत्र का प्रश्न है। हिंदी का कोई एक स्थिर रूप नहीं हो सकताजितनी भाषाओं और संस्कृतियों को वह समेटेगीउतनी ही समृद्ध होगी।जिंदगीनामा का अंग्रेजी अनुवाद भी इसी कारण विवादों से गुज़रा। अनुवादक नीर कँवल मणि ने कई पंजाबी शब्द अंग्रेजी में ज्यों का त्यों रखे। लंबे विचारमें मोइना मजूमदार के सहयोग से इसका 2016 विमर्श और संपादन के बाद- :प्रकाशन हुआ। उपन्यास के एक अंश और उसके अनुवाद को देखें
चाची महरी गाथा टेक कुटिया से परती तो राह में गोमाचिड़ों की आन मिली…और उसका अनुवाद:
Chachi Mehri was returning from the prayer hut when she was joined by Goma, of the clan of Chiras…

इस अनुवाद में अंग्रेजी की 'अंग्रेजीयत' से अधिक एक हिंदुस्तानी और पंजाबी परिवेश झलकता है। यही अनुवाद की शक्ति और चुनौती दोनों है। यदि अनुवादक लक्ष्य भाषा की सुविधा के अनुसार सांस्कृतिक रूपांतरण करने लगेतो वह cultural appropriation की ओर बढ़ सकता हैजहाँ पात्रों के नाम, स्थान और संदर्भ तक बदल दिए जाते हैं। उत्तरऔपनिवेशिक अनुवाद सिद्धांत इस प्रकार के सांस्कृतिक अनुकूलन का विरोध करता है और इस बात पर ज़ोर देता है - कि अनुवाद के माध्यम से पाठक मूल सांस्कृतिक परिव ेश को पहचान सके।

भारत जैसे बहुलतावादी देश में भारतीय भाषाओं के बीच अनुवाद का विशेष महत्त्व है। यहाँ भाषाएँ अलग होते हुए भी साझा यथार्थ और अनुभव की साक्षी हैं। ऐसे अनुवादों में सांस्कृतिक अनुकूलन की आवश्यकता कम पड़ती हैक्योंकि पृष्ठभूमि मूलतः समान होती है। इस तरह अनुवाद अंतर को नहीं, बल्कि समानताओं को रेखांकित करने का माध्यम बनता है।भारतीय मूल के लेखकों द्वारा अंग्रेजी में किया गया लेखनइस बात -जैसे अमिताव घोष या झुंपा लाहिड़ी- का उदाहरण है कि अंग्रेजी यहाँ'अन्य' भाषा नहीं रह जाती। वह भारतीय संवेदना और अनुभव की वाहक बनती है और

साथ ही मानवीय गरिमा के उस व्यापक परिदृश्य को रचती हैजहाँ देश और भाषा की सीमाएँ धुंधली हो जाती हैं। इस तरह अनुवाद केवल भाषाओं के बीच सेतु नहीं बनाताबल्कि संस्कृतियों के बीच संवाद की एक सशक्त रचनात्मक प्रक्रिया के रूप में सामने आता है।

6.6 कथासाहित्य में अनुवाद की चुनौतियाँ-

कथासाहित्य का अनुवाद केवल एक भाषा से दूसरी भाषा में शब्दों का स्थानांतरण नहीं है-, बल्कि यह दो संस्कृतियोंदो संवेदनात्मक संसारों और दो साहित्यिक परंपराओं के बीच संवाद की सृजनात्मक प्रक्रिया है। कहानी या , उपन्यास काअनुवाद करते समय अनुवादक को लेखक के कथ्य, दृष्टि, शिल्प और भाषा—इन सबको एक साथ साधना पड़ता है। इसी कारण कथा-साहित्य का अनुवाद सबसे चुनौतीपूर्ण साहित्यिक कर्मों में गिना जाता है। इसमें न केवल अर्थ-संप्रेषण की समस्या होती हैबल्कि सौंदर्य, लय, ध्वनि, संकेत और सांस्कृतिक बिंबों को सुरक्षित रखने की भी जटिल जिम्मेदारी होती है।

.1कथा:बोध और रचनात्मक संरचना की चुनौती-

कथासाहित्य के अनुवाद में सबसे पहली और अनिवार्य शर्त यह है कि अनुवादक को मूल रचना की संपूर्ण -क्रम जान लेना पर्याप्त नहीं हैउसके पीछे-समझ हो। केवल कथा की सामाजिकसांस्कृतिक पृष्ठभूमि-, पात्रों का मनोविज्ञान, लेखक का उद्देश्य, और विधाविशेष का शिल्प भी उतना ही महत्त्वपूर्ण है। उपन्यास या कहानी केवल घटनाओं का -सिलसिला नहीं होती, बल्कि वह अर्थछवियों-, प्रतीकों और भाषिक प्रयोगों का जटिल ताना बाना होती है।कोई-भी रचनात्मक लेखक भाषा का साधारण उपयोग नहीं करतावह भाषा के साथ प्रयोग करता है, उसे नया अर्थ देता हैउसमें चमत्कार पैदा करता है। ऐसे में अनुवादक की चुनौती यह होती है कि वह उस चमत्कार को दूसरी भाषा में पुनःसृजित करे। उदाहरण के लिए सलमान रुश्दी के Midnight's Children का यह अंश देखिए-

"But electric trains are using power: yellow-and-brown local trains clatter south towards Churchgate station from Dadar and Borivli, from Kurla and Bassein Road. Human flies hang in thick white trousered clusters from the trains"

प्रियदर्शन द्वारा किया गया हिंदी अनुवाद-

-मगर बिजली की रेलें बिजली का इस्तेमाल कर रही हैं। दादर और बोरीवली से कुर्ला और बेसेइन रोड से पीली" भूरी लोकल ट्रेनें दक्षिण में चर्चगेट स्टेशन की तरफ छुकछुक करती जाती हैं। मोटे उजले पतलूनों का झुंड बनाते मक्खियों से लोग ट्रेनों से लटके रहते हैं।

यहाँ 'clatter south towards के लिए'"छुकछुक करती जाती हैं" का प्रयोग लक्ष्य भाषा में न केवल स्वाभाविक हैबल्कि ध्वन्यात्मक स्तर पर भी दृश्य को जीवंत कर देता है। यही वह बिंदु है जहाँ कथा का अनुवाद केवल अर्थ का नहीं, बल्कि शिल्प और लय का भी अनुवाद बन जाता है।

.2उत्तर:आधुनिक कथा और नैरेटिव तकनीकें-

उत्तरसाहित्य की संरचना और अधिक जटिल हो गई है। अब कथाएँ सीधी रेखा में नहीं -आधुनिक समय में कथा-चलतीं; वे वृत्ताकार, खंडित और बहुस्तरीय होती हैं। इतिहास, मिथक, परंपरा, राजनीति, मीडिया और आभासी यथार्थ—सब एक ही कथा में समाहित हो सकते हैं। ऐसी रचनाओं का लक्ष्य किसी एक जीवनसत्य को उद्घाटित करना नहींबल्कि -जीवन की जटिलताओं को समग्रता में प्रस्तुत करना होता है।

अनुवादक के लिए यह दोहरी चुनौती है। पहले उसे पाठक की तरह रचना में प्रवेश करना पड़ता हैउसके संकेतों और संदर्भों को डिकोड करना होता हैऔर फिर दूसरी भाषा में उसी संरचना और अर्थबहुलता को बनाए रखना होता है। -उदय प्रकाश की कहानी'वॉरेन हेस्टिंगस का साँड' इसका उत्कृष्ट उदाहरण है -

आप अगर उस अज्ञात चित्रकार द्वारा बनाए गए"'प्योरली हॉल' बंगले के इस चित्र को देर तक देखें तो आपके शरीर के भीतर भय और उत्सुकता की एक अजीब सी सुरसुरी पैदा होने लगेगी"...

और इसका अंग्रेज़ी अनुवाद-

"If you keep looking at this anonymous painting of Purely Hall, a shiver will rise in your body, a strange tremor of fear and curiosity..."

यहाँ अनुवादक ने केवल कथ्य ही नहीं, बल्कि उस रहस्यमय भय और कौतूहल की अनुभूति को भी लक्ष्य भाषा में स्थानांतरित करने का प्रयास किया है।

.3पात्र:चित्रण और सामाजिक विविधता-

कथासाहित्य का जीवन उसके पात्रों में बसता है। पात्रों के संवाद-, हाव भाव और-भाषा ही कथा को सजीव बनाते हैं। एक ही रचना में विभिन्न सामाजिक पृष्ठभूमियों से आए पात्र हो सकते हैंजिनकी भाषा, शैली और अभिव्यक्ति अलगसांस्कृतिक परिवेश का प्रतिनिधि होता है।अनुवादक के सामने समस्या -अलग होती है। प्रत्येक पात्र अपने सामाजिक-यह होती है कि वह इन विविधताओं को लक्ष्य भाषा में कैसे उतारे। यदि सभी पात्र एक ही भाषास्तर में बोलने लगें-, तो कथा की जीवंतता नष्ट हो जाती है। इसलिए पात्रों की सामाजिक स्थिति, मानसिक अवस्था और भावनात्मक स्तर को समझना और उसी अनुरूप भाषा चुनना अनुवादक का दायित्व है।

.4भाषा, संस्कृति और ध्वन्यात्मकता:

भाषा अपने साथ संस्कृति का इतिहास और स्मृति लेकर चलती है। कथासाहित्य-, विशेष रूप से उपन्यास, बहुभाषिक हो सकता है। एक ही रचना में मानक भाषा, स्थानीय बोली, मुहावरे और लोकसाथ चलती हैं। -ध्वनियाँ साथ-यदि अनुवादक इस भाषिक विविधता और सांस्कृतिक संदर्भों पर ध्यान नहीं देतातो रचना की सूक्ष्म अर्थछवियाँ खो -सकती हैं।कई बार स्रोत भाषा के कुछ शब्दों को लक्ष्य भाषा में ज्यों का त्यों रखना अधिक उपयुक्त होता है। इससे पाठक निर्माण की प्रक्रिया में भागीदार बनाया जा सकता है। रेणु के साहित्-को भी अर्थय में ध्वन्यात्मकता का विशेष महत्व है। 'तीसरी कसम' के अंग्रेज़ी अनुवाद में अनामिका ने इन ध्वनियों को सुरक्षित रखा-

"Kirr-rr-rr-r,"rolled the drum-dharaama!...."Kar-d-d-d-d-rr-rr-dhan-dhan-dhan"

ये ध्वनियाँ केवल संगीत नहीं रचतीं, बल्कि उस अंचल विशेष की पहचान और पात्रों की भावनाओं को भी अभिव्यक्त करती हैं।

.5निष्ठा और स्वतंत्रता का द्वंद्व:

अनुवाद का शाश्वत द्वंद्व Fidelity and Freedom का हैमूल के प्रति निष्ठा और रचनात्मक स्वतंत्रता के बीच -संतुलन। मीनाक्षी मुखर्जी के अनुसार, अनुवादक को शब्दों के प्रति नहीं, बल्कि मूल भाव और कथ्य के प्रति निष्ठावान होना चाहिए। आधुनिक अनुवाद सिद्धांत dynamic equivalence पर बल देता है, जहाँ समतुल्यता स्थिर नहींबल्कि संदर्भ सापेक्ष होती है।कुँवर नारायण की कहानी-'वह' और उसका अंग्रेज़ी अनुवाद She इसका सशक्त उदाहरण है-

'वह अक्सर दिखाई दे जाती हैवह कौन है ...?

'I often happen to see her... Who is she?'

हिंदी में 'वह' लिंग निरपेक्ष हैजबकि अंग्रेज़ी में-She का चयन करना पड़ता है। यहाँ She केवल स्त्री नहीं, बल्कि व्यक्ति, सौंदर्यतीनों को समेट लेती है। यह चयन संदर्भात्मक-बोध और अनुभूति- और सृजनात्मक समतुल्यता का उदाहरण है।

.6मुहावरे, विराम:चिह्न और सूक्ष्म अर्थ-

कथासाहित्य के अनुवाद में मुहावरों का रूपांतरण अत्यंत कठिन होता है। शब्दशः अनुवाद से अर्थ नष्ट हो सकता - विन्यास रचने पड़ते हैं।-हैइसलिए भावार्थ को सुरक्षित रखते हुए नए वाक्यइसी तरह विरामचिह्न भी कथा की टोन और - लय को प्रभावित करते हैं। अर्धविराम या अल्पविराम का गलत प्रयोग अर्थ में बड़ा अंतर ला सकता है।

कथासाहित्य का अनुवाद एक सृजनात्मक पुनर्लेखन है। इसके लिए केवल भाषिक दक्षता पर्याप्त नहीं-, बल्कि रचना से गहरा भावनात्मक जुड़ाव, सांस्कृतिक संवेदनशीलता और साहित्यिक विवेक आवश्यक है। अनुवादक दो भाषाओं के बीच सेतु बनाता हैऐसा सेतु जो शब्दों से नहीं-, बल्कि अर्थ, संवेदना और सौंदर्य से निर्मित होता है। यही कारण है कि सफल अनुवाद मूल रचना का अनुगमन नहीं, बल्कि उसका पुनर्जन्म होता है।

अपनी प्रगति जांचें

प्रश्न .1अनुवाद किस प्रकार दो संस्कृति के बीच पुल का कार्य करता है ?

प्रश्न .2शेक्सपियर की नाटकों का हिंदी में अनुवाद किसी किसने किया है ?

प्रश्न .3इलियट का हिंदी अनुवाद किसने किया है ?

प्रश्न .4टोपी शुक्ल का अंग्रेजी अनुवाद किसने किया है ?

प्रश्न .5माइंड द गैप| लेखक के निबंध का नाम लिखिए 'ट्रांसलेटिंग द अनट्रांस्लेटेबल :

.67 कथा साहित्य का अनुवादपुन:सृजन की जिम्मेदारी और रणनीतियाँ :

अनुवाद कोई एक बार में पूरा हो जाने वाला काम नहीं हैबल्कि यह एक सतत प्रक्रिया है जिसमें अनेक चरण शामिल होते हैं। सबसे पहले मूल रचना का अनुवाद किया जाता है, उसके बाद बारबार उसे पढ़कर संशोधित किया जाता - हैभाषा को तराशा जाता है और संदर्भों की जाँच की जाती है। विशेष रूप से साहित्यिक अनुवाद में यह ध्यान रखना आवश्यक होता है कि रचना के भीतर मौजूद सांस्कृतिकसंकेत, सामाजिक संदर्भ और भावनात्मक बारीकियाँ लक्ष्य भाषा में भी उसी अर्थगहराई के साथ संप्रेषित हों। इसलिए अनुवादक को संशोधन-, काटछाँट और पुनर्लेखन से कभी भी - प्रक्रिया का अनिवार्य हिस्स-हिचकिचाना नहीं चाहिए। अपनी ही गलतियों को पहचानकर उन्हें सुधारना अनुवाद ा है।

आज के समय में मशीनी अनुवाद और विभिन्न सॉफ्टवेयर अनुवादकों के लिए सहज उपलब्ध हैं। शब्दार्थ सुझाने, वाक्य का प्रारूप तैयार करने में ये उपकरण सहायक हो सकते हैं। अनेक अनुवादक इन्हें समय बचाने का साधन मानकर अपनाते हैंलेकिन इसके साथ एक बड़ी दुविधा भी जुड़ी हुई है। कोई सॉफ्टवेयर शब्द का संभावित अर्थ तो दे सकता हैपरंतु वाक्यविन्यास की सटीकताभाव की संगति और शैली की लय को साधना अनुवादक को स्वयं ही करना - होता है। इसके अतिरिक्तएक ही शब्द के कई पर्याय होते हैं और हर संदर्भ में उपयुक्त शब्द का चयन केवल वही व्यक्तिकर सकता है जिसे भाषा और साहित्य की गहरी समझ हो। इस दृष्टि से अनुवादसॉफ्टवेयर सुविधाजनक तो हैंकिंतु कई बार - असंगत भी सिद्ध हो जाते हैं।

अनुवाद विज्ञान में-सिद्धांतों के क्षेत्र में विद्वानों ने विभिन्न रणनीतियों पर विस्तार से चर्चा की है। अनुवाद-Method और Procedure को लेकर विशेष विमर्श हुआ है -Method यानी पद्धति या तरीका और Procedure यानी प्रक्रिया। अनुवाद आरंभ करने से पहले यह तय करना आवश्यक है कि किस पद्धति का सहारा लिया जाएगा। यदि अनुवाद केवल शब्दानुवाद तक सीमित रह जाए या केवल भावानुवाद बनकर रह जाएतो दोनों ही स्थितियों में अनुवाद एकांगी हो जाएगा। साहित्यिक अनुवाद में संतुलन बनाए रखना अनिवार्य है।इस संदर्भ में अज्ञेय द्वारा जैनेंद्र के उपन्यास त्यागपत्र के अंग्रेज़ी अनुवाद की कहानी अत्यंत रोचक और विचारोत्तेजक है। डॉ‘ रणवीर रांग्रा ने अज्ञेय द्वारा .The

Resignationशीर्षक से किए गए इस अनुवाद का विस्तृत विश्लेषण किया है। उन्होंने उदाहरणों के माध्यम से दिखाया है ' कि अज्ञेय ने इस अनुवाद में अनेक प्रकार की स्वतंत्रताएँ लीं और भूमिका में यह स्पष्ट किया कि सभी परिवर्तन लेखक की सहमति से किए गए हैं। भूमिका में अनुवादककी स्वीकारोक्ति इन शब्दों में दर्ज है:

"The translation here offered has been made with a view to preserving the spirit of the original; and is published with the approval of the author, who has made a few verbal alterations."

इस कथन से स्पष्ट है कि अज्ञेय का उद्देश्य मूल रचना की आत्मा को सुरक्षित रखना था, न कि केवल शब्दों का यांत्रिक अनुवाद करना। वास्तव में, यह अनुवाद भावानुवाद के अधिक निकट प्रतीत होता है। स्वयं लेखक होने के कारण अज्ञेय ने कई स्थानों पर मूल अनुभव को अपनी संवेदना के अनुसार पुनःसंप्रेषित किया। इसका एक उदाहरण मूल त्यागपत्र और उसके अंग्रेज़ी अनुवाद की तुलना से स्पष्ट होता है।

मूल हिंदी अंश इस प्रकार है:

"यहाँ खरा कंचन ही टिक सकता है क्योंकि उसे जरूरत ही नहीं कि वह कहे कि मैं पीतल नहीं हूँ। यहाँ कंचन की माँग नहीं हैपीतल से घबराहट नहीं है। इससे भीतर पीतल रहकर ऊपर कंचन दीखने वाला लोभ यहाँ क्षण भर नहीं टिकता है। बल्कि यहाँ पीतल का मूल्य है। इसलिए सोने के धैर्य की यहाँ परीक्षा है। सच्चे कंचन की पक्की परख यहीं होगी। यह यहाँ की कसौटी है। मैं मानती हूँ कि जो इस कसौटी पर खरा हो सकता है, वही खरा है। और वही प्रभु का प्यारा हो सकता है।"त्यागपत्र), जैनेंद्र(

अब इसी अंश का अज्ञेय द्वारा किया गया अंग्रेज़ी अनुवाद देखिए:

"Only the real living can survive here conventional morality withers beneath the burning contempt of those people- Civilization& culture-decency: these polite myths loose all meaning- The beast rules untamed and unashamed and calls to the beast that is in everyman. It does not matter how deeply hidden the latter maybe you have buried him beneath mounds of inhibition and convention to hibernate. Rampant and alert he will come forth. Only if you are human through and through can you hope to survive the ordeal- and such as come through the are the chosen of the Lord.")The Resignation, अनुवाद अज्ञेय(

यहाँ स्पष्ट है कि अज्ञेय ने मूल रूपक—कंचन और पीतल—को छोड़कर पूरे भाव को नए सांस्कृतिक और दार्शनिक ढाँचे में रूपांतरित कर दिया। यह उदाहरण दिखाता है कि केवल शब्दानुवाद या केवल भावानुवाद, दोनों ही सीमित हैं और अनुवाद की कुशल रणनीति के पूर्ण उदाहरण नहीं बन सकते।

महत्वपूर्ण बिंदु

कथा और कथेतर साहित्य का अनुवाद ज्ञान, संस्कृति और अनुभवों का आदानप्रदान संभव बनाता है। इसके माध्यम से - पाठक अन्य भाषाओं और संस्कृतियों से परिचित होते हैं और उनके विचारों व जीवनशैली को समझ पाते हैं। अनुवाद भाषा की बाधाओं को दूर कर वैश्विक दृष्टिकोण विकसित करता है। यह साहित्यिक विविधताऔर रचनात्मकता को बढ़ावा देता है तथा ज्ञान और शिक्षा को व्यापक जन तक पहुँचाता है। साथ हीअनुवाद साहित्यिक धरोहर को संरक्षित करने और मनोरंजन व नैतिक शिक्षा प्रदान करने का माध्यम भी है। इस प्रकारअनुवाद समाज और संस्कृति को जोड़ने का महत्वपूर्ण साधन है।

कथासाथ उसकी संरचना-साहित्य का अनुवाद तभी सफल माना जाएगा जब वह मूल भाव के साथ-, वाक्य-विन्यास और शैलीगत विशेषताओं को भी संप्रेषित कर सके। अनुवाद में लिंग, वचन और व्यंजना से जुड़ी समस्याएँ भी महत्वपूर्ण हैं। विशेष रूप से हिंदी से अंग्रेज़ी अनुवाद करते समय ये कठिनाइयाँ अधिक सामने आती हैं। हिंदी में रिश्तों के लिए प्रयुक्त शब्द—जैसे नाना, दादा, मौसी, चाची, मामी—संबंधों की सटीक पहचान कराते हैं, जबकि अंग्रेज़ी में ऐसा भेद नहीं मिलता। कथासाहित्य में जब संबंधों की जटिलता आती हैतब अनुवादक को विशेष सावधानी बरतनी पड़-ती है।

शीर्षक का अनुवाद भी अपने आप में एक चुनौती है। कई बार मूल शीर्षक का शब्दशः अनुवाद लक्ष्य भाषा में वही प्रभाव नहीं दे पाता। मृदुला गर्ग की कहानी हरी बिंदी इसका अच्छा उदाहरण है। हिंदी में यह शीर्षक अपने आप में व्यंजक हैलेकिन अंग्रेज़ी अनुवाद में लेखिका ने स्वयं इसका शीर्षक बदलकर 'A Date with My Self'कर दियाक्योंकि ' वह भाव के स्तर पर अधिक सटीक था। यहाँ यह प्रश्न भी उठता है कि'बिंदी' जैसे सांस्कृतिक शब्दों का अनुवाद किया जाए या उन्हें यथावत रखा जाए। अक्सर ऐसे शब्दों को ज्यों का त्यों रखना या हल्के स्पष्टीकरण के साथ प्रस्तुत करना एक व्यावहारिक रणनीति होती है।

अनुवाद में कई बार स्रोत भाषा के कुछ शब्दों को बनाए रखनाया अर्थ स्पष्ट करने के लिए अतिरिक्त शब्द जोड़ना आवश्यक हो जाता है। कभीकभी ऐसी स्थिति भी आती है जब कोई रणनीति कारगर नहीं होती और अनुवादक किसी - अंशको छोड़ने का निर्णय लेता हैयह तर्क देते हुए कि उसके बिना भी कथा का मूल प्रभाव बना रहता है। वहीं, अत्यधिक विस्तृत रचनाओं के अनुवाद में संक्षिप्तीकरण की नीति अपनाई जाती हैपर इसका खतरा यह है कि शैलीगत विविधता और भाषिक सौंदर्य का एक हिस्सा लुप्त हो सकता है।

अनुवाद करते समय खुली जगह छोड़कर लिखना, बारबार लौटकर संशोधन करना और कठिन शब्दों या - पदबंधों को अस्थायी रूप से छोड़ देना भी एक व्यावहारिक तरीका है। साहित्यिक रचना मूलतः एक सौंदर्यशास्त्रीय अनुभव साहित्य में लेखक यथार्थ को कल्पना और संवेदना के माध्-होती है। कथायम से रूपांतरित करता है। अनुवादक के सामने भी वही चुनौती होती है—दूसरी भाषा में उस अनुभव को फिर से रचना।भारत जैसे बहुभाषी देश में अनुवाद केवल भाषिक कार्य नहीं, बल्कि सांस्कृतिक एकता का माध्यम है। रवींद्रनाथ ठाकुर, विजयदान देथा जैसे रचनाकार किसी एक भाषा तक सीमित नहींबल्कि साझा सांस्कृतिक विरासत के प्रतीक हैं। इसी तरह शेक्सपियर, ब्रेख्त और दोस्तोवस्की विश्व साहित्य के ऐसे स्तंभ हैं जिनकी रचनाओं का अनुवाद केवल शब्दार्थ खोजने से संभव नहीं। उनके समय, संवेदना और मानवीय अनुभवों के विराट कैनवस को लक्ष्य भाषा में साकार करना ही अनुवादक का वास्तविक दायित्व है।

अंततःअनुवादक को सूक्ष्म दृष्टि और ग्रहणशील मन के साथ कार्य करना होता है। विभिन्न बिंदुओं पर अलग--अलग पद्धतियों का सहारा लेते हुए उसे लगभग मूल रचनाकार के समान उस कृति को प्रस्तुत करना पड़ता है। कथा साहित्य के अनुवादक के लिए यह एक बड़ा और चुनौतीपूर्ण दायित्व हैजिसे विश्व भर के अनुवादकों ने नेपथ्य में रहकर भी पूरी निष्ठा के साथ निभाया है। संवेदना और भाषा के माध्यम से जीवन के यथार्थ को सौंदर्यशास्त्रीय अनुभव में बदलनायही - रचनाकार और अनुवादक, दोनों की साझा कसौटी है।

6.8 कथेतर साहित्य और अनुवाद

कथा साहित्य में कथनकल्पना का सहारा | भंगिमा को प्रभावी बनाने के लिए कल्पना का सहारा लिया जाता है-लिया जाता है। घटनाएँ, दृश्य और पात्र प्रायः काल्पनिक विन्यास से कथ्य को सुदृढ़ करते हैं। इसके विपरीत कथेतर)non-fiction) साहित्य का मूल लक्ष्य तथ्य और तर्क के माध्यम से स्पष्टलक्षित और विश्वसनीय संप्रेषण है। यही कारण है कि ज्ञान की विविध शाखाओं के विकास के साथ कथेतर साहित्य में अनेक प्रकार के पाठ सम्मिलित होते गए। यहाँ स्थान, काल, पात्र, घटना और संदर्भ—सब कुछ यथार्थ पर आधारित होता है; कपोलकल्पना से इसका कोई सरोकार नहीं।

कथेतर गद्य के विधात्मक विस्तार ने रचनात्मक कौशल को नई गंभीरता प्रदान की। प्रयुक्तियों के ऐसे प्रतिमान उभरे कि यह धारा साहित्य की सीमाओं को लाँघकर सामाजिक जीवन में वैचारिक हलचल पैदा करने लगी। विषय, प्रसंग, स्थान और काल के आलोक में रचनाओं की आलोचना के नए उपकरण विकसित हुए। सैद्धान्तिक और व्यावहारिक स्तर पर तर्क और व्याख्या की नई अपेक्षाएँ सामने आईंजिससे पारम्परिक आलोचनापद्धतियाँ अपर्याप्त प्रतीत होने लगीं। इसी - प्रक्रिया में विधाओं के बीच वैचारिक आवाजाही बढ़ी और संस्मरण, रेखाचित्र, रिपोर्ट, डायरी जैसी विधाओं को अलग-बूझ में कथा साहित्य के भीतर भी कथेतर विधाओं के सूत्र दिखाई -अलग होते हुए भी परस्पर सन्नद्ध माना गया। नई सूझ देने लगे।

आधुनिक नागरिक जीवन में साहित्येतर गद्य की उपस्थिति इतनी गहरी हो गई कि वह सामाजिक चेतना में 'रक्त' और 'संस्कार की तरह रचबस गई।-' धर्म, दर्शन, कला, संस्कृति, इतिहास, समाज विज्ञान, चिकित्सा, प्रौद्योगिकी, प्रशासन, व्यापार और शिक्षासभी क्षेत्रों के पाठ साहित्येतर गद्य का हिस्सा बने। चूँकि इनका सीधा संबंध जनसामान्य की - व्यवहार से हैइसलिए-दिनचर्या और जीवन इनके अनुवाद की उपयोगिता भी बढ़ी। कथेतर साहित्य का उदय और विस्तार अनुवाद से गहराई से जुड़ा रहाऔर इसी कारण इसके अनुवाद पर गंभीर विचारविमर्श आरम्भ हुआ।-

कथेतर साहित्य के पाठ कथात्मक होते हुए भी तथ्यात्मक, सूचनात्मक और संकल्पनात्मक होते हैं। अनुवादक के सामने सबसे बड़ी चुनौती संकेतकों की अर्थप्रक्रिया को समझना है। कोई भी संकेतक अपने आप में स्वतंत्र नहीं होता-; उसका अर्थ प्रयोग-संदर्भ में खुलता है। उदाहरण के लिए-

"किसी से कहा जाए कि टेबल पर कलम रखी होगी, ले आइए !... वह भावक कलम लाने के लिए निश्चय ही डाइनिंग टेबल, सेंट्रल टेबल की ओर न जाकर स्टडी टेबल की ओर जाएगा..."यहाँ अर्थबोध ज्ञानविवेक और संदर्भ से - निर्मित होता है।

इसी प्रकार-

"नीर, जल और पानी एक दूसरे का पर्याय हैकिंतु अनुवाद के समय इसके अर्थबोध को ध्यान में रखना होगा कि पानी पीने, पानी चढ़ने, पानी उतारने, नीर पीने, जल चढ़ाने, पानीपानी होने जैसी प्रयुक्तियों में पानी-, नीर और जल का भिन्नभिन्न अर्थ संप्रेषित होता है।-"

अनुवादक को ऐसी दुविधाओं से कौशलपूर्वक निपटना पड़ता है।लक्षित ग्राही समाज की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि और ग्रहणक्षमता का आकलन अनिवार्य है। पाठ इतिहासपरक- है या धर्मदर्शन से जुड़ा-, सामान्य ज्ञान का है या कला-संरचना तय होती है। इन सावधानियों के बिना किया गया अनुवाद -साहित्य काइन सबके अनुसार शब्दावली और वाक्य यांत्रिक और निष्प्रयोजक हो जाता है। कथेतर साहित्य की प्रमुख शैलियाँ—निबंधसमालोचना-, संस्मरण, यात्राव-ृत्तांत, रेखाचित्र, जीवनी, आत्मकथा, रिपोर्ताज, पत्र, डायरी और साक्षात्कारआज अनुवाद के माध्यम से ही व्यापक सामाजिक - अर्थवत्ता अर्जित करती हैं।

6.9 कथेतर साहित्य की प्रमुख विशेषताएँ और उनके अनुवाद की चुनौतियाँ

कथेतर साहित्य आधुनिक गद्य परंपरा का वह व्यापक क्षेत्र हैजिसमें लेखक का अनुभव, चिंतन, संवेदना और विवेक प्रत्यक्ष रूप से अभिव्यक्त होते हैं। इसकी प्रमुख विधाएँनिबंध-, समालोचना, संस्मरण, यात्रावृत्तांत और रेखाचित्र-—अपनी प्रकृति, शिल्प और उद्देश्य के कारण न केवल साहित्यिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हैंबल्कि अनुवाद की दृष्टि से भी अत्यंत चुनौतीपूर्ण हैं। इन विधाओं का अनुवाद मात्र भाषिक अंतरण नहीं, बल्कि सांस्कृतिक, वैचारिक और भावात्मक संक्रमण की प्रक्रिया है।

.1निबंध:

निबंध लेखक के चिंतनशील व्यक्तित्व की लालित्यपूर्ण गद्यात्मक अभिव्यक्ति है। इसमें लेखक अपने जीवनानुभवों और विचारों को इस तरह प्रस्तुत करता है कि पाठक उसकी विचारयात्रा का सहयात्री बन जाता है। निबंध - का स्वरूप न तो पूर्णतः विचारप्रधान होता है और न ही केवल भावप्रधानवह दोनों के संतुलन से निर्मित होता है। इसकी विषय-सबसे बड़ी विशेषता इसकी निस्सीमता है, शैली और दृष्टि तीनों स्तरों पर। इतिहास, भूगोल, विज्ञान, राजनीति, समाज, प्रकृति या मानवीय चेतना—किसी भी संदर्भ से निबंध आरंभ हो सकता है।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल का प्रसिद्ध कथन—"यदि गद्य कवियों या लेखकों की कसौटी है तो निबंध गद्य की कसौटी है"निबंध की भाषिक शक्ति को रेखांकित करता है। अनुवाद में यही शक्ति सबसे बड़ी चुनौती बन जाती है। स्थानीय संदर्भ, सूक्ष्म व्यंजना और मूल्यसंरचनाएँ कई बार अननुवाद्यता की स्थिति उत्पन्न करती हैं। -अर्थ (वैल्यू लोडेड) बोध-परंपरा-भारतेंदु हरिश्चंद्र से लेकर कुबेरनाथ राय तक की निबंध का अनुवाद तभी सार्थक हो सकता हैजब अनुवादक आत्मज्ञान, श्रम और विवेक का सहारा ले।

.2समालोचना :(समीक्षा/आलोचना)

समालोचना साहित्यिक रचनाओं के गुणदोष-, उद्देश्य और सामाजिक उपादेयता का विवेकशील विश्लेषण है। हिंदी में इसका विकास भारतेंदु युग से आरंभ होकर आधुनिक आलोचना तक पहुँचा। समालोचना की भाषा स्वभावतः अंतरानुशासनिक होती है—इतिहास, समाजशास्त्र, दर्शन, संस्कृति और सौंदर्यशास्त्र इसके अनिवार्य संदर्भ हैं।

समालोचना को भावयित्री प्रतिमा का प्रतिफल माना जाता हैइसलिए आलोचक से अनेक शास्त्रों और कलाओं के ज्ञान की अपेक्षा की जाती है। यही अपेक्षा इसके अनुवादक से भी होती है। मूल पाठ में निहित परिप्रेक्ष्यपरंपरा और वैचारिक संकेतों को लक्ष्य भाषा में सप्रेषित करना अत्यंत कठिन कार्य है। संभवतः इसी कारण समालोचनासाहित्य के क्षेत्र - में दक्ष अनुवादक अपेक्षाकृत कम दिखाई देते हैं।

.3संस्मरण:

संस्मरण स्मृति के आधार पर किसी व्यक्ति, घटना या दृश्य का यथातथ्य चित्रण है। यह आत्मकथा से भिन्न है, क्योंकि यहाँ लेखक स्वयं केंद्र में नहीं होता। यद्यपि संस्मरण ऐतिहासिक नहीं होता, फिर भी यह इतिहास के लिए महत्त्वपूर्ण स्रोत बनता है। पदम सिंह शर्मा, बनारसीदास चतुर्वेदी, रामवृक्ष बेनीपुरी, महादेवी वर्मा और रामधारी सिंह दिनकर जैसे रचनाकारों ने इस विधा को समृद्ध किया।

अनुवाद की दृष्टि से संस्मरण में ऐतिहासिक, सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भों की सूक्ष्म समझ आवश्यक है। मनोविज्ञान, सामाजिक विज्ञान और तुलनात्मक साहित्य का ज्ञान भी अनुवादक के लिए सहायक होता है। मूल पाठ के मर्म को समझे बिना किया गया अनुवाद विश्लेषण और पुनर्गठन को निरर्थक बना देता है।

.4यात्रा:वृत्तांत-

यात्रावृत्तांत लेखक की व्यक्तिगत अनुभूतियों का रचनात्मक दस्तावेज होता है। यह सौंदर्य औ-र विद्रूप, उल्लास और अवसाद—दोनों का सजीव चित्रण करता है। पाब्लो पिकासो की गुएर्निका या फणीश्वरनाथ रेणु की ऋणजल (1937) जैसे उदाहरण बताते हैं कि अनुभूति कैसे कला में रूपांतरित होती है।राहुल सांकृत्यायन से लेकर नासिरा (1966) धनजल साहित्य-शर्मा तक हिंदी यात्रा की परंपरा समृद्ध रही है। अनुवाद में सबसे बड़ी चुनौती स्थानीय मूल्यों, परंपराओं और सांस्कृतिक संकेतों का संप्रेषण है। केवल कोशीय ज्ञान यहाँ अपर्याप्त सिद्ध होता हैपरिवेश की समग्र चेतना का बोध अनिवार्य है।

.5रेखाचित्र:

रेखाचित्र शब्दों से निर्मित चित्र हैजिसमें निबंध, कहानी और चित्रकला के तत्व समाहित होते हैं। यह न्यूनतम शब्दों में किसी व्यक्ति या प्रसंग का मर्मस्पर्शी चित्र प्रस्तुत करता है। पद्म सिंह शर्मा, महादेवी वर्मा, फणीश्वरनाथ रेणु, कृष्णा

सोबती जैसे रचनाकारों ने इसे विशिष्ट ऊँचाई दी।रेखाचित्र का अनुवाद अत्यधिक संवेदनशील कार्य है। प्रतीकात्मकता, संक्षिप्तता और भावचित्रण की सूक्ष्मता को बनाए रखना अनिवार्य है। यदि लक्ष्य भाषा में वही चित्र उभर न सके-, तो अनुवाद निरर्थक हो जाता है।

.6 जीवनी:

किसी प्रेरक व्यक्तित्व के जीवन का क्रमबद्ध, समग्र और तथ्यनिष्ठ विवेचन जीवनी कहलाता है। यह केवल घटनाओं का यांत्रिक संकलन नहीं, बल्कि उनके ऐतिहासिक, सामाजिक और वैचारिक संदर्भों की रचनात्मक व्याख्या भी है। इतिहास, साहित्य और व्यक्तिचित्र-—इन तीनों के संयोग से विकसित यह विधा नायक के जीवन को उसकी समग्रता में प्रस्तुत करती है। यद्यपि जीवन के सभी प्रसंगों का उल्लेख आवश्यक नहीं होताफिर भी व्यक्तित्व के गुणदोषों का यथार्थ - और संतुलित विवेचन अनिवार्य है। लेखक अपने विवेक से अनुपयुक्त या अनावश्यक प्रसंगों को छोड़ सकता हैकिंतु तथ्यात्मक ईमानदारी से विचलन नहीं कर सकता। जीवनी का उद्देश्य पाठकों को किसी महान या प्रेरणास्पद जीवन से सीख लेने की दिशा देना होता हैइसी कारण इसमें सृजनात्मक रागात्मकता का सीमित उपयोग दिखाई देता है और कृति कहींकहीं उपन्यास के निकट पहुँच जाती है।-

जीवनी संस्मरणपरक भी हो सकती है और शोधपरक भीइसलिए लेखक की तटस्थता अत्यंत आवश्यक है। नायक के प्रति अतिशय सम्मोहन विवेकशील जीवनी लेखन में बाधक बनता है। इसमें चरितनायक के देशीय, धार्मिक, पौराणिक परिवेश के साथ उसके मनोभावों की पुनर्रचना भी संभव होती है। हिन्दी में नामा दास रचित 'भक्तमाल' को सबसे प्राचीन जीवनचरित माना जाता है। गोसाई गोकुलनाथ, बालमुकुन्द गुप्त, बाबू श्याम सुंदर दास, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी, राजेन्द्र प्रसाद, बनारसी दास चतुर्वेदी, शिवरानी देवी, रामवृक्ष बेनीपुरी, राहुल सांकृत्यायन, जैनेन्द्र कुमार, राम विलास शर्मा, शिव प्रसादसिंह, विष्णु प्रभाकर, कमला सांकृत्यायन, बिंदु अग्रवाल जैसे रचनाकारों ने इस क्षेत्र को समृद्ध किया है।जीवनी के अनुवाद में स्रोत और लक्ष्य भाषा के ज्ञान के साथ चरितनायक के ऐतिहासिक, भौगोलिक, सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक संदर्भों की गहरी समझ अपेक्षित है। इन संदर्भों के बिना मूल पाठ की अनुगूँज लक्ष्य भाषा में जीवित नहीं रह पाती।

.7आत्मकथा:

आत्मकथा लेखक द्वारा अपने जीवन के बाह्य और आंतरिक अनुभवों की क्रमबद्ध, ईमानदार और यथार्थ प्रस्तुति है। यह आत्मानुभूतिकेंद्रित विधा है-प्रधान और सत्य-, जिसमें तथ्य छिपाने या मिथ्या वर्णन की कोई गुंजाइश नहीं होती। कठिन होते हुए भी लेखक अपने अवगुणों, कमजोरियों और मानसिक द्वंद्वों को उतनी ही स्पष्टता से सामने रखता है जितनी अपनी उपलब्धियों को। संस्मरण से भिन्न, यहाँ केंद्रीय पात्र स्वयं लेखक होता हैसमाज और परिवेश सहायक पृष्ठभूमि के रूप में उपस्थित रहते हैं।

आत्मकथा आत्मनिरीक्षण का मंच हैजहाँ लेखक अपने साहस, भीरुता, चतुराई, धूर्तता—सबका लेखाजोखा - देता है और पाठक को जीवन के अनेक प्रेरक आयाम सौंपता है। इसी कारण यह विधा साहित्य और इतिहास—दोनों के लिए महत्त्वपूर्ण स्रोत बन जाती है। आत्मकथाकार का क्षेत्र साहित्य तक सीमित होना आवश्यक नहींधर्म, विज्ञान, राजनीति, कला, शिक्षा, खेल या वाणिज्य—किसी भी क्षेत्र का प्रेरक जीवन समाज के लिए उपादेय हो सकता है। बनारसीदास जैन, दयानंद सरस्वती, भारतेंदु हरिश्चंद्र, महात्मा गाँधी, सुभाष चंद्र बोस, राहुल सांकृत्यायन, राजेंद्र प्रसाद, हरिवंश राय बच्चन आदि की आत्मकथाएँ इसी का प्रमाण हैं। महात्मा गाँधी और राजेंद्र प्रसाद की आत्मकथाएँ विशेष रूप से गौरवशाली मानी जाती हैं।

आत्मकथा के अनुवाद में अनुवादक को लेखक के कर्मक्षेत्र, वैचारिक उद्देश्यों और ऐतिहासिकसा-ंस्कृतिक संदर्भों से परिचित होना अनिवार्य हैअन्यथा भावार्थ की सटीकता नष्ट हो जाती है।

.8रिपोर्ताज:

हिन्दी में रिपोर्ताज का जन्म साहित्य और पत्रकारिता के संयोग से हुआ। प्रभाकर माचदे, अमृतराय, रांगेय राघव, फणीश्वरनाथ रेणु के योगदान से यह विधा प्रतिष्ठित हुई। इसका आधार तथ्य हैयद्यपि तथ्यचित्रण को प्रभावशाली बनाने के - लिए कल्पना का सीमित सहारा लिया जाता है। शिवदान सिंह चौहान के अनुसार—

"आधुनिक जीवन की दुतगामी वास्तविकता में हस्तक्षेप करने के लिए मनुष्य को नई साहित्यिक रूपविधा को - जन्म देना पड़ा। रिपोर्ताज उन सबमें सबसे प्रभावशाली विधा है।"

रिपोर्ताज में लेखक की दृष्टि कैमरे की भाँति सूक्ष्म होती है। घटना का बाह्य रूप प्रमुख रहता हैजबकि आंतरिक विश्लेषण गौण। लेखक पत्रकार और कलाकार—दोनों की भूमिका निभाता है। अनुवादक को भी इसी द्वैत दृष्टि से काम लेना पड़ता हैविशेषकर तब, जब स्थानीय संदर्भ लक्ष्य भाषा के पाठकों के लिए अपरिचित हों।

.9 पत्र साहित्य:

महान विचारकों, साहित्यकारों और नेताओं के पत्र उनके जीवनदर्शन के सजीव दस्तावेज होते हैं। महात्मा - गाँधी, भगत सिंह, नेहरू के पत्रों में निहित अनुभूत सत्य सामाजिक दृष्टि से प्रेरक हैं। व्यक्तिगत होते हुए भी इनमें व्यक्त विचार सार्वत्रिक और शाश्वत मूल्य ग्रहण कर लेते हैं। पत्रों में प्रयुक्त भाषा स्थानीय संदर्भों से भरी होती है—जयपराजय-, क्रोधघृणा-, हताशानिराशा-, उपदेशनिर्देश सब कुछ खुलकर सामने आता है।-

पत्र साहित्य के अनुवाद में शब्दों और मुहावरों के चयन में अत्यधिक सावधानी आवश्यक है। कोशीय अर्थ कई बार अपर्याप्त सिद्ध होते हैंऐसे में लौकिक संदर्भ और दार्शनिक विवेक ही अनुवादक के सहायक बनते हैं।

.10 डायरी:

डायरी लेखक के अंतरंग क्षणों का लेखा है—विचार, अनुभव, स्मृतियाँ और चिंतन। आत्मसाक्षात्कार की यह - विधा भविष्य की पीढ़ियों के लिए ऐतिहासिक संदर्भ बन जाती है।"द डायरी ऑफ अ यंग गर्ल" (एने फेंकइसका (विश्वप्रसिद्ध उदाहरण है। हिन्दी में'पच्चीस मास' (राहुल सांकृत्यायन(, 'पैरों में पंख बाँधकर' (रामवृक्ष बेनीपुरी(, 'एक साहित्यकार की डायरी' (गजानन माधव मुक्तिबोधउल्लेखनीय हैं। (

डायरी में स्थान, तिथि और समयसंकेत अनुभवों को विश्लेषणात्मक रूप देते हैं। यह लेखक का अंतरंग मित्र - बनकर उसके अनकहे भावों को सुरक्षित करता है। अनुवादक के लिए इन सूक्ष्म भावों की समझ अत्यंत आवश्यक है।

.11साक्षात्कार:

साक्षात्कार प्रश्न-उत्तर शैली में किसी अनुभवी व्यक्तित्व से संवाद हैजिसके माध्यम से पाठक कम समय में जीवन- में रत्नाकर और बनारसीदास चतुर्वेदी की 1931 दृष्टि से परिचित होता है। हिन्दी में इस विधा का आरंभ-दर्शन और विचार बातचीत से माना जाता है। पत्रकारिता और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया ने इसे व्यापक लोकप्रियता दी है।

इस विधा में भाषा की सहजता, शिष्टता और स्पष्टता अनिवार्य है। कल्पना का कोई स्थान नहींतथ्य ही आधार हैं। साक्षात्कार के अनुवाद में प्रश्नकर्ताउत्तरदाता के संदर्भ-, उद्देश्य और संवाद की ध्वनियों को लक्ष्य भाषा में यथासंभव सजीव बनाए रखना अनुवादक की प्रमुख चुनौती है|

:सारांश 6.10

प्रस्तुत इकाई में कथासाहित्य और कथेतर साहित्य के अनुवाद से जुड़े सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक पक्षों का समग्र अध्ययन किया गया है। कथासाहित्य का अनुवाद एक जटिल और सर्जनात्मक प्रक्रिया हैक्योंकि कथा अपने समाज, संस्कृति और जीवनानुभवों में गहराई से रचीबसी होती है। इसलिए अनुवादक से केवल स्रोत और लक्ष्य भाषा का ज्ञान ही - नहींबल्कि दोनों संस्कृतियों की सूक्ष्म समझ और साहित्यिक सहृदयता की भी अपेक्षा की जाती है। कथा में प्रयुक्त

परिवेशगत शब्द, अनुभूतियाँ, लोकोक्तियाँ, मुहावरे तथा सामाजिक अनुभव लक्ष्यभाषा में पुनःसृजित करना अनुवादक की सबसे बड़ी चुनौती होती है। इस प्रक्रिया में अनुवाद वस्तुतः पाठ के पुनःनिर्माण के समान होता है।

इकाई में यह भी स्पष्ट किया गया है कि अनुवाद अध्ययन का विकास आधुनिक वैज्ञानिक चेतना और विस्तृत मानवीय चिंतन का परिणाम है। समय के साथ साहित्यिक विधाओं का विस्तार हुआ और कथासाहित्य के साथसाथ - कथेतर साहित्य की अनेक शैलियाँ सामने आई। निबंध, समालोचना, संस्मरण, यात्रावृत्तांत-, रेखाचित्र, जीवनी, आत्मकथा, रिपोर्ताज, पत्र लेखन, डायरी और साक्षात्कार जैसी विधाओं का अनुवाद केवल भाषाज्ञान से संभव नहीं है। - इसके लिए पाठ के विषय, उद्देश्य, प्रयोजन और लक्षित पाठक की समझ आवश्यक होती है।

इस इकाई के अध्ययन के माध्यम से यह बोध कराया गया है कि कथासाहित्य और कथेतर साहित्यदोनों के - अनुवाद में भिन्नभिन्न रणनीतियों की आवश्यकता होती है। जहाँ कथासाहित्य में सर्जनात्मक पुनःसृजन और - सांस्कृतिक संवेदना प्रमुख होती हैवहीं कथेतर साहित्य में विषयगत स्पष्टता, संदर्भज्ञान और उद्देश्यपरक भाषा का विशेष - महत्व है। फ्रांसिस बेकन के निबंधों का महावीर प्रसाद द्विवेदी द्वारा तथा हेकेल की 'The Riddles of the Universeका ' आचार्य शुक्ल द्वारा किया गया अनुवाद इस तथ्य को रेखांकित करता है कि अनुवादक को साहित्यिक संवेदना और दोनों को साधते हुए भवार्थ की रक्षा करनी होती है। इस प्रकार यह इकाई विद्यार्थियों को-ज्ञानप्रधान दृष्टि अनुवाद के विविध रूपों, चुनौतियों और अपेक्षित दक्षताओं से परिचित कराते हुए एक सजग और जिम्मेदार अनुवादक बनने की दिशा में मार्गदर्शन प्रदान करती है।

✓ 6.11 प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा)

प्रश्न :उत्तर 1 अनुवाद ही वह माध्यम है जो दो संस्कृतियों के बीच पुल का कार्य करता है। इसके द्वारा हम अनुभव करते हैं कि संपूर्ण विश्व एक साझा समाज है और समस्त साहित्य मानवीय भावनाओं का आख्यान है।

प्रश्न :उत्तर 2 शेक्सपियर के नाटकों के हिंदी अनुवाद रांगेय राघव, अमृतराय और रघुवीर सहाय जैसे वरिष्ठ साहित्यकारों ने किए।

प्रश्न का 3 उत्तर: इलियट का हिंदी अनुवाद रमेश चन्द्र सिन्हा ने किया है |

प्रश्न :का उत्तर 4 टोपी शुक्ल का अंग्रेजी अनुवाद मीनाक्षी शिवरामन ने किया है |

प्रश्न :का उत्तर 5 मार्गरिट जुल कोस्टा का प्रसिद्ध निबंध | है 'ट्रांसलेटिंग द अनट्रांस्लेटेबल :माइंड द गैप'

🔍 6.12 अधिक जानने के लिए पढ़ें

- Bassnett, Susan and Trivedi, Harish (eds.) ((1999, Post ColonialTranslaiton: Theory and Practice
- Venuti, Lawrence (ed), ((2000, The Translation Studies Reader, London & New York, Routledge.
- Baker, Mona (ed.), :1998Encyclopedia of Translation Studies, London and Newyork, London.
- गोस्वामी, कृष्ण कुमार, अनुवाद विज्ञान की भूमिका, नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन।
- टंडन, पूरनचंद, अनुवाद के विविध आयाम, दिल्ली, तक्षशिला प्रकाशन।

- नगेंद्र (.सं), अनुवाद 1993, सिद्धांत एवं अनुप्रयोग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली।
- श्रीवास्तव, रवींद्रनाथ, एवं गोस्वामी, कृष्ण कुमार (.सं), 1995, अनुवाद सिद्धांत और समस्याएँ, दिल्ली, आलेख प्रकाशन।
- Bathgate, R. H., 1981, Studies of Translation Model I&II: The
- Newmark, Peter, 1981, Approaches to Translation, Oxford, Pergamon Press.

:अभ्यास प्रश्न 6.13

क-संक्षिप्त प्रश्नों के उत्तर लिखिए (

.1 कथाबोध और रचनात्मक संरचना की चुनौती से आप क्या समझे है ?

.2 'The Registration? का अनुवाद किसने किया है'

.3 कथेतर साहित्य से आप क्या समझते है ?

.4 कथेतर साहित्य की तीन विशेषताओं के बारे में लिखिए|

.5 जीवनी से आप क्या समझते है ?

-निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए (ख)

.1 कथा साहित्य का अर्थ| संवेदना और अनुवाद के साथ अंतः संबंध के बारे लिखिए ,संस्कृति ,

.2 भारतीय कथा साहित्य में अनुवाद की जीवंत परंपरा पर एक आलेख प्रस्तुत कीजिए|

.3 कथा साहित्य और अनुवाद की सांस्कृतिक सन्दर्भ पर प्रकाश डालिए|

.4 कथा साहित्य का अनुवाद में पुनःसृजन की जिम्मेदारी और रणनीतियाँ को अपने शब्दों में लिखिए|

.5 कथेतर साहित्य की प्रमुख विशेषताएँ और उनके अनुवाद की चुनौतियों के विविध बिंदु पर प्रकाश डालिए|

.6 निम्नलिखित अंश का अनुवाद कीजिए-

क(अंग्रजी में अनुवाद कीजिए-

संसार की चिन्ताओं से मुक्त कर्ज से लदे हुए। गालियाँ भी खाते, मार भी खाते, मगर कोई गम नहीं। दीन इतने कि वसूली की बिलकुल आशा न रहने पर भी लोग इन्हें कुछकुछ कर्ज दे देते थे। मटर-न-, आलू की फसल में दूसरों के खेतों से मटर या आलू उखाड़ लाते और भूनपाँच ऊख उखाड़ लाते और रात को चूसते। घीसू ने इसी -भानकर खा लेते या दस-चिह्नों पर चल रहा था-वृत्ति से साठ साल की उम्र काट दी और माधव भी सपूत बेटे की तरह बाप ही के पद-आकाश, बल्कि उसका नाम और भी उजागर कर रहा था। इस वक्त भी दोनों अलाव के सामने बैठकर आलू भून रहे थे, जो कि किसी खेत से खोद लाये थे। घीसू की स्त्री का तो बहुत दिन हुए, देहान्त हो गया था। माधव का ब्याह पिछले साल हुआ था। जब से यह औरत आयी थी, उसने इस खानदान में व्यवस्था की नींव डाली थी और इन दोनों बेगैरतों का दोजख भरती रहती - थी। जब से वह आयी, यह दोनों और भी आरामतलब हो गये थे। बल्कि कुछ अकडने भी लगे थे। कोई कार्य करने को बुलाता, तो निब्याज भाव से दुगुनी मजदूरी माँगते। वही औरत आज प्रसववेदना से मर रही थी और यह दोनों इसी इन्तजार - में थे कि वह मरजाए, तो आराम से सोयें।

ख-हिंदी में अनुवाद कीजिए(

The lively little spirit Ariel had no evil in his nature, except that he took rather too much pleasure in troubling an ugly monster called Caliban, whom he hated because he was the son of his old enemy Sycorax. Prospero had found this Caliban in the woods, a strange twisted thing, far less like a man than a large monkey. He took him home to his cave, and taught him to speak; and

Prospero would have been very kind to him, but the bad nature which Caliban had from his mother Sycorax, would not let him learn anything good or useful. Therefore he was employed like a slave, to fetch wood, and do the most laborious tasks; and Ariel had the duty of forcing him to these services.

शब्दकोश:

.1 शाश्वतसदा रहनेवाला: ।

.2 वैचारिकविचार संबंधी: ।

.3 अनुगूंज: प्रतिध्वनि ।

.4 पुनर्गठन: पुनर्निर्माण, फिर से गठन करना ।

.5 निरर्थकअर्थरहित :, व्यर्थ, निष्फल ।

.6 विन्यास: जमाकर रखनासजाना सँवारना , ।

*** ***** ***

इकाई :7आलोचना साहित्य का अनुवादअवधारणा और सीमाएँ :

इकाई की रुपरेखा

7.1 उद्देश्य
7. 2 प्रस्तावना
7. 3 साहित्यिक आलोचना :अर्थव्युत्पत्ति और परंपरा ,
7.4 साहित्यिक आलोचना के विविध प्रकार
7.5 पाश्चात्य एवं भारतीय आलोचनापरंपरा का ऐतिहासिक विकास :
7.6 आलोचनात्मक लेखन में अनुवाद प्रक्रिया और दृष्टिकोण
7.7 आलोचनात्मक अनुवादरणनीति और पुनः सृजन :
7.8 आलोचनात्मक अनुवाद की बौद्धिक जिम्मेदारी
7. 9 आलोचनात्मक अनुवाद की सीमाएँ
7. 10 सारांश
7. 11 प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा)
7. 12 अधिक जानने के लिए पढ़ें
7. 13 अभ्यास प्रश्न

.71 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन से आप-

- साहित्यिक आलोचना के अर्थ व्युत्पत्ति और परंपरा के बारे में ज्ञान प्राप्त करेंगे। ,
- साहित्यिक आलोचना के विविध प्रकार से अवगत होंगे।
- पाश्चात्य एवं भारतीय आलोचना के परंपरा का ऐतिहासिक विकास को जानेंगे।
- आलोचनात्मक लेखन में अनुवाद प्रक्रिया और दृष्टिकोण के महत्व की जानकारी प्राप्त करेंगे।
- आलोचनात्मक अनुवाद की रणनीति और पुनः सृजन से अवगत होंगे।
- आलोचनात्मक अनुवाद की बौद्धिक जिम्मेदारी और आलोचनात्मक अनुवाद की सीमाएँ के बारे में जानकारी प्राप्त करेंगे।

7.2 प्रस्तावाना

सर्जनात्मक साहित्य के अध्ययन में आलोचना साहित्य का स्थान अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। यह वह विधा है जो किसी साहित्यिक कृति को केवल पढ़ने तक सीमित नहीं रहतीबल्कि उसके भावबोध, शिल्प, वैचारिक पृष्ठभूमि तथा ऐतिहासिकसांस्कृतिक संदर्भों का विश्लेषण प्रस्तुत करती है। आलोचना साहित्य के माध्यम से साहित्य की परंपरा-, परिवर्तन और विकास की निरंतर प्रक्रिया को समझने का अवसर मिलता है। ऐसे में आलोचना साहित्य का अनुवाद एक साधारण भाषांतरण न होकर वैचारिक सेतुनिर्माण का कार्य करता है।-

आलोचनात्मक लेखन सामान्य रचनात्मक साहित्य से इस अर्थ में भिन्न होता है कि इसमें भाषा के साथसाथ - सिद्धांत, अवधारणाएँ और विशिष्ट पारिभाषिक शब्दावली भी सक्रिय भूमिका निभाती है। जब इस प्रकार के लेखन का अनुवाद किया जाता हैतब अनुवादक को केवल शब्दार्थ पर नहींबल्कि निहित अर्थ, वैचारिक संरचना और संदर्भगत संकेतों पर भी ध्यान देना पड़ता है। आलोचना साहित्य प्रायः किसी विशेष बौद्धिक परंपरा में विकसित होता है और अन्य परंपराओं से संवाद करते हुए आगे बढ़ता है। इसलिए उसका अनुवाद करते समय बहुभाषिक और बहुसांस्कृतिक समझ आवश्यक हो जाती है।

आलोचना साहित्य के अनुवाद की सीमाएँ वहीं प्रारंभ हो जाती हैं जहाँ भाषाओं की संरचना, सांस्कृतिक भिन्नता और वैचारिक शब्दावली में असमानता दिखाई देती है। अनेक बार किसी भाषा में उपलब्ध अवधारणा का सटीक समकक्ष दूसरी भाषा में नहीं मिलता। ऐसी स्थिति में अनुवादक को संतुलन साधते हुए अर्थ की रक्षा करनी होती है। साथ ही यह भी आवश्यक है कि अनुवादित पाठ मूल आलोचनात्मक स्वर और तर्क की गंभीरता को बनाए रखे।

यह इकाई आलोचना साहित्य के अनुवाद की अवधारणा, उसकी संभावनाओं और सीमाओं को समझने का प्रयास है। इसके अंतर्गत आलोचनात्मक पाठों के अनुवाद में आने वाली चुनौतियों, उपयुक्त रणनीतियों तथा अनुवादक की अपेक्षित योग्यता पर भी विचार किया जाएगाजिससे आलोचना साहित्य का अनुवाद ज्ञानविस्तार का प्रभावी म-ाध्यम बन सके।

7.व्युत्पत्ति और परंपरा ,अर्थ :साहित्यिक आलोचना 3

आलोचना शब्द को अंग्रेज़ी Criticism का हिंदी पर्याय माना जाता है। इस शब्द की व्युत्पत्ति 'लुच' धातु से मानी जाती है, जिसका अर्थ है देखना।-'लुच' धातु में 'ल्यूट' प्रत्यय के योग से 'लोचन' शब्द बनता है और उसमें 'आङ' उपसर्ग जुड़ने पर 'आलोचना' शब्द की रचना होती है। इस प्रकार आलोचना का मूल अर्थ हुआ—सम्यक रूप से देखना। साहित्य के क्षेत्र में किसी कृति या रचना को संपूर्णता में देखकर उसका मूल्यांकन करना ही आलोचना कहलाता है। साहित्यिक कृति के सर्वांग अथवा सांगोपांग निरीक्षण और विश्लेषण के लिए आलोचना का सहारा लिया जाता है।

अंग्रेज़ी Criticism के लिए हिंदी में 'आलोचना' के अतिरिक्त 'समालोचना' और 'समीक्षा' शब्द भी प्रयुक्त होते हैं। 'समालोचना' का अर्थ हैसम्यक रूप से देखना -, जानना, पहचानना या परखना। अर्थात साहित्यिक कृति को निष्पक्ष भाव से समझना, उसकी व्याख्या करना तथा उसके गुण दोषों को उद्घाटित करना ही समालोचना है। इसी प्रकार- 'समीक्षा' का अर्थ है—सम दृष्टि से देखना। 'सम ईक्षा' अर्थात सम्यक दर्शन के उपरांत सर्वांग विवेचन करना समीक्षा कहलाता है। इस प्रकार आलोचना, समालोचना और समीक्षा—तीनों शब्द अर्थ की दृष्टि से लगभग समान हैं।

साहित्यिक आलोचना का उद्देश्य किसी कृति को पूर्वाग्रह रहित दृष्टि से देखकर उस पर विचार करना, उसके गुण- दोषों को स्पष्ट करना तथा स्वतंत्र रूप से अपना मत प्रस्तुत करना है। आलोचना लेखक औरपाठक के बीच एक महत्वपूर्ण कड़ी का कार्य करती है। यह साहित्यिक कृति के गुणदोषों का निर्णय कर उसका मूल्यांकन करती है। आलोचना केवल - दर्शन तक सीमित नहीं रहतीबल्कि व्यापक संदर्भ में कृति के मान का बोध कराती है और रसात्मक आनंद प्रदान -दोष करती है। यह कार्य रचना क ी सूक्ष्म अध्ययन, सम्यक विवेचन और निरपेक्ष मूल्यांकन से ही संभव होता है।

आलोचना कविकर्म का विविध दृष्टिकोणों से मूल्यांकन कर उसे पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करती -कर्म या लेखक- है। साथ ही पाठकों की रुचि का परिष्कार करती है और साहित्य की दिशा तथा गतिविधि का निर ्धारण भी करती है। समालोचना पर विचार करते हुए प्रेमघन जी का कथन है—"समालोचना का अर्थ है पक्षपात रहित होकर न्यायपूर्वक किसी पुस्तक के यथार्थ गुण दोष का विवेचन करना।"आलोचना हमारी साहित्यिक रुचि को परिष्कृत करती है और किसी भी कृति के आस्वादन में हमारी सहायता करती है।

किसी साहित्यिक कृति को पढ़ने के पश्चात पाठक के मन में जो प्रभाव उत्पन्न होता हैउसका विश्लेषण करना, कृति की व्याख्या करना और उस पर अपना निर्णय देना ही आलोचना का कार्य है। 'अनुसंधान और आलोचना' में उल्लेख किया गया है कि आलोचना के अंतर्गत तीन प्रमुख कर्तव्य आते हैं—प्रभाव ग्रहण, व्याख्याविश्लेषण और - मूल्यांकन अथवा निर्णय। आलोचना मूलतः उस प्रभाव की अभिव्यक्ति है, जो किसी कलाकृति से भावक के हृदय में उत्पन्न होता है। इसके बाद वह प्रियता या अप्रियता के कारणों का विश्लेषण करती है। सौंदर्यशास्त्र, मनोविज्ञान और समाजशास्त्र के आधार पर यह स्पष्ट किया जाता है कि कोई कलाकृति भावक को क्यों प्रिय या अप्रिय लगती है। अंततः इन सबके आधार पर उसका मूल्यांकन किया जाता है।

आलोचना की परंपरा को समझने के लिए पाश्चात्य और भारतीय विद्वानों की परिभाषाएँ महत्वपूर्ण हैं। इन्साइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका के अनुसार—"Criticism is the art of judging the qualities and values of an aesthetic object whether in literature or the fine arts. It involves the formation and expression of judgment."

आईरिचर्ड्स के अनुसार .ए .—"To set up a critic is to set up as a judgment of value."

वर्सफ़ील्ड ने कहा है—"Criticism is the exercise of judgment in the province of art and literature."

मैथ्यू आर्नल्ड के शब्दों में—"The criticism, real criticism is essentially exercise of this very quality (curiosity and disinterested love of free play of mind). It obeys on instinct prompting to try to know the best that is known and thought in the world."

कार्लाइल के अनुसार—"Literary criticism is nothing and should be nothing but the recital of one's personal adventures with a book."

एडिसन ने आलोचक के कर्तव्य पर बल देते हुए कहा कि समालोचक का धर्म दोष निकालना नहीं, बल्कि सौंदर्य का उद्घाटन करना है। ड्राइडन के मत में आलोचना वह कसौटी हैजिससे किसी रचना का मूल्यांकन किया जाता है।

भारतीय विद्वानों में डॉश्यामसुं .दर दास ने लिखा है—"साहित्य क्षेत्र में ग्रंथ को पढ़कर उसके गुणों और दोषों का विवेचन करना और उसके संबंध में अपना मत प्रकट करना आलोचना कहलाता है।"

आचार्य गुलाब राय के अनुसार आलोचना का उद्देश्य पाठकों को कृति के आस्वादन में सहायता देना और उनकी रुचि का परिमार्जन करना है। डॉतिवारी का मत है कि कला और साहित्य के मूल्यांकन का प्रयास ही समीक्षा या . देवराज ने आलोचना को परिभाषित करते हुए कहा .आलोचना है। डॉ—"आलोचना किसी कलाकृति में निबद्ध अनुभूति के विश्लेषण, व्याख्या और मूल्यांकन का प्रयत्न है।"

मूलतः स्पष्ट है कि आलोचना साहित्य और पाठक के बीच सेतु बनकर साहित्य को समझने और सराहने की दिशा प्रदान करती है।

7.4 साहित्यिक आलोचना के विविध प्रकार

आलोचना साहित्य का एक अनिवार्य अंग है। पाश्चात्य और भारतीय दोनों ही परंपराओं में विद्वानों ने आलोचना को अनेक रूपों और पद्धतियों में विभाजित किया है। इन्हीं विभाजनों को 'आलोचना के प्रकार' के रूप में स्वीकार किया जाता है। पाश्चात्य समालोचना में मुख्यतः दो पद्धतियाँ मानी गई हैं—सैद्धांतिक आलोचना और व्यावहारिक आलोचना। हिंदी आलोचकों ने इन्हीं आधारों पर आलोचना के विविध प्रकार निर्धारित किए हैंजिनमें सैद्धांतिक आलोचना के अतिरिक्त आत्मप्रधान, निर्णयात्मक, व्याख्यात्मक, ऐतिहासिक, तुलनात्मक, मनोवैज्ञानिक, वैज्ञानिक तथा नई समीक्षा या प्रगतिवादी आलोचना प्रमुख हैं। सैद्धांतिक आलोचना को छोड़कर शेष सभी प्रकार व्यावहारिक आलोचना के अंतर्गत

आते हैं। प्रस्तुत विवेचन में पाश्चात्य और भारतीय विद्वानों द्वारा प्रतिपादित भेदों को समेकित रूप में प्रस्तुत करते हुए उनका संक्षिप्त किंतु स्पष्ट परिचय दिया जा रहा है।

.1सैद्धांतिक आलोचना:

सैद्धांतिक आलोचना आलोचना की एक विशिष्ट और आधारभूत पद्धति है। अनेक समान प्रकृति की काव्य अथवा साहित्यिक कृतियों के अध्ययन के पश्चात जब आलोचक कुछ सामान्य नियमों और सिद्धांतों का निर्धारण करता हैतब वह आलोचना सैद्धांतिक कहलाती है। डॉश्यामसुंदर दास के अनुसार . "यही आलोचना का सामान्य और चिरंतन स्वरूप है। यह समालोचना सामान्य सिद्धांतों की स्थापना करता है। यह आलोचना एक प्रकार से आलोचना का शास्त्रीय पक्ष है।यद्यपि हडसन ने सैद्धांतिक आलोचना को स्वतंत्र पद्धति के रूप में स्वीकार नहीं किया", तथापि उसके महत्व को अप्रत्यक्ष रूप से मान्यता दी है। इस आलोचना के दो प्रमुख पक्ष माने जाते हैं—काव्यकृतियों के आधार पर सामान्य सिद्धांतों की स्थापना तथा उन सिद्धांतों के आलोक में कृतियों की समीक्षा। संस्कृत काव्यशास्त्र और लक्षणग्रंथ इसी पद्धति के उदाहरण हैं। इस प्रकार की आलोचना में नियम, कसौटी और मानदंड स्पष्ट होते हैं तथा उचितअनुचित के विवेक को - विशेष महत्त्व दिया जाता है।

.2निर्णयात्मक आलोचना:

जब स्वीकृत और स्थापित सिद्धांतों के आधार पर किसी साहित्यिक कृति का मूल्यांकन किया जाता हैतब वह निर्णयात्मक आलोचना कहलाती है। इसमें आलोचक आलोच्य कृति पर विचार कर स्पष्ट निर्णय प्रस्तुत करता है। इस प्रकार आलोचक की भूमिका न्यायाधीश के समान हो जाती है। यहाँ लेखक की मौलिकता से अधिक इस बात पर ध्यान दिया जाता है कि शास्त्रीय नियमों का पालन हुआ है या नहीं। डॉनगेंद्र का मत है .— "वास्तव में व्याख्या करने के लिएआश्वस्त करने के लिए आलोचना की शास्त्रीय पद्धति का अवलंबन अनिवार्य हैआलोचना में गांभीर्य और - हडसन ने भी निर्णयात्मक आलोचना को महत्त्वपूर्ण मानते हुए कहा है कि आलोचक नैतिक "उत्तरदायित्व इसी से आता है। और साहित्यिक सिद्धांतों को ध्यान में रखकर अपना निर्णय देता है।

.3आत्मप्रधान आलोचना:

आत्मप्रधान आलोचना में आलोचक स्वयं के भावों और अनुभूतियों को प्रधानता देता है। इस पद्धति में आलोचना विषय से अधिक आलोचक की भावनाओं की अभिव्यक्ति बन जाती है और कई बार आलोचना स्वयं एक साहित्यिक रचना का रूप ग्रहण कर लेती है। इसमें बुद्धि की अपेक्षा भाव को अधिक महत्त्व दिया जाता है और स्वच्छंदता का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है। आलोचक अपनी रुचि के अनुरूप कृति का चयन करता है तथा प्रशंसा या निंदा के माध्यम से अपने विचार स्थापित करता है। स्पिनगार के अनुसार "किसी कृति को देखकर जिन भावों और प्रभावों की अनुभूति होती है उन्हें उसी तरह से प्रकट कर देना प्रभाववादी समीक्षक का कार्य होता है।)"To have sensation in the presence of the work of art is to express them. That is the function of a criticism for an impressionist critic.)

.4व्याख्यात्मक आलोचना:

व्याख्यात्मक आलोचना में आलोचक नियमों के कठोर बंधनों से मुक्त होकर साहित्यिक कृति की निष्पक्ष व्याख्या करता है। इसमें लेखक के अनुभव, भावलोक और रचनात्मक उद्देश्य को समझना प्रमुख लक्ष्य होता है। इस पद्धति में आलोचक पूर्वाग्रह, आसक्ति और विरोध से ऊपर उठकर कृति का मूल्यांकन करता है। डॉश्यामसुंदर दास का मत है .— "इसी व्याख्या के बल पर हम किसी कृति के महत्त्व का निर्णय कर सकते है। भावमयी समालोचना के लिए भी प्रस्तुत रचना का स्वरूप ज्ञान वांछनीय है जो कि व्याख्या से ही प्राप्त होता है।"

.5ऐतिहासिक आलोचना:

ऐतिहासिक आलोचना में साहित्यकार पर पड़े सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक और सांस्कृतिक प्रभावों का विश्लेषण किया जाता है। आलोचक लेखक की रचना को उसके युगीन संदर्भों से जोड़कर देखता है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने सूरदास का परिचय देते हुए लिखा—धारा-जयदेव की देववाणी की स्निग्ध पीयूष", जो काल की कठोरता में दब गई थी, अवकाश पाते ही लोकभाषा की सरसता में परिणत होकर मिथिला की अमराइयों में विद्यापति के कोकिलकंठ से प्रकट - (भ्रमरगीतसार) "कुंजों के बीच फैल मुरझाए मनों को सींचने लगी।-हुई और आगे चलकर ब्रज के करील

.6तुलनात्मक आलोचना:

तुलनात्मक आलोचना में दो या अधिक साहित्यकारों, कृतियों या धाराओं की तुलना की जाती है। यह तुलना विषय, भाव, भाषा और शैली आदि विभिन्न स्तरों पर की जाती है। इसमें आलोचक का दायित्व केवल वर्णन और विश्लेषण तक सीमित रहता हैनिर्णय देना उसका उद्देश्य नहीं होता। हिंदी साहित्य में देव और बिहारी की तुलना इसका प्रसिद्ध उदाहरण है, जो कई बार व्यक्तिगत रुचियों के कारण विवादास्पद भी रही है।

.7मनोवैज्ञानिक आलोचना:

मनोवैज्ञानिक आलोचना बीसवीं शताब्दी की देन है। इसमें लेखक के व्यक्तित्व, मानसिक संरचना और जीवनानुभवों के आधार पर कृति का अध्ययन किया जाता है। इस पद्धति से पात्रों के मनोभावों को समझने में सहायता मिलती हैकिंतु कभीकभी कृति की उपेक्षा होने का भी खतरा रहता है।-

.8वैज्ञानिक या गवेषणात्मक आलोचना:

डॉकारण संबंधों के -राजेश्वर प्रसाद चतुर्वेदी के अनुसार जब साहित्य की समीक्षा वैज्ञानिक वर्गीकरण और कार्य . आधार पर की जाती हैतब वह वैज्ञानिक आलःोचना कहलाती है। यह पद्धति प्रायः बौद्धिक होती है और शोध प्रबंधों में व्यापक रूप से प्रयुक्त होती हैयद्यपि इसकी शैली कई बार यांत्रिक प्रतीत होती है।

.9प्रगतिवादी आलोचना:

प्रगतिवादी आलोचना का आधार मार्क्सवादी विचारधारा है। इसमें साहित्य को सामाजिक यथार्थ और वर्ग संघर्ष के संदर्भ में परखा जाता है। श्री अमृतराय के शब्दों में— "मार्क्सवादी आलोचना साहित्य वह समाज शास्त्रीय आलोचना हैजो साहित्य के ऐतिहासिक तथा गतिशील पक्ष के संबंध का उदघाटन करती है।हिंदी में रामविलास शर्मा", प्रकाशचंद्र गुप्त और अमृतराय इसके प्रमुख आलोचक माने जाते हैं।

देखा जा सकता है कि विभिन्न आलोचना पद्धतियाँ साहित्य के बहुआयामी मूल्यांकन में सहायक सिद्ध होती हैं और हिंदी आलोचना की समृद्ध परंपरा को सुदृढ़ बनाती हैं।

7.5 पाश्चात्य एवं भारतीय आलोचनापरंपरा का ऐतिहासिक विकास :

सामान्यतः यह धारणा प्रचलित है कि आलोचना का आरंभ साहित्यसृजन के पश्चात होता हैकिंतु गहन विचार - प्रक्रिया के साथ ही आलोचनात्मक चेतना भी जन्म ले लेती है। अनेक बार -करने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि रचना कलाकार रचना से पूर्व ही अपने मन में किसी निश्चित आदर्श की कल्पना कर लेता है और सृजन के समय उसी के अनुरूप बने रहने का प्रयास करता है। इस दृष्टि से देखा जाए तो आलोचना का प्रारंभ और विकास साहित्यसाथ ही -सृजन के साथ- हुआ है। जब मनुष्य ने प्रकृति के सानिध्य में यह अनुभव किया कि आज का मौसम कल की अपेक्षा अधिक सुंदर हैतभी तुलना और मूल्यांकनकी प्रवृत्ति का जन्म हुआ। यही प्रवृत्ति आलोचना का मूल आधार है। आलोचना का इतिहास अत्यंत प्राचीन है और पाश्चात्य जगत में काव्यशास्त्र की परंपरा अत्यधिक समृद्ध रही है।

पाश्चात्य आलोचना साहित्य को सुविधा की दृष्टि से तीन कालखंडों में विभाजित किया जा सकता है। सर्वप्रथम प्राचीन कालखंड पर विचार करना उचित होगा। इसकी समयसीमा ईसा पूर्व पाँचवीं शती से चौथी शती तक मानी जाती है। -

पाश्चात्य साहित्य का प्रामाणिक उद्गम ग्रीस अथवा यूनान में हुआ। पाश्चात्य आलोचना के आरंभिक रूप के दर्शन होमर के महाकाव्य'इलियड' और 'ओडेसी' में होते हैं। होमर की काव्यप्रतिभा से यह अनुमान लगाया जाता है कि उनसे पूर्व भी - सृजन होता रहा होगा-यूनान में साहित्य, यद्यपि उन कृतियों का आज अभाव है। स्वयं होमर के साहित्यसंबंधी सिद्धांतों का - कोई स्वतंत्र विवरण उपलब्ध नहीं हैकिंतु उनके महाकाव्य तत्कालीन सभ्यता और संस्कृति का सशक्त परिचय कराते हैं। होमर का मत था कि काव्य का प्रमुख उद्देश्य आनंद प्रदान करना है।

होमर के पश्चात हेसियड, पिंडार, गोर्जियास और एरिस्टोफेनीज जैसे विचारकों ने यूनानी आलोचना को आगे बढ़ायापरंतु प्राचीन यूनानी चिंतकों में सुकरात का स्थान विशिष्ट है। उनका काल तक माना जाता .पू.ई 399 से .पू.ई 469 है। यद्यपि सुकरात ने कोई ग्रंथ नहीं लिखा, फिर भी उनके नैतिक, दार्शनिक और सामाजिक विचारों का प्रभाव उनके शिष्यों तथा उत्तरवर्ती विचारकों में स्पष्ट दिखाई देता है। यूनान में नीतिपरक आलोचना का श्रेय सुकरात को ही दिया जाता है।

सुकरात के शिष्य प्लेटो 427)ई.पू.– को पाश्चात्य आलोचना का आदि आचार्य माना जाता है। उन्होंने (.पू.ई 347 'रिपब्लिक', 'फेडरस' और 'आयन' जैसे ग्रंथों में कला और काव्य संबंधी अपने विचार व्यक्त किए। प्लेटो ने अनुकरण सिद्धांत को सुदृढ़ आधार प्रदान किया और साहित्य का मूल्यांकन सत्य तथा नैतिकता के आधार पर किया। उनके अनुसार काव्य का उद्देश्य केवल आनंद प्रदान करना नहींबल्कि मानवदृष्टि को स्पष्ट करते हुए कहा -कल्याण भी है। प्लेटो की काव्य- गया है— "आयन, प्लेटो द्वारा रिपब्लिक, फेड्रस और अन्य परिपक्व संवादों में कविता की भ्रमपूर्ण और (और बयानबाजी) "भावनात्मक शक्ति पर किए गए अधिक विस्तृत हमलों की प्रारंभिक और सरल भूमिका है।

प्लेटो के पश्चात अरस्तू 384)ई.पू.– को यूनानी आलोचना का सर्वश्रेष्ठ प्रतिनिधि माना गया। उनकी (.पू.ई 322 'पोएटिक्स' और 'रेटोरिक्स' काव्यशास्त्र की अत्यंत महत्त्वपूर्ण कृतियाँ हैं। अरस्तू ने कला को केवल यथार्थ की अनुकृति न मानकर उसके संभाव्य और आदर्श रूप का अनुकरण कहा। उन्होंने अनुकरण और विरेचन सिद्धांत की (कैथार्सिस) स्थापना की तथा त्रासदी को मानव भावनाओं के परिष्कार का माध्यम बताया।अरस्तू के बाद लॉजाइनस ने 'पेरिइप्सुस' (अंग्रेज़ी में 'ऑन द सब्लाइम') में उदात्त तत्व के महत्व का विश्लेषण किया। इसके पश्चात साहित्यिक चिंतन का केंद्र यूनान से रोम की ओर स्थानांतरित हुआ और लेटिन आलोचना का विकास हुआ। इस परंपरा में होरेस और क्लिन्टीलियन विशेष उल्लेखनीय हैं। होरेस ने औचित्य पर बल दियाजबकि क्लिन्टीलियन ने शैली को आलोचना का प्रमुख आधार माना।

ईसा की चौथी शती से पंद्रहवीं शती तक का काल पाश्चात्य आलोचना का मध्यकाल कहलाता हैजिसे प्रायः अंधकार युग कहा गया। इस काल में दांते का योगदान अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। उन्होंने 'डिवाइन कामेडी' की रचना कर प्रेम, नैतिक सौंदर्य और विषयवस्तु को काव्य का केंद्र बनाया।सोलहवीं शती से आधुनिक पाश्चात्य आलोचना का आरंभ होता - है। सर फिलिप सिडनी की'दि डिफेंस ऑफ पोएट्री' को आधुनिक आलोचना की आधारशिला माना जाता है। इसके पश्चात बेन जॉनसन, ड्राइडन)'ऐसे ऑफ ड्रामेटिक पोएट्री'), एडीसन, एलेक्जेंडर पोप)'ऐसे ऑन क्रिटिसिज़्म'), सेमुएल जॉनसन, गेटे, क्रोचे)'एस्थेटिक'), आई) रिचर्ड्स .ए .'प्रिंसिपल्स ऑफ लिटरेरी क्रिटिसिज़्म') और टी इलियट .एस .)'ट्रेडिशन एंड इंडिविजुअल टैलेंट') जैसे आलोचकों ने पाश्चात्य आलोचना को समृद्ध किया।

हिंदी आलोचना की परंपरा:

हिंदी आलोचना का वास्तविक और व्यवस्थित विकास आधुनिक काल में हुआपरंतु इसकी जड़ें अत्यंत प्राचीन संस्कृत काव्यशास्त्र में निहित हैं। भारतीय समालोचना ने पाश्चात्य आलोचना से प्रभावित होते हुए भी अपनी स्वतंत्र सत्ता और मौलिक दृष्टि को बनाए रखा है। भारतीय आलोचना परंपरा का आरंभ संस्कृत साहित्य से माना जाता है। भरतमुनि द्वारा रचित 'नाट्यशास्त्र' इस परंपरा का आधार ग्रंथ है। नाट्यशास्त्र में नाट्य के विभिन्न अंगों—अभिनय, भाव, रस, वृति, संगीत आदि—का विस्तृत विवेचन किया गया है। इसमें रस को नाट्य का प्राणतत्त्व माना गया है। रससिद्धांत के माध्यम से - बोध का जो विवेचन मिलता हैवही भारतीय आलोचना की मूल धारा है।-भावात्मक अनुभूति और सौंदर्य

भरतमुनि के पश्चात भामह ने 'काव्यालंकार' की रचना कीजिसमें अलंकार को काव्य का प्रमुख तत्त्व माना गया। आचार्य दण्डी ने 'काव्यादर्श' में गुण, दोष और शैली पर विचार प्रस्तुत किया। आगे चलकर विश्वनाथ ने 'साहित्यदर्पण' में काव्य की परिभाषा और उसके तत्त्वों का समन्वित विवेचन किया। आचार्य जगन्नाथ का 'रसगंगाधर' रससिद्धांत की - पराकाष्ठा माना जात ा है। इन ग्रंथों में काव्य के लक्षण, काव्य के प्रकार, रस, अलंकार, ध्वनि और औचित्य जैसे सिद्धांतों पर गहन चिंतन किया गया है। संस्कृत काव्यशास्त्र ने हिंदी आलोचना के लिए वैचारिक आधारभूमि तैयार की।

भक्तिकाल में आलोचना स्वतंत्र रूप में विकसित नहीं हुई, परंतु इस काल की रचनाओं में आलोचनात्मक दृष्टि के संकेत अवश्य मिलते हैं। दो सौ बावन वैष्णवन की वार्ता और चौरासी वैष्णवन की वार्ता जैसी ग्रंथ परंपराओं में कवियों और संतों के जीवन तथा काव्य का परिचय मिलता है। सूरदास की 'साहित्य लहरी', नन्ददास की 'रस मंजरी' और 'विरह मंजरी', ध्रुवदास की 'रस हीरावली' तथा रहीम की 'बरवै नायिका भेद' में सिद्धांत विवेचन की अपेक्षा भावात्मक और विषयगत विश्लेषण अधिक है। इन रचनाओं का उद्देश्य अपने आराध्य के गुणों और लीलाओं का गायन थाफिर भी इनमें आलोचना की प्रारंभिक झलक मिलती है।

अपनी प्रगति जांचें

प्रश्न .1 आलोचना से आप क्या समझते है ?

प्रश्न .2 हिंदी में आलोचना के लिए किन शब्दों का प्रयोग किया जाता है ?

प्रश्न .3 साहित्यिक आलोचना का अर्थ क्या है ?

प्रश्न .4 डॉ श्यामसुंदर दास ने आलोचना को किस प्रकार परिभाषित किया है ?

प्रश्न .5 पाश्चात्य आलोचना के पद्धति किनते प्रकार है ?

रीतिकाल में संस्कृत काव्यशास्त्रीय परंपरा का व्यवस्थित निर्वाह हुआ। केशवदास की 'कविप्रिया' और 'रसिकप्रिया' से इस धारा का आरंभ माना जाता है। यद्यपि इन ग्रंथों का काव्यशास्त्रीय महत्व सीमित है, फिर भी इन्होंने हिंदी आलोचना को दिशा दी। इस काल में चिंतामणि का 'कविकुलकल्पतरु', देव का 'भावविलास', भिखारीदास का 'रससारांश', पद्माकर का 'जगद्विनोद' आदि ग्रंथों में रस, अलंकार, छंद और नायिकाभेद का विस्तार से वर्णन मिलता है। - किंतु यह आलोचना मुख्यतः परंपरागत और अनुकरणात्मक रही।

हिंदी आलोचना का वास्तविक विकास आधुनिक काल में हुआ। भारतेन्दु युग में पत्रपत्रिकाओं के माध्यम से - समालोचना का आरंभ हुआ। भारतेन्दु हरिश्चंद्र स्वयं'कवि वचन सुधा' और 'हरिश्चंद्र मैगजीन' में आलोचनात्मक लेख प्रकाशित करते थे। इस युग की आलोचना प्रायः पुस्तकपरिचय-, उपदेशात्मक टिप्पणियों और संक्षिप्त समीक्षाओं तक सीमित थी। पंडित बालकृष्ण भट्ट ने 'हिंदी प्रदीप' में साहित्य को सामाजिक चेतना से जोड़ते हुए लिखा— "साहित्य यदि जनसमूह के चित्त का चित्रपट कहा जाए तो संगत है"...

इसके पश्चात द्विवेदी युग का आरंभ हुआ। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने 'सरस्वती' पत्रिका के माध्यम से हिंदी आलोचना को अनुशासन, मर्यादा और नैतिकता प्रदान की। इस युग की आलोचना गुणदोष विवेचन पर आधारित थी। - द्विवेदी जी ने साहित्य में सुधारवादी दृष्टि को प्रतिष्ठित किया और सैद्धांतिकतथा व्याख्यात्मक आलोचना दोनों का विकास किया। इस युग में मिश्रबंधु और पद्मसिंह शर्मा जैसे आलोचक भी सक्रिय रहे।

द्विवेदी युग के बाद शुक्ल युग का आरंभ हुआ। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने हिंदी आलोचना को ऐतिहासिक, समाजशास्त्रीय और वैज्ञानिक दृष्टि प्रदान की। उन्होंने साहित्य को जीवन की व्याख्या माना और आलोचना को ठोस आधार दिया। आचार्य रामचंद्र शुक्ल के बाद हिंदी आलोचना में जिस व्यक्तित्व ने सबसे गहरी छाप छोड़ीवे हजारी प्रसाद द्विवेदी हैं। हिंदी साहित्य में उनका सबसे बड़ा योगदान कबीर की प्रतिष्ठा है। इसी विषय पर उनकी प्रसिद्ध पुस्तक कबीर भी

प्रकाशित हुई। द्विवेदी जी ने कबीर की परंपरा के अनुरूप शास्त्रीय ज्ञान की बजाय लोकजीवन को महत्व दिया और पुस्तकीय ज्ञान के स्थान पर प्रत्यक्ष अनुभव को ज्ञान का आधार माना। उनके इस दृष्टिकोण को नामवर सिंह ने 'दूसरी परंपरा की खोज' कहा। इसके साथ ही उन्होंने हिंदी साहित्य की भूमिका में भक्ति साहित्य के उदय को भारतीय चिंतन परंपरा का स्वाभाविक विकास सिद्ध किया। हिंदी साहित्य को उन्होंने संकीर्ण दायरे में न रखकर सर्वभारतीय संदर्भ में समझा। शुक्ल और द्विवेदी के साथ हिंदी आलोचना का एक क्लासिक दौर पूर्ण होता है।

इसके बाद प्रगतिशील आंदोलन के रूप में हिंदी आलोचना का नया चरण आरंभ हुआ, जिसमें रामविलास शर्मा सबसे प्रमुख आलोचक माने जाते हैं। उनका महत्वपूर्ण योगदान परंपरा का मूल्यांकन है। आधुनिक हिंदी साहित्य को समझने के लिए उन्होंने हिंदी नवजागरण की अवधारणा विकसित की और साहित्य की सामंतवाद एवं साम्राज्यवाद विरोधी भूमिका पर बल दिया। उन्होंने प्राचीन संस्कृत साहित्य का मूल्यांकन भी इसी दृष्टि से किया। भाषा और संस्कृति पर उनके गंभीर विचार उल्लेखनीय हैं। जीवन के अंतिम चरण में उन्होंने ऋग्वेद के अध्ययन के आधार पर आर्यों के बाहरी आगमन के सिद्धांत का खंडन किया।

रामविलास शर्मा के बाद प्रगतिशील आलोचना में नामवर सिंह का महत्वपूर्ण स्थान है। उन्होंने आधुनिक साहित्यिक प्रवृत्तियाँ और छायावाद जैसी कृतियों के माध्यम से साहित्य को सामाजिक संदर्भों में समझा। 'नयी कविता' और 'नयी कहानी' की उन्होंने सार्थक व्याख्या की। हजारी प्रसाद द्विवेदी पर लिखी अपनी पुस्तक में उन्होंने ग्राम्शी के विचारों के सहारे 'दूसरी परंपरा' की अवधारणा को सुदृढ़ किया।मुक्तिबोध ने अपेक्षाकृत कम आलोचना लिखी, किंतु उनकी आलोचनात्मक दृष्टि अत्यंत मौलिक है। कामायनी एक पुनर्विचार और नयी कविता का आत्मसंघर्ष उनके : प्रगतिशील आलोचना की धारा भी रही-महत्त्वपूर्ण आलोचनात्मक लेखन हैं। इसके समानांतर गैर, जिसमें विजयदेव नारायण साही, लक्ष्मी सागर वार्ष्णेय, दिनकर और निर्मल वर्मा शामिल हैंजिन्होंने साहित्य के शाश्वत मूल्यों पर जोर दिया।

बीसवीं सदी के अंतिम दशकों में अस्मिता विमर्श के अंतर्गत दलित, स्त्री, आदिवासी और अल्पसंख्यक साहित्य की आलोचना का उदय हुआ। इस धारा ने साहित्य और समाज के संबंधों को नई दृष्टि से परखते हुए हिंदी आलोचना को समकालीन संदर्भों से समृद्ध किया।

हिंदी आलोचना की परंपरा संस्कृत काव्यशास्त्र से आरंभ होकर आधुनिक वैचारिक और सौंदर्यपरक विमर्श तक निरंतर विकसित होती रही है और आज भी साहित्य को दिशादेने वाली एक सशक्त विधा के रूप में प्रतिष्ठित है।

7.6 आलोचनात्मक लेखन में अनुवाद प्रक्रिया और दृष्टिकोण

हिंदी में अंग्रेजी के आलोचनात्मक साहित्य का पहला उल्लेखनीय अनुवाद जगन्नाथदास रत्नाकर के 'आलोचनादर्श' को माना जा सकता है। यह में नागरी प्रचारिणी सभा से प्रकाशित हुआ। जानकारी के अनुसार यह 1896 अलेक्जेंडर पोपकी प्रसिद्ध कृति Essay on Criticism का हिंदी पद्यात्मक अनुवाद है। चूँकि रत्नाकर स्वयं कवि थेइसलिए उन्होंने इस अनुवाद को कविता के रूप में प्रस्तुत किया। उनकी काव्यसिद्धांतों के अनुरूप यह अनुवाद सहज - प्रतीत होता है। इसके बाद हिंदी आलोचना में महत्वपूर्ण अनुवादों का क्रम रामचंद्र शुक्ल से जुड़ता है। उनके में 1904 सरस्वती पत्रिका में प्रकाशित लेख'साहित्य' और उनके निबंध संग्रह चिंतामणि के तीसरे भाग में संकलित निबंध John Henry Newman's Idea of a University के आधार पर लिखा गया है। इसी संग्रह में शुक्ल के अन्य अनुवाद जैसे 'कल्पना का आनंद' जो जोसेफ एडिसन के ग्यारह निबंधों का हिंदी रूपांतरण हैका प्रकाशन में नागरी प्रचारिणी 1905 पत्रिका में धारावाहिक रूप से हुआ।

प्रगतिशील आंदोलन के साथ हिंदी में आलोचनात्मक साहित्य के अनुवाद का सुनहरा दौर शुरू हुआ। इस समय अधिकतर रचनात्मक साहित्य का अनुवाद हुआविशेषकर पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस द्वारा रूसी साहित्य का योजनाबद्ध

अनुवाद। गोर्की के विस्तृत लेख व्यक्तित्व का विघटन का अनुवाद और रूसी लेखकों की आलोचनात्मक टिप्पणियों का संकलन इसके उदाहरण हैं। हालांकि उपन्यासों के अनुवाद पर अधिक जोर था, फिर भी अक्टूबर में रैल्फ फाक्स की 1957 Novel and the Folk का हिंदी अनुवाद 'उपन्यास और लोकजीवन-' नरोत्तम नागर द्वारा किया गया। इस अनुवाद की भूमिका रामविलास शर्मा ने लिखी। इसके एक वर्ष बादमें 1958, नरोत्तम नागर ने पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस से बेलिंस्की, हर्ज़िन, चर्निशेव्सकी और दोब्रोल्युबोव के लेखों का संग्रह 'दर्शन, साहित्य और आलोचना' के रूप में प्रकाशित किया। ये लेखक रूसी साहित्य और समाज में बौद्धिक आधुनिकता के अग्रणी विचारक माने जाते थे। उनके लेखन में न केवल रूसी साहित्य के प्रश्न थेबल्कि व्यापक साहित्यिक चिंतन की भी झलक मिलती थी।

इसके अतिरिक्त हिंदी में सैद्धांतिक आलोचना के अनुवाद भी हुए। टेरी ईगल्टन की Marxism and Literary Criticism का हिंदी रूपांतरण 'मार्क्सवाद और साहित्यालोचन' (वैभव सिंह(, वर्जीनिया वुल्फ की Room of One's Own का अनुवाद 'अपना कमरा' (गोपाल प्रधानऔर शाद नवेद द्वारा कई आलोचकों के लेखों का अंग्रेजी अनुवाद (इसके उदाहरण हैं।अंग्रेजी से हिंदी में आलोचनात्मक साहित्य के अनुवादों पर नजर डालने से स्पष्ट होता है कि अधिकतर संबंधी आलोचना पर केंद्रित रहे। आधुनिक हिंदी उपन्यास की शुरुआत अं-अनुवाद उपन्यासग्रेजी अनुवादों से हुई थीइसलिए ई फास्टर के .एम .The Aims of the Novel और आयन वाट के The Rise of the Novel के हिंदी रूपांतरण इसका प्रमाण हैं। आलोचनात्मक साहित्य के अन्य प्रकार के अनुवाद वैचारिक लेखन के करीब हैं। उदाहरण के लिए क्रिस्टोफर कैडवेल के विभ्रम और यथार्थ, अंसेंट फिशर के कला की जरूरत, और नामवर सिंह द्वारा संपादित कार्ल मार्क्सकला और साहित्य चिंतन इसके प्रमुख उदाहरण हैं। इसी तरह निर्मला जैन द्वारा संपादित साहित्य का समाजशास्त्रीय : चिंतन ने भी आलोचनात्मक लेखन के अनुवाद में वैचारिक दृष्टिकोण को उजागरकिया।

आलोचनात्मक साहित्य के अनुवाद से जुड़े मुद्दे

.1रचनात्मकता और प्रस्तावना

आलोचनात्मक साहित्य का अनुवाद आधुनिक काल में हुआ और इसकी उत्पत्ति विवेक आधारित आलोचना से गहरा जुड़ा है। अनुवादक जिस रचना को चुनता हैउसका उसका स्वयं के चिंतन और लेखन से संबंध होना आवश्यक है। आलोचनात्मक लेखन केवल वैचारिक नहीं होता, बल्कि कभीकभी उसमें सृजनात्मकता का तत्व भी मौजूद होता है। - उदाहरण के लिए टेरी ईगल्टन का लेखन पूरी तरह वैचारिक हैजबकि वुल्फ ने अपनी उपन्यासिक शैली का प्रयोग आलोचनात्मक लेखन में किया।अनुवादक की प्राथमिकता स्रोत पाठ की निष्ठा और लक्षित पाठक की समझ में संतुलन बनाना होता है। रचनात्मक साहित्य में मूल पाठ की संरचना पर ध्यान देना आवश्यक हैजबकि वैचारिक आलोचना में पाठक की वैचारिक समझ पर अधिक जोर देना पड़ता है।

.2पारिभाषिक शब्दावली और सटीकता:

वैचारिक आलोचना में पारिभाषिक शब्दों का उपयोग आवश्यक होता है। उदाहरण के लिए साहित्यिक और दार्शनिक दृष्टियों से जुड़े शब्दों का अनुवाद करते समय उनके सटीक प्रतिशब्द का चयन चुनौतीपूर्ण होता है। हिंदी में विशिष्ट साहित्यिक अवधारणाओं के लिए कभीकभी उपयुक्त शब्द नहीं मिलतेइसलिए निकटतम अ-र्थ वाले शब्द का उपयोग किया जाता है।सांस्कृतिक संदर्भों का अनुवाद भी कठिन होता है। जैसे मुर्गे की टांग पश्चिमी देशों में कम महत्व की मानी जाती हैजबकि भारत में इसे स्वादिष्ट माना जाता है। इसी तरह धूप के प्रति भावनात्मक प्रतिक्रिया विभिन्न देशों में भिन्न होती है। आलोचनात्मक साहित्य में रचनात्मक लेखन पर विचार होने के कारण अनुवादक को इन सांस्कृतिक अंतरालों को समझना अनिवार्य होता है।

.3दृष्टिकोण और भाषिक विविधता:

आलोचनात्मक साहित्य के अनुवाद का उद्देश्य हिंदी साहित्यिक चिंतन में नया दृष्टिकोण प्रस्तुत करना होता है। स्रोत भाषा के विविध रूपों का अनुवाद करना कठिन है। अंग्रेजी में अमेरिकी और ब्रिटिश अंग्रेजी के अंतर के उदाहरण

मिलते हैं, और उपनिवेशों में विकसित अंग्रेजी की विविधता भी इसमें शामिल होती है। नरोत्तम नागर ने उपन्यास और लोकजीवन में इस भाषिक विविधता पर चर-ृचा की। रैल्फ फाक्स ने विलियम कौबेट के लेखन में वास्तविक नामों के उपयोग को उनके लेखन की विशेषता बताया और पाठ में इसका उदाहरण प्रस्तुत किया।

सभी भाषाएँ अपनी संस्कृति के साथ जुड़ी होती हैं। पेड़पौधे और पक्षियों के स्थानीय नाम अंग्रेजी में भिन्न होते - हैंइसलिए उनका प्रतिशब्द नहीं होता। ऐसे में उच्चारण का उल्लेख करना अनिवार्य हो जाता है। देहात और ग्रामीण जीवन का अनुवाद मुहावरेदार भाषा द्वारा किया जाता है। उदाहरण के लिए कौबेट की भाषा और बीबीसी की भाषा का तुलनात्मक अध्ययन अनुवाद में चुनौती प्रस्तुत करता है।

अंग्रेजी से हिंदी में आलोचनात्मक साहित्य के अनुवाद ने न केवल हिंदी आलोचना की दिशा बदलने में योगदान दियाबल्कि साहित्य के विवेचन में दार्शनिक और वैचारिक दृष्टियों को जोड़ने का कार्य भी किया। अनुवादकों ने स्रोत और लक्ष्य भाषा के बीच संतुलन बनाए रखते हुए सृजनात्मकता और वैचारिकता का मिश्रण प्रस्तुत किया। वैचारिक अनुवाद में पारिभाषिक शब्दावली, सांस्कृतिक संदर्भ और भाषिक विविधता पर विशेष ध्यान देना पड़ा। रचनात्मक साहित्य पर आधारित आलोचनात्मक लेखों के अनुवाद ने हिंदी आलोचना को वैश्विक दृष्टिकोण से जोड़ने का कार्य किया।अंग्रेजी से हिंदी आलोचनात्मक साहित्य का अनुवाद केवल भाषाई परिवर्तन नहीं, बल्कि विचारों, दृष्टिकोण और सांस्कृतिक संदर्भों का अनुवाद भी है। यह प्रक्रिया अनुवादक की वैचारिक समझ, सृजनात्मक क्षमता और भाषिक कौशल पर निर्भर करती है।

7.7 आलोचनात्मक अनुवादरणनीति और पुनः सृजन :

अनुवाद को यदि केवल एक भाषा से दूसरी भाषा में शब्दों के स्थानांतरण के रूप में देखा जाएतो यह उसकी प्रकृति के साथ अन्याय होगा। विशेष रूप से आलोचनात्मक लेखन का अनुवाद एक जटिल बौद्धिक प्रक्रिया हैजिसमें भाषा, विचार, परंपरा और पाठक—चारों के बीच संतुलन साधना पड़ता है। अनुवादक किसी स्थिर नियमपुस्तिका के - सहारे नहीं चलताबल्कि मूल पाठ की प्रकृति, वैचारिक स्तर और लक्षित पाठक की संवेदनशीलता को ध्यान में रखकर अपनी रणनीति निर्मित करता है। यही कारण है कि कोई भी अनुवाद मूल का यांत्रिक उल्था नहीं होता; उसमें अनिवार्य रूप से पुनःसृजन का तत्व शामिल रहता है।

अनुवाद दो भाषाओं के बीच संवाद है और यह संवाद तभी सार्थक होता है जब अनुवादक यह तय कर ले कि उसे मूल पाठ के प्रति कितनी निष्ठा रखनी है और लक्षित पाठक को ध्यान में रखते हुए कहां और कितनी छूट लेनी है। आलोचनात्मक लेखन में यह प्रश्न और भी महत्वपूर्ण हो जाता हैक्योंकि यहां केवल भाव या कथा नहीं, बल्कि तर्क, अवधारणा और वैचारिक संरचना का स्थानांतरण करना होता है।

पाठरणनीति की पहली सीढ़ी :चयन-

अनुवाद की पूरी रणनीति का आधार पाठचयन है। अनुवादक वही पाठ चुनता हैजो उसकी रुचि-, वैचारिक जरूरत और समय की मांग के अनुकूल हो। आलोचना के क्षेत्र में यह चयन और भी विचारपूर्ण होता हैक्योंकि अनुवादित पाठ किसी साहित्यिक या अकादमिक विमर्श को नई भाषा में स्थापित करता है। पाठ का चुनाव करते समय अनुवादक यह भी ध्यान रखता है कि लक्षित पाठक कौन है और वह किस तरह के बौद्धिक संदर्भों से परिचित है।

इस संदर्भ में नामवर सिंह द्वारा आचार्य रामचंद्र शुक्ल के एक अनुवाद का विश्लेषण उल्लेखनीय है। उन्होंने 'चिंतामणि3-' की भूमिका में न्यूमन के एक लेख के हिंदी अनुवाद पर विचार किया है। न्यूमन ऑक्सफोर्ड आंदोलन के प्रमुख नेता थे और उनकी पुस्तक 'द आइडिया ऑफ़ ए यूनिवर्सिटी' भारत की शिक्षा संस्थाओं में लंबे समय तक चर्चित रही। आचार्य शुक्ल ने इसी पुस्तक के एक अंश का हिंदी अनुवाद किया था।न्यूमन का मूल अंग्रेजी अंश इस प्रकार है— "Science has to do with things, literature with thought; science is universal, literature is personal; science uses words merely as symbols, but literature uses language in its full compass] as

including phraseology, idiom, style, composition, omposition, rhythm. rhythm, eloquence and whatever other properties are included in it."

इसका आचार्य शुक्ल द्वारा किया गया हिंदी अनुवाद इस प्रकार है— "विज्ञान पदार्थ या तत्व का बोधक है और साहित्य कल्पना और विचार का, विज्ञान ब्रह्माण्ड व्याप्त है और साहित्य का स्थान किसी एक व्यक्ति में। विज्ञान शब्दों को संकेत की भाँत्ति काम में लाता है, किन्तु साहित्य में भाषा का सबसे प्रशस्त प्रयोग है और अलंकार, मुहाविरा, वाक्यरचना-, माधुर्य और सरसता तथा अन्यान्य लक्षण उसमें सम्मिलित हैं।"

इस तुलना से स्पष्ट होता है कि शुक्ल जी ने 'literature with thought' के साथ 'कल्पना' को जोड़ दिया और 'literature is personal' को 'किसी एक व्यक्ति में स्थित' के अर्थ में ग्रहण किया। नामवर सिंह का अनुमान है कि 'personal' या 'निजी' की इस व्याख्या के पीछे शुक्ल जी की लोकबद्ध दृष्टि काम कर रही थी। यह उदाहरण दिखाता है कि अनुवाद केवल शब्दों का रूपांतरण नहीं, बल्कि विचारों की पुनर्व्याख्या भी है।

वर्तनी और लिप्यंतरणलक्षित पाठक की भूमिका :

हिंदी से अंग्रेजी अनुवाद में वर्तनी और लिप्यंतरण की समस्या एक महत्वपूर्ण रणनीतिक प्रश्न बन जाती है। शाद नवेद के उदाहरण से यह बात स्पष्ट होती है। उन्होंने बताया कि भ्रम से बचने के लिए उन्होंने 'गुप्त', 'शुक्ल' और 'कृष्ण' को क्रमशः Gupt, Shukl और Krishn लिखा। इसके विपरीत 'साहित्य' और 'सौंदर्य' के लिए उन्होंने Sahitya और Saundarya जैसी वर्तनी अपनाई, ताकि अंग्रेजी पाठक गलत उच्चारण न करे।यहां अनुवादक का प्राथमिक दायित्व लक्षित पाठक के प्रति स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। यही दृष्टि उस समय भी सामने आती है, जब किसी पुस्तक के शीर्षक का अनुवाद किया जाता है। जिस हिंदी पुस्तक का शीर्षक था—'हिंदी आलोचना में कैनन निर्माण'—उसका अंग्रेजी अनुवाद शीर्षक रखा गया—'The HINDI CANON: Intellectuals, Processes, Criticism 'यह शीर्षक परिवर्तन मूल के शब्दानुवाद से हटकर हैकिंतु अंग्रेजी पाठक के लिए अधिक आकर्षक और बोधगम्य है। इससे स्पष्ट होता है कि अनुवाद को मूल की प्रतिकृति बनाने के बजाय पुनःसृजन के रूप में देखने से ही उसका उद्देश्य पूरा होता है।

वाक्यप्रवाह और संरचना का पुनर्गठन-

हिंदी और अंग्रेजी की वाक्यरचना में मूलभूत अंतर है। हिंदी के लंबे-, बहुखंडित वाक्य अंग्रेजी में उसी रूप में ग्राह्य नहीं होते। इसलिए अनुवादक को वाक्यप्रवाह को नए सिरे से गढ़ना पड़ता है। उदाहरण के लिए-, हिंदी की यह अभिव्यक्ति—देश की दुर्दशा ने सबकी मुटाई झाड़ दी है" , अक्ल ठिकाने आ गई है, अब वे बातें नहीं जंचतीं, इसी से आज की आवश्यकता का आजकल के लेखकों और ग्रंथकारों को पूरी करनी चाहिएवे ही उसके उत्तरदाता हैं, उन्हें अब अपने साहित्य के शून्य को भरना चाहिए' "| इसका अंग्रेजी अनुवाद इस प्रकार किया गया—"The sad state of the country has reduced everyone's flab. We are back to our senses. Old talk is out of place today. Therefore today's need should be fulfilled by the belletrists and litterateurs today."

यहां अनुवादक ने एक लंबे हिंदी वाक्य को कई छोटे वाक्यों में विभाजित किया और 'सुलेखकों और ग्रंथकारों' के लिए belletrists and litterateurs जैसे समतुल्य शब्दों का चयन किया। यह रणनीति अनुवाद को न केवल पठनीय बनाती हैबल्कि लक्ष्य भाषा की शैली के अनुरूप भी करती है।

सैद्धांतिक आलोचना का अनुवादएक उदाहरण :

आलोचनात्मक लेखन के अनुवाद में वैचारिक जटिलता सबसे बड़ी चुनौती होती है। वैभव सिंह द्वारा टेरी ईगल्टन की पुस्तक Marxism and Literary Criticism का हिंदी अनुवाद—'मार्क्सवाद और साहित्यालोचन'—इस संदर्भ में उल्लेखनीय है। ईगल्टन ने मार्क्सवाद की जटिल अवधारणाओं, विशेषकर 'आधार' और 'अधिरचना', को साहित्यालोचना के संदर्भ में व्याख्यायित किया है।ईगल्टन का मूल अंग्रेजी अंश इस प्रकार है—"Art then is for Marxism part of the 'superstructure' of society-It is (with qualifications we shall make later) part

of a society's ideology& an element in that complex structure of social perception which ensures that the situation in which one social class has power over the others is either seen by most members of the society as 'natural', or not seen at all. To understand literature, then, means understandind the total process of which it is part."

इसका हिंदी अनुवाद इस प्रकार प्रस्तुत किया गया—"मार्क्सवाद के अनुसार कला भी समाज के सुपरस्ट्रक्चर का हिस्सा होती है। यह समाज की विचारधारा का अंग होती है। यह उस जटिल सामाजिक भावबोध का भी हिस्सा होती है जिसका काम यह सुनिश्चित करना है कि जो शासक वर्ग दूसरों पर शक्ति और सत्ता थोपता हैवह शक्तिसत्ता समाज के - अधिकांश लोगों को प्राकृतिक लगे या फिर वह किसी को दिखाई ही न दे। इसलिए साहित्य को समझने का अर्थ है उस पूरी सामाजिक प्रक्रिया को समझना जिसका साहित्य एक अंग होता है।"

यहां अनुवादक ने 'superstructure' का अनुवाद करने के बजाय उसका लिप्यंतरण कियाताकि वैचारिक संदर्भ बना रहे। कोष्ठकों में दी गई लेखक की सफाई हटाकर वाक्यप्रवाह को सरल बनाया गया और एकल उद्धरण चिह्नों को भी - हटा दिया गया। यह सब लक्ष्य पाठक की बोधगम्यता को ध्यान में रखते हुए किया गया है।

महत्वपूर्ण बिंदु

अनुवादक का व्यक्तित्व और रचनात्मकता:

अनुवाद को अक्सर एक यांत्रिक कार्य समझ लिया जाता है, जबकि वास्तव में यह मूल पाठ का एक प्रकार का निर्वचन होता है। इस प्रक्रिया में अनुवादक का व्यक्तित्व, उसकी भाषासंवेदना और उसकी शैली स्वतः प्रकट होती है। - एक सिद्ध अनुवादक अपनी भाषा की छाप को छिपाने का प्रयास नहीं करता, बल्कि उसे अपनी ताकत बनाता है।आलोचनात्मक लेखन का अनुवाद भी अनुवादक से रचनात्मक प्रतिभा की अपेक्षा करता है। उसकी सफलता इसी में निहित होती है कि वह मूल पाठ के तर्क और भाव को लक्ष्य पाठक के मन में प्रभावी ढंग से स्थापित कर सके। इसके लिए आवश्यक छूट लेना न केवल उचित हैबल्कि कई बार अनिवार्य भी हो जाता है। शर्त केवल यह है कि मूल तर्क से विचलन न हो और अनुवाद पाठक के लिए स्पष्ट और बोधगम्य रहे।

आलोचनात्मक लेखन के अनुवाद में कोई निश्चित या सार्वभौमिक नियम नहीं होते। हर अनुवादक पाठ और लक्ष्य भाषा को ध्यान में रखकर अपनी रणनीति गढ़ता है। पाठचयन-, वर्तनी, वाक्यप्रवाह-, लिप्यंतरण और वैचारिक स्पष्टता—ये सभी तत्व मिलकर अनुवाद की गुणवत्ता तय करते हैं। अनुवाद के विविध तरीकों और उपायों को समझने का सबसे प्रभावी तरीका यही है कि हम अच्छे अनुवाद पढ़ें और स्वयं अनुवाद करें। यही अभ्यास अनुवादक को यह सिखाता है कि कब मूल के साथ चिपके रहना है और कब पुनःसृजन की राह अपनानी है |

7.8 आलोचनात्मक अनुवाद की बौद्धिक जिम्मेदारी

अनुवाद केवल भाषिक रूपांतरण का साधन नहीं हैयह एक बौद्धिक, सांस्कृतिक और सृजनात्मक प्रक्रिया है। विशेषकर तब जब विषय साहित्यिक या आलोचनात्मक लेखन होअनुवादक की जिम्मेदारी केवल शब्दों के चयन तक सीमित नहीं रहती। आलोचनात्मक पाठ का अनुवाद किसी भाषा से दूसरी भाषा में केवल शब्दों का परिवर्तन नहीं करताबल्कि वह विचारों, परंपराओं और बौद्धिक विमर्श का हस्तांतरण करता है। यह प्रक्रिया इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि यह विचारों को सीमाओं से बाहर निकालकर नए पाठक वर्ग तक पहुँचाती है और विभिन्न बौद्धिक परंपराओं के बीच

संवाद का मार्ग बनाती है। अनुवादक का कार्य केवल भाषिक दर्पण बनने तक सीमित नहीं हैवह मूल विचार और उसके बौद्धिक संदर्भ का संरक्षक, व्याख्याता और संशोधक भी बनता है।

एक आलोचनात्मक पाठ का अनुवाद करने की प्रक्रिया उसके गहन अध्ययन से शुरू होती है। आलोचनात्मक लेखन सदैव किसी आलोचनात्मक परंपरा का हिस्सा होता है। उदाहरण के लिएहिंदी या गुजराती से अंग्रेज़ी में अनुवादित कोई पाठ केवल भाषा बदलने तक सीमित नहीं हैवह पाठ उस परंपरा के भीतर विकसित तर्कों, दृष्टिकोणों और विमर्श का प्रतिनिधित्व करता है। यही कारण है कि आलोचनात्मक अनुवाद साहित्यिक अनुवाद की तुलना में अधिक चुनौतीपूर्ण और जटिल होता है।

भारतीय आलोचनात्मक परंपरा की जटिलता इसे और चुनौतीपूर्ण बनाती है। भारतीय आलोचनात्मक लेखन हमेशा देशज परंपराओं और पश्चिमी आलोचनात्मक सिद्धांतों के साथ संवाद में रहा है। इन दोनों के बीच संतुलन बनाए रखना अनुवादक के लिए अनिवार्य है। यदि अनुवादक केवल पश्चिमी दृष्टिकोण को प्राथमिकता देता हैतो अनूदित पाठ भारतीय विमर्श का गलत प्रतिनिधि बन जाएगावहीं यदि केवल स्थानीय परंपरा पर जोर दिया जाएतो पाठ वैश्विक बौद्धिक संवाद से कट जाएगा। इसलिए भारतीय भाषाओं के आलोचनात्मक लेखों का अंग्रेज़ी में अनुवाद करते समय दोनों परंपराओं की गहन समझ आवश्यक होती है।

आलोचनात्मक लेखन केवल साहित्यिक सौंदर्य या शैली की चर्चा नहीं करताबल्कि अपने समय के सामाजिक, सांस्कृतिक और बौद्धिक प्रश्नों को भी संबोधित करता है। उदाहरण स्वरूप, गुजराती आलोचक सुरेश जोशी के लेखन में भारतीय आत्मव्यवस्था पर गहन चिंतन दिखाई देता हैजबकि मराठी आलोचक भालचंद्र नेमाडे के -चेतना और समाज- आलोचनात्मक निबंध देशीय इतिहाससंस्कृति और समाज के प्रति संवेदनशील दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हैं। इन लेखों का अंग्रेज़ी में अनुवाद केवल भाषायी रूपांतरण नहीं हैयह विचारों, दृष्टिकोणों और आलोचनात्मक परंपराओं का वैश्विक संवाद बन जाता है।

भारतीय काव्यशास्त्र और साहित्यिक सिद्धांत के अनुवाद भी इसी दृष्टिकोण का उदाहरण हैं। भरत मुनि का नाट्यशास्त्र मंचीय कलाओं का एक व्यापक ग्रंथ हैजिसमें नाटक, संगीत और नृत्य के विभिन्न आयामों का वर्णन और विश्लेषण है। इसका अंग्रेज़ी अनुवाद न केवल पाठ की संज्ञात्मक व्याख्या करता हैबल्कि भारतीय सौंदर्यशास्त्र और रस सिद्धांत को अंतरराष्ट्रीय अकादमिक विमर्श में प्रस्तुत करता है। इसी तरह तमिल का तोलकप्पियम भाषाविज्ञान और - काव्यशास्त्र का अद्वितीय ग्रंथ है। इसके भीतर रूप, छंद और काव्यअनुभूति से जुड़े तर्क इतने सूक्ष्म और जटिल हैं कि - उनका अनुव ाद केवल भाषा बदलने का कार्य नहींबल्कि गहन व्याख्यात्मक प्रक्रिया बन जाता है।

भर्तृहरि का वाक्यपदीय और आनंदवर्धन का ध्वन्यालोक भी इसी श्रेणी में आते हैं। वाक्यपदीय में ध्वनि, स्फोट और अर्थ के आपसी संबंधों की वैज्ञानिक व्याख्या दी गई हैजो बाद में भारतीय अर्थशास्त्र और साहित्यालोचना दोनों में महत्वपूर्ण आधार बनी। ध्वन्यालोक ने काव्य भाषा के ध्वन्यात्मक गुणों को उजागर किया और काव्य के अध्ययन को केवल सजावटी भाषा या रससंग्रह के स्तर से ऊपर उठाकर संरचनात्मक विश्लेषण के स्तर तक ले गया। इन ग्रंथों का - अंग्रेज़ीअनुवाद उनकी जटिलता और सूक्ष्मता को अन्य भाषाई समुदायों तक पहुँचाने का माध्यम बनता है।

आधुनिक आलोचनात्मक लेखन में भी यह चुनौती कायम रहती है। उदाहरण के लिएदेरिदा का ऑफ ग्रैमटोलॉजी गायत्री चक्रवर्ती स्पीवाक ने फ्रेंच से अंग्रेज़ी में अनूदित किया। यह केवल भाषाई अनुवाद नहीं, बल्कि एक बौद्धिक हस्तक्षेप थाजिसने पाठ के विमर्श को वैश्विक पाठक के लिए सुलभ बनाया। इसी तरह मराठी और गुजराती आलोचना में स्थानीय अनुभव और वैश्विक सिद्धांतों का समन्वय दिखाई देता है। भालचंद्र नेमाडे के कोसला उपन्यास पर आधारित आलोचनात्मक लेखन और इसके अंग्रेज़ी अनुवाद ने भारतीय समाज और साहित्यिक इतिहास को समझने का वैश्विक माध्यम प्रस्तुत किया।

एक आलोचनात्मक पाठ कभी भी अकेला नहीं होता। वह हमेशा अन्य पाठों, आलोचनात्मक परंपराओं और विचारधाराओं के संदर्भ में स्थित होता है। अनुवादक को यह समझना आवश्यक है कि किसी पाठ को उसके मूल संदर्भ से पृथक करके पढ़ना और अनुवाद करना पूरे विमर्श को असत्यापित कर सकता है। उदाहरण स्वरूपस्वातंत्र्योत्तर गुजराती आलोचक सुरेश जोशी का लेखन अन्य भारतीय भाषाओं और पश्चिमी आलोचनाओं के साथ संवाद करता है। इसे अनुवाद करते समय अनुवादक को केवल शब्दों का चयन नहींबल्कि इस संवाद और परस्पर संदर्भ का भी ध्यान रखना आवश्यक होता है।

आलोचनात्मक अनुवाद में पारिभाषिक शब्दों का चयन, उनके समयगत अर्थ और समकालीन अर्थ के बीच संतुलन बनाए रखना अनुवादक की जिम्मेदारी बनता है। उदाहरण के लिए, वाक्यपदीय में प्रयुक्त 'स्फोट' और 'ध्वनि' जैसे शब्द केवल शब्दार्थ नहीं रखते; उनके भीतर गहन दार्शनिक और वैज्ञानिक तर्क सम्मिलित हैं। इन्हें लक्ष्य भाषा में अनूदित करते समय अर्थ की गहनता और प्रभावशीलता का ध्यान रखना आवश्यक होता है।

आलोचनात्मक अनुवाद का सबसे बड़ा प्रश्न यही है कि अनुवादक को कितनी स्वतंत्रता दी जाए। यदि अत्यधिक निष्ठा के नाम पर शब्दशः अनुवाद किया जाएतो पाठ जड़ और अकर्मण्य बन जाएगा; वहीं यदि अत्यधिक सृजनात्मक स्वतंत्रता दी जाएतो मूल पाठ का सार खो सकता है। इस संतुलन को बनाए रखना अनुवादक की सबसे बड़ी चुनौती है। सही दृष्टिकोण अपनाने पर आलोचनात्मक अनुवाद न केवल मूल पाठ का प्रतिरूप बनता हैबल्कि वह नए संदर्भों और वैश्विक विमर्श के लिए नई संभावनाएँ भी प्रस्तुत करता है।

भारतीय उदाहरण में, हिंदी, मराठी, गुजराती और तमिल आलोचनात्मक लेखन का अनुवाद विश्वभर के बौद्धिक विमर्श में भारतीय दृष्टिकोण और परंपराओं को पहचान दिलाता है। चाहे वह नाट्यशास्त्र, ध्वन्यालोक, वाक्यपदीय या देरिदा का ऑफ ग्रैमटोलॉजी होइन अनुवादों का उद्देश्य केवल भाषाई परिवर्तन नहीं, बल्कि विचारों और दृष्टिकोणों का अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रसार करना है। यही कारण है कि आलोचनात्मक अनुवाद आधुनिक वैश्विक विमर्श में एक अपरिहार्य बौद्धिक योगदान बन गया है।

संक्षेप मेंआलोचनात्मक अनुवाद भाषा, परंपरा, समय, सांस्कृतिक संदर्भ और सृजनात्मक दृष्टिकोण के बीच संतुलन स्थापित करने की प्रक्रिया है। अनुवादक का लक्ष्य केवल भाषाई रूपांतरण नहींबल्कि विचारों, दृष्टिकोण और परंपराओं का समग्र प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करना होना चाहिए। यह कार्य जटिल, बहुआयामी और गहन चिंतन और सृजनात्मक प्रयोग से भरा होता है।

7. 9 आलोचनात्मक अनुवाद की सीमाएँ

आलोचनात्मक लेखन का अनुवाद किसी साधारण भाषांतरण से कहीं अधिक जटिल और चुनौतीपूर्ण प्रक्रिया है। यह केवल शब्दों को एक भाषा से दूसरी में बदलने का काम नहीं, बल्कि पूरे बौद्धिक विमर्श, परंपरा और संदर्भ को नए पाठक वर्ग तक पहुँचाने का प्रयास है। आलोचनात्मक अनुवाद का यह विशेष स्वरूप कई बार अनुवादक के लिए ऐसा परिदृश्य उत्पन्न करता है जहाँ हर अनुच्छेद, हर वाक्य और हर विशिष्ट पद अनुवाद की रणनीतियों के परीक्षण में फंस सकता है। इस कठिनाई का मूल कारण यह है कि आलोचनात्मक पाठ किसी आलोचनात्मक परंपरा का हिस्सा होते हुए भी उस परंपरा का स्वतंत्र और सजीव प्रतिनिधित्व करता है।

एक आलोचनात्मक पाठ का अनुवाद तभी सार्थक और विश्वसनीय हो सकता है जब अनुवादक उसे उसकी मूल परंपरा के संदर्भ में समझे। यह समझ न केवल उस भाषा और संस्कृति की विशेषताओं से जुड़ी होती हैबल्कि इस बात से भी कि वह पाठ किस बौद्धिक विमर्श का हिस्सा है और किस प्रकार अन्य परंपराओं और सिद्धांतों के साथ संवाद करता है। उदाहरण स्वरूप, किसी हिंदी आलोचनात्मक लेख में यदि पश्चिमी साहित्यिक सिद्धांतों के संदर्भ शामिल हैंतो अनुवादक को केवल शब्दों का अनुवाद नहीं करनाबल्कि उन सिद्धांतों के तुलनीय अर्थ को लक्ष्य भाषा में प्रकट करना भी आवश्यक

होता है। यदि अनुवादक इस पहलू से अनभिज्ञ रह जाता है, तो स्रोत पाठ की बौद्धिक गहराई और विमर्श की स्वायत्तता खो सकती है।

इस संदर्भ में अनुवादक के सामने दो प्रमुख चुनौतीपूर्ण प्रश्न उभरते हैं। पहला, अनुवाद में किन हिस्सों को जस का तस रखा जाए और किन हिस्सों का व्याख्यात्मक अनुवाद किया जाए। दूसरा, स्रोत भाषा में उपस्थित विशिष्ट पद या सिद्धांतों का लक्ष्य भाषा में प्रतिरूप कैसे बनाया जाए। भारतीय काव्यशास्त्र और आलोचनात्मक लेखन में कई ऐसे शब्द और पद हैं जिनके सटीक अंग्रेज़ी समतुल्य उपलब्ध नहीं हैं। उदाहरण के लिएरस, स्फोट या ध्वन्यालोक जैसे सिद्धांत केवल संस्कृत या अन्य भारतीय भाषाओं में पूरी तरह समझे जाते हैं। इन्हें सीधे अंग्रेज़ी में अनूदित करने का प्रयास अक्सर अर्थ की अस्पष्टता और पाठक की समझ में बाधा उत्पन्न करता है।

इस चुनौती का एक व्यवहारिक समाधान यह है कि ऐसे पदों को अनुवाद में इटालिक के माध्यम से रखा जाए और पाद टिप्पणियों या अंत में व्याख्या के रूप में प्रस्तुत किया जाए। इस विधि से न केवल मूल पाठ का सम्मान किया जाता हैबल्कि पाठक को उसकी सटीक व्याख्या तक पहुँचने का मार्ग भी मिलता है। कभी कभी-अनुवादक को यह निर्णय लेना पड़ता है कि कुछ पदों का प्रत्यक्ष अनुवाद संभव नहीं है और उन्हें बिना परिवर्तन के छोड़ना ही उपयुक्त है। इस स्थिति मेंपाद टिप्पणी या संक्षिप्त व्याख्या ही उस पद की अर्थगहनता को बनाए रखने का साधन बन सकती है।

अनुवादक के लिए दूसरी जटिलता यह होती है कि वह विभिन्न परंपराओं और सिद्धांतों के बीच संतुलन बनाए। उदाहरण के लिए, किसी हिंदी आलोचनात्मक पाठ में उल्लिखित सिद्धांत पश्चिमी साहित्यिक सिद्धांतों के अनुरूप हो सकते हैं। यदि अनुवादक इस संदर्भ को ध्यान में नहीं रखता, तो पाठ में निहित बौद्धिक संवाद अधूरा रह जाएगा। इसी तरहअंग्रेज़ी से भारतीय भाषाओं में अनुवाद करते समय भी यह आवश्यक है कि अनुवादक लक्ष्य भाषा की आलोचनात्मक परंपरा और मौजूदा शब्दावली से परिचित हो। यह अभ्यास सुनिश्चित करता है कि अनुवाद केवल भाषाई रूपांतरण न होकर उस भाषा में स्थापित आलोचनात्मक विमर्श का हिस्सा बन सके।

अनुवाद की सीमाओं में सबसे प्रमुख चुनौती यही है कि कोई भी अनुवाद मूल पाठ की संपूर्णता का दावा नहीं कर सकता। चाहे वह साहित्यिक पाठ हो या आलोचनात्मकअनुवाद अंततः व्याख्या का रूप है। प्रत्येक अनुवादक की शैली, उसकी दृष्टि और समझ अनुवाद में अपने प्रभाव छोड़ती है। इसका अर्थ यह है कि आलोचनात्मक अनुवाद कभी भी मूल पाठ का पूर्णतसमतुल्य नहीं बन सकता। इसका उद्देश्य केवल पाठ का बौद्धिक सार और तर्क को समझने योग्य और : ग्रहणशील रूप में प्रस्तुत करना है।

अनुवाद में रणनीतियाँ भिन्न हो सकती हैं। भारतीय भाषाओं से अंग्रेज़ी में अनुवाद में अक्सर यह जरूरी होता है कि अनुवादक भारतीय काव्यशास्त्र, सिद्धांत और संदर्भित पदों की गहन समझ रखे। यह सुनिश्चित करना कि अनूदित पाठ न केवल भाषा में सही हो बल्कि बौद्धिक विमर्श में भी सटीक और विश्वसनीय प्रतीत होअनुवादक की जिम्मेदारी बन जाती है। उदाहरण के लिएनाट्यशास्त्र या ध्वन्यालोक में प्रयुक्त विशिष्ट अवधारणाएँ केवल तभी सही ढंग से प्रस्तुत हो सकती हैं जब उनके मूल संदर्भ, तात्पर्य और शैली का पालन किया जाए।

अंग्रेज़ी से भारतीय भाषाओं में अनुवाद करते समय यह देखना आवश्यक है कि लक्ष्य भाषा में पहले से प्रयुक्त आलोचनात्मक पद और मुहावरे कौन से हैं। यदि कोई पश्चिमी सिद्धांत पहले से लक्ष्य भाषा में उपलब्ध हैतो उसका प्रयोग करना और उसे परिचित संदर्भ के माध्यम से पेश करना अनुवाद की समझदारी होगी। नए शब्दों या व्याकरणिक संरचनाओं का प्रयोग पाठक के लिए बाधक और समझने में कठिन हो सकता है।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि आलोचनात्मक अनुवाद हमेशा सीमाओं और चुनौतियों से भरा होता है। इसका सामना करने के लिए अनुवादक को गहन अध्ययन, सूक्ष्म अवलोकन और बौद्धिक संतुलन बनाए रखना आवश्यक होता है। अनुवादक का प्रयास केवल भाषिक समतुल्य स्थापित करना नहींबल्कि स्रोत पाठ की परंपरा, सिद्धांत और विमर्श की जटिलता को संरक्षित करना और उसे नए संदर्भ में सुलभ बनाना होना चाहिए। अनुवादक की जिम्मेदारी यह सुनिश्चित

करना है कि अनूदित पाठ न केवल लक्ष्य भाषा के पाठकों के लिए समझने योग्य हो, बल्कि मूल पाठ के बौद्धिक तर्क और परंपरा के साथ न्याय भी करे। यही आलोचनात्मक अनुवाद की सीमा और उसकी चुनौती का सार है।

7.10 सारांश

आलोचनात्मक साहित्य विचार, तर्क और वैचारिक दृष्टिकोण पर आधारित साहित्य होता हैजो सर्जनात्मक साहित्य से इस कारण भिन्न है कि इसमें कल्पना या भावुकता से अधिक विश्लेषण, मूल्यांकन और बौद्धिक विवेचना की प्रधानता रहती है। ऐसे साहित्य का अनुवाद केवल भाषापरिवर्तन की प्रक्रिया नहीं-, बल्कि विचारों के रूपांतरण और पुनःप्रस्तुतिकरण का कार्य है। इसलिए आलोचनात्मक साहित्य के अनुवाद में अनुवादक की वैचारिक चेतना, साहित्यिक समझ और सामाजिक दृष्टि अत्यंत महत्त्वपूर्ण होती है।

अनुवाद के लिए किसी आलोचनात्मक पाठ का चयन अनुवादक की रुचि, विषय के प्रति उसकी आस्था और वैचारिक सामंजस्य से जुड़ा होता है। जब अनुवादक विषय से भावनात्मक और बौद्धिक रूप से जुड़ा होता हैतब अनुवाद अधिक सहज, स्पष्ट और प्रामाणिक बनता है। इससे अननुवाद्यता की समस्या भी अपेक्षाकृत कम होती है। आलोचनात्मक लेखन में कई बार विषय प्रधानता के साथ भावात्मक तत्व भी उपस्थित रहते हैंइसलिए अनुवादक में वैचारिक स्पष्टता के साथ संवेदनशीलता का होना भी आवश्यक है।

आलोचनात्मक ग्रंथ जिस भाषा में रचे जाते हैंवे उस भाषा की साहित्यिक परंपरा, आलोचनात्मक विमर्श और सांस्कृतिक संदर्भों का प्रतिनिधित्व करते हैं। ऐसे में अनुवादक को दोनों भाषाओं के साथसाथ उनकी सांस्कृतिक और - बौद्धिक परंपराओं का भीगहन ज्ञान होना चाहिए। अनुवाद के माध्यम से आलोचनात्मक विचार भाषिक और भौगोलिक सीमाओं से बाहर जाकर व्यापक पाठकवर्ग तक पहुँचते हैं, जिससे विचारों का विस्तार और संवाद संभव होता है।

हालाँकि आलोचनात्मक साहित्य का अनुवाद अनेक चुनौतियों से भरा होता है। तकनीकी शब्द, दार्शनिक अवधारणाएँ और परंपराविशेष के पदों का अनुवाद करते समय अनुवादक को विवेकपूर्ण निर्णय लेने पड़ते हैं। गलत या - साधारण अनुवाद से आलोचनात्मक कृति की गंभीरता और प्रामाणिकता प्रभावित हो सकती है। इस प्रकार आलोचनात्मक साहित्य का अनुवाद एक गंभीर, जिम्मेदार और वैचारिक रूप से सजग प्रक्रिया हैजो विचारों के आदान-प्रदान में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

7.11 प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा)

प्रश्न :का उत्तर 1 आलोचना शब्द को अंग्रेज़ी Criticism का हिंदी पर्याय माना जाता है। इस शब्द की व्युत्पत्ति 'लुच' धातु से मानी जाती है, जिसका अर्थ है देखना। -'लुच' धातु में 'ल्यूट' प्रत्यय के योग से 'लोचन' शब्द बनता है और उसमें 'आङ' उपसर्ग जुड़ने पर 'आलोचना' शब्द की रचना होती है। इस प्रकार आलोचना का मूल अर्थ हुआ—सम्यक रूप से देखना। साहित्य के क्षेत्र में किसी कृति या रचना को संपूर्णता में देखकर उसका मूल्यांकन करना ही आलोचना कहलाता है। साहित्यिक कृति के सर्वांग अथवा सांगोपांग निरीक्षण और विश्लेषण के लिए आलोचना का सहारा लिया जाता है।

प्रश्न :का उत्तर 2 अंग्रेज़ी Criticism के लिए हिंदी में 'आलोचना' के अतिरिक्त 'समालोचना' और 'समीक्षा' शब्द भी प्रयुक्त होते हैं।

प्रश्न :का उत्तर 3 साहित्यिक आलोचना का उद्देश्य किसी कृति को पूर्वाग्रह रहित दृष्टि से देखकर उस पर विचार करना, उसके गुणदोषों को स्पष्ट करना तथा स्वतंत्र रूप से अपना मत प्रस्तुत करना है। आलोचना लेखक और पाठक के - बीच एकमहत्वपूर्ण कड़ी का कार्य करती है। यह साहित्यिक कृति के गुणदोषों का निर्णय कर उसका मूल्यांकन -

दर्शन तक सीमित नहीं रहतीबल्कि व्यापक संदर्भ में कृति के मान का बोध कराती -करती है। आलोचना केवल दोष है और रसात्मक आनंद प्रदान करती है।

प्रश्न :का उत्तर 4 भारतीय विद्वानों में डॉश्यामसुंदर दास ने लिखा है .—"साहित्य क्षेत्र में ग्रंथ को पढ़कर उसके गुणों और दोषों का विवेचन करना और उसके संबंध में अपना मत प्रकट करना आलोचना कहलाता है।"

प्रश्न :का उत्तर 5 पाश्चात्य समालोचना में मुख्यतः दो पद्धतियाँ मानी गई हैं—सैद्धांतिक आलोचना और व्यावहारिक आलोचना।

7.12 अधिक जानने के लिए पढ़ें

- Bassnett, Susan and Trivedi, Harish (eds.) ((1999, Post ColonialTranslaiton: Theory and Practice
- Venuti, Lawrence (ed), ((2000, The Translation Studies Reader, London & New York, Routledge.
- Baker, Mona (ed.), :1998Encyclopedia of Translation Studies, London and Newyork, London.
- गोस्वामी, कृष्ण कुमार, अनुवाद विज्ञान की भूमिका, नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन।
- टंडन, पूरनचंद, अनुवाद के विविध आयाम, दिल्ली, तक्षशिला प्रकाशन।
- नगेंद्र (.सं), अनुवाद 1993, सिद्धांत एवं अनुप्रयोग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली।
- श्रीवास्तव, रवींद्रनाथ, एवं गोस्वामी, कृष्ण कुमार (.सं), 1995, अनुवाद सिद्धांत और समस्याएँ, दिल्ली, आलेख प्रकाशन।
- Bathgate, R. H., 1981, Studies of Translation Model I&II: The
- Newmark, Peter, 1981, Approaches to Translation, Oxford, Pergamon Press.

7.13 अभ्यास प्रश्न

-संक्षिप्त प्रश्नों के उत्तर लिखिए (क)

.1 सैद्धांतिक आलोचना से आप क्या समझते है ?

.2 हिंदी के तीन प्रगतिशील आलोचक के नाम लिखिए।

.3 अलोचनादर्श के लेखक का नाम लिखिए।

.4 आलोचना में परिभाषित शब्दों के उपयोग की आवश्यकता क्या है?

.5 आलोचना अनुवाद में पाठ चयन की रणनीति क्या है?

.6 वाक्य प्रवाह ओर संरचना का पुनर्गठन से आप क्या समझते है ?

-निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए (ख)

.1 साहित्यिक आलोचना का अर्थव्युत्पत्ति और परंपरा पर एक आलेख , तैयार कीजिए साहित्यिक आलोचना के .2 | | विविध प्रकारों पर प्रकाश डालिए

.3 पाश्चात्य एवं भारतीय आलोचना परंपरा का ऐतिहासिक विकास के बारे में वर्णन कीजिए आलोचनात्मक लेखन .4 | | में अनुवाद प्रक्रिया और दृष्टिकोण को विविध उदाहरणों के माध्यम से लिखिए

.5 आलोचनात्मक अनुवाद की रणनीति और पुनः सृजन को उदहारण सहित स्पष्ट कीजिए |

| आलोचनात्मक अनुवाद की बौद्धिक जिम्मेदारियों को विविध उदाहरणों के माध्यम से लिखिए .6

.7आलोचनात्मक अनुवाद की सीमाओं पर एक आलेख तैयार कीजिए |

शब्दकोश:

.1 समकक्ष समतुल्य ,एक समान :

.2 सौंदर्यब-ोध ज्ञान-रूप ,सौन्दर्य परख :

.3 विवेचन परिक्षण ,विश्लेषण :

.4 प्राणतत्त्व प्राणशक्ति :

.5 समतुल्य समान होना :

.6 सार्वभौमिक| सभी लोग या सभी जगह ,सम्पूर्ण पृथ्वी पर फैला हुआ :

.7 असत्यापित | जिसकी पुष्टि या प्रमाण न किया गया हो :

इकाई 8 - विश्व साहित्य और तुलनात्मक दृष्टि में अनुवाद

इकाई की रुपरेखा

8.1 उद्देश्य
8. 2 प्रस्तावना
8. 3 विश्व साहित्य और अनुवाद की वैश्विक परंपरा
8.4 अनुवाद वैश्विक साहित्य और तुलनात्मक दृष्टि ,
8.5 भारतीय प्राचीन साहित्य और विश्व साहित्यअनुवाद और तुलनात्मक दृष्टि :
8.6 विश्वव्यापी अनुवाद और तुलनात्मक दृष्टि
8.7 भारतीय कालजयी साहित्य और उसके वैश्विक अनुवाद
8. 8 सारांश
8. 9 प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा)
.810 अधिक जानने के लिए पढ़ें
8.11 अभ्यास प्रश्न

.81 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन से आप:

- विश्व साहित्य और अनुवाद की वैश्विक परंपरा की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे |
- अनुवाद| वैश्विक साहित्य और तुलनात्मक दृष्टि से परिचय प्राप्त करेंगे ,
- भारतीय प्राचीन साहित्य और विश्व साहित्य के अनुवाद और तुलनात्मक दृष्टि को जानेंगे |
- विश्वव्यापी अनुवाद और तुलनात्मक दृष्टि अवगत होंगे |
- भारतीय कालजयी साहित्य और उसके वैश्विक अनुवाद के रूप के बारे में जान सकेंगे |

8.2 प्रस्तावाना

विश्व साहित्य का विचार सबसे पहले गोयथे ने में विलियम जॉस के अनुवाद पढ़ने के बाद प्रस्तुत किया। 1827 उन्होंने यह माना कि अब साहित्य केवल राष्ट्रीय सीमाओं में सीमित नहीं रह सकता। किसी रचना का वास्तविक मूल्य तभी समझा जा सकता है जब उसे विश्व स्तर पर अन्य महत्वपूर्ण रचनाओं के संदर्भ में अध्ययन किया जाए। इस दृष्टि से विश्व साहित्य का अध्ययन अनुवाद के बिना असंभव है। अनुवाद न केवल भाषाई बल्कि सांस्कृतिक आदानप्रदान का माध्यम - आर्थिक उत्पादन और वितरण के दृष्टिकोण से व्याख्यायित -भी है। गोयथे के विचारों के बाद कार्ल मार्क्स ने इसे सामाजिक कियाजबकि रवींद्रनाथ टैगोर और अरविंद जैसे विचारकों ने इसे सांस्कृतिक और मानवतावादी संदर्भ म ंे देखा।

विश्व साहित्य की अवधारणा ने तुलनात्मक साहित्य अध्ययन की नींव रखी। अनुवाद के माध्यम से विभिन्न भाषाओं और संस्कृतियों के बीच संवाद स्थापित होता हैजिससे साहित्य का व्यापक दृष्टिकोण सामने आता है। आधुनिक भारत में तुलनात्मक साहित्य का महत्व विशेष रूप से बढ़ा हैक्योंकि यह भारतीयता के अध्ययन के साथ वैश्विक विमर्श को जोड़ता है। स्त्रीविमर्श-, दलित विमर्श और मानवाधिकार जैसे विषय अब तुलनात्मक साहित्य के अध्ययन का हिस्सा बन

गए हैं। आर्थिक और सामाजिक प्रगति ने भारत को उपनिवेशिक अवशेषों से बाहर निकालते हुए उसे विश्व साहित्य के मंच पर सशक्त स्थिति प्रदान की है।

इस इकाई में हम अनुवाद की भूमिका और उसकी सांस्कृतिक व तुलनात्मक महत्वता पर ध्यान देंगेताकि यह स्पष्ट हो सके कि बिना अनुवाद, साहित्यिक अध्ययन कितना संकुचित और सीमित हो जाता है।

8.विश्व साहित्य और अनुवाद की वैश्विक परंपरा 3

विश्व साहित्य से आशय ऐसे साहित्य से है जो विभिन्न देशों और समाजों की सांस्कृतिक, बौद्धिक और कलात्मक विविधताओं का प्रतिनिधित्व करता हो। यह किसी एक राष्ट्र या क्षेत्र तक सीमित नहीं रहताबल्कि पूर्व से पश्चिम, उत्तर से दक्षिण तक दुनिया के साहित्यिक अनुभवों को समेटता है। विश्व साहित्य का इतिहास केवल लेखन का इतिहास नहींबल्कि अनुवाद और सांस्कृतिक आदानप्रदान की प्रक्रिया का भी इतिहास है। निम्नलिखित अंशों में विभिन्न देशों - और कालखंडों के संदर्भ में विश्व साहित्य और अनुवाद की प्रक्रिया को समझाया गया है।

.1गोयथे की विश्व साहित्य की अवधारणा:

मेंगोयथे ने अपने शिष्य पीटर मॉन से वार्तालाप में 1827'विश्व साहित्य' की चर्चा की। गोयथे के निधन के बाद उनके शिष्य ने लेख के माध्यम से इस विचार को सार्वजनिक किया। इस निबंध में गोयथे ने बताया कि अब राष्ट्रीय साहित्य की अवधारणा अप्रासंगिक हो गई है और 'विश्व साहित्य' उसे प्रतिस्थापित कर देगा। गोयथे का विश्व साहित्य केवल पश्चिमी देशों तक सीमित नहीं थाबल्कि इसमें भारत और अन्य पूर्वी देशों के साहित्य को भी शामिल किया गया। जर्मन साहित्य जगत में गोयथे के विचारों को व्यापक समर्थन मिला।

विशेष रूप से मैक्समूलर ने अनुवाद को इस प्रक्रिया का महत्वपूर्ण साधन मानते हुए भारतीय संस्कृत साहित्य के वर्ष पुरानी समृद्ध परंपरा की ओर ध्यान आकृष्ट किया। उन्होंने यह प्रयास किया कि गोयथे के विचारों की पुष्टि उनके 3000 अनुवाद कार्यों और भारतीय साहित्य के जर्मन अनुवादों के माध्यम से हो सके।

.2रूसी साहित्य और उसका वैश्विक अनुवाद

रूसी साहित्य का अंग्रेज़ी में अनुवाद अंग्रेज़ी पाठकों के लिए आँखें खोलने वाला अनुभव साबित हुआ। 1890 के दशक तक जारी रही। इसे उन्नीसव 1930 के दशक में इसकी शुरुआत हुई और यहीं शताब्दी के रूसी अनुवाद का स्वर्ण युग कहा जा सकता है। उस समय तक रूस में अनुवाद मुख्यतः व्यावसायिक उद्देश्य से होता थालेकिन 19वीं शताब्दी में इसे कला का रूप दिया गया।

इतिहासकार निकोलाई करमजिन ने कई पत्रिकाओं में अनुवाद प्रकाशित किए और शैली व सूचना दोनों में सुधार की दिशा में काम किया। उन्होंने ग्रीक, फ्रेंच, लैटिन, जर्मन, अंग्रेज़ी, इटैलियन और कुछ पूर्वी भाषाओं के लेखकों की रचनाओं को अनुवादित किया।

कवि पुश्किन ने भी अनुवाद के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उन्होंने अंग्रेज़ी, फ्रेंच, पुरानी रूसी, लैटिन और जर्मन से अनुवाद किएऔर होमर की ओडिसी तथा ग्रिम बंधुओं की परी कथाओं का अनुवाद भी किया। पुश्किन ने भावानुवाद या मुक्त अनुवाद का समर्थन किया और रूसी अनुवाद की शैली, स्रोत पाठ की आत्मा और चयन की गंभीरता पर जोर दिया।

20वीं शताब्दी में सामाजिक, राजनीतिक, वैज्ञानिक और तकनीकी परिवर्तनों ने गैरसाहित्यिक अनुवाद की मांग - बढ़ा दी। रूस ने अनुवाद प्रशिक्षण केंद्र स्थापित किए और सोवियत संघ को एक महान अनुवाद शक्ति के रूप में जाना गया। इस समय टॉलस्टॉय, दोस्तोवस्की, गोर्की, चेखव, गोगोल, पुश्किन, लरमेनतोव जैसे लेखक विश्व साहित्य में अनुवाद के माध्यम से महत्वपूर्ण स्थान बनाने में सफल रहे। उनकी रचनाएँ सामाजिक यथार्थवाद को दर्शाती हैं और आर्थिक असमानता तथा पूँजीवादी व्यवस्था की कठिनाइयों को साहित्यिक रूप में प्रस्तुत करती हैं।

.3फ्रांस और अनुवाद का विकास:

सोलहवीं शताब्दी में फ्रांस में अनुवाद की प्रक्रिया में तीव्र प्रगति हुई। क्लासिक साहित्य में नवीन रुचि ने मूल पाठ और पुनर्पाठ की आवश्यकता पैदा की। दोलेट)Dolet) ने 'टेंदक्शन' और 'ट्रेडक्ट्योर' जैसे शब्द दिए और में 1540 अनुवाद सिद्धांत का प्रथम निरूपण प्रस्तुत किया। उन्होंने अनुवाद के पांच नियम बताए:

- मूल पाठ के अर्थ की स्पष्ट समझ।
- स्रोत और लक्ष्य दोनों भाषाओं का गहन ज्ञान।
- शब्दशः अनुवाद से बचना।
- सामान्य बोलचाल की भाषा का प्रयोग।
- उपयुक्त टोन का चयन।

सत्रहवीं और अठारहवीं शताब्दी में जर्मन, स्पेनिश, इटैलियन और अंग्रेज़ी से कई रचनाएँ अनूदित हुईजिनमें सर्वेंट्स की डॉन क्यूजोटो, बेकन की एस्सेज़, मैक्याली की डिस्कोर्स, डेंटे की डिवाइन कॉमेडी, मिल्टन की पैराडाइज लॉस्ट, बायरन और कालरिज की रचनाएँ शामिल हैं। बाद में कैमस, देरिदा, सारटरी, फूको, बार्थस, ल्योटार्ड, लंका और बौंद्रीआ जैसे सिद्धांतकारों की रचनाओं का अंग्रेज़ी सहित अन्य भाषाओं में अनुवाद हुआ। फ्रांस इस प्रकार साहित्यिक सिद्धांत का केंद्र बन गया और अनुवाद ने फ्रेंच साहित्य को जीवित रखा ।

अपनी प्रगति जांचें

प्रश्न .1 आधुनिक भारत में तुलनात्मक साहित्य का महत्व क्यों है ?

प्रश्न .2 विश्व साहित्य से आप क्या समझते है ?

प्रश्न .3 गोयथे ने कब विश्व साहित्य की चर्चा की थी ?

प्रश्न .4 अनुवाद के क्षेत्र में कवि पुश्किन ने अपना योगदान किस प्रकार दिया ?

प्रश्न .5 दोलेट ने अनुवाद के क्या नियम बताए थे?

.4जर्मनी का अनुवाद और साहित्य:

जर्मन साहित्यिक भाषा का विकास 16वीं शताब्दी में तेजी से हुआ। जर्मन भाषा के इतिहास में 15वीं और 18वीं 17वीं और 16वीं शताब्दी तक भाषा का प्रयोग और समेकन हुआ। 11वीं से बाइबिल के अनुवाद महत्वपूर्ण रहे। शताब्दी में फ्रेंच का सांस्कृतिक प्रभाव दिखाई दियाऔर जर्मन अनुवादकों ने फ्रेंच माध्यम से ब्रिटिश साहित्य और दर्शन से परिचय प्राप्त किया।धीरेधीरे जर्मन लेखक और अनुवादक फ्रेंच प्रभाव से स्वतंत्र हुए और जर्मन राष्ट्रीय साहित्य को बढ़ावा - दिया। विश्व युद्धों के दौरान अनुवाद गतिविधियाँ प्रभावित हुईलेकिन बाद में गुटरग्रास, बॉल, मार्दिन बेजर, पीटर वीज और इयू जॉनसन जैसे लेखक प्रकट हुए। निकोलस बोर्न, पीटर हांदके और बीधो स्ट्रॉस ने गद्य और काव्य दोनों में योगदान दिया। जर्मनी में नई पीढ़ियों के लेखकों ने व्यक्तिगत अनुभव, राजनीतिक विरोध और जीवन शैली की विविधता को साहित्य में प्रतिबिंबित किया।

.5स्पेन और अनुवाद की परंपरा

स्पेन की सांस्कृतिक विविधता और भाषिक बहुलता ने अनुवाद को बढ़ावा दिया। रोमन विजय, इस्लामी शासन और यहूदी समुदाय के कारण स्पेन बहुसांस्कृतिक क्षेत्र बन गया। में एंतोनियो दी नेब्रिजा ने देशी बोली में प्रथम 1942 व्याकरण कारत्तीलियन प्रकाशित किया। सोलहवीं शताब्दी में फ्रेंच, अंग्रेज़ी और यूरोप की भाषाओं का राजनीतिक प्रभुत्व स्थापित हुआ और स्पेनिश अनुवाद सिद्धांतकार कास्तीलिन को नई प्रतिष्ठा मिली।

के दशक में कास्तीलिन अनुवाद में सक्रिय हुआ। गोंजेलो 1830, तोरंतो, बैलस्टर, अलवारों कनकदैरो और कैमिलो जोस सेला स्पेन के प्रमुख अनूदित लेखक रहे। जोस आरटंगा वाई गैसेट ने राष्ट्रवादी और अंतर्राष्ट्रीय सांस्कृतिक रणनीतियों के दृष्टिकोण से अनुवाद की प्रक्रिया का विश्लेषण किया। के बीच इंडेक्स ट्रांसलेशनम में स्पेन को 86-1847 सर्वाधिक अनूदित देशों में शामिल किया गया।

.6भारतीय अनुवाद परंपरा

भारतीय उपमहाद्वीप में स्वतंत्रता से पूर्व ही अनुवाद का विस्तृत इतिहास रहा। इसमें पाकिस्तान, भारत, बांग्लादेश, नेपाल और श्रीलंका के साहित्यिक योगदान शामिल हैं। यहाँ संस्कृत से लेकर हिंदी, पंजाबी, गुजराती, मराठी, तेलुगु, कन्नड़, मलयालम, बंगाली, नेपाली, तमिल, तिब्बती, सिंहली और उर्दू जैसी भाषाओं में अनुवाद हुआ।

रमेश कृष्ण मूर्ति के अनुसार प्राचीन अनुवाद के अध्ययन में कठिनाई आई क्योंकि अधिकांश ग्रंथ मौखिक परंपरा में प्रचलित थे और कई ग्रंथ जलवायु और मानव हस्तक्षेप के कारण नष्ट हो चुके थे। अधिकांश प्रतियाँ रचना के कई शताब्दियों बाद उपलब्ध हैं। भाषा और भौगोलिक विस्तार ने अनुवाद और स्रोत पाठों के बीच संबंध समझना कठिन किया।

अनुवाद की आवश्यकता व्यापारिक और प्रशासनिक कारणों से उत्पन्न हुई। वेद, महाभारत, रामायण, पुराण, पंचतंत्र, उपनिषद और भागवत पुराण जैसे ग्रंथों का अनुवाद और पुनःलेखन हुआ। मुगल काल में अरबी, फारसी और तुर्की के ग्रंथ भारतीय भाषाओं में और भारतीय ग्रंथ अरबी, फारसी, तुर्की में अनूदित हुए।

यूरोप में भारतीय पाठों के अनुवाद की महत्वपूर्ण पहचान हुई। ईस्ट इंडिया कंपनी के बंगाल गवर्नर जनरल वारेन हेस्टिंग्स ने विद्वानों को न्यायिक ग्रंथ तैयार करने का कार्य सौंपा। सर विलियम जोस ने संस्कृत सीखी और कालिदास के 10 नाटकों का अनुवाद किया, जो बाद में जर्मन, फ्रेंच, स्पेनिश और इटैलियन में प्रसारित हुआ। वर्तमान में भारतीय भाषाओं पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है और अंग्रेज़ी कई बार मध्यस्थ भाषा की भूमिका निभाती है।

.7अन्य देशों का साहित्य

के दशक में लैटिन अमेरिका 1980 और 1970, चीन, फिनलैंड और मिस्र के साहित्यिक अनुवाद वैश्विक स्तर पर हुए। लैटिन अमेरिका से मर्केज़, नेरूदा, पाज और इसाबिला अंलादे; चीन से लू जिनहआ, आ बैंग जैग जियानलियौंग, हान बैंग एन्यी; फिनलैंड से माता तिकानैन, तुआ, फॉरस्ट्रॅम और सातु मार्तिलामिस्र से महफूज और गितानी जैसे लेखक प्रमुख रहे।

इन अनुवादों ने पाठकों को न केवल विभिन्न देशों की संस्कृति और सामाजिक यथार्थ से परिचित कराया, बल्कि वैश्विक साहित्य में नए दृष्टिकोण और अनुभवों को जोड़ने में योगदान दिया।इस प्रकार विश्व साहित्य केवल राष्ट्रीय सीमाओं में बंधा नहीं हैबल्कि यह अनुवाद, सांस्कृतिक आदान प्रदान और वैश्विक संवाद के माध्यम से समृद्ध हुआ है।-अनुवाद साहित्य की सार्वभौमिकता और विविधता का माध्यम बनकर विभिन्न संस्कृतियों को जोड़ने का कार्य करता है।

8.4 अनुवाद वैश्विक साहित्य और तुलनात्मक दृष्टि ,

तुलनात्मक साहित्यजिसे अंग्रेजी में Comparative Literature कहा जाता हैहिंदी में प्रायः 'तुलनात्मक साहित्य' के रूप में अनूदित किया गया है। इस क्षेत्र का मुख्य उद्देश्य केवल विभिन्न भाषाओं में रचित साहित्य का अध्ययन करना नहीं हैबल्कि साहित्य की सार्वभौमिक और स्थानीय अवधारणाओं को समझने तथा उनके बीच संवाद स्थापित करने की क्षमता विकसित करना है। भारतीय भाषाओं में तुलनात्मक साहित्यिक अध्ययन की कोई सुस्पष्ट परंपरा उन्नीसवीं शताब्दी से पहले देखने को नहीं मिलती। सर्वप्रथम रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने 'विश्व साहित्य' की चर्चा करते हुए यह संकेत दिया कि साहित्यिक अध्ययन में तुलनात्मक दृष्टि की आवश्यकता अत्यंत महत्वपूर्ण है। औपनिवेशिक काल मेंजब भारतीय भाषाओं और अंग्रेजी सहित यूरोपीय भाषाओं का साहित्य अध्ययन का प्रमुख क्षेत्र थातुलनात्मक दृष्टि का मतलब आम

तौर पर भारतीय भाषाओं में रचित साहित्य की यूरोपीय साहित्य से तुलना करना था। उदाहरणस्वरूप, शेक्सपीयर की कृतियों की तुलना संस्कृत के कविकुलगुरु कालिदास की रचनाओं से की जाती थी।

इस दृष्टि से यह प्रश्न उठता है कि क्या तुलनात्मक साहित्य केवल विभिन्न भाषाओं में रचित साहित्य का अध्ययन है और तुलना इस अध्ययन का मूल आधार है? प्रोचाहे एक भाषा ":इन्द्रनाथ चौधरी इस पर स्पष्ट रूप से कहते हैं . मेंलिखित साहित्य का अध्ययन हो अथवा एक से अधिक भाषाओं में लिखित तुलनात्मक साहित्य का अध्ययन ही, दोनों ही स्थितियों में अध्ययन का केंद्रीय विषय साहित्य ही है और इसीलिए तुलनात्मक साहित्य को किसी एक भाषा में लिखित साहित्य के अध्ययन से अलग नहीं किया जा सकता।"

इस कथन से यह स्पष्ट होता है कि तुलनात्मक साहित्य का अध्ययन केवल भाषाओं की संख्या से सीमित नहीं हैबल्कि इसकी केंद्रीयता साहित्य ही है। यह अध्ययन न केवल कलात्मक)Aesthetic) दृष्टिकोण को समाहित करता हैबल्कि इसके सामाजिक) सांस्कृतिक-Socio-cultural) आयाम भी हैं। इस दृष्टि से भारतीय संघ जैसे बहुसांस्कृतिक, बहुजातीय और बहुभाषी देश में तुलनात्मक साहित्य अध्ययन का महत्व और भी बढ़ जाता है। आधुनिक राष्ट्रराज्य की - दृष्टि में भारतीय संघ विभिन्न राष्ट्रीयताओं और भाषाओं का संगम है। यद्यपि राष्ट्रीय एकता काफी हद तक प्रकट हो च ुकी हैफिर भी क्षेत्रीय एवं सांस्कृतिक मतभेद समयसमय पर प्रकट होते रहते हैं। ऐसे परिवेश में तुलनात्मक साहित्य की - बहुसांस्कृतिक दृष्टि भारतीयता की अवधारणा के विकास में महत्वपूर्ण योगदान देती है।

प्रोत":इन्द्रनाथ चौधरी के अनुसार तुलनात्मक साहित्य का अर्थ है .ुलनात्मक साहित्य विभिन्न साहित्यों का तुलनात्मक अध्ययन है तथा साहित्य के साथ प्रतीति एवं ज्ञान के दूसरे क्षेत्रों का भी तुलनात्मक अध्ययन हैं। एक और बहुत ही महत्वपूर्ण बात यह कि तुलनात्मक साहित्य कोई स्वायत्त सर्जनात्मक विधा न होकर एक ही भाषा वा विभिन्न भाषाओं में रचित साहित्य के अध्ययन की एक विशेष दृष्टि मात्र है।इस परिभाषा में यह स्पष्ट है कि तुलनात्मक साहित्य किसी " स्वतंत्र विधा की तरह नहीं हैबल्कि यह साहित्य के अध्ययन की दृष्टि और पद्धति है। फ्रांस मेंLiterature शब्द का प्रयोग साहित्यिक अध्ययन के लिए किया जाता हैजबकि भारत में इसका अर्थ सीधे 'साहित्य' है। यह शब्द संस्कृत काव्यशास्त्र से उत्पन्न हुआजिसका मूल अर्थ है 'शब्द और अर्थ का सहभाव-'। यहाँ केवल शब्द और अर्थ का संबंध नहींबल्कि उनकी अविभाज्य एकता का संकेत भी शामिल है। तुलसीदास ने इसे स्पष्ट करते हुए लिखागिरा अरय जलवीचि सम कहियत ": साहित्य में केवल शब्द और अर्थ की समता पर्याप्त नहीं होती"भिन्न न भिन्न; उनकी विशिष्टता ही साहित्यिक सौंदर्य की उत्पत्ति करती है। विभिन्न लेखकों और भाषाओं में यह पैटर्न अलगअलग ढंग से प्रकट होता हैजिससे साहित्य में - विविधता और नवाचार उत्पन्न होता है। इस विशिष्टता और विविधता को समझने के लिए अन्य भाषाओं और संस्कृतियों का ज्ञान आवश्यक है। यही कारण है कि तुलनात्मक दृष्टि का विकास अनिवार्य रूप से बहुभाषीय और बहुसांस्कृतिक संदर्भ में होता है।

अनुवाद इस दृष्टि का सबसे महत्वपूर्ण उपकरण है। अनुवाद के माध्यम से विभिन्न भाषाओं और संस्कृतियों के साहित्य को आपस में जोड़ा जा सकता है। भारत जैसे बहुभाषिक देश में अन्य भारतीय भाषाओं का अध्ययन और अनुवाद की प्रवृत्ति अत्यंत आवश्यक है। इसके बिना भारतीय साहित्य की पूर्णता अधूरी रहती है। वैश्विक स्तर पर हाल के वर्षों में तुलनात्मक साहित्य का विमर्श बहुसांस्कृतिकता और सांस्कृतिक अध्ययन की दृष्टि से हुआ है। गायत्री चक्रवर्ती स्पीवाक ने अपनी पुस्तक Death of a Discipline ((2003में लिखा है":Since 1992, three years after the fall of the Berlin Wall, the discipline of comparative literature has been looking to renovate itself.This presumably in response to the rising tide of multiculturalism and cultural studies."

औपनिवेशिक काल में यूरोपकेंद्रित तुलनात्मक अध्ययन और शीत युद्ध के दौरान क्षेत्रीय अध्ययन तथा - तुलनात्मक अध्ययन केवल साम्राज्यवादी और औपनिवेशिक दृष्टिकोणों का हिस्सा थे। बर्लिन की दीवार के पतन और शीत युद्ध की समाप्ति ने इस दृष्टिकोण का अंत कर दिया। इस बदलते वैश्विक परिदृश्य में तुलनात्मक साहित्य को नई पहचान

और दिशा अपनानी पड़ी। आज यह अध्ययन केवल साहित्य की तुलना तक सीमित नहीं हैबल्कि इसमें नई अस्मिताएँ, लैंगिक अध्ययन, जाति या रंग आधारित विषमताओं के अध्ययन को भी शामिल किया गया है।

वैश्वीकरण के युग में स्थानीय साहित्यिक प्रवृत्तियों और मानवाधिकार से जुड़े अध्ययनों ने तुलनात्मक साहित्य का दायरा और बढ़ा दिया है। भारत में विविध भाषाओं, बोली, रीतिसांस्कृतिक विषमताओं की -रिवाज और सामाजिक- प्रचुरता के कारण तुलनात्मक साहित्य का महत्व और भी बढ़ जाता है। ऐसे वातावरण में अनुवाद केवल भाषाई क्रिया नहीं, बल्कि साहित्यिक संवाद और सांस्कृतिक आदानप्रदान का एक माध्यम बन जाता- है।

प्रोइन्द्रनाथ चौधरी अनुवाद की भूमिका पर भी विशेष बल देते हैं। उनका कहना है कि अनुवाद केवल मूल कृति . का भाषानुवाद नहीं होता। उदाहरणस्वरूप, फिट्ज़राल्ड ने उमर खैयाम की रूबाइयों का अंग्रेजी अनुवाद करते समय कहा":Better alive sparrow than a stuffed eagle."

यह उदाहरण स्पष्ट करता है कि अनुवादक मूल विचार को पुनःसृजन करता हैउसे स्थूल शब्दों में नहीं बदलता। अनुवादक लेखक की भावनाओं और संदेश के प्रति समर्पित होकर, उसे नई भाषा में पुनःस्थापित करता है। यह कार्य अत्यंत सूक्ष्म और कलात्मक होता है। अनुवादक का कार्य टिप्पणीकार के समान हैवह लेखक द्वारा कहे गए अर्थ की : व्याख्या नहीं करता, बल्कि पाठक तक उसे पहुँचाने का कार्य करता है।

भारत में आधुनिक भाषाओं के साहित्य में अनुवाद का इतिहास प्राचीन संस्कृत अनुवादों तक जाता है। मध्यकाल में संस्कृत ग्रंथों का स्थानीय भाषाओं में अनुवाद करते समय अनुवादक दोनों भाषाओं के विशेषज्ञ होते थे। औपनिवेशिक काल में सर विलियम जोन्स और मैक्समूलर जैसे भारतविदों ने संस्कृत से अनुवाद किया, जिससे भारतीय ज्ञान संपदा तक व्यापक पहुँच संभव हुई। आधुनिक भारतीय साहित्य में टैगोर, प्रेमचंद, के मुंशी .एम.और वीखडिकर .एस. ने अनुवादों के माध्यम से राष्ट्रीय मान्यता प्राप्त की। हबीब तनवीर जैसे रंगकर्मी भी संस्कृत नाटकों का स्थानीय भाषाओं में पुनरावलोकन कर उन्हें जनप्रिय बनाने में सफल हुए।

अनुवाद केवल शब्दों का प्रतिरूप नहीं हैयह साहित्यिक विचार और भावनाओं का सृजनात्मक रूपांतरण है। उत्तरसंरचनावादी जॉक देरिदा के अनुसार-, पारंपरिक साहित्यिक दृष्टि में किसी साहित्यिक पाठ को 'निर्वाध' पाठ माना जाता था। लेकिन देरिदा ने इसे चुनौती देते हुए कहा कि पाठक के लिए कोई भी पाठ अर्थ की अनुपस्थिति का अनुभव कराता है। इस दृष्टि से अनुवादक का कार्य भी लेखक के सृजनात्मक स्तर तक पहुँचता है।

अंततःभारतीय परिप्रेक्ष्य में तुलनात्मक साहित्य और अनुवाद केवल भाषाओं के आदानप्रदान का माध्यम - नहींबल्कि साहित्य, संस्कृति और समाज के गहन अध्ययन का मार्ग है। अनुवाद द्वारा हम भारतीय साहित्य को बहुभाषीय और बहुसांस्कृतिक दृष्टि से सशक्त कर सकते हैंऔर विश्व साहित्य के साथ संवाद स्थापित कर सकते हैं। अनुवाद और तुलनात्मक दृष्टि मिलकर साहित्य की सार्वभौमिकता और विविधता को उजागर करते हैंजिससे भारतीय साहित्य और इसकी वैश्विक समझ दोनों को नया जीवन मिलता है।

8.5 भारतीय प्राचीन साहित्य और विश्व साहित्यअनुवाद और तुलनात्मक दृष्टि :

भारतीय प्राचीन साहित्य का वैश्विक स्तर पर अनुवाद का इतिहास न केवल लंबा हैबल्कि यह सांस्कृतिक, बौद्धिक और दार्शनिक आदानप्रदान का भी प्रतीक है। भारतीय वैचारिक और धार्मिक ग्रंथों ने अपने स-मृद्ध दार्शनिक आधार और साहित्यिक सौंदर्य के कारण सदियों से अन्य भाषाओं और संस्कृतियों में आकर्षण पैदा किया। विशेष रूप से बौद्ध साहित्य का अनुवाद प्राचीन काल से ही चीनी और जापानी भाषाओं में होता रहा। ह्वेनसांग और फाह्यान जैसी यात्राओं ने भारतीय ज्ञान और धर्म का प्रभाव एशिया के कई हिस्सों में फैलाने में निर्णायक भूमिका निभाई। इस दृष्टि से देखा जाए तो भारतीय साहित्य केवल एक राष्ट्रीय या स्थानीय उत्पादन नहीं रहाबल्कि यह ऐतिहासिक रूप से वैश्विक बौद्धिक संवाद का हिस्सा रहा है।

भारतीय इतिहास से पता चलता है कि देश विभिन्न देशों के साथ निरंतर व्यापारिक संपर्क में रहा। समुद्री मार्गों और 'सिल्क रोड' के माध्यम से होने वाले व्यापारिक लेनप्रदान भी -साथ ज्ञान और साहित्य का आदान-देन के साथ- प्रदान में योगदान करते रहे।-सक्रिय रूप से हुआ। व्यापारी और विद्वान दोनों ही इस आदानव्यापारिक मार्ग केवल आर्थिक आदानप्रदान तक सीमित नहीं रहेबल्कि वे भारतीय संस्कृति-, विचारधारा और साहित्य के प्रसार के वाहक बने। यही कारण है कि प्राचीन विदेशी साक्ष्य—जैसे यूनानी यात्रियों, इतिहासकारों और चीनी बौद्ध यात्रियों के लेखनके माध्यम से हमें तत्कालीन भारत के साहित्यिक और सांस्कृतिक जीवन के बारे में मूल्यवान जानकारी मिलती है।

ह्वेनसांग और फाह्यान जैसे चीनी बौद्ध यात्रियों ने न केवल धार्मिक दृष्टिकोण से भारत का भ्रमण कियाबल्कि उन्होंने प्रशासन, समाज और साहित्य के बारे में विस्तृत विवरण भी प्रस्तुत किया। मेगस्थनीज और अन्य यूनानी इतिहासकारों के विवरण भी इसी संदर्भ में महत्वपूर्ण हैं। इन लेखनों ने न केवल प्राचीन भारतीय समाज और शासन प्रणाली की जानकारी दीबल्कि वैश्विक दृष्टि में भारतीय साहित्य और विचारधारा की स्थिति का भी संकेत दिया।

भारतीय साहित्य का वैश्विक स्तर पर अनुवाद का सबसे महत्वपूर्ण मोड़ गोयथे के विश्वसाहित्य)Weltliteratur) के विचार से जुड़ा हुआ है। में 1827, अपने जीवन के अंतिम वर्षों में, गोयथे ने अपने (1832-1749) युवा शिष्य पीटर एकरमॉन से कहा कि राष्ट्रीय साहित्य अब अर्थहीन हो गया है और विश्व साहित्य का युग आ गया है। इस विचार ने यह स्पष्ट किया कि साहित्य का महत्व केवल राष्ट्रीय सीमाओं तक सीमित नहीं रह सकताबल्कि इसका मूल्य वैश्विक विमर्श में ही अधिक उचित रूप से मापा जा सकता है। गोयथे का यह दृष्टिकोण भारतीय साहित्य के अंतर्राष्ट्रीय अनुवाद और उसकी वैश्विक मान्यता के लिए मार्ग प्रशस्त करने वाला सिद्ध हुआ।

भारतीय साहित्य के अनुवाद में प्राच्यविदों)Orientalists) और भारतविदों)Indologists) की भूमिका निर्णायक रही। विलियम जोंस ने संस्कृत अध्ययन और भारतीय साहित्य के अंग्रेज़ी अनुवाद के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया। मैक्समूलर ने वेदों और अन्य ग्रंथों के अनुवाद के माध्यम से भारतीय साहित्य को वैश्विक स्तर पर प्रतिष्ठित किया। इस प्रक्रिया में अनुवाद केवल भाषायी रूपांतरण नहीं थायह भारतीय सांस्कृतिक और दार्शनिक विचारों को पश्चिमी बौद्धिक परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत करने का माध्यम भी था।

हालाँकियह प्रक्रिया पूर्णतया निष्पक्ष नहीं थी। उपनिवेशवादी दृष्टिकोण और राजनीतिक स्वार्थ कई बार अनुवाद के पीछे सक्रिय रहे। कई पश्चिमी विद्वानों ने भारतीय साहित्य की व्याख्या अपने हित और यूरोकेन्द्रित दृष्टिकोण के अनुरूप की। इसके बावजूद, यह तथ्य स्पष्ट है कि भारतीय प्राचीन साहित्य, विशेषकर वेद, उपनिषद, महाकाव्य और बौद्ध ग्रंथ, का अनुवाद उसे वैश्विक साहित्यिक संवाद का हिस्सा बनाने में सफल रहा। पिछले तीन शताब्दियों में भारतीय साहित्य विश्व मंच पर चर्चा और विश्लेषण का केंद्र बन चुका है।

तुलनात्मक दृष्टि से देखा जाएतो भारतीय साहित्य का अनुवाद केवल एकतरफा प्रक्रिया नहीं था। पश्चिम में हुए अनुवाद और उनके विश्लेषण ने भारतीय साहित्य को नए सन्दर्भों में समझने का अवसर दिया। उदाहरण के लिएमैक्समूलर का काम संस्कृत व्याकरण और वेदांत की समझ को यूरोप में व्यापक स्तर पर प्रस्तुत करने में महत्वपूर्ण रहालेकिन इसके साथ ही उन्होंने भारतीय धार्मिक और दार्शनिक दृष्टिकोण को यूरोपीय मानकों में ढालने का प्रयास भी किया। दूसरी ओर, आधुनिक भारतीय विद्वानों ने इन अनुवादों की समीक्षा और संशोधन कर तुलनात्मक साहित्य के दृष्टिकोण से भारतीय मूल अर्थ और सांस्कृतिक सन्दर्भ को पुनः स्थापित किया।

अनुवाद केवल भाषायी परिवर्तन नहीं हैयह शक्ति, नियंत्रण और सांस्कृतिक प्रतिनिधित्व का भी माध्यम है। एडवर्ड सईद ने Orientalism में दिखाया कि कैसे पश्चिमी विद्वानों ने प्राच्य विद्या को अपने राजनीतिक और सांस्कृतिक हितों के अनुरूप परिभाषित किया। तेजस्विनी निरंजना)Siting Translation) और गणेश देवी)After Amnesia) ने अनुवाद की राजनीति और इसके सामाजिकसांस्कृतिक प्रभावों पर गहराई से विचार किया। उनके विश्लेषण यह स्पष्ट करते -

ह ैं कि अनुवाद केवल भाषा का रूपांतरण नहीं, बल्कि एक वैचारिक और राजनीतिक प्रक्रिया भी हैजिससे यह तय होता है कि एक साहित्यिक रचना विश्व मंच पर कैसे प्रस्तुत होगी।

विश्व साहित्य के संदर्भ में, भारतीय साहित्य का अनुवाद द्विपक्षीय प्रभाव पैदा करता है। एक ओरयह भारतीय साहित्य को वैश्विक मंच पर प्रस्तुत करता है और तुलनात्मक साहित्य अध्ययन को समृद्ध करता है। दूसरी ओर, कभीकभी - अनुवाद में मूल अर्थ का ह्रास या विकृति भी होती है। इसका परिणाम यह होता है कि वैश्विक पाठक भारतीय साहित्य को कभी असत्य या अधूरी जानकारी के आध-कभी ार पर समझते हैं। इस द्वंद्व ने भारतीय साहित्य को वैश्विक स्तर पर मान्यता दिलाने के साथसाथ इसकी सही व्याख्या की चुनौती भी प्रस्तुत की।-

भारतीय प्राचीन साहित्य का वैश्विक अनुवाद न केवल भाषा और साहित्य का परिवर्तन हैबल्कि यह सांस्कृतिक संवाद, तुलनात्मक अध्ययन और वैश्विक विमर्श का माध्यम भी रहा है। पिछले तीन सौ वर्षों में यह प्रक्रिया भारतीय साहित्य को विश्व साहित्य के केंद्र में स्थापित करने में सफल रही। उपनिवेशवाद की मानसिकता और अनुवाद की राजनीति के बावजूदभारतीय साहित्य वैश्विक बौद्धिक परिदृश्य पर अपनी केंद्रीयता बनाए रखने में सफल रहा। अनुवाद ने इसे राष्ट्रीय सीमाओं से मुक्त किया और विश्वसाहित्य में उसकी उपस्थिति को मजबूती प्रदान की।

इस व्यापक प्रक्रिया में स्पष्ट होता है कि अनुवाद केवल भाषाओं का आदानप्रदान नहीं है। यह ज्ञान-, संस्कृति और विचारों का आदानप्रदा-न हैजिसने भारतीय साहित्य को वैश्विक पहचान दी और उसे तुलनात्मक साहित्य और विश्वसाहित्य में एक महत्वपूर्ण तत्व के रूप में स्थापित किया। भारतीय साहित्य का यह विश्व मंच पर आगमन, पिछले तीन शताब्दियों में हुई अनुवाद और आलोचनाओं का प्रत्यक्ष परिणाम है।

महत्वपूर्ण बिंदु

विश्व साहित्य के परिप्रेक्ष्य में भारतीय अनुवाद परंपरा का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह परंपरा केवल भाषायी रूपांतरण तक सीमित नहीं रही, बल्कि ज्ञान, संस्कृति और विचारों के वैश्विक आदानप्रदान का सशक्त माध्यम बनी। - भारतीय उपमहाद्वीप की बहुभाषिक और बह ुसांस्कृतिक संरचना ने अनुवाद को स्वाभाविक आवश्यकता और रचनात्मक प्रक्रिया के रूप में विकसित किया।

प्राचीन काल में वेद, उपनिषद, रामायण, महाभारत और बौद्धजैन ग्रंथों के अनुवादों ने धार्मिक और दार्शनिक - विचारों को एशिया के अनेक देशों तक पहुँचाया। इन अनुवादों ने भारतीय चिंतन को विश्व साहित्य की धारा से जोड़ा। मध्यकाल में अरबी और फारसी से तथा इन भाषाओं में हुए अनुवादों ने भारत को इस्लामी और मध्य एशियाई साहित्यिक परंपराओं से जोड़ा, जिससे सांस्कृतिक संवाद सुदृढ़ हुआ।

औपनिवेशिक काल में अंग्रेज़ी के माध्यम से भारतीय साहित्य का विश्व मंच पर प्रवेश हुआ। कालिदास, भवभूति और अन्य रचनाकारों के अनुवादों ने यूरोपीय साहित्य और चिंतन को प्रभावित किया। आधुनिक काल में भारतीय भाषाओं के बीच और उनसे विश्व भाषाओं में हो रहे अनुवादों ने भारतीय साहित्य को वैश्विक पाठक प्रदान किए हैं।

इस प्रकार भारतीय अनुवाद परंपरा विश्व साहित्य को समृद्ध करने वाली एक सशक्त कड़ी है, जिसने विविध संस्कृतियों के बीच संवाद और समझ को निरंतर आगे बढ़ाया है।

8.6 विश्वव्यापी अनुवाद और तुलनात्मक दृष्टि

संस्कृत साहित्य भारतीय संस्कृति और वैचारिक परंपरा का प्राचीनतम और मूल्यवान आधार है। न केवल इसकी ऐतिहासिक प्राचीनता इसे एक क्लासिक भाषा के रूप में प्रतिष्ठित करती हैबल्कि इसमें रचित अमूल्य कृतियाँ भी विश्व साहित्य में अपनी विशिष्ट उपस्थिति दर्ज कराती हैं। वैदिक काल से लेकर लौकिक संस्कृत तकइस साहित्य की रचनाएँ न

केवल गहन दार्शनिक और सांस्कृतिक दृष्टि प्रस्तुत करती हैंबल्कि इसमें जीवन की सार्वभौमिक अनुभूतियों, सामाजिक मूल्य और नैतिक आदर्श भी सम्मिलित हैं। यही कारण है कि प्राचीन भारतीय संस्कृति और समाज को समझने के लिए संस्कृत साहित्य का अध्ययन अनिवार्य है।

विश्व साहित्य में संस्कृत रचनाओं की उपस्थिति और उनकी महत्ता का प्रमाण यह है कि बड़ेबड़े विद्वान और - साहित्यकार जैसे मैक्समूलर, गोयथे और रोग्यां रोलाइन तक भारत और उसके साहित्य से गहन प्रभावित हुए। उनके - विचारों और रचनाओं में भारतीय साहित्य के प्रति आकर्षण और प्रशंसा स्पष्ट झलकती है। भास, कालिदास, अश्वघोष, माघ, दंडी, भवभूति और बाणभट्ट जैसी अनेक महान रचनाएँ विश्व साहित्य की श्रेष्ठतम कृतियों के समकक्ष रखी जा सकती हैं। विशेषकर 'रामायण' और 'महाभारत', न केवल भारतीय साहित्य की अमूल्य निधि हैंबल्कि इन्हें विश्व साहित्य की महानतम कृतियों के रूप में स्वीकार किया जाता है।

संस्कृत साहित्य की वैश्विक पहुँच और इसके अनुवाद की प्रक्रिया ने भारतीय साहित्य के प्रचारप्रसार में - महत्वपूर्ण योगदान दिया। अनुवाद केवल भाषाई परिवर्तन नहीं है, बल्कि यह विभिन्न संस्कृतियों के बीच संवाद और पुनःसृजन का माध्यम भी है। इसके माध्यम से न केवल भारतीय महाकाव्यों की कथा विश्व स्तर पर पहुँचीबल्कि उनके माध्यम से भारतीय दर्शन, धर्म, संस्कृति और सामाजिक मूल्यों का भी परिचय हुआ।

.1रामायण के अनुवाद और वैश्विक प्रभाव

'रामायण' के अनुवाद का उद्देश्य केवल भारतीय कथा को अन्य भाषाओं में उपलब्ध कराना नहीं था। 18वीं और 19वीं शताब्दी में इसे पेश करने का एक औपनिवेशिक मंतव्य भी थाजिसमें भारतीय विद्या और संस्कृति को यूरोपीय दृष्टिकोण से समझने और प्रस्तुत करने की योजना शामिल थी। एडवर्ड सईद के Orientalism तथा तेजस्विनी निरंजना के Siting Translation में इस बात पर गहन विचार किया गया है।

विलियम जॉस के अनुवादों का उद्देश्य और उनके पीछे का छिपा एजेंडा तेजस्विनी निरंजना ने स्पष्ट किया है यूरोपीयों द्वारा अनुवाद की आवश्यकता इसलिए थी क्योंकि भारतीय:अपने ही कानून, धर्मशास्त्र और संस्कृति के पर्याप्त व्याख्याकार नहीं थे।

भारतीयों को कानून देने की इच्छा, यानी उनके लिए अपनी ओर से नियम निर्धारित करना।भारतीय संस्कृति को करने और उनके "शुद्ध"behalf पर बोलने की चाह। :संदर्भ)Baker, Mona (Ed.) Translation Studies: Critical Concepts in Linguistics, London and New York, Routledge, 2009, P. (164

एशियाटिक सोसायटी के माध्यम से विलियम केरी, विलियम जॉस और अन्य यूरोपीय विद्वान भारतीय साहित्य और संस्कृति का अध्ययन कर रहे थे। विलियम केरी ने रामायण का अनुवाद करने का निर्णय इसलिए लिया क्योंकि यह कृति लोक में अत्यंत लोकप्रिय थी और पारंपरिक भारतीय परंपराओं से जुड़ी हुई थी। उन्होंने फोर्ट विलियम कॉलेज में संस्कृत और हिंदी पढ़ाईऔर उनके अनुवादों ने भारतीय साहित्य को विश्व स्तर पर पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

रामायण के अनुवाद और रूपांतरण के अनेक उदाहरण हैं। एरामानुजन के अनुसार .के ., रामायण के लगभग संस्करण मौजूद हैंजिनमें विभिन्न भाषाओं और सांस्कृतिक परिवेश के अनुरूप संशोधन और अनुकूलन किए गए। 300 हिंदी में तुलसीदास की रामचरितमानस, बंगला में कृतिवास रामायण, कंबन का तमिल रामायण इसके प्रमुख उदाहरण हैं। रामकथा पर आधारित आधुनिक रचनाएँ भी हैंजैसे सूर्यकांत त्रिपाठी निराला की राम की शक्तिपूजा, मैथिलीशरण गुप्त की साकेतऔर नरेश मेहता की संशय की एक रात।

रामायण के विभिन्न अनुवादों में कथा, पात्र और घटनाएँ समय और स्थान के अनुसार परिवर्तित हुई हैं। जैसे, हनुमान का मुद्रिका खोजने का प्रसंग विभिन्न संस्करणों में भिन्न रूप में दिखाई देता है। प्रमुख अंग्रेजी अनुवादों में चक्रवर्ती राजगोपालाचारी और रमेश चंद्रदत्त के अनुवाद महत्वपूर्ण हैं। फारसी में अकबर के शासनकाल में अनुवाद हुए, जैसे शेख

सैदुल्ला मसीहकृत रामायणने अनुवाद (1977)। हंगेरियन में जोसेफ वेकेरती(1890) और मोहर सिंह (1899) मसीह-ए-9वीं शताब्दी में काव्यात्मक रूप में रामायण प्रस्तुत की। कियाइंडोनेशिया में महाकवि युगीश्वर ने

.2महाभारत के अनुवाद और वैश्विक प्रसार

'महाभारत' भी भारतीय साहित्य की एक अद्वितीय और कालजयी कृति है। वेदव्यास कृत यह महाकाव्य मानव जीवन के व्यावहारिक पहलुओं के निकट है। इसमें आदर्श जीवन और नैतिकता के साथसाथ सामाजिक-, आर्थिक और राजनीतिक विवादों का चित्रण भी है। रामायण की भांति महाभारत के अनुवाद और रूपांतरण भी बहुआयामी हैं।

महाभारत का आकार अत्यधिक बड़ा हैइसलिए अधिकांश अनुवाद संक्षिप्त संस्करणों के रूप में हुए। कृष्ण मोहन गांगुली का अंग्रेजी अनुवाद मूल पाठ के प्रति निष्ठावान है। शिकागो विश्वविद्यालय और न्यूयॉर्क (1896-1883) विश्वविद्यालय प्रेस द्वारा किए जा रहे परियोजनाआधारित अनुवाद महाभारत को अविकल और समग्र रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास हैं। पी) लाल इसे अनुसृजन .Transcreation) कहते हैं।

अनुवादों का औपनिवेशिक संदर्भ भी रामायण के समान है। विलियम केरी ने महाभारत का अंग्रेजी अनुवाद किया। सुप्रसिद्ध अंश भगवद्गीता का अनुवाद चार्ल्स विल्किस ने किया। अन्य महत्वपूर्ण अंग्रेजी अनुवादों में रमेशचंद्र दत्त (1898), रमेश मेनन, विलियम बक, आरनारायण .के ., चक्रवर्ती राजगोपालाचारी आदि शामिल हैं।

अन्य भाषाओं में महाभारत का अनुवाद भी हुआ। पोलिश में डॉकुडेल्शका ने भगवद्गीता और उपनिषदो .एम .ं का अनुवाद किया। थाई में एननियोग और हरिदत्त शर्मा ने महाभारत का अनुवाद प्रस्तुत किया। भारतीय भाषाओं में .आर. इसे पुनःसृजन के रूप में देखा जा सकता है। उदाहरण के लिए मराठी में तुकाराम, असमी में शंकर देव, बंगला में महाश्वेता देवी ने कथा आधारित रचनाएँ प्रस्तुत की।

.3कालिदास और अन्य कृतियों के अनुवाद

कालिदास की रचनाएँ भी विश्व साहित्य में पहुँच चुकी हैं। विलियम जॉस ने अभिज्ञानशाकुंतलम् का अनुवाद Sacontala or the Fatal Ring: An Indian Drama ((1789में किया। गेटे ने भी इसके आधार पर कविता रची। विल्सन ने मेघदूत का अंग्रेजी अनुवाद किया। मोनियर विलियम्स और रायडर ने शूद्रक की मृच्छकटिकम् का अनुवाद Genius of the Oriental Theatre में किया।

फ्रेंच में बांग्ला के आधार पर अनुवाद जेसैशे ने किया। हरिदत्त शर्मा ने थाई में अनुवाद प्रस्तुत किया। इन प्रयासों . से कालिदासकी रचनाएँ वैश्विक स्तर पर पहुँच सकीं।

विलियम जॉस ने मनुस्मृति का अनुवाद Code of Gentoo Laws के रूप में किया, जिसमें यूरोपीय दृष्टिकोण का स्पष्ट प्रभाव था। उनका उद्देश्य उपनिवेशवादी प्रशासन के लिए भारतीय कानून और सामाजिक व्यवस्था को यूरोपियन संदर्भ में प्रस्तुत करना था।

संस्कृत साहित्य का अनुवाद केवल भाषाई कार्य नहींबल्कि वैश्विक साहित्य में भारतीय विचार और संस्कृति का प्रवेश है। रामायण, महाभारत और कालिदास जैसी रचनाओं के अनुवाद ने न केवल भारतीय साहित्य को अंतरराष्ट्रीय मान्यता दीबल्कि अन्य संस्कृतियों के साथ संवाद का माध्यम भी बनाया। अनुवाद का औपनिवेशिक और सांस्कृतिक संदर्भ समझना आवश्यक है। विश्व साहित्य और तुलनात्मक दृष्टि से यह स्पष्ट है कि अनुवाद ने भारतीय काव्य, दर्शन और संस्कृति को वैश्विक पहचान दिलाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

संक्षेप में, संस्कृत साहित्य का वैश्विक अनुवाद हमें न केवल भारतीय संस्कृति की समृद्धि और साहित्यिक उत्कर्ष से परिचित कराता हैबल्कि यह दिखाता है कि अनुवाद केवल शब्दों का परिवर्तन नहींबल्कि संस्कृति और अनुभव का अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पुनःसृजन है।

8.7 भारतीय कालजयी साहित्य और उसके वैश्विक अनुवाद

भारतीय साहित्य विश्व साहित्य की परंपरा में न केवल अपनी प्राचीनता और सांस्कृतिक वैभव के कारण महत्वपूर्ण हैबल्कि इसके अनुवादित रूप भी वैश्विक साहित्यिक संवाद में विशेष स्थान रखते हैं। अन्य देशों की कालजयी रचनाओं की तुलना मेंभारतीय साहित्य के विश्वव्यापी अनुवाद की संख्या और विविधता भी अत्यधिक है। इसके अतिरिक्त, केवल मात्रा ही नहींबल्कि गुणवत्ता की दृष्टि से भी अनेक भारतीय रचनाएँ अंतरराष्ट्रीय साहित्य में महत्वपूर्ण योगदान देती हैं। भारतीय साहित्य के अनेक प्रमुख रचनाकार जैसे मवभूति, कल्हण, भास, बाणभट्ट, अश्वघोष, भारवि, माघ, और विशाखदत्त न केवल राष्ट्रीय स्तर परबल्कि वैश्विक साहित्यिक परिदृश्य में भी प्रसिद्ध हैं।

इन रचनाकारों की प्रमुख रचनाओं और उनके अनुवादों पर संक्षिप्त दृष्टि डालना हमारे लिए उपयोगी हैक्योंकि यह हमें उनकी साहित्यिक गहराई और वैश्विक प्रभाव की समझ प्रदान करता है।अमरसागर शब्दकोश या 'अमरकोश' का लैटिन में अनुवाद जीन फ्रांस कोएसिस पोयस)Jean Franscois Cois Pous) द्वारा किया गया। इस अनुवाद ने प्राचीन संस्कृत शब्दावली और उसकी संरचना को पश्चिमी विद्वानों के लिए सुलभ बनाया। इसी प्रकारअश्वघोष की महाकाव्यात्मक रचना 'बुद्धचरित' का अंग्रेजी अनुवाद ई) जॉनस्टन .एच.EH Johnston) ने किया, जिसका प्रकाशन में हुआ। 1937 इस अनुवाद ने बौद्ध धर्म और भारतीय दार्शनिक चिंतन को पश्चिमी पाठकों के लिए एक सहज और सटीक रूप में प्रस्तुत किया।

बाणभट्ट की रचनाएँ भी विश्व साहित्य में अपनी गहरी छाप छोड़ चुकी हैं। उनकी ऐतिहासिक कृति 'हर्षचरित' का अंग्रेजी अनुवाद कॉवेल और थॉमस)Cowell and Thomas) ने कियाजिसे में रॉयल एशियाटिक सोसाइटी 1897, लंदन ने प्रकाशित किया। इसके अलावाबाणभट्ट की साहित्यिक कृति 'कादम्बरी' का अंग्रेजी अनुवाद सी) रिडिंग .एम.C.M. Ridding) द्वारा में किया गयाजो लंदन में ही प्रकाशित हुआ। इन अनुवादों ने प्राचीन भारतीय कथा 1896 साहित्य और साहित्यिक शिल्प को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रस्तुत किया।

नाटककार भास की कृतियों का भी महत्वपूर्ण अनुवाद किया गया। पंजाब विश्वविद्यालय ने Oriential Publication, Oxford University Press, London से नाटकों का अनुवाद प्रकाशित किया। 13 में भास के 1930 इस संग्रह का अनुवाद वुडनर एवं सरूप)Woodner and Sarup) ने किया, जिसका शीर्षक था 'Thirteen Trivandrum Plays attributed to Bhasha'। इस अनुवाद ने भारतीय नाट्यकला और शास्त्रीय मंचीय साहित्य को अंतरराष्ट्रीय मंच पर पहचान दिलाई।

कवि भवभूति की प्रसिद्ध कृति 'उत्तररामचरितम्' का फ्रेंच में अनुवाद दो बार हुआ। पहले रजी) स्ट्रली .G. Stechly) ने में पेरिस से प्रकाशित किया और बाद में 1885N. Stchoupak ने में इसी कृति का दूसरा फ्रेंच 1935 अनुवाद किया। इन अनुवादों ने भारतीय नाटक साहित्य की गहनता और शैलीगत विशिष्टता को फ्रांसीसी पाठकों तक पहुँचाया।

हर्ष की महाकाव्यात्मक रचना 'नैषधचरित' का अंग्रेजी अनुवाद के) हंडगरी .के.KK Handiguri) ने में 1956 पूना से प्रकाशित किया। कवि हर्ष की प्रिय कृति'प्रिय दर्शिका' का संस्कृत से थाई भाषा में अनुवाद हरिदत्त शर्मा ने कियाजिससे यह दक्षिणपूर्व एशियाई पाठकों के लिए सुलभ हुआ।-

कवि हल की रचना 'गाथा सप्तशती' का जर्मन अनुवाद) में वेबर 1870Weber) द्वारा प्रकाशित हुआ। इसी प्रकार, गुणाढ्य की 'ब्रहत कथा' का फ्रांसीसी अनुवाद 'लोकसंग्रह' शीर्षक से लैकोरे)Locore) ने में पेरिस से 1908 प्रकाशित किया। इन अनुवादों ने प्राचीन भारतीय कथा साहित्य की वैश्विक पहुंच और प्रभाव को और अधिक बढ़ाया।

नाटककार विशाखादत्त के प्रसिद्ध नाटक 'मुद्राराक्षस' का अंग्रेजी अनुवाद के) ध्रुव .एच.K.H. Dhruva) ने में पूना से प्रकाशित किया। इसके अलावा 1930, संस्कृत साहित्य के महत्वपूर्ण ग्रंथ 'संस्कृत रत्नकोश' का अंग्रेजी अनुवाद डी) इंगाल्स .एच.एच.DHH Ingalls) ने में प्रकाशित किया। 1965

भारतीय शास्त्रीय कथाओं में विष्णु गुप्त की 'पंचतंत्र' का अंग्रेजी अनुवाद एफ) एडगार्टन .F. Edgerton) ने में न्यूहेवन 1824, अमेरिका से प्रकाशित किया। इसके अतिरिक्त, पंचतंत्र का पोलिश में अनुवाद J. Schese ने किया।

कुछ अन्य महत्वपूर्ण अनुवादों में अभिनवगुप्त की 'तंत्रलोक', पतंजलि के 'योगसूत्र', और वादरायण के 'वेदांत सूत्र' का इतालवी में अनुवाद Enrica Garzilli ने किया। यह दर्शाता है कि भारतीय दार्शनिक और तांत्रिक ग्रंथ भी वैश्विक विद्वानों और पाठकों के लिए सुलभ हुए।

इन उदाहरणों से स्पष्ट होता है कि भारतीय साहित्य का वैश्विक अनुवाद न केवल भाषा और शैली का परिवहन हैबल्कि यह भारतीय सांस्कृतिक, दार्शनिक, ऐतिहासिक और धार्मिक परंपराओं को अंतरराष्ट्रीय पाठकों तक पहुँचाने का एक महत्वपूर्ण माध्यम भी है। यह प्रक्रिया केवल साहित्य का प्रसार नहींबल्कि विश्व साहित्य के साथ एक संवाद और विचारों का आदानप्रदान भी है। अनुवादों के माध्यम से भारतीय साहित्य ने अपने कथ्य-, भाव और शैलीगत विविधता को अंतरराष्ट्रीय पाठक वर्ग के समक्ष प्रस्तुत किया और विश्व साहित्य के बहुआयामी परिदृश्य में अपनी पहचान बनाई।

भारतीय कालजयी साहित्य और उसके वैश्विक अनुवाद न केवल साहित्यिक उपलब्धि हैं, बल्कि सांस्कृतिक संवाद और वैश्विक बौद्धिक आदानप्रदान में भी महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। ये अनुवाद भारतीय स-ाहित्य की विश्वसनीयता, गहराई और कलात्मकता को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर स्थापित करने में सहायक सिद्ध हुए हैं।

8.8 सारांश

अनुवाद की परंपरा प्रारंभ में वस्तुओं और घटनाओं की रिकॉर्डिंग के लिए मिट्टी की तख्तियों तक सीमित थीलेकिन बीसवीं सदी तक अनुवाद को एक गंभीर सामाजिक और सांस्कृतिक अभ्यास के रूप में देखा जाने लगा। इस परिवर्तन ने भाषाई अध्ययन के साथसाथ सांस्कृतिक अध्ययन-, लिंगऔपनिवेशिक शोध के क्षेत्र -जेंडर अध्ययन और उत्तर/ में नए दृष्टिकोणों का मार्ग प्रशस्त किया। इस इकाई में विश्व साहित्य की अवधारणा को समझने काप्रयास किया गया है। गोयथे ने विश्व साहित्य को राष्ट्रीय साहित्य से अधिक व्यापक और महत्वपूर्व मानाक्योंकि राष्ट्रीय साहित्य की सीमाएँ ही विश्व साहित्य की आवश्यकता को जन्म देती हैं।

इकाई में रूसी, फ्रेंच, जर्मन, स्पैनिश और भारतीय साहित्य के अनुवादों की विस्तृत चर्चा की गई है। विशेषकर भारत में औपनिवेशिक और स्वातंत्र्योत्तर काल में हुए अनुवाद कार्यों और उनकी सामाजिकसांस्कृतिक भूमिकाओं पर - ध्यान दिया गया है। अनुवाद की अनुवाद्यता और भाषाई चुनौती पर भी विचार प्रस्तुत किया गया है।

कालजयी भारतीय ग्रंथ जैसे रामायण और महाभारतन केवल साहित्यिक दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं बल्कि भारतीय जीवन और दर्शन को भी प्रतिबिंबित करते हैं। इनकी प्रासंगिकता और समकालिकता उनके जीवनदर्शन में निहित है। - अकबर के समय से ही इनका फारसी में अनुवाद हुआ, और बाद में विभिन्न वैश्विक भाषाओं में अनुवाद किए गए। इसी तरहकालिदास की रचनाएँ मानवीय संवेदना और प्रेम के सार्वकालिक मूल्य को रेखांकित करती हैं और समय एवं स्थान की सीमाओं को पार कर वैश्विक दृष्टिकोण प्रस्तुत करती हैं।

इकाई में रामायण और महाभारत के अनुवादों के प्रयोजन, अनुकूलन और औपनिवेशिक दृष्टिकोण के विश्लेषण के साथसाथ कालिदास और अन्य महत्वपूर्ण ग्रंथों के अंग्रेजी-, फ्रेंच, जर्मन, पोलिश और अन्य भाषाओं में अनुवाद की समीक्षा भी की गई है।यह इकाई भारतीय साहित्य के वैश्विक अनुवाद परंपरा का व्यापक मानचित्र प्रस्तुत करती है और तुलनात्मक साहित्य अध्ययन के लिए ठोस आधार प्रदान करती है।

✓ 8.9 प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा)

प्रश्न :का उत्तर 1 आधुनिक भारत में तुलनात्मक साहित्य का महत्व विशेष रूप से बढ़ा हैक्योंकि यह भारतीयता के अध्ययन के साथ वैश्विक विमर्श को जोड़ता है। स्त्रीविमर्श-, दलित विमर्श और मानवाधिकार जैसे विषय अब तुलनात्मक साहित्य के अध्ययन का हिस्सा बन गए हैं। आर्थिक और सामाजिक प्रगति ने भारत को उपनिवेशिक अवशेषों से बाहर निकालते हुए उसे विश्व साहित्य के मंच पर सशक्त स्थिति प्रदान की है।

प्रश्न :का उत्तर 2 विश्व साहित्य से आशय ऐसे साहित्य से है जो विभिन्न देशों और समाजों की सांस्कृतिक, बौद्धिक और कलात्मक विविधताओं का प्रतिनिधित्व करता हो। यह किसी एक राष्ट्र या क्षेत्र तक सीमित नहीं रहताबल्कि पूर्व से पश्चिम, उत्तर से दक्षिण तक दुनिया के साहित्यिक अनुभवों को समेटता है।

प्रश्न :का उत्तर 3 सन् मेंगोयथे ने अपन 1827ी शिष्य पीटर मॉन से वार्तालाप में 'विश्व साहित्य' की चर्चा की।

प्रश्न :का उत्तर 4 कवि पुश्किन ने भी अनुवाद के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उन्होंने अंग्रेज़ी, फ्रेंच, पुरानी रूसी, लैटिन और जर्मन से अनुवाद किएऔर होमर की ओडिसी तथा ग्रिम बंधुओं की परी कथाओं का अनुवाद भी किया।

प्रश्न :का उत्तर 5 दोलेट ने अनुवाद के पांच नियम बताए:

- मूल पाठ के अर्थ की स्पष्ट समझ।
- स्रोत और लक्ष्य दोनों भाषाओं का गहन ज्ञान।
- शब्दशः अनुवाद से बचना।
- सामान्य बोलचाल की भाषा का प्रयोग।
- उपयुक्त टोन का चयन।

🔍 8.10 अधिक जानने के लिए पढ़ें

- Bassnett, Susan and Trivedi, Harish (eds.) ((1999, Post ColonialTranslaiton: Theory and Practice
- Venuti, Lawrence (ed), ((2000, The Translation Studies Reader, London & New York, Routledge.
- Baker, Mona (ed.), :1998Encyclopedia of Translation Studies, London and Newyork, London.
- गोस्वामी, कृष्ण कुमार, अनुवाद विज्ञान की भूमिका, नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन ।
- टंडन, पूरनचंद, अनुवाद के विविध आयाम, दिल्ली, तक्षशिला प्रकाशन ।
- नगेंद्र (.सं), अनुवाद 1993, सिद्धांत एवं अनुप्रयोग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली ।
- श्रीवास्तव, रवींद्रनाथ, एवं गोस्वामी, कृष्ण कुमार (.सं), 1995, अनुवाद सिद्धांत और समस्याएँ, दिल्ली, आलेख प्रकाशन।
- Bathgate, R. H., 1981, Studies of Translation Model I&II: The
- Newmark, Peter, 1981, Approaches to Translation, Oxford, Pergamon Press.

⑦ 8.11 अभ्यास प्रश्न

-संक्षिप्त प्रश्नों के उत्तर लिखिए (क)

.1 जर्मनी का अनुवाद और साहित्य का विकास किस प्रकार हुआ था?

.2 भरतीय अनुवाद परंपरा का विस्तार किस प्रकार हुआ है ?

.3 तुलनात्मक साहित्य के अध्ययन के क्षेत्र के अन्तगर्त क्या आते है?

.4 प्रोइंद्रनाथ चौधरी ने तु.लनात्मक साहित्य को किस प्रकार परिभाषित किया है ?

.5 रामायण के अनुवाद के वैश्विक प्रभाव की किस प्रकार देखा जा सकता है ?

-निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए(ख)

.1 विश्व साहित्य और अनुवाद की वैश्विक परंपरा को अपने शब्दों में लिखिए |

.2 अनुवादवैश्विक साहित्य औ ,र तुलनात्मक दृष्टि पर एक आलेख प्रस्तुत कीजिए |

.3 भारतीय प्राचीन साहित्य और विश्व साहित्य के अनुवाद और तुलनात्मक दृष्टि को विविध उदाहरणों के माध्यम से स्पष्ट कीजिए |

.4 विश्वव्यापी अनुवाद और तुलनात्मक दृष्टि पर विस्तार से प्रकाश डालिए |

.5 भारतीय कालजयी साहित्य और उसके वैश्विक अनुवाद को विविध उदाहरणों के माध्यम से स्पष्ट कीजिए |

शब्दकोश:

.1 प्रतिबिंबित परछाईं या छवि देखना ,जिसकी परछाईं पड़ती हो :

.2 स्वायत्त जिस पर अपना अधिकार हो ,जिसे स्थानीय स्वशासन का अधिकार प्राप्त हो :

.3 निर्णायक निर्णय करने वाला :

.4 संकुचित सिकुड़ा ,संकीर्ण :

.5 अवधारणा धारणा ,संकल्पना ,विचार :

.6 अप्रासंगिक असंबंधित ,अनुपयुक्त ,असंगत :

*** ***** ***

इकाई 9 - भारतीय साहित्य की अवधारणा और अनुवाद

इकाई की रुपरेखा

9.1 उद्देश्य
9. 2 प्रस्तावना
9. 3 भारतीय साहित्य का स्वरूप एवं अवधारणा
9.4 भारतीय साहित्य का वैचारिक आधार
9.5 भारतीय साहित्य परंपरा में अनुवाद
9.6 सामाजिकभारतीय साहित्य व अनुवाद पर प्रभाव : सांस्कृतिक आन्दोलन-
9.7 भारतीय साहित्य अनुवाद की सृजनात्मक भूमिका :
9.8 सारांश
9. 9 प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा)
9. 10 अधिक जानने के लिए पढ़ें
9. 11 अभ्यास प्रश्न

.91 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन से आप-

- भारतीय साहित्य का स्वरूप एवं अवधारणा के बारे में जानकारी प्राप्त करेंगे |
- भारतीय साहित्य का वैचारिक आधार को जान सकेंगे |
- भारतीय साहित्य परंपरा में अनुवाद की भूमिका के बारे में जानेंगे |
- सामाजिकसांस्कृतिक आन्दोलन का भारतीय साहित्य व अनुवाद पर प्रभाव के बारे में- ज्ञान प्राप्त करेंगे |
- भारतीय साहित्य अनुवाद की सृजनात्मक भूमिका से अवगत होंगे |

9.2 प्रस्तावाना

अनुवाद को केवल भाषापरिवर्तन की प्रक्रिया मानना उसके व्यापक सांस्कृतिक महत्व को सीमित करना होगा। - वस्तुतः अनुवाद मनुष्य की समग्र बौद्धिक और सांस्कृतिकसक्रियता से जुड़ा हुआ कर्म है। भारत जैसे देश में, जहाँ अनेक भाषाएँ और विविध सांस्कृतिक परंपराएँ सहअस्तित्व में हैंअनुवाद की भूमिका और भी अधिक प्रासंगिक हो जाती है। - प्राचीन भारतीय परंपरा में ज्ञान, साहित्य और विचारों के आदानप्रदान में अनुवाद की उपस्थिति इ-स तथ्य को प्रमाणित करती है कि यह प्रक्रिया सदैव साहित्यिक विकास का आधार रही है।

भारतीय साहित्य के स्वरूप को समझने के लिए अनुवाद की भूमिका पर विचार करना अनिवार्य है। जब दो अलग-अलग भाषाई समुदाय आपसी संवाद की ओर बढ़ते हैंतब उनके बीच सांस्कृतिक सामीप्य की अनेक संभावनाएँ उत्पन्न होती हैं। अनुवाद ऐसी ही एक सशक्त माध्यम है। जिन समुदायों की सांस्कृतिक संरचना मूलतः समान होती हैवहाँ भाषांतरण और लिप्यंतरण के माध्यम से विचारों का आदानप्रदान अपेक्षाकृत सहज रूप में संपन्न हो जाता है। भारत में -

अधिकांश भाषिक समाज एक साझासांस्कृतिक आधार से जुड़े हुए हैंइसलिए यहाँ अनुवाद अक्सर सरल और स्वाभाविक प्रक्रिया के रूप में विकसित हुआ है।

भारतीय साहित्य की अवधारणा के निर्माण में अनुवाद ने विभिन्न भाषाओं में सृजित साहित्य को एक व्यापक साहित्यिक चेतना से जोड़ा है। वैश्वीकरण के वर्तमान दौर मेंजब राष्ट्रीय सीमाओं और पहचानों पर नए प्रश्न खड़े हो रहे हैंतब 'भारतीय साहित्य' की संकल्पना विशेष महत्व ग्रहण करती है। ऐतिहासिक दृष्टि से अनुवाद ने न केवल साहित्यिक संवाद को समृद्ध किया, बल्कि राष्ट्रीय चेतना के विकास में भी योगदान दिया। इस प्रकार भारतीय साहित्य और अनुवाद एकदूसरे - | के पूरक रूप में भारतीय सांस्कृतिक अस्मिता को समझने की सशक्त आधारभूमि प्रदान करते हैं

.93 भारतीय साहित्य का स्वरूप एवं अवधारणा

भारतीय साहित्य की अवधारणा को समझना वस्तुतः भारतीय सभ्यता, संस्कृति और राष्ट्रीय चेतना को समझने के समान है। यह साहित्य किसी एक भाषा, एक कालखंड या एक विचारधारा तक सीमित नहीं हैबल्कि यह सहस्राब्दियों से विकसित उस सामूहिक मानस की अभिव्यक्ति हैजिसे हम 'भारतीय मनीषा' कहते हैं। भारतीय साहित्य की व्यापकता, गहराई और बहुलता ही उसकी सबसे बड़ी विशेषता है। इसी कारण इसे परिभाषित करना सरल नहीं रहा है। समयसमय पर - विद्वानों ने भारतीय साहित्य को समझने और परिभाषित करने के विविध प्रयास किए हैंजिनसे इसकी सैद्धांतिक और वैचारिक संरचना स्पष्ट होती है।

डॉ नगेन्द्र ने भारतीय साहित्य को भारतीय मनीषा की अभिव्यक्ति के रूप में .परिभाषित करते हुए इसे भारत के प्रबुद्ध मानस की सामूहिक चेतना से जोड़ा है। उनके अनुसार यह चेतना सहस्राब्दियों से संचित अनुभूतियों, विचारों और जीवनदृष्टियों का सार हैजिससे भारतीय संस्कृति-, राष्ट्रीयता और साहित्य का निर्माण हुआ है। इस परिभाषा में भारतीय साहित्य को केवल रचनाओं का संकलन न मानकर एक जीवंत सांस्कृतिक चेतना के रूप में देखा गया है। यद्यपि यह दृष्टि अत्यंत व्यापक हैफिर भी आलोचकों का मत है कि इसमें 'अतिव्याप्ति दोष' दिखाई देता हैक्योंकि संपूर्ण भारतीय मनीषा को सीधेसीधे साहित्य के समानार्थी रूप में ग्-रहण कर लिया गया है।

इसके विपरीतपाश्चात्य विद्वान विन्टरनित्स ने भारतीय साहित्य को भौगोलिक और ऐतिहासिक आधार पर परिभाषित करने का प्रयास किया। उनके अनुसार भारतीय साहित्य तीन हजार वर्षों से अधिक समय तक भाषा के माध्यम से अभिव्यक्त मानसिक क्रियाकलापों का लिखित इतिहास है। उन्होंने भारत के उस विशाल भूभाग को रेखांकित कियाजो - हिमालय से लेकर समुद्र तक फैला हुआ है और जहां विविध जलवायु, संस्कृतियाँ और जीवन-शैलियाँ विद्यमान हैं। विषय-वस्तु के स्तर पर भी विन्टरनित्स भारतीय साहित्य में धार्मिक, लौकिक, काव्यात्मक और गद्यात्मक सभी प्रकार की रचनाओं को सम्मिलित करते हैं—जैसे महाकाव्य, गीतिकाव्य, नाटक, नीतिकाव्य-, कथासाहित्य और शास्त्रीय ग्रंथ। इस - रूपों का समावेश दिखाई देता है।-प्रकार उनकी परिभाषा में भारत की समस्त भाषाओं और रचना

इसी क्रम में 'भारतीय वाङ्मय की भूमिका' में दी गई परिभाषा भारतीय साहित्य की भाषिक और सांस्कृतिक विविधता को विशेष रूप से रेखांकित करती है। इसमें बताया गया है कि भारत अनेक भाषाओं का देश है—उत्तर में पंजाबी, हिंदी और उर्दू; पूर्व में बंगला, उड़िया और असमिया; पश्चिम और मध्य में मराठी तथा गुजरातीऔर दक्षिण में तमिल, तेलुगु, कन्नड़ तथा मलयालम। इनके अतिरिक्त कश्मीरी, कोंकणी, डोगरी, सिंहली जैसी अनेक भाषाएँ भी साहित्यिक दृष्टि से समृद्ध हैं। वैदिक संस्कृत, पालि, प्राकृत और अपभ्रंश के विशाल साहित्य को जोड़ देने पर भारतीय साहित्य का विस्तार असीम प्रतीत होता है। इसे ज्ञान के ऐसे अथाह सागर के रूप में देखा गया हैजो भौगोलिक भारत से भी अधिक व्यापक और हिमालय से भी ऊँचा है।

भारतीय साहित्य की अवधारणा के विकास में श्री अरविंद का योगदान विशेष उल्लेखनीय है। उन्होंने भारतीय साहित्य की आत्मा को आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि में निहित माना। उनके अनुसार भारतीय साहित्य का मूल स्वर जीवन और

जगत को आध्यात्मिक दृष्टि से देखने की प्रवृत्ति है। यही प्रवृत्ति उसे पाश्चात्य साहित्य से अलग पहचान देती है। इसी परंपरा को आगे बढ़ाते हुए आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, डॉनगेन् .रामविलास शर्मा और डॉ .द्र जैसे विद्वानों ने भारतीय साहित्य को अखिल भारतीय संदर्भ में समझने पर बल दिया।

डॉरामविलास शर्मा स्पष्ट रूप से कहते हैं कि भारत की किसी भी भाषा में रचा गया साहित्य भारतीय साहित्य के . अंतर्गत आता है और किसी एक भाषा के साहित्य का मूल्यांकन अखिल भारतीय परिप्रेक्ष्य के बिना संभव नहीं है। उनका मानना है कि विभिन्न भाषाओं के साहित्य आपस में गहरे स्तर पर जुड़े हुए हैं और उनके बीच एक अंतर्निहित सर्वनिष्ठता विद्यमान है। यही सर्वनिष्ठता भारतीय साहित्य की अवधारणा को सुदृढ़ बनाती है।

इस विचार को और अधिक स्पष्ट करते हुए प्रोभगवान सिंह पश्चिमी साहित्य की अवधारणा का उदाहरण देते हैं। वे . बताते हैं कि हम यूरोप की विभिन्न भाषाओं में रचे गए साहित्य को एक सांस्कृतिक चेतना के कारण'पाश्चात्य साहित्य' कहते हैं। उसी प्रकारभारतीय भाषाओं में रचित साहित्य भी एक साझा सांस्कृतिक विरासत, सोच और जीवनदृष्टि से जुड़ा - हुआ हैइसलिए'भारतीय साहित्य' की संकल्पना पूरी तरह तर्कसंगत है। उनके अनुसार भारतीय साहित्य विविध धाराओं, व्यक्तित्वों और विचारपद्धतियों के लोकतांत्रिक संगुंफन से निर्मित एक सघन इकाई है।-

कृष्ण कृपलानी भी भारतीय साहित्य को एक सामासिक विकास की उपज मानते हैं। उनके अनुसार भारतीय सभ्यता की तरह भारतीय साहित्य भी अनेक युगों, जातियों, धर्मों और संस्कृतियों के प्रभावों को आत्मसात करते हुए विकसित हुआ है। इसकी दो प्रमुख विशेषताएँ हैं—एक, तीन हजार वर्षों से भी अधिक समय तक चलती आ रही अविच्छिन्न सृजन परंपरा; और दूसरी, अतीत की वह जीवंत चेतना जो आज भी वर्तमान साहित्य में सक्रिय रूप से विद्यमान है।

इन सभी विचारों से यह निष्कर्ष निकलता है कि भारतीय साहित्य का तात्पर्य भारत में रचित समस्त भाषाओं के साहित्य से है। यदि भारत एक राष्ट्र है, तो उस राष्ट्र की सीमाओं के भीतर विकसित हर प्रकार का साहित्य भारतीय साहित्य कहलाएगा। महाभारत के रचनाकाल से लेकर आज तक भारतीय राष्ट्रीय चेतना निरंतर विकसित होती रही है। भले ही राजनीतिक परिस्थितियों के कारण देश खंडित रहा होपरंतु सांस्कृतिक स्तर पर भारत सदैव एक इकाई रहा है। 'विष्णु पुराण' में भी भारतवर्ष की पहचान हिमालय और समुद्र के बीच स्थित उस भूभाग के रूप में की गई है, जहाँ के लोग भारतीय विद्या की संतान हैं।

भारतीय साहित्य की प्रमुख विशेषताएँ

भारतीय साहित्य विश्व के प्राचीनतम और समृद्ध साहित्यिक परंपराओं में से एक है। इसकी विशेषताएँ केवल भाषिक या कलात्मक स्तर तक सीमित नहीं हैंबल्कि यह भारत की सांस्कृतिक चेतना, जीवनदृष्टि-, सामाजिक संरचना और दार्शनिक सोच को समग्र रूप में अभिव्यक्त करता है। भारतीय साहित्य को उसकी बहुआयामी विशेषताओं के आधार पर समझा जा सकता हैजो उसे अन्य साहित्यिक परंपराओं से विशिष्ट बनाती हैं।

.1विविधता में निहित एकता:

भारतीय साहित्य की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि इसमें असंख्य भाषाएँ, परंपराएँ, विचारधाराएँ और रचनारूप होते हुए भी एक अंतर्निहित एकता दिखाई देती है। तमिल संगम काव्य-, संस्कृत के महाकाव्य, हिंदी का भक्तिकाल, उर्दू की ग़ज़ल परंपरा और बंगला का नवजागरण साहित्य—ये सभी अलगअलग भाषाओं और क्षेत्रों में - विकसित हुएकिंतु इनके मूल भावों में जीवन के प्रति समान दृष्टि, नैतिकता, करुणा और मानवमूल्यों की उपस्थिति मिलती - है। यही अंतःसूत्र भारतीय साहित्यको एक सघन इकाई बनाता है।

.2भाषिक बहुलता और समृद्धि

भारतीय साहित्य अनेक भाषाओं में विकसित हुआ है। इसमें संस्कृत, पालि, प्राकृत और अपभ्रंश जैसी प्राचीन भाषाओं से लेकर हिंदी, तमिल, मराठी, बंगला, गुजराती, उर्दू, कन्नड़, तेलुगु, मलयालम, ओडिया, पंजाबी, कश्मीरी,

कोंकणी और सिंधी जैसी आधुनिक भाषाओं का साहित्य सम्मिलित है। प्रत्येक भाषा की अपनी साहित्यिक परंपरा, शिल्प और संवेदना है, जो भारतीय साहित्य को व्यापक और बहुरंगी बनाती है।

.3प्राचीनता और ऐतिहासिक निरंतरता

भारतीय साहित्य की एक विशिष्ट विशेषता इसकी दीर्घकालिक निरंतरता है। लगभग तीन से चार हजार वर्षों से अधिक समय तक इसकी सृजनपरंपरा अविच्छिन्न रूप से चलती रही है। वेदों से आरंभ होकर आधुनिक उपन्यास और - कविता तक भारतीय साहित्य निरंतर विकसित होता रहा है। विशेष बात यह है कि भारतीय साहित्य में अतीत पूर्णतः समाप्त नहीं होताबल्कि वह वर्तमान में जीवित रूप में विद्यमान रहता है।

.4आध्यात्मिक और दार्शनिक दृष्टि

भारतीय साहित्य का मूल स्वर प्रायः आध्यात्मिक और दार्शनिक रहा है। जीवन, मृत्यु, आत्मा, कर्म, मोक्ष और धर्म जैसे विषय भारतीय साहित्य में बारबार उभरते हैं। उपनिषदों की- दार्शनिक जिज्ञासा, भगवद्गीता का कर्मयोग, कबीर की निर्गुण चेतना और तुलसीदास की भक्तिये सभी भारतीय साहित्य की आध्यात्मिक प्रवृत्ति के उदाहरण हैं। यह दृष्टि साहित्य को केवल मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि जीवनबोध का माध्यम बनाती है।-

.5लोक और शास्त्र का समन्वय

भारतीय साहित्य की एक अनोखी विशेषता यह है कि इसमें लोकसाहित्य और शास्त्रीय साहित्य के बीच गहरा - संवाद दिखाई देता है। एक ओर कालिदास, भवभूति और भास जैसे कवियों की शास्त्रीय परंपरा हैतो दूसरी ओर लोकगीत, लोककथाएँ, वीरगाथाएँ और जनश्रुतियाँ हैं। भक्तिकालीन साहित्य में यह समन्वय विशेष रूप से स्पष्ट हैजहाँ लोकभाषा में गूढ़ दार्शनिक विचार अभिव्यक्त किए गए।

.6जीवन के समग्र अनुभवों का चित्रण

भारतीय साहित्य जीवन को किसी एक पक्ष से नहीं देखताबल्कि उसे समग्रता में प्रस्तुत करता है। इसमें प्रेम, करुणा, वीरता, त्याग, संघर्ष, सुखदुःख-, सामाजिक अन्याय और मानवीय संवेदनाओं का व्यापक चित्रण मिलता है। उदाहरण के लिए, रामायण में आदर्श जीवनमूल्य-, महाभारत में मानवीय द्वंद्व, और प्रेमचंद के साहित्य में सामाजिक यथार्थ का सजीव चित्रण मिलता है।

.7नैतिकता और मूल्यबोध

भारतीय साहित्य में नैतिकता और मूल्यबोध का विशेष महत्व रहा है। यह साहित्य मनुष्य को केवल यथार्थ से परिचित नहीं कराता, बल्कि उसे बेहतर मनुष्य बनने की प्रेरणा भी देता है। सत्य, अहिंसा, करुणा, सहिष्णुता और परोपकार जैसे मूल्य भारतीय साहित्य के केंद्रीय तत्व रहे हैं। महात्मा गांधी पर भारतीय साहित्य और धार्मिक ग्रंथों का प्रभाव इसी परंपरा का प्रमाण है।

.8सामाजिक और सांस्कृतिक प्रतिबिंब

भारतीय साहित्य अपने समय के समाज और संस्कृति का सजीव दर्पण रहा है। विभिन्न कालखंडों में सामाजिक संरचना, जाति व्यवस्था, स्त्री की स्थिति, धार्मिक आस्थाएँ और राजनीतिक परिस्थितियाँ साहित्य में स्पष्ट रूप से प्रतिबिंबित होती हैं। आधुनिक काल में दलित साहित्य, स्त्री विमर्श और आदिवासी साहित्य ने भारतीय समाज के उन पक्षों को सामने रखाजिन्हें लंबे समय तक अनदेखा किया गया था।

.9सहिष्णुता और समन्वय की भावना

भारतीय साहित्य में विभिन्न धर्मों, संप्रदायों और विचारधाराओं के बीच सहअस्तित्व और संवाद की भावना - दिखाई देती है। वैदिक, बौद्ध, जैन, इस्लामी और ईसाई प्रभावों ने भारतीय साहित्य को और अधिक समृद्ध बनाया। सूफी और भक्ति परंपरा इस सांस्कृतिक समन्वय का श्रेष्ठ उदाहरण है।

.10निरंतर परिवर्तनशील और जीवंत स्वरूप

भारतीय साहित्य स्थिर नहीं हैबल्कि समय के साथ बदलता और विकसित होता रहा है। आधुनिक और समकालीन साहित्य में नई संवेदनाएँ, नए शिल्प और नए विषय सामने आए हैं। फिर भी, अपनी परंपरागत जड़ों से जुड़ाव बनाए रखते हुए भारतीय साहित्य निरंतर नए रूप ग्रहण करता रहा है।

भारतीय साहित्य की विशेषताएँ उसे केवल भाषाओं का समूह नहींबल्कि एक जीवंत सांस्कृतिक चेतना के रूप में स्थापित करती हैं। इसकी विविधता, आध्यात्मिकता, ऐतिहासिक गहराई और मानवीय दृष्टि इसे विश्व साहित्य में विशिष्ट स्थान प्रदान करती है। भारतीय साहित्य वास्तव में भारत की आत्मा की सृजनात्मक अभिव्यक्ति है।

9.4 भारतीय साहित्य का वैचारिक आधार

भारतीय साहित्य की अवधारणा को लेकर साहित्यशास्त्रियों के बीच लंबे समय से विमर्श चलता रहा है। एक ओर - यह मत सामने आता है कि साहित्य मूलतः मनुष्य के लिए होता हैइसलिए उसे किसी राष्ट्रीय, भाषाई या भौगोलिक सीमाओं में बाँधना अनुचित है। साहित्य मानव अनुभवों की सार्वभौमिक अभिव्यक्ति है, अतः "भारतीय" या "अभारतीय" जैसे भेद अनावश्यक प्रतीत होते हैं। यह दृष्टि निस्संदेह मानवीय एकता पर आधारित है और अपने आप में तर्कसंगत भी है। परंतु दूसरी ओर यह भी सत्य है कि मनुष्य ने अपने ऐतिहासिक, सामाजिक और सांस्कृतिक विकास की प्रक्रिया में कुछ विशिष्ट अनुभव अर्जित किए हैंजिनके आधार पर साहित्य और संस्कृति की अलगअलग कोटियाँ निर्मित हुई हैं। इन - कोटियों को पूरी तरह नकार देना भी यथार्थ से मुँह मोड़ने जैसा होगा। इसी संदर्भ में भारतीय साहित्य की अवधारणा को समझना आवश्यक हो जाता है, साथ ही यह भी देखना जरूरी है कि इस अवधारणा के निर्माण और विस्तार में अनुवाद की क्या भूमिका रही है।

भारतीय साहित्य से तात्पर्य केवल किसी एक भाषा का साहित्य नहीं हैबल्कि भारत की विविध भाषाओं में रचित वह समूचा साहित्य है, जो अपनी अनेक भिन्नताओं और विशिष्टताओं के बावजूद कुछ मूलभूत प्रवृत्तियों और जीवन-मूल्यों में समानता प्रदर्शित करता है। यही समानता भारतीय साहित्य की आत्मा है। भाषाएँ अलग हो सकती हैं, अभिव्यक्ति के ढंग भिन्न हो सकते हैंकिंतु भावबोध-, जीवनदृष्टि और सांस्कृतिक चेतना में एक प्रकार की साझेदारी स्पष्ट रूप से - दिखाई देती है।

भारतीय साहित्य की इस साझा चेतना को स्पष्ट करते हुए अनेक साहित्याचार्यों ने विभिन्न प्रवृत्तियों की चर्चा की है। डॉनगेंद्र . ने विशेष रूप से यह रेखांकित किया है कि भारतीय भाषाओं के साहित्यिक विकास में कुछ ऐसी धाराएँ रही हैं, जो लगभग सभी भाषाओं में किसी न किसी रूप में विद्यमान हैं। इन्हीं धाराओं के माध्यम से भारतीय साहित्य की समग्र अवधारणा निर्मित होती है।

भारतीय भाषा साहित्य की प्रारंभिक प्रवृत्तियों में नाथ साहित्य का विशेष स्थान है। प्रायः सभी आधुनिक भारतीय भाषाओं के आरंभिक चरण में नाथ साहित्य की उपस्थिति देखी जा सकती है। नाथ पंथ के अनुयायी शिव को अपना आदिगुरु मानते हैं। यद्यपि इस संप्रदाय की वैचारिक दिशा और संगठन का श्रेय गोरखनाथ को दिया जाता हैइसलिए यह पंथ उनके नाम पर नाथ पंथ कहलाया। मराठी और बांग्ला साहित्य में नाथ परंपरा की धारा अत्यंत प्रभावशाली रही है। राजस्थान और पंजाब में नाथपंथी साधुओं के पद और गायन प्रचलित रहे हैं। दक्षिण भारत में कर्नाटक के बसव के नेतृत्व में चले वीरशैव आंदोलन से वचन साहित्य का उदय हुआ, जिसने कन्नड़ साहित्य को नई पहचान दी। इसी प्रकार तमिल भाषा में शैव भक्त कवियों, जिन्हें नायनार कहा जाता हैकी समृद्ध परंपरा विकसित हुई। ये सभी धाराएँ अलगअलग भाषाओं में - होते हुए भी आध्यात्मिक साधना, वैराग्य और सामाजिक चेतना जैसे समान तत्वों को साझा करती हैं।

भारतीय साहित्य की दूसरी प्रमुख प्रवृत्ति चारण काव्य की मानी जाती है। चारण काव्य का आशय उन रचनाओं से है, जिनमें राजाओं और वीरों की प्रशंसा, शौर्य और कीर्ति का गान किया गया है। यह परंपरा लगभग सभी भारतीय भाषाओं

में पाई जाती है। संस्कृत में यह प्रवृत्ति अत्यंत प्राचीन हैकिंतु तमिल साहित्य में भी संगम काल से प्रशस्ति काव्य मिलने लगते हैं। संगम युग, जो ईसा पूर्व पाँचवीं शताब्दी से लेकर दूसरी शताब्दी तक फैला हुआ माना जाता हैतमिल साहित्य का स्वर्णकाल कहा जाता है। इस काल का प्रसिद्ध महाकाव्य 'सिलप्पदिकारम' प्रायः चारण काव्य की परंपरा से जोड़ा जाता है। हालाँकि इसके रचयिता इलंगो अडिहल ने राजा और प्रजा के बीच न्याय के स्तर पर कोई भेद स्वीकार नहीं किया। इस महाकाव्य में मदुरै का राजा एक निर्दोष व्यक्ति को दंड देने के अपराधबोध में प्राण त्याग देता है। यही नैतिक साहस और न्यायबोध इस ग्रंथ को विशिष्ट बनाता है।-

उत्तर भारत और पश्चिम भारत में चारण काव्य की परंपरा हिंदी और गुजराती के रासो साहित्य तथा मराठी के पवाड़ा साहित्य में दिखाई देती है। हिंदी साहित्य के आदिकाल को जॉर्ज ग्रियर्सन और रामकुमार वर्मा जैसे विद्वानों ने "चारण युग" की संज्ञा दी है। पृथ्वीराज रासो, खुमाण रासो जैसे ग्रंथ इसी परंपरा के उदाहरण हैं। इसके अतिरिक्त कन्नड़ और तेलुगु साहित्य में भी वीरगाथात्मक काव्य की परंपरा मिलती हैजो चारण काव्य की व्यापकता को सिद्ध करती है।

तीसरी महत्त्वपूर्ण प्रवृत्ति संत काव्यधारा के रूप में विकसित हुई। यह धारा भारतीय साहित्य की आत्मा कही जा सकती हैक्योंकि इसमें जाति, वर्ग और संप्रदाय की सीमाओं को तोड़कर मानवीय एकता और आध्यात्मिक अनुभव की अभिव्यक्ति की गई है। दक्षिण भारत में तमिल के संत कवियों की सरल किंतु गूढ़ रचनाएँ मिलती हैं। तेलुगु में वेमन को कबीर के समकक्ष माना जाता है। कन्नड़ भाषा में सर्वज्ञ जैसे संत कवि अत्यंत सम्मानित हैं। मराठी में महानुभाव और वारकरी संप्रदायों के माध्यम से संत परंपरा विकसित हुईजिसमें नामदेव, एकनाथ और चोखामेला जैसे कवियों का योगदान उल्लेखनीय है।

गुजराती संत साहित्य में अखो, सहजानंद और प्रीतमदास के नाम प्रमुख हैं। बंगाल का बाउल संप्रदाय इसी संत परंपरा का विस्तार माना जाता है। पंजाबी भाषा में गुरु नानक देव से आरंभ होकर यह परंपरा अत्यंत समृद्ध रूप में विकसित हुई। हिंदी में कबीर, दादू, रैदास और पलटूदास जैसे संत कवियों ने सामाजिक कुरीतियों पर तीखा प्रहार करते हुए प्रेम, सत्य और मानवीय समानता का संदेश दिया। इसी प्रकार असमिया साहित्य में शंकरदेव की वैष्णव भक्ति और संत परंपरा भारतीय संत काव्य की व्यापकता का एक और उदाहरण है।

भारतीय साहित्य की चौथी प्रवृत्ति प्रेमाख्यान काव्य के रूप में सामने आती है। विभिन्न भारतीय भाषाओं में रचे गए प्रेमाख्यानों की कथावस्तु में भावनात्मक गहराई और कल्पनात्मक समृद्धि दिखाई देती है। सूफी साहित्य को भी इसी धारा के अंतर्गत रखा जाता है। हिंदी में मलिक मुहम्मद जायसी का 'पद्मावत', अवधी और ब्रजभाषा के प्रेमाख्यान, बंगाली साहित्य में विद्यापति के पद, तथा फारसीउर्दू परंपरा के सूफी आख्यान इस प्रवृत्ति के सशक्त उदाहरण हैं। कश्मीरी और - दक्खिनी साहित्य में भी प्रेम और आध्यात्मिक प्रतीकों से युक्त आख्यान मिलते हैं।

पाँचवीं प्रमुख प्रवृत्ति वैष्णव काव्य की है। भागवत धर्म से प्रेरित यह काव्य परंपरा मणिपुरी से लेकर मलयालम तक फैली हुई है। राम और कृष्ण, वैष्णव काव्य के मुख्य नायक हैंजो केवल साहित्यिक पात्र नहीं बल्कि भारतीय सांस्कृतिक जीवन के केंद्रीय प्रतीक भी हैं। रामभक्ति काव्य निर्गुण और सगुण दोनों रूपों में मिलता है। तमिल के आलवार भक्तों को वैष्णव काव्य के प्रारंभिक कवियों में गिना जाता है। ब्रजभाषा, बांग्ला, गुजराती और उड़िया साहित्य में कृष्ण भक्ति की धारा अत्यंत प्रभावशाली रही है। मीराबाई, सूरदास, चैतन्य महाप्रभु, नरसी मेहता और जगन्नाथ दास जैसे कवियों की रचनाएँ इस परंपरा को समृद्ध बनाती हैं। रामलीला और कृष्णलीला से जुड़े नाट्य और लोकनाट्य रूप, जैसे यक्षगान, कथकली और रासलीला, अखिल भारतीय सांस्कृतिक एकता के सशक्त उदाहरण हैं।

आधुनिक काल में भारतीय भाषाओं में आधुनिकता का प्रवेश लगभग एक साथ हुआ। यह आधुनिक चेतना मुख्यतः स्वाधीनता आंदोलन से जुड़ी हुई थी। के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम ने सभी भाषाओं के साहित्य को गहराई से 1857 नगेंद्र ने आधुनिक भारतीय साहित्य के विकास को चार चरणों में विभाजित किया है .प्रभावित किया। डॉ—पुनर्जागरण, राष्ट्रीयसांस्कृतिक चेतना का उत्कर्ष-, रोमानी सौंदर्यबोध का विकास और समाजवादीसाम्यवादी सामाजिक चेतना का -

उदय। इन चरणों में रवींद्रनाथ ठाकुर, प्रेमचंद, भारतेन्दु हरिश्चंद्र, सुभ्रमण्य भारती, केशवसुत, श्रीश्री जैसे रचनाकारों ने अपनी-अपनी भाषाओं में आधुनिक भारतीय संवेदना को स्वर दिया।

भारतीय साहित्य की एकता के पीछे कुछ ठोस आधार हैं। पहला आधार भारत के विभिन्न प्रदेशों का साझा ऐतिहासिक अतीत है। यह अतीत संघर्षों, समझौतों, टकरावों और सांस्कृतिक आदानप्रदान से निर्मित हुआ है। राजनीतिक - घटनाएँ साहित्य को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती रही हैं। दूसरा आधार सामाजिक संरचनाओं में पाई जाने वाली समानता है। सामाजिक पदानुक्रम, धार्मिक विश्वास और सामूहिक चेतना ने साहित्यिक सृजन की भूमि तैयार की। तीसरा आधार समान शास्त्रीय और साहित्यिक स्रोत हैं। रामायण, महाभारत, पंचतंत्र, जातक कथाएँ, पुराण और उपनिषद लगभग सभी भारतीय भाषाओं में अनुवाद और रूपांतरण के माध्यम से पहुँचे। अनुवाद ने यहाँ एक सेतु का कार्य किया, जिससे ज्ञान और कथाएँ एक भाषा से दूसरी भाषा में प्रवाहित होती रहीं।

चौथा आधार अखिल भारतीय साहित्यिक आंदोलनों से जुड़ाव है। भक्ति आंदोलन इसका श्रेष्ठ उदाहरण हैजिसने उत्तर से दक्षिण और पूर्व से पश्चिम तक साहित्य को एक साझा चेतना प्रदान की। इसी तरह काव्यशास्त्रीय परंपरा भी भारतीय साहित्य की एकता का मजबूत आधार है। कश्मीर से केरल तक रचित साहित्य की समीक्षा के मानदंड लगभग समान रहे हैं। भामह, वामन, आनंदवर्धन और राजशेखर जैसे आचार्यों के सिद्धांत पूरे भारत में स्वीकार किए गए। संस्कृत, प्राकृत और अपभ्रंश को समान आदर के साथ साहित्यिक परंपरा में स्थान मिला।

कहा जा सकता है कि भारतीय साहित्य किसी एक भाषा, प्रदेश या काल तक सीमित नहीं है। यह विविधताओं के बीच अंतर्निहित एकता का सजीव उदाहरण है। अनुवाद, संवाद और सांस्कृतिक आदानप्रदान ने इसे निरंतर समृद्ध और - जीवंत बनाए रखा है। यही साझा परंपरा, समान जीवनमूल्य और दीर्घकालिक विमर्श भारतीय साहित्य की वास्तविक - पहचान और शक्ति है।

अपनी प्रगति जांचें

प्रश्न .1भारतीय साहित्य की अवधारणा से आप क्या समझते है ?

प्रश्न .2भारतीय साहित्य को डॉ नगेन्द्र ने किस प्रकार परिभाषित किया है .?

प्रश्न .3भारतीय साहित्य की अवधारणा के विकास में श्री अरविन्द जी का क्या योगदान रहा है?

प्रश्न .4भारतीय साहित्य की एक प्रवृत्ति की व्याख्या कीजिए।

प्रश्न .5असम में वैष्णव भक्ति के प्रमुख प्रचारक कौन थे ?

9.5 भारतीय साहित्य परंपरा में अनुवाद

भारत की सांस्कृतिक पहचान उसकी भाषाई विविधता से गहराई से जुड़ी हुई है। यहाँ प्राचीन काल से ही अनेक भाषाएँ, उपभाषाएँ और बोलियाँ समानांतर रूप से विकसित होती रही हैं। वैदिक संस्कृत, लौकिक संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, पालि, तमिल, कन्नड़, तेलुगु, अवधी, ब्रज, मैथिली जैसी असंख्य भाषाओं में साहित्यसृजन हुआ। ऐसी स्थिति - में विचारों, कथाओं, धार्मिक ग्रंथों और ज्ञानपरंपराओं के प्रसार के लिए अनुवा-द एक स्वाभाविक और आवश्यक प्रक्रिया रहा होगा। इसलिए यह मानना कठिन नहीं है कि भारत में अनुवाद की परंपरा अत्यंत प्राचीन है। किंतु इसके बावजूद यह तथ्य चौंकाने वाला है कि अनुवाद को लेकर कोई सुसंगत, शास्त्रीय और मानक सिद्धांत विकसित नहीं हुआजैसा कि व्याकरण, काव्य, नाट्य या दर्शन के क्षेत्र में हुआ।

इस प्रश्न की ओर गंभीरता से ध्यान आकर्षित करने वाले विद्वानों में इंद्रनाथ चौधुरी का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। वे यह प्रश्न उठाते हैं कि जब नाट्य के लिए नाट्यशास्त्र, व्याकरण के लिए अष्टाध्यायी और तमिल साहित्य

के लिए तोलकप्पियम जैसे आधारभूत ग्रंथ उपलब्ध हैंतो फिर अनुवाद जैसे महत्त्वपूर्ण कर्म के लिए कोई समग्र ग्रंथ क्यों नहीं मिलता? यह अभाव तब और अधिक आश्चर्यजनक प्रतीत होता हैजब हम यह जानते हैं कि भारत में अनुवाद केवल सीमित नहीं रहाबल्कि उसने साहित्यिक परंपरा के निर्माण में निर्णायक भूमिका निभाई है।

यह भी नहीं कहा जा सकता कि प्राचीन भारत में अनुवाद का अभ्यास नहीं होता था। वात्स्यायन जैसे आचार्यों के ग्रंथों में विभिन्न भाषाओं के प्रयोग और रूपांतरण के संकेत मिलते हैं। बौद्ध और जैन परंपराओं में तो अनुवाद एक केंद्रीय प्रक्रिया रही है। बौद्ध धर्म के प्रसार के साथ पालि ग्रंथों का संस्कृत, चीनी, तिब्बती और अन्य भाषाओं में अनुवाद हुआ। जैन आगमों को भी अपभ्रंश और लोकभाषाओं में रूपांतरित किया गया, ताकि साधारण जन तक धर्म का संदेश पहुँच सके। इसके बावजूद अनुवाद को एक स्वतंत्र विद्या के रूप में स्थापित करने की प्रवृत्ति नहीं दिखाई देती।

इस स्थिति के पीछे कई कारण गिनाए जा सकते हैं। पहला कारण यह प्रतीत होता है कि प्राचीन भारतीय चिंतन में अनुवाद को अलग से अध्ययन योग्य विषय नहीं माना गया। वह साहित्यिक और बौद्धिक गतिविधियों का एक अंग थाकिंतु उसे स्वतंत्र अनुशासन का दर्जा नहीं मिला। दूसरा कारण यह है कि भारतीय रचनाकार सामान्यतः बहुभाषी होते थे। वे एक से अधिक भाषाओं में दक्ष थेइसलिए उनके लिए एक भाषा से दूसरी भाषा में भाव संप्रेषण कोई असाधारण कार्य नहीं था। यह उनकी स्वाभाविक क्षमता का हिस्सा था।

तीसरा और अत्यंत महत्त्वपूर्ण कारण भारतीय काव्यशास्त्र में मौलिकता पर दिया गया विशेष बल है। यहाँ नए भाव, नई कल्पना और स्वतंत्र सृजन को सर्वोच्च मूल्य माना गया। इसी दृष्टिकोण के कारण अनुवाद को मौलिक रचना के समकक्ष नहीं समझा गया। आचार्य भामह का प्रसिद्ध कथन—"अन्य सारस्वता नान सन्त्यन्योक्तानुवादिनः"—इस मानसिकता को स्पष्ट रूप से सामने रखता है। उनके अनुसार, जो कवि केवल दूसरों की बात का पुनरावर्तन करता हैवह सृजनात्मक दृष्टि से श्रेष्ठ नहीं माना जा सकता। इस सोच ने अनुवादकों को साहित्यिक सम्मान से वंचित रखा।

चौथा कारण भाषाई संरचना और शास्त्रीय परंपरा से जुड़ा है। संस्कृत में विवेचनात्मक, दार्शनिक और शास्त्रीय ग्रंथों की एक सुदृढ़ परंपरा रही है। प्राकृत और अपभ्रंश में मुख्यतः कथा और काव्य की रचना होती थी। संस्कृत के विद्वान प्रायः इन भाषाओं को समझने में सक्षम होते थेइसलिए उन्हें औपचारिक अनुवाद की आवश्यकता नहीं पड़ती थी। संस्कृत नाटकों में प्राकृत संवादों के साथ जो 'छाया' दी जाती थी,वह अनुवाद का ही एक रूप थीकिंतु वह शब्दानुवाद नहींबल्कि \ सिद्-भावानुवाद थी। इस प्रकार शाब्दिक अनुवाद को महत्व न मिलने के कारण अनुवादधांत के विकास की आवश्यकता भी अनुभव नहीं की गई।

भारतीय साहित्य में अनुवाद की भूमिका को समझने के लिए कुछ ऐतिहासिक उदाहरण विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। आठवीं शताब्दी के कथाकार गुणाढ्य ने पश्चिमोत्तर भारत की लोकभाषा पैशाची में बड्ढकहा अथवा वृहत्कथा की रचना की। यह कृति कथात्मक वैभव और कल्पनाशीलता की दृष्टि से अत्यंत समृद्ध थी। किंतु तत्कालीन विद्वत समाज ने इसे अपेक्षित सम्मान नहीं दियासंभवतः इसलिए कि यह संस्कृत जैसी प्रतिष्ठित भाषा में नहीं लिखी गई थी। उपेक्षा से व्यथित होकर गुणाढ्य ने अपनी ही रचना को नष्ट करने का निश्चय किया। परंपरा के अनुसार, सोमदेव नामक विद्वान इसका एक अंश बचाने में सफल हुए। उन्होंने उसी अंश का संस्कृत में रूपांतरण किया, जो कथासरित्सागर के नाम से विख्यात हुआ। बाद में क्षेमेंद्र ने भी इसी कथासामग्री का संस्कृत रूपांतरण किया-, जिसे बृहत्कथामंजरी कहा गया। इन दोनों कृतियों को भारतीय साहित्य में अनुवाद की प्राचीन और महत्त्वपूर्ण उपलब्धियाँ माना जाता है।

मध्यकाल में अनुवाद का संबंध केवल साहित्यिक नहींबल्कि सामाजिक और धार्मिक संघर्षों से भी जुड़ा हुआ दिखाई देता है। कृष्णभक्त कवि नंददास ने श्रीमद्भागवत महापुराण का लोकभाषा में अनुवाद कियाताकि साधारण भक्त भी इसके भावार्थ को समझ सकें। किंतु संस्कृत के परंपरावादी पंडितों को यह प्रयास अपने धार्मिक वर्चस्व के लिए चुनौती लगा। परिणामस्वरूप नंददास पर इतना दबाव डाला गया कि उन्हें अपने अनुवाद का अधिकांश भाग नष्ट करना पड़ा। इसी प्रकार तुलसीदास की रामचरितमानस को भी प्रारंभ में विरोध का सामना करना पड़ा। अवधी जैसी लोकभाषा में रामकथा

का प्रस्तुत किया जाना तत्कालीन धार्मिक सत्ता को स्वीकार्य नहीं था। किंवदंती है कि जब इस कृति को शिव की प्रतीकात्मक स्वीकृति मिली, तब जाकर इसका स्थान सुनिश्चित हो सका।

इन उदाहरणों के अतिरिक्त दक्षिण भारत की भक्ति परंपरा में अनुवाद और रूपांतरण की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण रही है। आलवार और नयनार संतों ने संस्कृत धर्मग्रंथों के भावों को तमिल में व्यक्त किया। कंबन की कंब रामायण संस्कृत वाल्मीकि रामायण की कथा पर आधारित होते हुए भी स्वतंत्र काव्य के रूप में प्रतिष्ठित है। यह केवल अनुवाद नहीं, बल्कि सांस्कृतिक पुनर्सृजन का उदाहरण है। इसी प्रकार एकनाथ और तुकाराम ने मराठी में भगवद्गीता और भागवत परंपरा को लोकभाषा में प्रस्तुत किया।

बौद्ध परंपरा में भी अनुवाद का योगदान अत्यंत व्यापक है। अशोक के काल से लेकर मध्य एशिया और चीन तक बौद्ध ग्रंथों का अनुवाद हुआ। कुमारजीव जैसे विद्वानों ने संस्कृत बौद्ध ग्रंथों का चीनी भाषा में रूपांतरण कियाजिसने चीनी बौद्ध चिंतन को गहराई से प्रभावित किया। यह अनुवाद केवल शब्दों का नहीं, बल्कि दार्शनिक अवधारणाओं का सांस्कृतिक अनुकूलन था।

इन सभी उदाहरणों से स्पष्ट है कि भारतीय साहित्य और संस्कृति के निर्माण में अनुवाद एक केंद्रीय शक्ति रहा है। फिर भी उसे सैद्धांतिक मान्यता नहीं मिली। संभवतः इसलिए कि भारत में अनुवाद को कभी यांत्रिक प्रक्रिया नहीं समझा गया, बल्कि उसे सृजनात्मक रूपांतरण का अंग माना गया। आज के समय मेंजब अनुवाद को एक अकादमिक अनुशासन के रूप में स्थापित किया जा रहा हैतब आवश्यक है कि हम अपनी परंपरा को नए दृष्टिकोण से देखें और यह स्वीकार करें कि भले ही हमारे पास अनुवाद का शास्त्र न रहा होकिंतु अनुवाद की समृद्ध और जीवंत परंपरा भारत की बौद्धिक विरासत का अभिन्न हिस्सा रही है।

9.6 सामाजिकभारतीय साहित्य व अनुवाद पर प्रभाव : सांस्कृतिक आन्दोलन-

प्रत्येक समाज निरंतर परिवर्तनशील होता है। उसकी गति, दिशा और स्वभाव को समझने के लिए उसके भीतर सक्रिय मूल्यों, आस्थाओं, विश्वास प्रणालियों, आर्थिक संरचनाओं और जीवनशैली का अध्ययन आवश्यक है। समाज - स्थिर इकाई नहीं है, बल्कि अंतर्विरोधों, संघर्षों और समन्वयों से निर्मित एक जीवंत संरचना है। जब समाज की आधारभूत संरचनाओं के बीच असंतुलन या टकराव तीव्र हो जाता हैतब सामाजिक–सांस्कृतिक आंदोलनों का जन्म होता है। ये आंदोलन केवल प्रतिरोध के रूप नहीं होतेबल्कि आत्मपरीक्षा-, पुनर्निर्माण और नवचेतना के वाहक भी होते हैं। साहित्य, जो समाज का संवेदनशील दर्पण माना जाता है, इन आंदोलनों की अनुभूतियों, विचारों और संघर्षों को संचित करता है। इसी कारण भारतीय सामाजिक–सांस्कृतिक आंदोलन और भारतीय साहित्य का रिश्ता गहरे स्तर पर एकदूसरे से जुड़ा - हुआ दिखाई देता है। इस जुड़ाव का प्रभाव अनुवाद की परंपरा और उसकी दिशा पर भी स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

.1भारतीय सामाजिक–सांस्कृतिक आंदोलनों की प्रकृति :एक आत्ममूल्यांकन :

किसी भी समाज में आंदोलन तभी उभरते हैं जब समाज गंभीर संकट या असंतोष की स्थिति से गुजर रहा होता है। सामान्य परिस्थितियों में लोग यथास्थिति को स्वीकार कर लेते हैंपरंतु जब जीवन की बुनियादी शर्तें, सम्मान, अधिकार या पहचान संकट में पड़ती हैंतब सामूहिक चेतना सक्रिय होती है। यही सक्रियता संगठित रूप लेकर आंदोलन का स्वरूप ग्रहण करती है। संकट कभी आंतरिक होते हैंजो समाज की अपनी संरचनाओं से जन्म लेते हैंऔर कभी बाह्यजो विदेशी आक्रमण, औपनिवेशिक सत्ता या बाहरी सांस्कृतिक दबावों से उत्पन्न होते हैं। कई बार ये दोनों मिलकर भी आंदोलन को जन्म देते हैं।

भारतीय इतिहास पर दृष्टि डालें तो प्रारंभिक सामाजिक–सांस्कृतिक आंदोलनों की जड़ें मुख्यतः आंतरिक संकटों में थीं। वर्णव्यवस्था की कठोरता-, कर्मकांड की जटिलता, यज्ञों में होने वाली हिंसा और ब्राह्मणवादी वर्चस्व ने समाज के बड़े

वर्ग को असंतुष्ट किया। इसी पृष्ठभूमि में बौद्ध और जैन परंपराओं का उदय हुआ। इन धाराओं ने वैदिक परंपरा की विकृतियों पर प्रश्नचिह्न लगाया और सरल, नैतिक तथा अहिंसक जीवन का मार्ग सुझाया।

बौद्ध धर्म ने ब्राह्मण श्रेष्ठता को चुनौती दी और जनभाषा पालि में उपदेश देकर ज्ञान को आमजन तक पहुँचाया। विहारों की स्थापना के माध्यम से उसने शिक्षा और आध्यात्म का वैकल्पिक ढांचा प्रस्तुत किया। यही कारण है कि समाज के वंचित और निम्न माने गए वर्गों में इसका व्यापक प्रसार हुआ। सम्राट अशोक के संरक्षण में यह आंदोलन भारत की सीमाओं से बाहर जाकर एशिया के कई देशों में फैला और एक वैश्विक सांस्कृतिक शक्ति बन गया। कला, स्थापत्य, दर्शन और साहित्य—हर क्षेत्र पर इसका गहरा प्रभाव पड़ा।

जैन परंपरा भी इसी क्रम में विकसित हुई। उसकी साधना पद्धति अपेक्षाकृत कठोर होने-के कारण उसका प्रसार सीमित रहाकिंतु उसकी नैतिक दृष्टि और साहित्यिक परंपरा सतत बनी रही। बौद्ध परंपरा की तरह उसमें बड़े विभाजन नहीं हुए, जिससे उसकी धारा निरंतर बहती रही।इसके बाद मध्यकाल में भक्ति आंदोलन का उदय हुआजिसने भारतीय समाज को व्यापक स्तर पर झकझोर दिया। इस आंदोलन के पीछे आंतरिक कारणों—जैसे जातिगत भेदभाव, धार्मिक आडंबर और सामाजिक असमानता—के साथसाथ बाहरी कारण भी थे। इस्लामी सत्ता की उपस्थिति और उससे उपजे सांस्कृतिक - संवाद ने भी भक्ति चेतना को आकार दिया। शिल्पकारों, दस्तकारों और निम्न कही जाने वाली जातियों में बढ़ती आत्म-अभिव्यक्ति ने धर्म के माध्यम से सामाजिक समानता की मांग को मुखर किया।

आधुनिक काल में स्वतंत्रता आंदोलन एक निर्णायक सामाजिक–राजनीतिक आंदोलन के रूप में सामने आया। औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध संघर्ष करते हुए इस आंदोलन ने सामाजिक सुधार, शिक्षा, स्त्रीउत्थान और सांस्कृतिक - पुनर्जागरण को भी अपने एजेंडे में शामिल किया। इसके समानांतर और उसके बाद प्रगतिवादी आंदोलन ने साहित्य और कला को सामाजिक न्याय, वर्गसंघर्ष और वैश्विक चेतना से जोड़ा। इसने भारतीय साहित्य को नई दृष्टि-, नई भाषा और नए सरोकार प्रदान किए।

.2सामाजिक–सांस्कृतिक आंदोलन और साहित्य का अंतर्संबंध

भारत की सांस्कृतिक एकता किसी एक समय में नहीं बनीबल्कि विभिन्न आंदोलनों के दौरान धीरेधीरे विकसित - हुई। इस एकता की सबसे सशक्त अभिव्यक्ति साहित्य में दिखाई देती है। साहित्य न केवल आंदोलनों की विचारधारा को आकार देता हैबल्कि उनकी प्रक्रिया और परिणामों का ऐतिहासिक दस्तावेज भी बनता है। आंदोलनों में सक्रिय विभिन्न शक्तियों के संघर्ष, समझौते और अंतर्विरोधों को समझने के लिए साहित्य एक विश्वसनीय माध्यम सिद्ध होता है।

बौद्ध आंदोलन के परिणामस्वरूप पालि भाषा में विशाल साहित्य रचा गया। पालि, जो मूलतः लोकभाषा थी, इस आंदोलन के कारण प्रतिष्ठित हुई। आज भले ही पालि जीवित भाषा न रही होलेकिन बौद्ध साहित्य के कारण वह अध्ययन और अनुसंधान की महत्वपूर्ण भाषा बनी हुई है। बुद्ध के उपदेशों को संस्कृत में अनूदित करने से उनका प्रारंभिक निषेध भी इसी बात का संकेत है कि भाषा के माध्यम से सत्ता और ज्ञान के संबंधों को बदला जा सकता है। कालांतर में संस्कृत में भी बौद्ध दर्शन और साहित्य की महत्वपूर्ण कृतियाँ रची गईं; जैसे अश्वघोष का बुद्धचरित।जैन कवियों ने भी उपदेशात्मक रचनाओं के साथका-साथ कथा-व्य और प्रबंधात्मक साहित्य की रचना कर भारतीय साहित्य को समृद्ध किया। अपभ्रंश और प्राकृत में लिखे गए जैन ग्रंथों ने आगे चलकर हिंदी और अन्य आधुनिक भारतीय भाषाओं के विकास में योगदान दिया।

यदि किसी एक आंदोलन ने भारतीय साहित्य को व्यापक और अखिल भारतीय स्वरूप दिया, तो वह भक्ति आंदोलन था। विभिन्न प्रांतों के संत कवियों ने अलगअलग भाषाओं में एक समान चेतना को अभिव्यक्त किया। नामदेव ने - कोने में स्थानीय भाषाओं और बोलियों में ढलती चली -मराठी और हिंदी दोनों में रचनाएँ की। कबीर की वाणी देश के कोने गई। यह एक प्रकार का जीवंत अनुवाद ही थाजिसमें रचना और रचनाकार की सीमाएँ धुंधली हो गईं।

कबीर ने शास्त्रीय ग्रंथों की सत्ता को चुनौती देते हुए अनुभवजन्य सत्य को महत्व दिया। तुलसीदास ने साहित्य को लोकमंगल से जोड़ा और उसे सामाजिक दायित्व से संपृक्त किया। सूफी कवियों ने प्रेम और सौहार्द के माध्यम से हिंदू–मुस्लिम संवाद को नई दिशा दी। जायसी की पद्मावत या कुतुबन की मृगावती जैसी रचनाएँ इसके उदाहरण हैं।

स्वतंत्रता आंदोलन ने साहित्य की भाषा, शैली और उद्देश्य को बदला। राष्ट्रीय चेतना, आत्मसम्मान और सांस्कृतिक पुनरोद्धार साहित्य के केंद्रीय विषय बने। प्रगतिवादी आंदोलन ने इस चेतना को आगे बढ़ाते हुए किसान, मजदूर और हाशिए के समाज को साहित्य के केंद्र में रखा। प्रेमचंद, सज्जाद ज़हीर, फैज़ अहमद फैज़ जैसे लेखकों की रचनाएँ इस परिवर्तन की साक्षी हैं।

.3आंदोलन, साहित्य और अनुवाद भारतीय परिप्रेक्ष्य :

भारतीय साहित्य का विकास आंदोलनों से गहराई से जुड़ा रहा हैऔर अनुवाद इस प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण उपकरण रहा है। आंदोलन मूलतः शक्तिसंतुलन में परिवर्तन के -संबंधों को बदलने की आकांक्षा से प्रेरित होते हैं। शक्ति-लिए ज्ञान और संस्कृति तक समान पहुँच आवश्यक होत ी है। यही कारण है कि भाषा और अनुवाद आंदोलनों के केंद्र में रहे हैं।

गौतम बुद्ध द्वारा संस्कृत के स्थान पर पालि के प्रयोग पर जोर देना केवल भाषाई चयन नहीं थाबल्कि ज्ञान के लोकतंत्रीकरण का प्रयास था। भक्ति आंदोलन में लोकभाषाओं के माध्यम से धार्मिक ग्रंथों और विचारों का प्रसार इसी दिशा में एक कदम था। रामायण, महाभारत और भागवत पुराण के विभिन्न भाषाओं में हुए अनुवादों ने आम जनता को उन ग्रंथों से सीधे जोड़ दियाजो पहले केवल संस्कृत जानने वाले वर्ग तक सीमित थे।

इन अनुवादों का प्रभाव केवल धार्मिक नहीं था। लोकबोलियाँ साहित्यिक भाषाओं के रूप में विकसित हुईं। अवधी, ब्रज, मैथिली, मराठी, बंगला, असमिया, गुजराती—सबको नई प्रतिष्ठा मिली। धर्म के लोकतंत्रीकरण ने सामाजिक सत्तासमीकरण को भी प्रभावित किया। नए लेखक-, नए साहित्यिक केंद्र और नए बौद्धिक संवाद स्थापित हुए।

ब्रजभाषा का प्रसार एक उल्लेखनीय उदाहरण है। दक्षिण भारत के आचार्य मध्व, वल्लभाचार्य और चैतन्य महाप्रभु ने कृष्णभक्ति के माध्यम से ब्रज को अखिल भारतीय स्तर पर पहुँचाया। बंगाल में ब्रज और बांग्ला के संपर्क से ब्रजबुलि का विकास हुआ। असम में शंकरदेव और माधवदेव की रचनाओं में ब्रज के तत्व समाहित हुए। इसी प्रकार अवधी को तुलसीदास की रामचरितमानस ने व्यापक पहचान दिलाई।

संत परंपरा और सिख धर्म के विकास में भी अनुवाद और भाषायी समन्वय की भूमिका रही। गुरुग्रंथ साहिब में विभिन्न भाषाओं और संतों की वाणियों का संकलन भाषा और साहित्य की साझी विरासत का उदाहरण है। आधुनिक काल में भी दलित आंदोलन, स्त्री आंदोलन और आदिवासी साहित्य ने अनुवाद के माध्यम से अपनी आवाज को व्यापक समाज तक पहुँचाया। मराठी दलित साहित्य का हिंदी और अन्य भाषाओं में अनुवाद इसका सशक्त उदाहरण है।

भारतीय सामाजिक–सांस्कृतिक आंदोलन, साहित्य और अनुवाद एकदूसरे से अलग नहीं हैं। ये तीनों मिलकर - भारतीय समाज की चेतना, उसकी विविधता और उसकी एकता को रूप देते हैं। आंदोलनों ने साहित्य को दिशा दी, साहित्य ने आंदोलनों को शब्द और स्मृति दी, और अनुवाद ने इस पूरी प्रक्रिया को व्यापक और लोकतांत्रिक बनाया। यही भारतीय साहित्य की विशिष्टता और उसकी जीवंत परंपरा का आधार है।

महत्वपूर्ण बिंदु

अनुवाद का महत्व:

सांस्कृतिक सेतु: अनुवाद भारतीय भाषाओं और परंपराओं के बीच संवाद स्थापित करता है, जिससे सांस्कृतिक एकता और राष्ट्रीय एकात्मता मजबूत होती है।

ज्ञान का प्रसार: अनुवाद दूरदराज के पाठकों तक प्राचीन ग्रंथों-, आधुनिक साहित्य और विचारों को पहुँचाने का माध्यम है।

तुलनात्मक अध्ययन में सहाराविभिन्न भाषाओं के साहित्य का अध्ययन और तुलना अनुवाद के जरिए सरल : बनती है, जिससे भाषाई और साहित्यिक विकास को गति मिलती है।

साहित्यिक आदान:प्रदान- प्रसिद्ध कृतियों जैसे रवींद्रनाथ टैगोर की 'गीतांजलि' या शरतचंद्र की 'देवदास' के अनुवाद पाठकों को अन्य भाषाओं के साहित्य से परिचित कराते हैं।

रचनात्मक पुनर्कथन: मध्यकालीन महाकाव्यों के अनुवाद में रचनाकार ने मूल कथा का सार बनाए रखते हुए अपनी बोली और क्षेत्रीय आवश्यकताओं के अनुसार नए प्रसंग जोड़ेजो अनुवाद की सृजनात्मक क्षमता को दर्शाता है।

सामाजिक और बहुआयामी भूमिका: अनुवाद आज जनसंचार, फिल्मों और डिजिटल माध्यमों में भी ज्ञान और सूचना के आदानप्रदान का कार्य करता है।-

वैश्विक संपर्क का साधन: अनुवाद भारतीय साहित्य को अंतरराष्ट्रीय पाठकों तक पहुँचाने और वैश्विक साहित्यिक संवाद में भागीदारी सुनिश्चित करता है।

9.7 भारतीय साहित्य अनुवाद की सृजनात्मक भूमिका :

भारतीय साहित्य किसी एक कालखंडएक भाषा या एक विचारधारा की उपज नहीं है। इसका निर्माण सदियों में फैली एक दीर्घ ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और सामाजिक प्रक्रिया का परिणाम है। यही कारण है कि भारतीय साहित्य जितना अपने अपार वैविध्य के लिए जाना जाता हैउतना ही अपनी अंतर्निहित एकसूत्रता और चेतनात्मक ऐक्य के लिए भी पहचाना जाता है। अनेक भाषाएँ, बोलियाँ, धर्म, जातियाँ, संप्रदाय और सांस्कृतिक समुदाय इस साहित्यिक परंपरा में इस प्रकार घुलअलग पहचान पाना कठिन प्रतीत होता है।-मिल गए हैं कि आज उन्हें स्पष्ट सीमाओं में अलग-

भारतीय साहित्य की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें परस्पर विरोधी प्रतीत होने वाले तत्व भी सहअस्तित्व में दिखाई देते हैं। शास्त्रीय परंपरा और लोकधारा, तर्कशीलता और आस्था, आस्तिकता और नास्तिकता, संघर्ष और सामंजस्य, युद्ध और शांतिदूसरे के विरोधी ध्रुव नहींबल्कि एक ही सांस्कृतिक संरचना के -ये सभी भारतीय साहित्य में एक- पूरक आयाम हैं। इस संश्लिष्टता को आलोचकरामस्वरूप चतुर्वेदी ने 'विरुद्धों के सामंजस्य' के रूप में रेखांकित किया है और इसे भारतीय मानस की विशिष्ट पहचान बताया है।

भारतीय महाकाव्य इस मानसिकता के उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। रामायण में हम देखते हैं कि राजगद्दी का भार उठाने से उत्तराधिकारी पीछे हटते हैं—राम का वनगमन इसका प्रतीक है। इसके विपरीत महाभारत में सत्ता प्राप्ति के लिए भीषण संघर्ष, छल और रक्तपात दिखाई देता है। एक ओर त्याग और मर्यादा हैदूसरी ओर अधिकार और महत्वाकांक्षा। इसके बावजूद ये दोनों महाकाव्य भारतीय समाज में समान रूप से स्वीकृत और पूज्य हैं। साधारण जनमानस ने इन्हें किसी विरोधाभास के रूप में नहीं, बल्कि जीवन के विविध सत्य रूपों के रूप में अपनाया है। यही बात भारतीय साहित्य की आत्मा को उजागर करती है।

मध्यकालीन भक्ति आंदोलन ने इस साहित्यिक एकता को और अधिक गहरा किया। जब संस्कृत, प्राकृत और अपभ्रंश में रचित ग्रंथों का लोकभाषाओं में पुनर्कथन हुआतो वह केवल भाषांतरण नहीं थाबल्कि सांस्कृतिक पुनर्सृजन था। अवधी में तुलसीदास की रामचरितमानस, ब्रज में सूरदास का काव्य, मराठी में ज्ञानेश्वर की ज्ञानेश्वरी, तमिल में कंबन की रामायण—ये सभी उदाहरण बताते हैं कि रचनाकारों ने मूल कथा को सुरक्षित रखते हुए अपनी भाषिक संवेदना, क्षेत्रीय अनुभव और लोकमानस के अनुरूप नए प्रसंग जोड़ेकुछ पुराने प्रसंगों में परिवर्तन किए और कथा को नए अर्थ दिए।

ज्ञानेश्वरी से जुड़ा प्रसंग इस युगबोध को अत्यंत प्रभावी ढंग से सामने लाता है। गीता के उपदेश संस्कृत में दिए जा रहे हैंपर अर्जुन उन्हें मराठी में समझने की इच्छा व्यक्त करता हैताकि वे उसके लिए अधिक सुलभ हों। कृष्ण अर्जुन की इस

मांग को स्वीकार करते हैं। यह प्रसंग केवल भाषा परिवर्तन का नहींबल्कि ज्ञान के लोकतंत्रीकरण का प्रतीक है। देखा जा सकता है ज्ञानेश्वरी अपने अस्तित्व और औचित्य की वैधता स्वयं निर्मित करती है। इसी तरह बंगाल में कृतिवास ओझा की रामायण या असम में माधव कंदली की रामायण भी स्थानीय समाज की आकांक्षाओं और संवेदनाओं को प्रतिबिंबित करती हैं।

लंबे समय तक औपनिवेशिक मानसिकता लिखित साहित्य को ही प्रामाणिक मानती रही। इसका परिणाम यह हुआ कि मौखिक और लोक साहित्य को हाशिये पर डाल दिया गया। जबकि वास्तविकता यह है कि लिखित साहित्य मौखिक परंपरा का एक छोटासा अंश मात्र है। भारतीय समाज की आत्मा लोकगीतों-, कथाओं, कहावतों, मिथकों और अनुष्ठानिक गायन में अधिक जीवंत रूप में निवास करती है। ग्राम्य जीवन और लोक साहित्य के महत्व को सबसे पहले रेखांकित करने वालों में रामनरेश त्रिपाठी का नाम प्रमुख है। उन्होंने ग्राम साहित्य के अध्ययन को प्राचीन भारत और उसके निवासियों के वास्तविक स्वरूप को समझने की कुंजी बताया। उनका यह कथन कि हम अपने ही देश को 'यूरोप की दृष्टि' से देखने लगे हैं, औपनिवेशिक प्रभाव की गहरी आलोचना करता है।

वाचिक साहित्य के अध्येताओं ने बारभिन्न भाषाओं और बोलियों में रचित -बार यह इंगित किया है कि भिन्न-लोक साहित्य की अंतर्वस्तु में अद्भुत समानता और एकता है। बंगला की प्रसिद्ध लेखिका नवनीता देवसेन ने तेलुगु लोकगीतों में रामकथा पर अपने अध्ययन के दौरान यह अनुभव किया कि वर्षों तक वे रामायण के केवल 'ढांचे' से परिचित थींउसके 'प्राण' से नहीं। यह प्राण उन्हें तेलुगु स्त्रियों द्वारा गाए जाने वाले रामकथागीतों में मिला। यही स्थिति उत्तर -भारत की सोहर, आल्हा, बिरहा परंपरा या राजस्थान की पाबूजी की फड़ और बंगाल की मंगलकाव्य परंपरा में भी देखी जा सकती है।

रामकथा ही नहीं, महाभारत, कृष्णकथाएँ-, लोकदेवताओं की आख्यान परंपराएँ और सूफीसंत साहित्य भी -विभिन्न भाषाओं में लोकानुवाद के माध्यम से पीढ़ीपीढ़ी प्रवाहित हुआ। इन अनुवादों का कोई आधिकारिक -दर- इतिहास नहीं मिलताक्योंकि इन्हें साहित्यिक'कैनन' में लंबे समय तक स्थान नहीं दिया गया। इन्हें समझने के लिए इतिहास, साहित्य और अनुवाद की हमारी पारंपरिक धारणाओं को अधिक उदार और समावेशी बनाना आवश्यक है।

भारत को एक राष्ट्र के रूप में देखने की अवधारणा औपनिवेशिक काल में स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान विकसित हुई। यूरोप के एकलराज्य मॉडल को आदर्श मान लिया गया-सांस्कृतिक राष्ट्र-, जबकि भारत मूलतः बहुभाषिक, बहुधार्मिक और बहुसांस्कृतिक समाज था। इस बुनियादी अंतर को अक्सर नज़रअंदाज़ कर दिया गया। औपनिवेशिक सत्ता द्वारा गढ़ी गई भारत की छवि अधिक प्रभावशाली सिद्ध हुई और राष्ट्र निर्माण में लगे भारतीयों ने भी उसी दृष्टि से स्वयं को देखने की कोशिश की। इसके परिणामस्वरूप सामाजिक सुधार आंदोलनों का जन्म हुआ—ब्रह्म समाज, प्रार्थना समाज, थियोसोफिकल सोसायटी जैसी संस्थाएँ अस्तित्व में आईं।

इन्हीं हलचलों के बीच आधुनिक भारतीय साहित्य का निर्माण हुआ। आज जिसे हम 'भारतीय साहित्य' कहते हैं, वह काफी हद तक औपनिवेशिक काल की देन है। 'भारतीय इतिहास', 'भारतीय संस्कृति' और 'भारतीय साहित्य' जैसे पदबंध भी इसी समय प्रचलन में आए। इस निर्मिति में अनुवाद की भूमिका अत्यंत निर्णायक रही। भारतीय ग्रंथों का यूरोपीय भाषाओं में बड़े पैमाने पर अनुवाद हुआ, जिससे पश्चिम में भारत की एक विशेष छवि बनी। हालांकि इन अनुवादों में अनुवादकों के पूर्वग्रह, धार्मिक उद्देश्य और औपनिवेशिक हित भी सक्रिय थे।

ईसाई मिशनरियों द्वारा किए गए अनुवादों, विशेषकर बाइबिल के भाषांतरण ने भारतीय भाषाओं में आधुनिक गद्य के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। प्रिंटिंग प्रेस की स्थापना से प्रकाशन की संभावनाएँ बढ़ीं और गद्य लेखन एक सशक्त धारा के रूप में उभरा। इस प्रकार गद्य का विकास और अनुवाद की प्रक्रिया परस्पर गहराई से जुड़ी रही।

भारतीय साहित्यकारों ने नवोदित राष्ट्र की आकांक्षाओं के अनुरूप नए साहित्य के सृजन पर जोर दिया और अनुवाद को एक आवश्यक साधन माना। भारतेंदु हरिश्चंद्र ने मातृभाषा में ज्ञानविज्ञान के अनुवाद की आवश्यकता पर बल -

देते हुए स्पष्ट कहा कि जब तक विद्या अपनी भाषा में नहीं आएगीतब तक समाज उसका पूरा स्वाद नहीं ले सकता। इसी तरह रवींद्रनाथ टैगोर ने बांग्ला में और सुब्रह्मण्य भारती ने तमिल में अनुवाद की गति को तेज करने का आग्रह किया। इनके लिए अनुवाद केवल भाषिक कार्य नहींबल्कि सांस्कृतिक आत्मसम्मान और राष्ट्रीय स्वत्व की स्थापना का माध्यम था।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारतीय बौद्धिक जगत में औपनिवेशिक प्रभावों से मुक्त होने की सचेत कोशिश शुरू हुई। प्रगतिशील लेखक आंदोलन इस दिशा में पहला बड़ा कदम था। इस आंदोलन ने साम्राज्यवाद और सामंतवाद के विरुद्ध संघर्षरत साहित्य को भारतीय भाषाओं में अनूदित किया। टॉल्स्टॉय, दोस्तोव्स्की और गोर्की जैसे लेखकों की रचनाएँ भारतीय भाषाओं में पहुँचीं। गोर्की का उपन्यास माँ भारतीय युवाओं की एक पूरी पीढ़ी के लिए क्रांतिकारी चेतना का स्रोत बना। इसी दौर में प्रेमचंद, टैगोर और अन्य भारतीय लेखकों की कृतियाँ विश्व की अनेक भाषाओं में अनूदित हुईंजिससे भारत की एक नई, यथार्थवादी छवि उभरी।

बीसवीं सदी के उत्तरार्ध में नारीवादी आंदोलन और दलित आंदोलन ने अनुवाद की प्रक्रिया को नई दिशा दी। स्त्री लेखन और दलित साहित्य के अनुवादों ने भारतीय साहित्य में हाशिए के अनुभवों को केंद्र में ला खड़ा किया। मराठीहिंदी - जब-सूर्यनारायण रणसुभे ने अनुवाद को सामाजिक परिवर्तन से जोड़ते हुए कहा कि जब .दलित साहित्य के अनुवादक डॉ समता और न्याय के लिए संघर्ष तेज होता हैतबतब अन्य भाषाओं की प्रगतिशील कृतियों के अनुवाद की आवश्यकता - भी बढ़ जाती है।

विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रमों में दलित साहित्य के समावेश से अनुवाद की गतिविधियाँ और तेज हुईं। आज आदिवासी साहित्यपूर्वोत्तर भारत का साहित्य और प्रवासी भारतीय लेखन भी अनुवाद के माध्यम से व्यापक पाठक वर्ग तक पहुँच रहा है। महादेवी वर्मा की आदिवासी रचनाएँमहाश्वेता देवी की कहानियाँया नीलकंठ पॉल की पूर्वोत्तर कथाएँ— इन सबके अनुवादों ने भारतीय साहित्य के दायरे को और विस्तृत किया है।

भारतीय साहित्य की पहचान आज भी एक गतिशील प्रक्रिया है। यह पहचान बहुलता में निहित एकता, लोक और शास्त्र के संवाद, और अनुवाद के माध्यम से निरंतर विस्तृत होती रही है। भारतीय साहित्य न तो किसी एक भाषा में सीमित है और न ही किसी एक विचारधारा में। इसकी वास्तविक शक्ति इसकी संश्लिष्टता, संवादशीलता और समावेशी चेतना में निहित है। यही समकालीन भारतीय साहित्य का सबसे बड़ा परिचय और उसकी स्थायी पहचान ।

9.8 सारांश

इस इकाई के अध्ययन के माध्यम से भारतीय साहित्य की अवधारणाउसकी बुनियादी विशेषताओं तथा उसके ऐतिहासिक विकास की सम्यक समझ विकसित होती है। भारतीय साहित्य किसी एक भाषा, काल या विचार तक सीमित न होकर एक व्यापक सांस्कृतिक प्रक्रिया का परिणाम है। राष्ट्र के रूप में भारत की औपचारिक कल्पना भले ही आधुनिक काल में हुई होकिंतु उसकी राष्ट्रीय चेतना बहुत पहले से सांस्कृतिक स्तर पर विद्यमान थी। समान सामाजिक परंपराएँ, मिलतेभाग के निवासियों को आपस में जोड़ते थे। साहित्य इस -मूल्य और साझा जीवनादर्श इस विशाल भू-जुलते जीवन-सांस्कृतिक एकता को अभिव्यक्त करने का सशक्त माध्यम रहा है।

भारत में समयसमय पर उठे विभिन्न सामाजिक-, धार्मिक और सांस्कृतिक आंदोलनों ने इस एकता को नए अर्थ दिए। बौद्ध और जैन आंदोलनों ने धर्म और ज्ञान को जनसाधारण तक पहुँचाकर प्रभुत्वशाली परंपराओं को चुनौती दी। भक्ति आंदोलन ने भाषा और भाव के स्तर पर धर्म का लोकतंत्रीकरण किया, जिससे साहित्य और अनुवाद को नई दिशा मिली। इन आंदोलनों के कारण विभिन्न भाषाओं के बीच संपर्क बढ़ा, संपर्क भाषाओं का विकास हुआ और अनुवाद की आवश्यकता भी तीव्र हुई।

स्वाधीनता आंदोलन के दौर में साहित्य में राजनीतिक चेतना का प्रवेश हुआ। इससे न केवल भारतीयों की आत्मछवि बदली, बल्कि साहित्य की विषयवस्तु और प्राथमिकताओं में भी परिवर्तन आया। स्वतंत्रता के बाद के

सामाजिकसांस्कृतिक आंदोलनोंजैसे प्रगतिशील-, नारीवादी और दलित आंदोलनोंने इस आत्मछवि को और परिष्कृत किया। वैश्विक परिदृश्य में भारत की सक्रिय भागीदारी में अनुवाद ने सेतु का कार्य किया। इस प्रकार भारतीय साहित्य और अनुवाद एकदूसरे से गहर-ाई से जुड़े हुए हैं और मिलकर भारतीय सांस्कृतिक चेतना को निरंतर समृद्ध करते हैं।

✓ 9.9 प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा)

प्रश्न :का उत्तर 1 भारतीय साहित्य की अवधारणा को समझना वस्तुतः भारतीय सभ्यता, संस्कृति और राष्ट्रीय चेतना को समझने के समान है। यह साहित्य किसी एक भाषा, एक कालखंड या एक विचारधारा तक सीमित नहीं हैबल्कि यह सहस्राब्दियों से विकसित उस सामूहिक मानस की अभिव्यक्ति हैजिसे हम 'भारतीय मनीषा' कहते हैं। भारतीय साहित्य की व्यापकता, गहराई और बहुलता ही उसकी सबसे बड़ी विशेषता है।

प्रश्न :का उत्तर 2 डॉनगेन्द्र ने भारतीय साहित्य को भारतीय मनीषा की अभिव्यक्ति के रूप में परिभाषित करते हुए इसे . भारत के प्रबुद्ध मानस की सामूहिक चेतना से जोड़ा है।उनके अनुसार यह चेतना सहस्राब्दियों से संचित अनुभूतियों, विचारों और जीवनदृष्टियों का सार हैजिससे भारतीय संस्कृति-, राष्ट्रीयता और साहित्य का निर्माण हुआ है।

प्रश्न :का उत्तर 3 भारतीय साहित्य की अवधारणा के विकास में श्री अरविंद का योगदान विशेष उल्लेखनीय है। उन्होंने भारतीय साहित्य की आत्मा को आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि में निहित माना। उनके अनुसार भारतीय साहित्य का मूल स्वर जीवन और जगत को आध्यात्मिक दृष्टि से देखने की प्रवृत्ति है।

प्रश्न :का उत्तर 4 भारतीय साहित्य की प्रमुख प्रवृत्ति चारण काव्य की मानी जाती है। चारण काव्य का आशय उन रचनाओं से है, जिनमें राजाओं और वीरों की प्रशंसा, शौर्य और कीर्ति का गान किया गया है। यह परंपरा लगभग सभी भारतीय भाषाओं में पाई जाती है। संस्कृत में यह प्रवृत्ति अत्यंत प्राचीन हैकिंतु तमिल साहित्य में भी संगम काल से प्रशस्ति काव्य मिलने लगते हैं।

प्रश्न :का उत्तर 5 असमिया साहित्य में शंकरदेव की वैष्णव भक्ति के प्रमुख प्रचारक थे |

🔍 9.10 अधिक जानने के लिए पढ़ें

- Bassnett, Susan and Trivedi, Harish (eds.) ((1999, Post ColonialTranslaiton: Theory and Practice
- Venuti, Lawrence (ed), ((2000, The Translation Studies Reader, London & New York, Routledge.
- Baker, Mona (ed.), :1998Encyclopedia of Translation Studies, London and Newyork, London.
- गोस्वामी, कृष्ण कुमार, अनुवाद विज्ञान की भूमिका, नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन।
- टंडन, पूरनचंद, अनुवाद के विविध आयाम, दिल्ली, तक्षशिला प्रकाशन।
- नगेंद्र (.सं), अनुवाद 1993, सिद्धांत एवं अनुप्रयोग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली।
- श्रीवास्तव, रवींद्रनाथ, एवं गोस्वामी, कृष्ण कुमार (.सं), 1995, अनुवाद सिद्धांत और समस्याएँ, दिल्ली, आलेख प्रकाशन।

- Bathgate, R. H., 1981, Studies of Translation Model I&II: The
- Newmark, Peter, 1981, Approaches to Translation, Oxford, Pergamon Press.

? 9.11 अभ्यास प्रश्न

-संक्षिप्त प्रश्नों के उत्तर लिखिए (क)

.1 डॉरामविलास शर्मा ने भारतीय साहित्य को किस प्रकार परिभाषित किया है .?

.2 भारतीय साहित्य की तीन विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

.3 वैष्णव भक्ति के काव्य से आप क्या समझते है ?

.4 डॉनगेंद .ृर ने आधुनिक भारतीय साहित्य के विकास क्रम को किटने भागों में बांटा है ?

.5 अखिल भारतीय साहित्यिक आंदोलन ने अनुवाद के विकास में किस प्रकार भूमिका निभाई है?

-निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए (ख)

.1 भारतीय साहित्य का स्वरूप एवं अवधारणा पर एक सार गर्भित आलेख तैयार कीजिए |

.2 भारतीय साहित्य का वैचारिक आधार को अपने शब्दों में लिखिए |

.3 भारतीय साहित्य परंपरा में अनुवाद की भूमिका को विविध उदाहरणों द्वारा स्पष्ट कीजिए |

.4 सामाजिक सांस्कृतिक आन्दोलन ने भारतीय साहित्य व अनुवाद पर प्रभाव किस प्रकार प्रभावित किया है-स्पष्ट कीजिए |

.5 भारतीय साहित्य में अनुवाद की सृजनात्मक भूमिका पर प्रकाश डालिए |

शब्दकोश:

.1 सर्वोच्च सबसे ऊपर ,उच्चतम :

.2 विरासत,उत्तराधिकारी ,वारिस ,वसीयत :

.3 जीवंत प्राणवान ,जीवित ,सजीव :

.4 आधारभूत मूल ,प्रधान ,मौलिक :

.5 बुनियादी असली ,प्राथमिक ,मूलभूत :

.6 सौहार्द मैत्री ,मित्रता ,भाईचारा :

*** ***** ***

इकाई 10: तुलनात्मक साहित्य अनुवाद के सन्दर्भ में

इकाई की रुपरेखा

10.1 उद्देश्य
10. 2 प्रस्तावना
10. 3 तुलनात्मक साहित्यपरिभाषा और स्वरूप ,अर्थ :
10. 4 तुलनात्मक अध्ययनआवश्यकता और महत्व ,क्षेत्र :
10. 5 तुलनात्मक साहित्य अध्ययन और अनुवाद ,परंपरा :
10.6 तुलनात्मक साहित्य अनुवाद और नवीन दृष्टिकोण ,बहुलता :
10. 7 भारतीय साहित्य की अवधारण और अनुवाद की भूमिका
10.8 तुलनात्मक साहित्य में अनुवाद की सृजनात्मक और केन्द्रीय भूमिका
10. 9 सारांश
10. 10 प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा)
10. 11 अधिक जानने के लिए पढ़ें
10. 12 अभ्यास प्रश्न

.101 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन से आप:

- तुलनात्मक साहित्य के अर्थ| परिभाषा और स्वरूप से अवगत हो सकेंगे ,
- तुलनात्मक अध्ययन के विविध क्षेत्रआवश्यकता और महत्व के बारे में जानकारी प्राप्त कर ,ेंगे |
- तुलनात्मक साहित्य की परंपरा| अध्ययन और अनुवाद के बारे में जानेंगे ,
- भारतीय साहित्य की अवधारण और अनुवाद की भूमिका से अवगत होंगे |
- तुलनात्मक साहित्य में अनुवाद की सृजनात्मक और केन्द्रीय भूमिका को समझ सकेंगे |

10.2 प्रस्तावाना

साहित्य और संस्कृति के अध्ययन के लिए प्राचीन काल से लेकर आधुनिक समय तक अनेक पद्धतियाँ विकसित होती रही हैं। उन्नीसवीं शताब्दी में तुलनात्मक साहित्य एक महत्त्वपूर्ण अनुशासन के रूप में स्थापित हुआ। इसके अतिरिक्त समाजशास्त्रीय, मनोवैज्ञानिक, संरचनावादी आदि दृष्टियों से भी साहित्य का विश्लेषण किया जाता रहा है। इन विविध पद्धतियों के माध्यम से साहित्य के नए रूप और अर्थ सामने आए हैं। विशेषतः तुलनात्मक साहित्य ने साहित्य की संरचना और स्वरूप को समझने की एक नई दृष्टि प्रदान की है। इसलिए इस अनुशासन का विस्तृत अध्ययन आवश्यक प्रतीत होता है।

प्रस्तुत इकाई में तुलनात्मक साहित्य के अध्ययन में अनुवाद की भूमिका पर विस्तार से विचार किया जा रहा है। यह स्पष्ट हो जाता है कि अनुवाद के बिना तुलनात्मक साहित्य का क्षेत्र अत्यंत सीमित रह जाएगा। अनुवाद मात्र भाषाओं के बीच शब्दों का रूपांतरण नहीं है, बल्कि यह एक सांस्कृतिक प्रक्रिया हैजो अपने स्वभाव में अंतरसांस्कृतिक और

अंतरसामाजिक होती है। यदि अनुवाद में स्रोत भाषा के सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भों को स्थान न मिले, तो मूल साहित्य की संवेदना नष्ट हो जाती है। देखा जा सकता है कि अनुवाद को लक्ष्य भाषा में साहित्य का सृजनात्मक अंतरण कहा जा सकता है।

सूचना तकनीक के विकास ने संसार को 'वैश्विक गाँव' का स्वरूप दे दिया है। ऐसी स्थिति में विभिन्न समाजों की परंपराओं, रीतिरिवाजों-, साहित्य, अच्छाइयोंबुराइयों और रूढ़ियों को समझना अनिवार्य हो गया है। भारत जैसे - बहुभाषिक और सा ंस्कृतिक विविधता वाले देश में अनुवाद इस आपसी समझ को सुदृढ़ करता है। अनुवादों के अभाव में तुलनात्मक साहित्य एक ही भाषा के दायरे में सिमट जाएगा और अन्य भाषाओं के साहित्य से हमारा परिचय नहीं हो पाएगा।साहित्य के अतिरिक्त ज्ञान और तकनीकी क्षेत्रों में भी अनुवाद की आवश्यकता महसूस की गई है। बीसवीं शताब्दी के प्रारंभ में आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी द्वारा किए गए अनुवाद इस दिशा में उल्लेखनीय हैं। आधुनिक भारत में भारतीयता की अवधारणा के सशक्त होने, स्त्रीविमर्श-, दलित विमर्श और मानवाधिकार जैसे प्रश्नों के जुड़ने से-तुलनात्मक साहित्य के अध्ययन का दायरा और व्यापक हुआ है। इसके परिणामस्वरूप भारतीय भाषाओं, लोक भाषाओं तथा उनके साहित्य के अध्ययन और अनुवाद को नई दृष्टि और महत्त्व प्राप्त हुआ है।

10.3 तुलनात्मक साहित्यपरिभाषा और स्वरूप ,अर्थ :

तुलनात्मक साहित्य, तुलनात्मक अध्ययन, विश्व साहित्य तथा सार्वभौम साहित्य जैसे पद आधुनिक साहित्यिक विमर्श में अत्यंत महत्वपूर्ण माने जाते हैं। इन शब्दों को लेकर विद्वानों के बीच लंबे समय से वैचारिक मंथन चलता रहा है। अंग्रेज़ी साहित्य में 'Comparative Literature' शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम मैथ्यू आर्नल्ड ने सन् में किया थाकिंतु 1848 इससे पूर्व फ्रांसीसी और जर्मन परंपराओं में तुलनात्मक अध्ययन की प्रवृत्ति विकसित हो चुकी थी। भारत में तुलनात्मक साहित्य को एक स्वतंत्र अकादमिक अनुशासन के रूप में प्रतिष्ठित करने का श्रेय मुख्यतः बुद्धदेव बोस को जात ा हैजिनके प्रयासों से जादवपुर विश्वविद्यालय में इसका प्रथम विभाग स्थापित हुआ। समय के साथ यह स्पष्ट होता गया कि 'तुलनात्मक साहित्य' और 'तुलनात्मक अध्ययन' मूलतः एक ही बौद्धिक प्रक्रिया के दो नाम हैं।

तुलनात्मक साहित्य का अर्थ किसी एक साहित्य, भाषा या राष्ट्र की सीमाओं में बँधकर अध्ययन करना नहीं हैबल्कि एक से अधिक साहित्यों को साथ रखकर उन्हें व्यापक संदर्भों में समझना है। इस अध्ययन का उद्देश्य यह निर्धारित करना नहीं होता कि कौनसा निकृष्ट-सा साहित्य श्रेष्ठ है या कौन-, बल्कि यह जानना होता है कि विभिन्न साहित्यों में किन आधारों पर समानता और असमानता दिखाई देती है। प्रोकोई भी " इन्द्रनाथ चौधुरी ने इस संदर्भ में स्पष्ट किया है कि . साहित्यकार तुलनात्मक साहित्य की रचना नहीं करता, क्योंकि साहित्यिक सृजन अपने आप में पूर्ण और स्वतंत्र होता है। तुलनात्मकता रचना की नहींबल्कि अध्ययन की विशेष प्रक्रिया है "।इस दृष्टि से तुलनात्मक साहित्य एक ऐसी मानसिक प्रवृत्ति या दृष्टिकोण हैजो साहित्य को व्यापक सामाजिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और वैचारिक संदर्भों में रखकर देखती है। यह अध्ययन साहित्य के भीतर छिपी उस एकरस मानवीय चेतना को पहचानने का प्रयास करता हैजो विभिन्न भाषाओं और संस्कृतियों में भिन्नभिन्न रूपों में अभिव्यक्त होती है।-

तुलनात्मक साहित्य:परिभाषा :

तुलनात्मक साहित्य को परिभाषित करने के अनेक प्रयास हुए हैं। कुछ प्रमुख पाश्चात्य और भारतीय विद्वानों की परिभाषाएँ इस प्रकार हैं-

हेनरी एचतुलनात्मक साहित्य एक राष्ट्र के साहित्य की परिधि के परे दूसरे राष्ट्रों के साहित्य के साथ ":रीमेक .एच. तुलनात्मक अध्ययन है। यह अध्ययन कला, इतिहास, समाज, विज्ञान, धर्मशास्त्र आदि ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों के आपसी संबंधों का भी अध्ययन है।"

रेने वेलेकतुलनात्मक साहित्य":, साहित्य के समग्र रूप का अंतरराष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में अध्ययन करता है। जिसके मूल में यह भावना रहती है कि साहित्यिक सृजन और आस्वाद की चेतना जातीय एवं राजनीतिक, भौगोलिक सीमाओं से मुक्त एकरस और अखंड होती है।"

क्लाइव स्कॉटतुलनात्मक साहित":्य में विभिन्न भाषाओं में लिखित साहित्यों अथवा उसके संक्षिप्त घटकों की साहित्यिक तुलना होती है और यही उसका आधार तथ्य है।"

पॉल वान टिगेमतुलनात्मक साहित्य विभिन्न साहित्यों के पारस्परिक संबंधों के इतिहास का अध्ययन है अथवा ": अंतरराष्ट्रीय साहित्यिक संबंधों का इतिहास है।"

टीतुलना और विश्लेषण आलोचक के प्रमुख औजार हैं। मूल्यांकनपरक आलोचना श्रेष्ठता को ":इलियट .एस . "मापने के लिए तुलनात्मक पद्धति का लाभ उठाती है।

डॉतुलनात्मक साहित्य एक प्रकार का अंतःसाहित्यिक अध्ययन है जो अनेक भाषाओं को आधार मानकर ":नगेन्द्र . चलताहै और जिसका उद्देश्य होता है"अनेकता में एकता का संधान।-

इन्द्रनाथ चौधुरीतुलनात्मक साहित्य विभिन्न साहित्यों का तुलनात्मक अध्ययन है तथा साहित्य के साथ ज्ञान के ": "दूसरे क्षेत्रों का भी तुलनात्मक अध्ययन है।

इन परिभाषाओं के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि तुलनात्मक साहित्य एक ऐसा अनुशासन है जो साहित्य को राष्ट्रीय सीमाओं से परे, वैश्विक और अंतःविषयक दृष्टि से देखने का अवसर प्रदान करता है।

तुलनात्मक साहित्य का स्वरूप:

तुलनात्मक साहित्य का स्वरूप उसकी अध्ययनपद्धति और दृष्टिकोण से निर्धारित होता है। इसक-ा मूल आधार साम्य और वैषम्य है। जब दो रचनाओं, दो रचनाकारों या दो साहित्यिक परंपराओं की तुलना की जाती हैतो उनके बीच विद्यमान समानताओं और भिन्नताओं के माध्यम से एक नई समझ विकसित होती है। यह नई समझ पहले से ही उन रचनाओं में निहित होती हैकिंतु तुलनात्मक अध्ययन उसे स्पष्ट और प्रत्यक्ष बना देता है।तुलनात्मक साहित्य का अध्ययन एक ही भाषा के भीतर भी किया जा सकता हैजहाँ दो समकालीन या भिन्न कालखंडों के रचनाकारों और प्रवृत्तियों की तुलना होती है। इसके साथसाथ भिन्न भाषाओं और राष्ट्रों के साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन भी इस-का महत्वपूर्ण क्षेत्र है। इस प्रक्रिया में केवल साहित्यिक तत्व ही नहीं, बल्कि उन रचनाओं को जन्म देने वाली सामाजिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक परिस्थितियाँ भी अध्ययन का विषय बनती हैं।

पाश्चात्य परंपरा में तुलनात्मक साहित्य के विभिन्न स्कूल विकसित हुए हैं। फ्रांसीसी और जर्मन विद्वानों ने साहित्यिक प्रभावों, संपर्कों और दस्तावेज़ी प्रमाणों पर विशेष बल दिया। अमेरिकी स्कूल ने तुलनात्मक साहित्य को ज्ञान के अन्य क्षेत्रों और साहित्यालोचन से जोड़कर देखा, जबकि रूसी स्कूल ने साहित्यिक विधाओंआंदोलनों और सांस्कृतिक संरचनाओं के तुलनात्मक अध्ययन को महत्व दिया। इन सभी दृष्टियों ने मिलकर तुलनात्मक साहित्य को एक समृद्ध और स्वतंत्र अनुशासन का रूप दिया।

तुलनात्मक साहित्य का महत्व इस तथ्य में निहित है कि यह साहित्यिक अध्ययन को संकीर्ण सीमाओं से मुक्त करता है और उसे वैश्विक दृष्टि प्रदान करता है। इसके माध्यम से विभिन्न भाषाओं और संस्कृतियों के बीच संवाद स्थापित होता हैपूर्वाग्रह कम होते हैं और मानवीय अनुभव की एकता को समझने में सहायता मिलती है। तुलनात्मक साहित्य यह सिद्ध करता है कि भले ही साहित्यिक अभिव्यक्तियाँ भिन्न होंपर उनके मूल में स्थित मानवीय संवेदनाएँ और मूल्य एक ही होते हैं। इस प्रकार तुलनात्मक साहित्य 'अनेकता में एकता' के सिद्धांत को साकार करता हुआ विश्व साहित्य की अवधारणा को सुदृढ़ करता है।

10.4 तुलनात्मक अध्ययनआवश्यकता और महत्व ,क्षेत्र :

तुलनात्मक अध्ययन का क्षेत्र अत्यंत व्यापक और बहुआयामी है। डॉदयाशंकर मिश्र के अनुसार तुलनात्मक . साहित्य का क्षेत्र बहुत विशाल है। अब तक सामान्यतः प्रभाव और वस्तु के आधार पर ही तुलनात्मक अध्ययन किया जाता रहा हैकिंतु आज इसकी सीमाएँ और अधिक विस्तृत हो गई हैं। साहित्यिक आंदोलनों, युगीन प्रवृत्तियों तथा विभिन्न साहित्यिक विधाओं का तुलनात्मक अध्ययन भी उतना ही आवश्यक है। युगप्रवृत्ति के आलोक में समग्र भारतीय - साहित्यिक दस्तावेजों की पड़ताल करने से न केवल तुलनात्मक साहित्य का इतिहास निर्मित होता हैबल्कि भारतीयता की पहचान सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, दार्शनिक और साहित्यिक स्तरों पर भी स्पष्ट होती है।

तुलनात्मक साहित्य का क्षेत्र केवल शिष्ट साहित्य तक सीमित नहीं हैबल्कि इसमें विभिन्न भाषाओं के लोकगीतों और लोकसाहित्य का संकलन तथा उनका तुलनात्मक अध्ययन भी शामिल है। साहित्य के अंतर्गत अनेक स्तरों पर तुलना संभव है—दो या दो से अधिक कवियों की तुलनाएक ही कवि की विभिन्न कृतियों का अध्ययन, अलगअलग साहित्यिक - प्रवृत्तियों या युगों की तुलना, एक ही कृति के विविध रूपों का विश्लेषण, तथा एक भाषा के साहित्य का दूसरी भाषा पर पड़े प्रभाव का अध्ययन। समान साहित्यिक प्रवृत्ति को लेकर विभिन्न भाषाओं के रचनाकारों की कृतियों का तुलनात्मक विवेचन भी इस क्षेत्र का महत्वपूर्ण पक्ष है। इसी प्रकार किसी साहित्यिक व्यक्तित्व या साहित्यिक प्रवृत्ति का अन्य भाषाओं के साहित्य पर प्रभाव भी तुलनात्मक अध्ययन का विषय बनता है।

दो या अधिक भाषाओं की कृतियों में किसी एक विधाजैसे कविता-, नाटक या उपन्यासका तुलनात्मक अध्ययन - साहित्यिक दृष्टि को और अधिक व्यापक बनाता है। विशेष रूप से हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं के तुलनात्मक अध्ययन तथा तुलनात्मक व्याकरण का कार्य हिंदी भाषा के प्रसार और विकास के लिए अत्यंत उपयोगी सिद्ध हो सकता है। भारत भाषाओं और संस्कृतियोः की विविधता का देश है। इस विविधता को राष्ट्रीय एकता के सूत्र में पिरोने के लिए गहन तुलनात्मक अध्ययन अनिवार्य हो जाता है। अनेकता में एकता की खोज ही तुलनात्मक अध्ययन का मूल उद्देश्य है। इसी कारण रवींद्रनाथ ठाकुर ने तुलनात्मक अध्ययन को "विश्व साहित्य" की संज्ञा दी है।

तुलनात्मक अध्ययन की आवश्यकता और महत्व इस तथ्य से स्पष्ट होता है कि इसके माध्यम से भाषाओं और साहित्यों के बीच परस्पर संपर्क और आदानप्रदान संभव होता है। इससे एक ही देश की विभिन्न सांस्कृतिक इकाइयाँ - परस्पर निकट आती हैं और विविधताओं के भीतर निहित मःूलभूत एकता का बोध होता है। तुलनात्मक साहित्य का अध्ययन एक नए मानवतावाद की भूमिका तैयार करता है और ऐसे सार्वभौमिक मूल्यों को सामने लाता हैजो व्यापक स्तर पर स्वीकार्य हो सकते हैं। किसी एक साहित्य का अध्ययन जहाँ सीमित संदर्भ में होता है, वहीं तुलनात्मक साहित्य अनिवार्यतः अनेक साहित्यों को साथ लेकर चलता है।

तुलनात्मक अध्ययन के लिए प्राचीन और आधुनिक का भेद गौण हो जाता हैजो भी तुलनीय है, वही इसका विषय बन सकता है। विविध भाषाओं के साहित्यों की तुलना से प्राप्त समानताओं के अनुसंधान द्वारा भारत की सांस्कृतिक, साहित्यिक और भावनात्मक एकता का स्पष्टीकरण होता है। लगभग सन् के बाद भारतीय विद्वानों का ध्यान 1935 तुलनात्मक पद्धति की ओर आकृष्ट हुआ और अनेक विश्वविद्यालयों में हिंदी को आधार बनाकर भारतीय भाषाओं के साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन आरंभ हुआ।वास्तव में तुलनात्मक अध्ययन आलोचना और अनुसंधान से भी अधिक व्यापक उत्तरदायित्व निभाता है। यह व्यक्ति के सीमित ज्ञानक्षेत्र का विस्तार करता है और उसे भाषा-, साहित्य और राष्ट्र की संकीर्ण सीमाओं से ऊपर उठाता है। मैक्समूलर के अनुसार, "सभी उच्चतर ज्ञान की प्राप्ति तुलना से हुई है और वह तुलना पर ही आधारित है।" इस प्रकार तुलनात्मक अध्ययन उच्चतर ज्ञानवृद्धि में सहायक सिद्ध होता है। यह विभिन्न साहित्यों के - बीच साम्य और वैषम्य को उजागर कर उनके कारणों की खोज करता है तथा भाषागत विविधताओं के भीतर निहित साहित्यिक एकरूपता को सामने लाता है।

तुलनात्मक अध्ययन का महत्व आज मानवतावाद और विश्वबंधुत्व की भावना के संदर्भ में और भी बढ़ गया है। - विश्व साहित्य की एकता और उसके माध्यम से विश्व मानव की एकता का उद्घाटन इसका प्रमुख लक्ष्य है। इससे ज्ञान का क्षेत्र विस्तृत होता हैसंकुचित मानसिकता से मुक्ति मिलती है और विभिन्न संस्कृतियों के बीच रागात्मक संबंध स्थापित होते हैं। वास्तव में तुलनात्मक अध्ययन विविध ज्ञानभंडारों के बीच सामंजस्य स्थापित करने का सशक्त माध्यम है और किसी - भी विषय का समग्र ज्ञान प्राप्त करने की वैज्ञानिक दृष्टि प्रदान करता है।

10.5 तुलनात्मक साहित्य अध्ययन और अनुवाद ,परंपरा :

तुलनात्मक साहित्य का उद्भव साहित्यिक रचनाओं की तुलना भर से जुड़ा हुआ नहीं हैबल्कि यह उस बौद्धिक चेतना का परिणाम है जिसने साहित्य को राष्ट्रीय सीमाओं से बाहर निकालकर देखने का साहस किया। विद्वानों के अनुसार 'तुलनात्मक साहित्य' शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग फ्रांस में में प्रकाशित ग्रंथ .ई 1816Course de littérature comparée में हुआ। इसके पश्चात में जर्मनी में यह शब्द प्रयोग में आया .ई 1854, जबकि अंग्रेज़ी परंपरा में मैथ्यू अर्नाल्ड ने .ई 1848 में तुलनात्मक साहित्य की अवधारणा को स्पष्ट रूप में सामने रखा। इन तथ्यों से यह स्थापित होता है कि तुलनात्मक साहित्य एक आधुनिक अनुशासन हैजिसकी वैचारिक भूमि उन्नीसवीं शताब्दी में तैयार हुई।यह स्पष्ट करना आवश्यक है कि तुलनात्मक साहित्य किसी प्रकार का साहित्यिक आंदोलन नहीं रहा। यह न तो रचनाकारों का साझा मंच है और न ही कलाकारों की कोई संगठित पहल। इसका स्वरूप मूलतः अकादमिक है। इसका विकास विश्वविद्यालयों, शोध संस्थानों और शैक्षणिक परिसरों में हुआ, जहाँ साहित्य को अध्ययन की वस्तु बनाकर देखा गया। विभागों की स्थापना हुई, व्याख्यान दिए गए, परिचर्चाएँ आयोजित की गईं और शोध निष्कर्षों के आधार पर इस अनुशासन की सैद्धांतिक संरचना निर्मित होती चली गई।

इसके बावजूद तुलनात्मक साहित्य की वैधता को लेकर प्रश्न उठते रहे। सन् में वेनेदेतो क्रोचे ने तुलनात्मक .ई 1903 साहित्य को स्वतंत्र अनुशासन मानने से इनकार करते हुए कहा किशुद्ध साहित्येतिहास और तुलनात्मक साहित्य में कोई मौलिक अंतर नहीं है। आगे चलकर सन् -के दशक में लेन कूपर ने इसे एक निरर्थक पद 1920'Bogus Term'बताते हुए - टिप्पणी की कि इसमें न तो कोई अर्थ है और न ही कोई व्यवस्थित संरचना—"Neither sense nor syntaxl" इसके विपरीत साइमन ज्यूने ने तुलनात्मक साहित्य की आत्मा 'प्रभाव' के अध्ययन में देखी और इसे इस अनुशासन का केंद्रीय तत्व माना।तुलनात्मक साहित्य की इस प्रभावके व्याख्यान के .ई 1835 संरचना को सूसन बैसनेट ने फिलारे शाल्स के सन्- माध्यम से और अधिक स्पष्ट किया है। फिलारे के अनुसार तुलनात्मक साहित्य का उद्देश्य यह जानना है कि विचार किस प्रकार विचार को प्रभावित करता हैसमाज किस तरह एकदूसरे से रूपांतरित होते हैं और राष्ट्र आपसी विनिमय के माध्यम - से क्या देते और क्या ग्रहण करते हैं। फ्रांस और इंग्लैंड के बीच पारस्परिक आकर्षण, जर्मनी की धर्मशास्त्रीय चेतना, इटली की कलात्मक संवेदना, फ्रांस की ऊर्जस्विता, स्पेन का कैथोलिक संस्कार और इंग्लैंड की प्रोटेस्टेंट दृष्टिये सभी यूरोपीय - प्रदान भविष्य की साहित्यिक दिशाओं को-सांस्कृतिक चेतना के निर्माण में सहभागी रहे हैं। यह सतत आदान भी प्रभावित करता है।

इसी संदर्भ में कहा जा सकता है कि तुलनात्मक साहित्य का मूल बीज शब्द-'प्रभाव' है। प्रारंभिक फ्रांसीसी तुलनात्मक अध्ययन कारण और प्रभाव की खोज तक सीमित रहा। यह स्वीकार किया गया कि कोई भी संस्कृति या राष्ट्र पूर्णतः आत्मनिर्भर नहीं होता। वह किसी न किसी स्तर पर बाहरी प्रभावों को ग्रहण करता है। उदाहरण के लिए भारतीय समाज को देखें तो वह विभिन्न कालखंडों में सोवियत रूस, अमेरिका और अन्य एशियाई संस्कृतियों से प्रभावित होता रहा है। उसी प्रकार भारतीय संस्कृति ने चीन, जापान और श्रीलंका जैसी सभ्यताओं को प्रभावित किया। यह प्रभाव साहित्य तक सीमित न होकर सामाजिक, दार्शनिक और राजनीतिक क्षेत्रों में भी दिखाई देता है।

यहीं एक जटिल प्रश्न उभरता हैप्रभाव और नकल के बीच अंतर कहाँ स्थापित किया जाए-? किस बिंदु पर प्रभाव रचनात्मक आत्मसात में बदल जाता है और कब वह मात्र अनुकरण बनकर रह जाता है? तुलनात्मक साहित्य इन्हीं सूक्ष्म प्रश्नों पर विचार करता है। प्रभाव का ग्रहण, सादृश्य, विषयवस्तु की समानता, जैविकता, साहित्येतिहास लेखन तथा अनुवाद की भूमिकाये सभी इसके अध्ययन क्षेत्र के प्रमुख पक्ष हैं।इन सरोकारों के आधार पर तुल-नात्मक साहित्य के विभिन्न संप्रदाय या 'स्कूल' विकसित हुए। जर्मन स्कूल ने 'Zeitgeist' अर्थात् युगचेतना तथा जातीय और नृतात्विक - मूलों की खोज पर बल दिया। फ्रांसीसी स्कूल ने प्रत्यक्षवाद के आधार पर प्रभाव और ग्रहण की पड़ताल की। अंग्रेज़ी स्कूल की विशेषता साहित:ियिक कृतियों का 'स्थान निर्धारण' रही, जिसमें रचनाओं को व्यापक परंपरा में रखकर समझा गया। इसके विपरीत अमेरिकी स्कूल ने फ्रांसीसी वर्चस्व को चुनौती देते हुए अंतरअनुशासनात्मक दृष्टिकोण अपनाया। हेनरी - रेमाक और रेने वेलेक ने स्पष्ट किया कि तुलनात्मक साहित्य किसी एक राष्ट्र या भाषा की सीमाओं में बँधा नहीं रह सकता। जहाँ फ्रांसीसी दृष्टि साहित्यिक उत्पाद पर केंद्रित थी, वहीं अमेरिकी दृष्टि रचनाप्रक्रिया को अधिक महत्व देती है।-

दीर्घ समय तक पाश्चात्य तुलनात्मक साहित्य यूरोपीय और विशेषतः अंग्रेज़ी साहित्य के इर्दगिर्-द केंद्रित रहा। बाद में अफ्रीकी, नाइजीरियाई और एशियाई विद्वानों ने इस एकांगी दृष्टि को चुनौती दी। भारतीय संदर्भ में देखें तो भारतीय साहित्य अपनी बहुभाषिकता और बहुसांस्कृतिक संरचना के कारण स्वभावतः तुलनात्मक रहा है। शिशिर कुमार दास, अमियदेव और स्वप्न मजूमदार जैसे विद्वानों ने भारतीय तुलनात्मक साहित्य को सैद्धांतिक दिशा प्रदान की।मैथ्यू अर्नाल्ड का यह कथन यहाँ अत्यंत प्रासंगिक है कि अध्ययन करते समय हमें साहित्य, घटनाओं और विचारों के बीच अंतर्संबंध दिखाई देते हैं। कोई भी रचना अलगथलग नहीं होती। शेक्सपीयर को सम-झने के लिए उसके लैटिन, फ्रेंच, स्पेनिश और इटालियन संदर्भों को जानना आवश्यक है। इसी प्रकार स्वच्छंदतावाद पूरे यूरोप में एक साथ फैला और अंग्रेज़ी उपन्यास रूसी उपन्यासों से प्रभावित हुए।

हिंदी साहित्य में प्रेमचंद को सही ढंग से समझने के लिए टॉल्स्ताय, गांधी, रूसी समाज और रूसी क्रांति की पृष्ठभूमि को ध्यान में रखना आवश्यक है। प्रेमचंद का वैचारिक संवाद हेगेल तक विस्तृत है। इसी प्रकार तुलसीदास की रामचरितमानस को समझने के लिए वाल्मीकि, भवभूति, भारतीय दार्शनिक परंपरा, शंकराचार्य, रामानुज, रामानंद, आलवार और भक्ति काव्य की पूरी परंपरा को समझना होगा। इन सभी संदर्भों को जोड़कर देखने पर ही तुलसीदास का सम्यक् मूल्यांकन संभव है।

अंततः यह कहा जा सकता है कि किसी एक भाषा या राष्ट्र के साहित्य तक सीमित रहकर न तो किसी रचना को और न ही किसी रचनाकार को पूर्ण रूप से समझा जा सकता है। साहित्यिक, सांस्कृतिक और दार्शनिक परंपराओं के बीच विद्यमान संबंधों को पहचानने और विश्लेषित करने की दृष्टि ही तुलनात्मक साहित्य की वास्तविक पहचान है।

.106 तुलनात्मक साहित्य अनुवाद और नवीन दृष्टिकोण ,बहुलता :

अंग्रेज़ी के 'Comparative Literatureपद का हिं'दी रूपांतर 'तुलनात्मक साहित्य' के रूप में प्रचलित हैकिंतु भारतीय भाषाओं में इस अनुशासन की परंपरा अपेक्षाकृत नई है। उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध से पहले भारतीय साहित्यिक चिंतन में तुलनात्मक अध्ययन एक सुव्यवस्थित पद्धति के रूप में विकसित नहीं हो सका था। आधुनिक अर्थों में इस दृष्टि को सबसे पहले रवींद्रनाथ ठाकुर ने 'विश्वसाहित्य-' की संकल्पना के माध्यम से रेखांकित किया। उन्होंने यह स्पष्ट किया कि साहित्य का अध्ययन किसी एक भाषा या परंपरा तक सीमित नहीं रह सकताबल्कि उसे व्यापक मानवीय अनुभवों और विविध सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों के संदर्भ में देखना आवश्यक है।

औपनिवेशिक शासन के दौर में तुलनात्मक दृष्टि का स्वरूप विशेष रूप से यूरोपकेंद्रित था। उस समय तुलनात्मक - के साहित्य के -विशेषतः अंग्रेज़ी-अध्ययन का आशय प्रायः भारतीय भाषाओं में रचे गए साहित्य को यूरोपीय भाषाओं समकक्ष रखकर देखने से था। कालिदास और शेक्सपीयर की तुलना इसी मानसिकता का परिचायक है। यह तुलना

साहित्यिक उत्कृष्टता को पहचानने का प्रयास तो थीकिंतु इसके पीछे औपनिवेशिक सत्तासंरचना भी सक्रिय थी। ऐसे में यह - प्रश्न स्वाभाविक है कि क्या तुलनात्मक साहित्य का अर्थ केवल दो या अधिक भाषाओं में रचित साहित्य को आमनेसामने - इंद्रनाथ चौधुरी इस धारणा को व्यापक रूप देते हैं। उनके अनुसार .प्रो | रखकर देखना भर है, चाहे साहित्य का अध्ययन एक ही भाषा में हो या अनेक भाषाओं मेंउसका केंद्र सदैव साहित्य ही रहता है। इस कारण तुलनात्मक साहित्य को किसी एक भाषा के साहित्यअध्ययन से अलग कर नहीं देखा जा सकता। तुलनात्मकता यहाँ संख्या का प्रश्न नहीं-, बल्कि दृष्टि का प्रश्न है। इसी आधार पर वे मानते हैं कि एकभाषिक और बहुभाषिक दोनों प्रकार के अध्ययन-'तुलनात्मक साहित्य' की परिधि में आते हैं।

तुलनात्मक साहित्य का महत्व भारत जैसे देश में और भी बढ़ जाता है, जहाँ बहुभाषिकता और बहुसांस्कृतिकता सामाजिक यथार्थ का अनिवार्य हिस्सा है। इस अनुशासन में कलात्मक सौंदर्यबोध)Aesthetic dimension) के साथ-) साथ सामाजिक और सांस्कृतिक आयामSocio-cultural dimension) भी सक्रिय रहते हैं। आधुनिक अर्थों में भारतीय संघ एक Nation-state अवश्य हैकिंतु वह अनेक राष्ट्रीयताओं, भाषाओं और सांस्कृतिक पहचानों का समुच्चय भी है। यद्यपि 'भारतीयता' की अवधारणा अब अधिक मुखर हो चुकी है, फिर भी भाषाई और प्रांतीय अलगाव की प्रवृत्तियाँ समयसमय पर उभर-ती रहती हैं। ऐसे संदर्भ में सांस्कृतिक बहुलतावादी दृष्टि भारतीय समाज को जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इस दृष्टि के बिना तुलनात्मक साहित्य की कोई भी परिभाषा अधूरी ही रहेगी।

अपनी प्रगति जांचें

प्रश्न .1 अंग्रेजी साहित्य में Comparative Literature शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम किसने किया था ?

प्रश्न .2भारत में तुलनात्मक साहित्य को एक स्वतंत्र अकादमिक अनुशासन के रूप में प्रतिष्ठित करने का श्रेय किसे जाता है ?

प्रश्न .3तुलनात्मक साहित्य से आप क्या समझते है ?

प्रश्न .4तुलनात्मक साहित्य के संबंध में प्रो. इंद्रनाथ चौधुरी ने क्या मत दिया था ?

प्रश्न .5हेनरी एच? एच रीमेक के अनुसार तुलनात्मक साहित्य का अर्थ क्या है .

इसी कारण प्रोइंद्रनाथ चौधुरी की यह परिभाषा अत्यंत सार्थक प्रतीत होती है कि तुलनात्मक साहित्य विभिन्न . साहित्यों का तुलनात्मक अध्ययन है और साथ ही साहित्य के माध्यम से ज्ञान एवं प्रतीति के अन्य क्षेत्रों का भी तुलनात्मक विश्लेषण करता है। वे यह भी स्पष्ट करते हैं कि तुलनात्मक साहित्य कोई स्वतंत्र सर्जनात्मक विधा नहींबल्कि साहित्य- अध्ययन की एक विशिष्ट दृष्टि है।यहाँ'साहित्य' शब्द की अवधारणा भी विचारणीय है। फ्रांस में Literature का अर्थ मुख्यतः 'साहित्यिक अध्ययन' से लगाया जाता हैजबकि भारत में इसका आशय स्वयं 'साहित्य' से है। यह शब्द संस्कृत काव्यशास्त्र से आया हैजहाँ साहित्य को 'शब्द और अर्थ का सहित भाव' माना गया है। तुलसीदास ने इसे अत्यंत सुंदर ढंग से व्यक्त किया है-

"गिरा अस्थ जलवीचि सम, कहियत भिन्न न भिन्न।"अर्थात शब्द और अर्थ जल की तरंगों की तरह अविभाज्य हैं। किंतु साहित्य केवल इस एकता तक सीमित नहीं रहता। शब्द और अर्थ का यह संबंध हर रचना में विशिष्ट होता है और इसी विशिष्टता से साहित्यिक सौंदर्य का जन्म होता है।

अलगअलग लेखकों और भाषाओं में शब्द-–अर्थ के संयोजन के पैटर्न भिन्न होते हैं। यही भिन्नता साहित्यिक वैविध्य को जन्म देती है। इस वैविध्य को समझने के लिए अन्य भाषाओं और संस्कृतियों का ज्ञान आवश्यक है। दूसरी भाषाओं से परिचय ही तुलनात्मक दृष्टि को विकसित करता है और इसी से अनुवाद की प्रवृत्ति को बल मिलता है। अनुवाद तुलनात्मक साहित्य का सबसे प्रभावी उपकरण है। भारत जैसे विविधताओं से भरे देश में अन्य भारतीय भाषाओं को

सीखने और अनुवाद को प्रोत्साहित करने की अत्यंत आवश्यकता है। तभी 'भारतीय साहित्य' की अवधारणा अपने संपूर्ण रूप में साकार हो सकेगी।

समकालीन वैश्विक विमर्श में तुलनात्मक साहित्य की संकल्पना में महत्वपूर्ण परिवर्तन आए हैं। अब इसे बहुसांस्कृतिकवाद और सांस्कृतिक अध्ययनों के संदर्भ में देखा जा रहा है। गायत्री चक्रवर्ती स्पीवाक ने अपनी पुस्तक Death of a Discipline ((2003में लिखा है-

"Since 1992, three years after the fall of the Berlin Wall, the discipline of comparative literature has been looking to renovate itself… in response to the rising tide of multiculturalism and cultural studies."

इस कथन से स्पष्ट है कि शीतयुद्ध और औपनिवेशिक दौर की यूरोपकेंद्रित तुलनात्मक अध्ययन पद्धतियाँ अब - अप्रासंगिक हो चुकी हैं। बर्लिन की दीवार का गिरना केवल राजनीतिक घटना नहीं, बल्कि एक वैचारिक मोड़ भी था।

नई वैश्विक परिस्थितियों में तुलनात्मक साहित्य ने अपने क्षितिज का विस्तार किया है। अब इसमें नई अस्मिताओं, लैंगिक विमर्श, जाति और नस्ल आधारित विषमताओं, स्थानीय संघर्षों और मानवाधिकार संबंधी प्रश्नों को भी शामिल किया जा रहा है। भारत जैसे विशाल और विविध देश में, जहाँ भाषाई, सांस्कृतिक, जातीय और लैंगिक असमानताएँ गहराई से मौजूद हैंइन अध्ययनों का महत्व और अधिक बढ़ जाता है।तुलनात्मक साहित्य में अनुवाद की भूमिका अत्यंत केंद्रीय है। अनुवादअध-ययन के समक्ष यह प्रश्न बारबार उठता है कि क्या अनुवाद सांस्कृतिक स्मृति को नष्ट करता है या - उसे आगे बढ़ाता है। वॉल्टर बेंजामिन का प्रसिद्ध कथन है कि एक श्रेष्ठ अनुवाद स्रोत भाषा की'मृत्यु' और लक्ष्य भाषा में उसके पुनर्जन्म के बीच खिंची सीमा को पार करके ही मूल को नया जीवन दे सकता है। इससे स्पष्ट होता है कि अनुवाद केवल भाषापरिवर्तन नहीं-, बल्कि रचना का पुनसृजन है।

महाकवि निराला ने 'चाबुक' में लिखा है—

"मूल का अक्षरशः अनुवाद जरूरी नहीं, परंतु अर्थ भी बदलना जरूरी नहीं है।"

यह कथन अनुवाद की सृजनात्मक जटिलता को रेखांकित करता है। प्रश्न यह है कि अनुवाद सृजन है या अनुकरण? प्रोइंद्रनाथ चौधुरी के अनुसार अनुवाद न तो पूरी तरह सृजन है और न ही मात्र अनुकरण। अनुवादक अपनी निजी प्रेरणा से . नहीं, बल्कि मूल कृति के अनुरूप सृजन करता है। वह विचारों को जस का तस प्रस्तुत नहीं करता, बल्कि उन्हें नए रूप में रूपांतरित करता है।

हार्स फ्रेंज को उद्धृत करते हुए प्रोचौधुरी कहते हैं कि अनुवाद एक नया जेस्टाल्ट है .—एक कलात्मक प्रक्रिया। इस प्रक्रिया में अनुवादक को मूल लेखक की दुनिया को फिर से जीना पड़ता है। उनका मानना है कि अनुवादक का वास्तविक कार्य 'बीज' की पहचान करना है। अंग्रेज़ी के कवि शैली के शब्दों में, पौधे को फिर से बीज में लौटना पड़ता हैतभी उसमें नए फूल खिल सकते हैं।ड्राइडन ने ओविड की Epistles के अनुवाद की भूमिका में साहित्यिक अनुवाद के तीन रूप बताए-

.1Metaphrase: शब्दशः अनुवाद

.2Paraphrase: अर्थ को बनाए रखते हुए कुछ स्वतंत्रता

.3Imitation: मूल से संकेत लेकर पूर्ण स्वतंत्रता

प्रोचौधुरी के अनुसार आदर्श अनुवादक न तो शब्दों का यांत्रिक मिलान करता है और न ही मूल का विरोधी होता . है। वह एक अधिवक्ता की तरह मूल रचना का पक्ष प्रस्तुत करता है। सफल काव्यानुवाद पूर्णतः आत्मसातीकरण पर निर्भर करता है। जब अनुवादक पूरी ईमानदारी से अपनी बात कहता है और पाठक से सीधा संवाद स्थापित करता हैतभी अनुवाद जीवंत बनता है।

अतः स्पष्ट है कि तुलनात्मक साहित्य और अनुवाद का उद्देश्य केवल तुलना या रूपांतरण नहीं, बल्कि विभिन्न भाषाओं, संस्कृतियों और अनुभवों के बीच सार्थक संवाद स्थापित करना है। यही तुलनात्मक अध्ययन का वास्तविक लक्ष्य और उसकी सबसे बड़ी उपलब्धि है|

10. भारतीय साहित्य की अवधारण और अनुवाद की भूमिका 7

भारतीय साहित्य में अनुवादों की भूमिका पर विचार करने से पूर्व यह स्पष्ट करना आवश्यक है कि "भारतीय साहित्य" से हमारा तात्पर्य क्या है। सामान्यतः इस पदबंध का प्रयोग एकवचन में किया जाता हैमानो यह कोई एकरूप, समरूप साहित्यिक इकाई हो। परंतु भारत की वास्तविकता इससे भिन्न है। भारत बहुभाषाओं, बहुजातीय परंपराओं और सांस्कृतिक विविधताओं का देश है। ऐसी स्थिति में यह प्रश्न स्वाभाविक रूप से उठता है कि क्या विभिन्न भारतीय भाषाओं में रचा गया साहित्य एक साझा पहचान के अंतर्गत "भारतीय साहित्य" कहा जा सकता है।

महत्वपूर्ण बिंदु

रैनेवेलेक ने तुलनात्मक साहित्य की अवधारणा पर गंभीर और मौलिक आलोचना प्रस्तुत की है। विशेष रूप से उन्होंने इस प्रवृत्ति पर प्रश्न उठाया है जिसमें एक साहित्य को दूसरे साहित्य के प्रभाव के संदर्भ में ही समझने का प्रयास किया जाता है। उनके अनुसार यह दृष्टि साहित्य की सर्जनात्मक स्वतंत्रता को सीमित कर देती है। सामान्य साहित्यिक आलोचना और तुलनात्मक साहित्य की तुलना करते हुए वे इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि साहित्य का मूल विषय स्वयं साहित्य है, न कि राष्ट्रीय सीमाएँ या प्रभावों का व्यापार।तुलनात्मक अध्ययन का एक क्षेत्र भाषाविज्ञान भी हैकिंतु ऐतिहासिक भाषाविज्ञान का आधार मात्र तुलनात्मक पद्धति नहीं है। ब्लूमफील्ड का मत है कि तुलनात्मक पद्धति प्रागैतिहासिक भाषाओं के पुनर्निर्माण की एकमात्र विधि मानी जाती हैपर यह कुछ ऐसी पूर्वधारणाओं पर आधारित है जो व्यवहार में पूरी नहीं होतीं। इसलिए यह पद्धति पूर्वऐतिहासिक भाषिक प्रक-ियाओं का पूर्ण और यथार्थ चित्र प्रस्तुत करने का दावा नहीं कर सकती। व्यापक काल और क्षेत्र में की गई तुलना अनेक आंशिक समानताओं को उजागर करती है जो वंशवृक्ष सिद्धांत से मेल नहीं खातीं। तरंग सिद्धांत यह दिखाता है कि भाषिक परिवर्तन पड़ोसी भाषाओं में फैलते हैं और किसी एक केंद्र तक सीमित नहीं रहते।

वेलेक को आशंका है कि यदि तुलनात्मक साहित्य को केवल विदेशी प्रभावों, अनुवादों और द्वितीय श्रेणी के लेखकों तक सीमित कर दिया गया, तो यह एक संकीर्ण अनुशासन बनकर रह जाएगा। उनका स्पष्ट मत है कि साहित्य को न तो राष्ट्रीय गौरव की लड़ाई का औज़ार बनाया जाना चाहिए और न ही विदेशी व्यापार की वस्तु। साहित्य मूलतः एक सर्जनात्मक अभिव्यक्ति है और उसे उसी रूप में समझना आवश्यक है।

पश्चिमी साहित्यिक दृष्टिकोण प्रायः एकरेखीय रहा है। इंग्लैंड, फ्रांस या अमेरिका में किसी साहित्य को राष्ट्रीय साहित्य कहने के लिए उसका क्रमशः अंग्रेज़ी या फ्रेंच भाषा में लिखा होना आवश्यक माना गया। अन्य भाषाओं में रचित साहित्य को राष्ट्रीय साहित्य की संज्ञा देने में वहाँ संकोच दिखाई देता है। इसी सोच का एक उदाहरण की सोवियत 1917 क्रांति के बाद स्टालिन की भाषानीति हैजिसके अंतर्गत रूसी भाषा को पूरे सोवियत संघ में अनिवार्य कर दिया गया। इस नीति के मूल में बहुभाषिकता और सांस्कृतिक बहुलता को विघटनकारी मानने वाली मानसिकता निहित थी।इसके विपरीत भारत का ऐतिहासिक अनुभव भिन्न रहा है। हमारी भौगोलिक और ऐतिहासिक परिस्थितियों ने भारत को सदैव बाहरी संस्कृतियों और भाषाओं के संपर्क में रखा। खैबर दर्रे के माध्यम से आने वाले आक्रमणकारी केवल राजनीतिक सत्ता ही नहीं लाएबल्कि अपनी भाषाएँ और सांस्कृतिक मूल्य भी साथ लाए। शताब्दियों तक चले इस संपर्क ने भारतीय समाज में भाषाओं और संस्कृतियों का एक विशिष्ट समन्वय निर्मित किया। परिणामस्वरूपभारतीय चेतना अन्य भाषाओं और

संस्कृतियों को भय या हीनता की दृष्टि से नहीं देखतीबल्कि उनकी स्वतंत्र पहचान और विशिष्टता से आकर्षित होती है। इस स्थिति को "विरुद्धों का सामंजस्य" कहा जा सकता है।

भारतीय साहित्य की अवधारणा इसी "अनेकता में एकता" के सिद्धांत पर आधारित है। इस विचार को संस्थागत रूप देने के उद्देश्य से सर्वपल्ली राधाकृष्णन का यह .में साहित्य अकादमी की स्थापना की गई। इस अवसर पर डॉ 1954 कथन अत्यंत महत्त्वपूर्ण है कि"भारतीय साहित्य एक है, किंतु वह अनेक भाषाओं में लिखा जाता है।" इससे पहले सुनीति कुमार चट्टोपाध्याय ने अपनी पुस्तक 'लैंग्वेजेज़ एंड लिटरेचर्स ऑफ इंडिया' में "भारतीय साहित्य" के लिए बहुवचन का प्रयोग किया था, जो इस बहुलतावादी दृष्टि को रेखांकित करता है।

स्वतंत्र भारत में राज्यों का गठन भले ही भाषाई आधार पर हुआकिंतु यह भाषाई विविधता कभी भी वैचारिक विभाजन का कारण नहीं बनी। प्रोइंद्रनाथ चौधुरी का यह निष्कर्ष उल्लेखनीय है कि भारतीय साहित्य के संदर्भ में क्षेत्र और . राष्ट्र, स्थानीयता और वैश्विकता के बीच के तनावों को परस्पर विरोधी नहीं, बल्कि परिपूरक)Complementary) रूप में समझा जाना चाहिए।भारतीय साहित्य में शैली और सांस्कृतिक अभिव्यक्ति की विविधता के बावजूद विषयवस्तु की एक गहरी एकता दिखाई देती है। मध्यकालीन भक्ति आंदोलन हो या उन्नीसवीं शताब्दी का नवजागरणदोनों ही कालखंडों में - साहित्य सामाजिक परिवर्तन और मानवीय मूल्यों की साझा चेतना को अभिव्यक्त करता है। प्रसिद्ध उक्ति है -"भक्ति द्राविड उपजी लाए रामानंद।" दक्षिण भारत से निकली भक्ति की धारा उत्तर भारत तक फैलकर एक अखिल भारतीय सांस्कृतिक आंदोलन बन गई। इसी प्रकार आधुनिक नवजागरण ने तमिल में सैमुअल वेदनायकम पिल्लै, तेलुगु में कृष्णम्मा चेट्टी, मलयालम में चंदू मेनन, हिंदी में भारतेन्दु मंडल तथा बांग्ला में मेरी हैचिसन जैसे रचनाकारों को राष्ट्रवाद और समाजसुधार - की चेतना से जोड़ा।

आधुनिक भारतीय साहित्य में अनुवाद की गतिविधियाँ इस एकता की भावना को निरंतर सुदृढ़ करती रही हैं। स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान यह विचार प्रबल हुआ कि औपनिवेशिक सत्ता की भाषा अंग्रेज़ी के स्थान पर किसी भारतीय भाषा को महत्व दिया जाए। महात्मा गांधी के नेतृत्व में हिंदी को उसकी अखिल भारतीय संभावनाओं के कारण राष्ट्रीय एकता के माध्यम के रूप में देखा गया।में रवींद्रनाथ ठाकुर को गीतांजलि के अंग्रेज़ी अनुवाद के लिए नोबेल 1913 पुरस्कार मिलना भारतीय अनुवाद परंपरा के लिए एक ऐतिहासिक प्रेरणा बना। प्रेमचंद ने मौरिस मैटरलिंक और जॉन गॉल्सवर्दी जैसे नोबेल पुरस्कार विजेताओं की कृतियों का उर्दू में अनुवाद किया और टॉलस्टॉय की कहानियों को भारतीय संदर्भ में रूपांतरित किया।

स्वातंत्र्योत्तर भारत में यह स्पष्ट हो गया कि अनुवाद केवल साहित्यिक प्रक्रिया नहींबल्कि बहुभाषी और सांस्कृतिक रूप से विविध राष्ट्र की सामाजिकराजनीतिक आवश्यकता है। भारतीय साहित्य की अवधारणा को विकसित और सुदृढ़ करने में अनुवाद की भूमिका अनिवार्य है। तुलनात्मक साहित्य इन्हीं प्रवृत्तियों की स्वाभाविक परिणति हैजो भारतीय साहित्य को संवाद, समन्वय और साझी चेतना का व्यापक मंच प्रदान करता है |

10.8 तुलनात्मक साहित्य में अनुवाद की सृजनात्मक और केन्द्रीय भूमिका

तुलनात्मक साहित्य का लक्ष्य विभिन्न भाषाओं और संस्कृतियों में रचे गए साहित्यिक अनुभवों को परस्पर संबद्ध करके समझना है। यह कार्य अनुवाद के बिना संभव नहीं हो सकता। अनुवाद ही वह माध्यम है जिसके सहारे एक भाषा का साहित्य दूसरी भाषा के पाठकों तक पहुँचता है और इसी प्रक्रिया से तुलनात्मक अध्ययन की आधारभूमि निर्मित होती है। यदि अनुवाद उपलब्ध न होतो तुलनात्मक साहित्य का अध्येता विविध साहित्यिक परंपराओं के बीच संवाद स्थापित करने में असफल रहेगा।

भारत में लंबे समय तक तुलनात्मक साहित्य का अध्ययन मुख्यतः एक ही भाषा में लिखे गए साहित्य तक सीमित रहा। परंतु समय के साथ साक्षरता दर में वृद्धि, संचार माध्यमों के विस्तार और वैश्वीकरण की प्रक्रिया ने भाषाई सीमाओं को

शिथिल किया है। परिणामस्वरूप नई भाषाएँ सीखने और उनसे जुड़ी संस्कृतियों को समझने की जिज्ञासा निरंतर बढ़ी है। औपनिवेशिक काल में अंग्रेज़ी भाषा हमारे लिए बाहरी दुनिया से जुड़ने का प्रमुख माध्यम थी। ज्ञानविज्ञान और विश्व - की सोवियत क्रांति के पश्चात रूसी साहित्य 1917 साहित्य की समझ प्रायः अंग्रेज़ी साहित्य तक ही सीमित रह गई थी। सन् का बड़े पैमाने पर हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं में अनुवाद हुआ। इन अनुवादों ने भारतीय पाठकों के बौद्धिक क्षितिज का विस्तार किया और यह चेतना भी उत्पन्न की कि केवल अंग्रेज़ी के माध्यम से ही विश्व साहित्य को नहीं समझा जा सकता। आरंभिक चरण में अन्य विदेशी भाषाओं तथा भारतीय भाषाओं के साहित्य का हिंदी में अनुवाद अधिकतर अंग्रेज़ी के माध्यम से किया गया। किंतु अब यह प्रवृत्ति बदल चुकी है और मूल भाषा से सीधे अनुवाद करने की प्रवृत्ति सशक्त हुई है।

मूल भाषा से अनुवाद की इस नई प्रवृत्ति ने विश्व साहित्य के द्वार तो खोले ही हैं, साथ ही भारतीय भाषाओं को भी परस्पर निकट लाने का कार्य किया है। अंतरभाषिक अनुवादों के कारण भारतीय विश्वविद्यालयों में तुलनात्मक साहित्य अध्ययन को नई दिशा और गति मिली है। अनुवाद अंतरसाहित्यिक संवाद का प्रभावी माध्यम बनकर उभरा है। लंबे समय - अनुशासन-तक तुलनात्मक साहित्य में अनुवाद अध्ययन को एक उपके रूप में देखा जाता रहाकिंतु अनुवाद के बढ़ते महत्व ने उसे स्वतंत्र अनुशासन के रूप में स्थापित करने का मार्ग प्रशस्त किया। इसी संदर्भ में सूसन बेसनेट का निम्नलिखित कथन अत्यंत महत्वपूर्ण है- "Comparative literature has always claimed the studies on translation as a sub-field, but now, when the last ones are establishing themselves, for their part, firmly as a discipline based on intercultural study, offering as well a methodology of a certain rigor, both in connection with theoretical work and with descriptive work, the moment has come in which comparative literature has not such an appearance to be a discipline on its own, but rather to constitute a branch of something else.")Bassnett, (1998:101

वास्तव में अनुवाद अपने आप में एक तुलनात्मक प्रक्रिया है। साहित्यिक अनुवाद की प्रत्येक क्रिया में दो भाषाओं और संस्कृतियों का तुलनात्मक विश्लेषण निहित रहता है। भारत जैसे बहुभाषिक देश में अनुवाद को केवल कला या विज्ञान के रूप में नहीं, बल्कि एक स्वतंत्र अनुशासन के रूप में स्वीकार किया जाना चाहिए। यद्यपि अनुवाद तुलनात्मक साहित्य का अभिन्न अंग है, फिर भी केवल इसी आधार पर उसे तुलनात्मक साहित्य का अनुगामी मान लेना उचित नहीं है।

विभिन्न साहित्यिक आंदोलनों और विचारधाराओं के बीच आदानप्रदान को सुगम बनाने का कार्य अनुवाद करता - -पोपोव का कथन .है। ए "Lieratures borrow from each other, directly or through the medium of translation that element which is necessary for their own growth"इस तथ्य को रेखांकित करता है कि - साहित्य अपने विकास के लिए अन्य भाषाओं के साहित्य से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से विचार ग्रहण करता है। इस दृष्टि से अनुवाद गतिविधि ने साहित्यिक अध्ययनों को नए आयाम प्रदान किए हैं।

आज दाँते, होमर, दास्तॉवस्की, बाल्ज़ाक, तालस्तॉय, चेखव और गोर्की जैसे क्लासिक लेखकों से लेकर मार्खेज, मारियो वर्गास ल्योसा, टोनी मॉरिसन और जेकोयटजी जैसे समकालीन लेखकों का अध्ययन भाषा की सीमाओं .एम . से परे संभव हुआ है। हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में हुए अनुवादों ने इन लेखकों को व्यापक पाठक वर्ग प्रदान किया है। गायत्री चक्रवर्ती स्पीवाक द्वारा महाश्वेता देवी के अनुवाद और उन पर किए गए अध्ययन भारतीय साहित्य की वैश्विक प्रतिष्ठा का सशक्त उदाहरण हैं।हालाँकि सलमान रश्दी जैसे कुछ लेखक यह मानते रहे हैं कि भारत में अंग्रेज़ी में लिखा गया साहित्य ही श्रेष्ठ हैफिर भी अनुवादों के कारण भारतीय भाषाओं का साहित्य विश्व मंच पर अपनी पहचान बनाने में सफल रहा है। एक समय तक एंग्लोइंडियन साहित्य को ही भारतीय साहित्य का प-ितिनिधि माना जाता थाकिंतु आज स्थिति बदल चुकी है। विश्व स्तर पर भारतीय भाषाओं और उनके साहित्य के प्रति रुचि निरंतर बढ़ रही है।

बीसवीं शताब्दी के अंतिम वर्षों में सोवियत संघ के विघटन और दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद की समाप्ति जैसी घटनाओं ने वैश्विक साहित्यिक चेतना को गहराई से प्रभावित किया। इन परिवर्तनों की प्रतिध्वनि जेकोयटजी जैसे .एम . लेखकों की रचनाओं में स्पष्ट रूप से सुनाई देती है। भारत में दलित लेखकों का अफ्रीकी ब्लैक साहित्य से प्रभावित होना अमेरिकी नारीवादी लेखन से प्रेरणा-या स्त्री लेखिकाओं का अफ्रीकीलेना अनुवाद की सहज उपलब्धता के कारण संभव हुआ है। इसी प्रकार भारतीय भाषाओं के भीतर भी साहित्यिक प्रभावों का आदानप्रदान अनुवाद के माध्यम से सशक्त - हुआ है।

अनुवादों ने तुलनात्मक साहित्य अध्ययन को अधिक लोकतांत्रिक स्वरूप प्रदान किया है। शरतचंद्र और महाश्वेता देवी को हिंदी पाठक अपना लेखक मानते हैं तथा उर्दू के मीर और ग़ालिब हिंदी समाज में भी समान रूप से लोकप्रिय हैंयह - सब उत्कृष्ट अनुवादों की देन है। किंतु अनुवाद की इस महत्ता के साथ यह आवश्यक हो जाता है कि अनुवाद कलाउसके सिद्धांत और स्वरूप को गंभीरता से समझा जाए, क्योंकि त्रुटिपूर्ण अनुवाद अर्थ का अनर्थ कर सकता है।अनुवाद केवल शब्दों का स्थानांतरण नहीं है। यदि ऐसा होता, तो फिट्ज़राल्ड को उमर खैयाम की रुबाइयों के अनुवाद के संदर्भ में यह टिप्पणी न करनी पड़ती- "Better alive sparrow than a stuffed eagle"। प्रोइंद्रन .ाथ चौधुरी के अनुसार अनुवादक वह सृष्टा है जो लेखक के यथार्थ के समक्ष स्वयं को समर्पित करता है। इस प्रक्रिया में अनुवाद एक ओर स्रोत भाषा से दूरी बनाता हैतो दूसरी ओर उसी को नए संदर्भ में पुनर्संयोजित भी करता है। लेखक ने क्या कहा और किस प्रकार कहा यही अनुवादक-की मूल चुनौती होती है।

भारतीय भाषाओं के इतिहास में अनुवाद की परंपरा अत्यंत प्राचीन है। संस्कृत से लोकभाषाओं में किए गए अनुवादों में दोनों भाषाओं के प्रति समान आत्मीयता दिखाई देती है। सर विलियम जॉन्स और मैक्समूलर जैसे विद्वानों द्वारा किए गए संस्कृत अनुवादों ने भारतीय ज्ञान परंपरा को वैश्विक पहचान दिलाई। टैगोर, प्रेमचंद, के .एस .मुंशी और वी .एम . खांडेकर को अखिल भारतीय स्तर पर मान्यता दिलाने में अनुवादों की भूमिका निर्णायक रही। आधुनिक रंगमंच में हबीब तनवीर द्वारा संस्कृत नाटकों का लोकभाषाओं में पुनरावतरण भी अनुवाद की सृजनात्मक क्षमता का प्रमाण है।उत्तर-संरचनावादी चिंतक जॉक देरिदा अनुवाद को सृजनात्मक साहित्य के समकक्ष मानते हैं। उनके अनुसार पाठ का अर्थ स्थिर नहीं होता; पाठक या अनुवादक ही अर्थ का निर्माण करता है। इस दृष्टि से अनुवादक का कार्य सृजनशील लेखक के स्तर तक पहुँच जाता है।

मूलतः यह स्पष्ट है कि तुलनात्मक साहित्य अध्ययन को व्यापक, समृद्ध और लोकतांत्रिक बनाने में अनुवाद की भूमिका केंद्रीय और अपरिहार्य है। अनुवाद भाषाओं के बीच सेतु बनाकर साहित्यिक चेतना को वैश्विक स्तर पर जोड़ने का कार्य करता है।

10.9 सारांश

तुलनात्मक साहित्य और अनुवाद का संबंध अत्यंत निकट और अनिवार्य है। तुलनात्मक साहित्य कोई स्वतंत्र रचनात्मक विधा नहींबल्कि साहित्य के अध्ययन की एक विशिष्ट पद्धति हैजो एक या अधिक भाषाओं में रचित कृतियों के पारस्परिक संबंधों को समझने का प्रयास करती है। इस दृष्टि से अनुवाद इसकी आधारशिला हैक्योंकि भिन्न भाषाओं के साहित्य को बिना अनुवाद के तुलनात्मक अध्ययन के दायरे में लाया ही नहीं जा सकता।गायत्री चक्रवर्ती स्पीवाक ने Death of a Discipline ((2003में शीत युद्ध के बाद तुलनात्मक साहित्य की पारंपरिक अवधारणा को चुनौती दी। उनका मानना है कि यूरोकेंद्रित ढाँचे अब अप्रासंगिक हो चुके हैं और तुलनात्मक साहित्य को उत्तर–दक्षिण संबंधों, सीमांत संस्कृतियों और उपग्रही दृष्टिकोण से पुनर्परिभाषित किया जाना चाहिए। वे 'वैश्विक एजेंट' के बजाय 'उपग्रही विषय' के रूप में सोचने का आग्रह करती हैं। इसी क्रम में सूसन बेसनेट ने भी तुलनात्मक अध्ययन के पुराने स्वरूप के अंत की घोषणा की।

आधुनिक तुलनात्मक साहित्य अध्ययन बहुसांस्कृतिकता, सांस्कृतिक अध्ययन, लैंगिक विमर्श, जाति और रंग आधारित असमानताओं जैसे क्षेत्रों को समाहित करता है। भारत जैसे बहुभाषी और सांस्कृतिक रूप से विविध देश में यह राष्ट्रीय एकीकरण का सशक्त माध्यम रहा है। अनुवाद यहाँ केवल भाषिक नहीं, बल्कि एक रचनात्मक और अंतरसांस्कृतिक प्रक्रिया हैजो मूल संवेदना को लक्ष्य भाषा में जीवित रखती है।

✓ 10.10 प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा)

प्रश्न :का उत्तर 1 अंग्रेज़ी साहित्य में 'Comparative Literature' शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम मैथ्यू आर्नल्ड ने सन् 1848 में किया था

प्रश्न :का उत्तर 2 भारत में तुलनात्मक साहित्य को एक स्वतंत्र अकादमिक अनुशासन के रूप में प्रतिष्ठित करने का श्रेय मुख्यतः बुद्धदेव बोस को जाता हैजिनके प्रयासों से जादवपुर विश्वविद्यालय में इसका प्रथम विभाग स्थापित हुआ।

प्रश्न :का उत्तर 3तुलनात्मक साहित्य का अर्थ किसी एक साहित्य, भाषा या राष्ट्र की सीमाओं में बँधकर अध्ययन करना नहीं हैबल्कि एक से अधिक साहित्यों को साथ रखकर उन्हें व्यापक संदर्भों में समझना है।

प्रश्न :का उत्तर 4 प्रोकोई भी साहित्यकार तुलनात्मक साहित्य की " इन्द्रनाथ चौधुरी ने इस संदर्भ में स्पष्ट किया है कि . रचना नहीं करता, क्योंकि साहित्यिक सृजन अपने आप में पूर्ण और स्वतंत्र होता है। तुलनात्मकता रचना की नहींबल्कि अध्ययन की विशेष प्रक्रिया है |"

प्रश्न :का उत्तर 5 हेनरी एचतुलनात्मक साहित्य एक राष्ट्र के " रीमेक के अनुसार तुलनात्मक साहित्य का अर्थ है .एच. साहित्य की परिधि के परे दूसरे राष्ट्रों के साहित्य के साथ तुलनात्मक अध्ययन है। यह अध्ययन कला, इतिहास, समाज, विज्ञान, धर्मशास्त्र आदि ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों के आपसी संबंधों का भी अध्ययन है।"

🔍 10.11 अधिक जानने के लिए पढ़ें

- Bassnett, Susan, 1993, Comparative Literature: A Critical Introduction, UK, Exfort Black Well Publishers.
- Badode, Rambhau & Afzalkhan (eds.) 2007. New Directions in Comparative Literature, Macmilhan India Ltd.
- Spivak, Gayatri Chakravarty, 2003, Death of a Discipline, Colombia, Colombia University Press.
- Said, Edward, 1978, Orientalism, London, RNP.
- चौधुरी, इंद्रनाथ, 1983, तुलनात्मक साहित्य की भूमिका, मद्रास, दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा।
- चौधुरी, इंद्रनाथ, 1996, तुलनात्मक साहित्य भारतीय परिप्रेक्ष्य, नई दिल्ली, वाणी प्रकाशन।
- गोस्वामी, कृष्ण कुमार, अनुवाद विज्ञान की भूमिका, नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन।
- टंडन, पूरनचंद, अनुवाद के विविध आयाम, दिल्ली, तक्षशिला प्रकाशन।
- नगेंद्र (.सं), अनुवाद 1993, सिद्धांत एवं अनुप्रयोग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली।
- श्रीवास्तव, रवींद्रनाथ, एवं गोस्वामी, कृष्ण कुमार (.सं), 1995, अनुवाद सिद्धांत और समस्याएँ, दिल्ली, आलेख प्रकाशन।

? 10.12 अभ्यास प्रश्न

संक्षिप्त प्रश्नों के (क) उत्तर लिखिए –

1 टी? इलियट ने तुलनात्मक साहित्य को किस प्रकार परिभाषित किया है .एस .
2. तुलनात्मक साहित्य किस प्रकार अनेकता में एकता का प्रतीक है ?
3. तुलनात्मक साहित्य के क्षेत्र के अंतर्गत किन किन विषय समाहित होते है ?
4. 'Comparative Literatureका अं'ग्रेजी रूपांतरण क्या है ?
5. 'Death of a Discipline| पुस्तक के लेखक का नाम लिखिए '
6. अध्ययन करते समय हमें साहित्य", घटनाओं और विचारों के बीच अंतर्संबंध दिखाई देते हैं"-यह कथन किसका है ?

-निम्नलिखित प्रश्न के उत्तर लिखिए (ख)

1. तुलनात्मक साहित्य का अर्थ| परिभाषा और स्वरूप पर प्रकाश डालिए ,
2. तुलनात्मक अध्ययन के विविध क्षेत्र| आवश्यकता और महत्व को अपने शब्दों में लिखिए ,
3. तुलनात्मक साहित्य की परंपरा| स्पष्ट कीजिए-अध्ययन और अनुवाद से आप क्या समझते है ,
4. तुलनात्मक साहित्य की बहुलताअनुवाद और नव ,ीन दृष्टिकोण पर एक लेख प्रस्तुत कीजिए |
5. भारतीय साहित्य की अवधारण और अनुवाद की भूमिका पर एक आलेख प्रस्तुत कीजिए |
6. तुलनात्मक साहित्य में अनुवाद की सृजनात्मक और केन्द्रीय भूमिका को अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए |

शब्दकोश:

.1 आधारशिलानींव का पत्थर :,किसी चीज़ की बुनियादी
.2 रेखांकितरेखांकन किया गया ,रेखाओं से बना हुआ :
.3 अनुगामीपीछे चलनेवाला :, आज्ञाकारी
.4 विघटनकारीविघटन करनेवाला :,किसी स्थापित व्यवस्था, प्रक्रिया, या उद्योग को बाधित करना
.5 साक्षरतापढ़ने :, लिखने, समझने और संख्याओं का उपयोग करने की क्षमता
.6 सुगमस :रल, सहज

*** ***** ***

इकाई :11बाल एवं किशोर साहित्य का अनुवाद

11.1 उद्देश्य
11.2 प्रस्तावना
11.3 बाल साहित्य एवं किशोर साहित्य अर्थ, अवधारण और समाज निर्माण की आधारशिला
11.3 बाल साहित्य एवं किशोर साहित्य अर्थ, अवधारण और समाज निर्माण की आधारशिला
11.4 भारतीय परंपरा में बाल साहित्य: स्वरूप उद्देश्य और महत्व
11.5 पाश्चात्य बाल साहित्य: दृष्टि, उद्देश्य और प्रभाव
11.6 आधुनिक युग में बाल साहित्यानुवाद
11.7 हिंदी बाल साहित्य में अनुवाद: चुनौतियाँ, परंपरा और भविष्य की दिशाएँ
11.8 सारांश
11.9 प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा)
अधिक जानने के लिए पढ़ें 11.10
अभ्यास प्रश्न 11.11

11.1 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन से आप-

- बाल साहित्य और किशोर साहित्य के बारे में समझ सकेंगे |
- बाल साहित्य और किशोर साहित्य के अंतः संबंध के बारे में जान सकेंगे |
- भारतीय परंपरा में बाल साहित्य के स्वरूप उद्देश्य और महत्व को समझ सकेंगे |
- पाश्चात्य बाल साहित्य के दृष्टि | उद्देश्य और प्रभाव से अवगत होंगे ,
- आधुनिक युग में बालसाहित्यानुवाद के महत्व से परिचित होंगे |
- हिंदी बाल साहित्य में अनुवाद की चुनौतियाँ| परंपरा और भविष्य की दिशाएँ की जानकारी प्राप्त करेंगे ,

11.2 प्रस्तावाना

बाल साहित्य और किशोर साहित्य साहित्य की एक सतत और विकसित होती धारा के दो महत्वपूर्ण चरण हैं। बाल साहित्य बचपन की कोमल भूमि में कल्पना, भाषाबोध और नैतिक मूल्यों के बीज बोता है। सरल भाषा-, लोककथाएँ, परीकथाएँ, पशु पक्षियों की कहानियाँ और कविताएँ बच्चों को पढ़ने-की ओर आकर्षित करती हैं तथा उनके भावनात्मक और बौद्धिक विकास की नींव रखती हैं। यही नींव आगे चलकर किशोर साहित्य का आधार बनती है, जहाँ बचपन से किशोरावस्था की ओर बढ़ता पाठक जीवन की जटिलताओं, भावनात्मक द्वंद्वों, सामाजिक संबंधों और पहचान के प्रश्नों से रूबरू होता है। इस प्रकार बाल साहित्य का प्रौढ़ और विकसित रूप ही किशोर साहित्य है।

आधुनिक युग में बाल एवं किशोर साहित्य का दायरा केवल मौलिक रचनाओं तक सीमित नहीं रह गया हैबल्कि अनुवाद ने इसे व्यापक और समृद्ध बनाया है। अनुवाद के माध्यम से विभिन्न भाषाओं, संस्कृतियों और देशों के श्रेष्ठ बाल

एवं किशोर साहित्य एकदूसरे तक पहुँच रहे हैं। इससे बच्चों और किशोरों को न केवल विविध अनुभवों और दृष्टिकोणों से - परिचित होने का अवसर मिलता हैबल्कि उनकी भाषिक समझ, सांस्कृतिक सहिष्णुता और वैश्विक चेतना भी विकसित होती है। अनुवाद साहित्य की वह सेतुभूमिका है, जो एक भाषा में रची गई कल्पना और संवेदनाओं को दूसरी भाषा के पाठकों तक सहजता से पहुँचाता है।

बाल और किशोर साहित्य में अनुवाद का महत्व इसलिए भी अधिक है क्योंकि यह पाठक की आयु और मानसिक स्तर को ध्यान में रखते हुए भावार्थ की रक्षा करता है। सफल अनुवाद वही है जो मूल रचना की संवेदना, सरलता और उद्देश्य को बनाए रखते हुए नई भाषा में उसे प्रभावी बनाता है। प्रस्तुत इकाई में बाल एवं किशोर साहित्य और अनुवाद के आपसी संबंधों का अध्ययन किया जाएगा तथा यह समझने का प्रयास किया जाएगा कि किस प्रकार अनुवाद आधुनिक समय में इस साहित्य को अधिक समावेशी, सशक्त और प्रभावपूर्ण बना रहा है। इस दृष्टि से बाल साहित्य को केंद्र में रखकर किशोर साहित्य और अनुवाद की भूमिका पर विचार करना अत्यंत प्रासंगिक है।

11.3 बाल साहित्य एवं किशोर साहित्य अर्थ, अवधारण और समाज निर्माण की आधारशिला

साहित्य को समाज का दर्पण कहा गया हैपर यदि इस कथन को और व्यापक दृष्टि से देखा जाए तो बाल साहित्य उस दर्पण को थामे रहने वाला मेरुदण्ड हैजो समाज की भावी पीढ़ी को दिशा देता है। जिस प्रकार किसी भव्य भवन की मजबूती उसकी नींव पर निर्भर करती हैउसी प्रकार वयस्क साहित्य का वैचारिक वैभव बाल साहित्य की ठोस बुनियाद पर खड़ा होता है। बाल साहित्य केवल मनोरंजन का साधन नहींबल्कि संस्कार, संवेदना और जीवनदृष्टि गढ़ने का सशक्त - माध्यम है।प्राचीन काल में बाल साहित्य का स्वरूप मुख्यतः वाचिक था। संयुक्त परिवारों के वातावरणमें नानानानी-, दादा-पिता द्वारा सुनाई गई लोककथाएँ-दादी और माता, कहानियाँ, लोरियाँ और गीत बच्चों के मनोरंजन के साथसाथ उनके मन - में नैतिकता, साहस और जीवनव्यतीत का साधन प्रतीत होती -मूल्यों के बीज बोती थीं। उस समय ये कथाएँ केवल समय-थीं, किंतु आज वही कथाएँ जीवन के कठिन मोड़ों पर हमारा मार्गदर्शन करती दिखाई देती हैं। यही कारण है कि आने वाली पीढ़ी के सर्वांगीण विकास के लिए बाल साहित्य के महत्व को समझना और उसे समृद्ध करना आज के लेखकों और कवियों की अनिवार्य जिम्मेदारी बन गई है। सुखद तथ्य यह है कि अनेक रचनाकार इस दिशा में सक्रिय रूप से कार्य कर भी रहे हैं।

बाल साहित्य की उत्पत्ति की स्पष्ट तिथि या स्थान निर्धारित करना कठिन है। यह मानवीय सभ्यता के साथसाथ - पहुँचते बाल साहित्य की वह -विकसित हुआ है। उन्नीसवीं शताब्दी से इक्कीसवीं शताब्दी की दहलीज तक पहुँचते त्रिवेणीजोकभी संकीर्ण समझी जाती थीआज शुद्धता, विविधता और विस्तार के साथ एक विशाल सागर का रूप ले चुकी है। जिसे कभी दोयम दर्जे का साहित्य कहा जाता थाउसे अब एक स्वतंत्र और सम्मानित साहित्यिक विधा के रूप में स्वीकार किया जा रहा है।

हिन्दी भाषा में भी बाल साहित्य का परिदृश्य अत्यंत व्यापक हुआ है। कभी गिनीचुनी बाल पत्रिकाओं तक सीमित - जैसे चकमक-पत्रिकाओं के रूप में हमारे सामने है-यह संसार आज सैकड़ों पत्र, छोटूमोटू-, देवपुत्र, बालवाणी, समय झरोखा, बालबाटिका-, स्नेह, दुलारा, नन्हा आकाश, अपना बचपन, बाल भास्कर, पाठक मंच बुलेटिन, अनुराग, बाल प्रहरी, बच्चों का देश, बाल स्वर, इन्द्रधनुष, चिरैया, अमराई, स्पेक्ट्रम, अभिनव बालमन, बचपन, बालमित्र, फुलबगिया, नन्दन, चम्पक, समन सौरभ, लोटपोट, बालहंस, हँसती दुनिया, बाल साहित्य समीक्षा, नन्हें सम्राट आदि। इसके अतिरिक्त रेडियो और दूरदर्शन जैसे माध्यमों पर भी बच्चों की रुचि के अनुरूप साहित्यिक कार्यक्रम बड़ी संख्या में प्रसारित हो रहे हैं।

यह विकास आकस्मिक नहीं है। इसके पीछे अनेक समर्पित लेखकों और कवियों की आजीवन साधना छिपी है। निरंकार देव सेवक, डॉहरिकृष्ण देवसरे ., डॉराष्ट्रबंधु ., गिजुभाई, चंद्रपाल सिंह यादव 'मयंक', योगेश कुमार लल्ला, श्री प्रसाद, शंकर सुल्तानपुरी, भगवती प्रसाद द्विवेदी, जयप्रकाश भारती, रोहिताश्व अस्थाना, विनोद चंद्र पाण्डेय, शकुन्तला

सिरोठिया, शेरजंग गर्ग, अनंत कुशवाह जैसे रचनाकार विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। इन्होंने ऐसे समय में बाल साहित्य के लिए दीप प्रज्ज्वलित किया, जब इस क्षेत्र में आना साहस का कार्य माना जाता था। इनके धैर्य, लगन और प्रतिबद्धता के कारण हिन्दी बाल साहित्य सदैव इनका ऋणी रहेगा।

बालक जन्म के समय कोरे कागज के समान होता है। जन्म लेते ही उसकी पहली ध्वनि माँ के कानों में पड़ती है और धीरेधीरे वह ध्वनियों-, स्पर्श और चेहरों को पहचानने लगता है। कुछ ही सप्ताहों में वह माँ को देखकर प्रसन्नता अनुभव करता है। ध्वनि के रुक जाने पर उसका रोना, खिलौने के छिन जाने पर उसकी व्याकुलता—ये सभी उसके भावनात्मक विकास के संकेत हैं। लगभग तीन वर्ष की आयु तक बालक बोलने लगता हैअपने शरीर के अंगों को पहचानने लगता है और अपने आसपास के वातावरण को समझने की लालसा प्रकट करता है। यहीं से बाल साहित्य की वास्तविक आवश्यकता प्रारम्भ होती हैक्योंकि इसी अवस्था में बालक में साहित्य के आस्वादन की मानसिक क्षमता विकसित होने लगती है।

सामान्यतः बाल्यावस्था पाँचचौदह वर्ष तक मानी जाती है। बाल साहित्यकारों से अपेक्षा की जाती -छः वर्ष से तेरह- है कि वे इस आयु वर्ग की मानसिक, बौद्धिक और भावनात्मक आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर रचनाएँ करें। प्रारम्भिक अवस्था में शिशु गीत और लोरियाँ आती हैंइसके पश्चात विविध विधाओं में बाल साहित्य का विस्तार होता है। इस समय तक बालक का पर्याप्त बौद्धिक और भावात्मक विकास हो चुका होता है।

वास्तव में बाल साहित्य उतना ही प्राचीन है जितना स्वयं बालक। जिस दिन किसी बच्चे ने पहली बार चेतना की आँख खोली होगीउसके चारों ओर का वातावरण किसी अनकहे गीत या अनपढ़ी कहानी के रूप में उसके सामने उपस्थित रहा होगा। मातापिता और परिजन उसे सुनाने और समझाने का प्रयास करते रहे होंगेताकि वह आनंदित हो-, विकसित हो और जीवनसंघर्षों का सामना करने योग्य बन सके। जो साहित्य इस उद-ेदश्य को पूरा करता है, वही सही अर्थों में बाल साहित्य है।

बाल साहित्य को कठोर श्रेणियों में बाँधना संभव नहीं। जो रचना बाल मन को आकर्षित करेजिसे बच्चा उत्साहपूर्वक अपनाएवही बाल साहित्य है। कथाकार भगवती प्रसाद वाजपेयी के शब्दों मेंबाल साहित्य लिखना बड़ा "-ह ी कठिन कार्य है। भाषा क्लिष्ट हो जाए तो लेखक को अपनी कुर्सी छोड़नी पड़े, भावों में स्वाभाविक सारल्य न होअभिव्यंजना में झलक पडे तो लेखक कलाकार नहीं घसियारा बन जाए। इन दोनों गुणों में पारंगत होने पर भी यदि कथन में नई पौध के नव निर्माण की भावना न हुई तो भी लेखक का प्रयास कालान्तर में तीन कौड़ी का बन जाता है।"

बाल साहित्य लेखन के स्वरूप भी विविध हैंकुछ रचनाएँ मूलतः बच्चों के लिए नहीं लिखी गईंपरंतु बालरुचि के -कारण बाल साहित्य के रूप में स्वीकार कर ली गई; कुछ रचनाएँ विशेष रूप से बच्चों के लिए लिखी गई; और कुछ उत्कृष्ट रचनाएँ स्वयं बच्चों द्वारा सृजित की गई। डॉवह समस्त साहित्य जिसमें बाल साहित्य के "-श्री प्रसाद का मत है . तत्व हैं अथवा जिसे बालकों ने पसन्द किया है भले ही उसकी रचना मूलतः बालकों के लिए न हुई हो, बाल साहित्य है।"

इस व्यापक दृष्टिकोण से स्पष्ट है कि बाल साहित्य का उद्देश्य केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि ज्ञानवर्धन, संस्कार-निर्माण और भविष्य के प्रति उन्मुख करना है। आज के बच्चे कल के नागरिक हैं। इन्हीं में भविष्य के वैज्ञानिक, दार्शनिक, समाज निर्माता छिपे हैं। चाँद और ग्रहों तक पहुँचने की-सुधारक और राष्ट्र-कल्पना, अंतरिक्ष यात्राएँ, नए आविष्कारइन -जवाहरलाल नेहरू .सबकी प्रेरणा बाल साहित्य के माध्यम से ही बाल मन में अंकुरित होती है।भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पं मैं हैरत में पड़ जाता हूँ कि किसी व्यक्ति या राष्ट्" -ने बच्चों के महत्व को रेखांकित करते हुए कहा थार का भविष्य जानने के लिए लोग तारों को देखते हैं। मैं ज्योतिष की गिनतियों में दिलचस्पी नहीं रखता। मुझे जब हिन्दुस्तान का भविष्य देखने की इच्छा होती है। तो बच्चों की आँखों और चेहरों को देखने की कोषिष करता हूँ। बच्चों के भाव मुझे भावी भारत की झलक दे जाते हैं।यह कथन स्पष्ट करता है कि राष्ट्र का भविष्य बच्चों के वर्तमान में निहित है। बाल साहित्य ही उस भविष्य को " स्वर्णिम स्वरूप देने में सक्षम है। बच्चों की अपनी स्वतंत्र दुनिया होती है—कल्पनाओं से भरी, जिज्ञासाओं से ओतप्रोत। वे

स्वभाव से कोमल, निष्कपट और संवेदनशील होते हैं। उनके बचपन में डाले गए संस्कार जीवनभर उनके साथ रहते हैं। आदर्श बालक ही आदर्श समाज की नींव रखता है और इस संस्कारपरिष्कार में बाल साहित्य की भूमिका सर्वोपरि है।

प्राचीन काल में भले ही बच्चों के लिए पृथक साहित्य रचना की परंपरा न रही होकिंतु वेद, पुराण, रामायण, महाभारत, बौद्ध और जैन ग्रंथों में बालोपयोगी कथाओं और प्रसंगों का विपुल भंडार मिलता है। भगवान श्रीकृष्ण की बाल लीलाओं का चित्रण करने वाले महाकवि सूरदास को हिन्दी का प्रथम बाल काव्य साहित्यकार माना जाता है। उनकी रचनाओं की सरलता और सरसता आज भी बाल काव्य को नई दिशा देती है।

अंततः यह स्पष्ट है कि किसी भी राष्ट्र का भविष्य वहाँ के बच्चों की शिक्षा, पालनपोषण और मार्गदर्शन पर निर्भर - करता है। इस दृष्टि से बाल साहित्य बच्चों का सहपाठी, मार्गदर्शक और स्नेहिल अभिभावक है। यह उनके मन को स्वस्थ रखता है और स्वस्थ मन ही स्वस्थ राष्ट्र की आधारशिला बनता है। बाल साहित्य में जीवन है, जीवंतता है और भविष्य को सँवारने की अद्भुत शक्ति भी |

11.4 भारतीय परंपरा में बाल साहित्य: स्वरूप उद्देश्य और महत्व

भारतीय साहित्य में बाल साहित्य की अवधारणा आधुनिक नहींबल्कि अत्यन्त प्राचीन है। भारतवर्ष की सांस्कृतिक चेतना में बाल मन को केंद्र में रखकर रची गई कथाएँ, गीत, लोरियाँ और नीतिकथाएँ आदिकाल से विद्यमान रही हैं। - यद्यपि उस समय"बाल साहित्य" शब्द प्रचलित नहीं थाकिन्तु उसके तत्त्व हमारे प्राचीन ग्रंथों और लोकपरम्पराओं में स्पष्ट रूप से मिलते हैं।यदि रामायण जैसे महाकाव्य को देखेंतो बाल हनुमान की कथाएँ बाललौकिक साहित्य का सुंदर उदाहरण - प्रस्तुत करती हैं। बाल्यावस्था में सूर्य को फल समझकर निगल जाना, ऋषिमुनियों को बालहठ में सताने घटनाएँ बाल - स्वभाव की चंचलता और जिज्ञासा को उजागर करत ी हैं। इसी प्रकार नलनील की कथाजिनके स्पर्श से पत्थर जल में - तैरने लगते थे, बाल कल्पना और कौतूहल को पोषित करती है। ऐसे वृत्तांत यह सिद्ध करते हैं कि भारतीय साहित्य में बाल साहित्य के बीज बहुत पहले बोए जा चुके थे।

भारत में लोरियाँ, लोकगीत, दादीनानी की कहानि-याँ और परी कथाएँ बाल साहित्य की प्रथम पाठशाला रही हैं। इन कथाओं ने न केवल बच्चों का मनोरंजन कियाबल्कि उनके संस्कार, कल्पना और नैतिक बोध को भी आकार दिया। वस्तुतः वही साहित्य बाल साहित्य कहलाता है जो बालक एवं किशोर के कोमल और चंचल मन को सहज रूप से भा जाए।बाल साहित्य का उद्देश्य केवल मनोरंजन नहींबल्कि ज्ञानवर्धन और चरित्र निर्माण भी है। जो रचनाएँ बच्चों को आनंद देते हुए जीवन मूल्यों से जोड़ती हैंवही प्रभावी बाल साहित्य बनती हैं। इसी कारण पंचतंत्र, हितोपदेश, कथासरित्सागर और सिंहासन बत्तीसी जैसी कृतियाँ सहस्राब्दियों बाद भी बच्चों, युवाओं और वृद्धों—सभी को आकर्षित करती हैं।

पंचतंत्र: बाल साहित्य की आधारशिला। पंचतंत्र को विश्व की सबसे प्राचीन बाल साहित्यिक कृति माना जाता है। इसकी रचना का मूल उद्देश्य बच्चों को नीति और व्यवहार की शिक्षा देना था। आचार्य विष्णु शर्मा ने कथाकहानी के - माध्यम से जीवन मूल्यों को सहज ढंग से प्रस्तुत किया। पंचतंत्र में दी गई यह उक्ति बाल साहित्य की प्रथम परिभाषा मानी -जाती है "कथाकहानी के माध्यम से ही बालकों में नीति के संस्कार आरोपित किए जा सकते हैं।-"अर्थात् बच्चों को उपदेश से नहींबल्कि रोचक कथाओं के द्वारा ही संस्कारवान बनाया जा सकता है। यही बाल साहित्य की मूल आत्मा है।

बाल मन और साहित्य:

बाल जीवन कोमल बाँस के समान होता है—जिस दिशा में मोड़ा जाए, उसी रूप में ढल जाता है। यह आकार देने का कार्य बाल साहित्य करता है। सूरदास ने कृष्ण के बाल रूप के माध्यम से बाल मनोविज्ञान का अत्यन्त सूक्ष्म चित्रण किया है। उनके यहाँ बालक की तुतलाहट, हठ, रोना, रूठना, जिज्ञासा और चंचलता जीवन्त हो उठती है।डॉरामकुमार . -वर्मा के शब्दों में"सूर ने शिशु और बाल जीवन की प्रत्येक भावना का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण किया है।"बालक का मन

क्षणक्षण बदलने वाला होता है। वह कभी किसी खिलौने को सजीव मान लेता हैतो कभी उसी से बात करने लगता है। -बाल साहित्य इन भावनाओं और आकांक्षाओं को स्वर देता है।

बाल प्रकृति की शाश्वतता :रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने बाल स्वभाव की चिरन्तनता पर सुंदर विचार व्यक्त किए हैं -"ठीक से देखने पर बच्चे जैसा पुराना और कुछ नहीं है... बच्चा हजारों वर्षों पहले जैसा था, आज भी वैसा ही है।"उनके अनुसार शिक्षा और सभ्यता वयस्क मनुष्य को बदल देती हैपर बालक आज भी प्रकृति की गोद में पला वही सुकुमार प्राणी है। इसी कारण लोकगीत, लोरियाँ और शिशु गीत शिशु साहित्य का अभिन्न अंग हैं।

बाल साहित्य और व्यक्तित्व निर्माण :बालक की जिज्ञासा, कल्पना, अनुकरण प्रवृत्ति और उत्कंठाये सभी -उसके बौद्धिक और चारित्रिक विकास के आधार हैं। अच्छा बाल साहित्य इन गुणों को सकारात्मक दिशा देता है। जब बालक को आदर्शपात्र, प्रेरक कथाएँ और जीवनोपयोगी मूल्य मिलते हैंतभी वह भविष्य का जिम्मेदार नागरिक बनता है।पं .-सोहनलाल द्विवेदी का मत है"सफल बाल साहित्य वही है जो बालकों के मन की बातउनकी भाषा में कह सके।"अर्थात् जो साहित्य बच्चों को सरल लगेजिसे वे बार बार पढ़ना चाहेंवही-सच्चा बाल साहित्य है।

आधुनिक दृष्टिकोण :श्री चिंताही चितुलु के अनुसार -"शिशु के जन्म से बाल्यावस्था की समाप्ति तक मन को रमाने वाला साहित्य ही बाल साहित्य है।"डॉसुरेन्द्र विक्रम ने बाल साहित्य को तीन बिंदुओं में परिभाषित किया है .

.1स्वस्थ मनोरंजन

.2युगानुकूल ज्ञानवर्धन

.3जीवनोपयोगी प्रेरणा

इन मानकों के आधार पर स्पष्ट है कि बाल साहित्य की उपयोगिता निर्विवाद है। आज बाल साहित्य पहले से अधिक विविध, समृद्ध और जागरूक हो चुका है। कॉमिक्स, चित्र पुस्तकें, विज्ञान कथाएँ और नैतिक कहानियाँ—सब बालक के सर्वांगीण विकास को ध्यान में रखकर रची जा रही हैं।

भारतीय दृष्टिकोण से बाल साहित्य केवल साहित्यिक विधा नहींबल्कि संस्कार निर्माण की प्रक्रिया है। यह बालक की उत्सुकता को बनाए रखता हैउसकी कल्पना को विस्तार देता है और उसे जीवन के सही मार्ग की ओर प्रेरित करता है। जिस दिशा में आज बाल साहित्य गतिशील हैउससे यह आशा दृढ़ होती है कि वह आने वाली पीढ़ियों को सशक्त, संवेदनशील और मूल्यनिष्ठ नागरिक बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा ।

11.5 पाश्चात्य बाल साहित्य: दृष्टि, उद्देश्य और प्रभाव

बाल साहित्य किसी भी समाज की वैचारिक नींव को मजबूत करने वाला महत्वपूर्ण माध्यम है। यदि हम पाश्चात्य बाल साहित्य के विकासवहाँ के लेखकों की दृष्टि तथा बच्चों के प्रति उनके दृष्टिकोण का अध्ययन करेंतो भारतीय बाल साहित्य से कई समानताएँ और कुछ मौलिक भिन्नताएँ स्पष्ट रूप से दिखाई देती हैं। यह सत्य है कि पाश्चात्य देशों में बाल साहित्य की परंपरा अत्यंत समृद्ध और दीर्घकालीन रही है।अंग्रेज़ी भाषा में बाल साहित्य की शुरुआत सैकड़ों वर्ष पूर्व हो चुकी थी। इंग्लैण्ड और अमेरिका—दोनों ही देशों में बाल साहित्य अंग्रेज़ी भाषा में विकसित हुआकिंतु इंग्लैण्ड का बाल साहित्य विश्व में सबसे अधिक विकसित और प्रभावशाली माना जाता है। वहीं रूस में बाल साहित्य रूसी भाषा में विकसित हुआ। गुलीवर की यात्राएँ, रॉबिन्सन क्रूसो, एलिस इन वंडरलैंड, रॉबिन हुड, सोहराब और रुस्तम जैसी रचनाएँ आज भी विश्वप्रसिद्ध हैं और बच्चों के मन पर गहरा प्-रभाव डालती हैं।

यह कहा जाता है कि यदि बाल साहित्य के माध्यम से इंग्लैण्ड का पुनर्निर्माण किया जाएतो वह संभव है। वास्तव मेंकिसी भी देश का बाल साहित्य जितना समृद्ध होगा, उस देश की संस्कृति, सभ्यता और सामाजिक चेतना उतनी ही उन्नत होगी। बाल साहित्य बच्चों के बौद्धिक विकास, उनके रहनसहन-, आचारविचार और संवाद शैली को संस्कारित -धीरे-करता है। यह प्रभाव प्रत्यक्ष नहीं बल्कि धीरे, स्वाभाविक रूप से दिखाई देता है।प्रसिद्ध कवि वर्ड्सवर्थ का कथन बाल

साहित्य की मूल भावना को स्पष्ट करता है-"बालक ईश्वर का अंश लेकर संसार में आता है, परंतु सांसारिक प्रभावों से उसका जीवन धीरेधीरे मलिन हो जाता है।-"उनका मानना था कि बालक की सच्ची शिक्षा विद्यालय की चारदीवारी में नहींबल्कि प्रकृति के सान्निध्य में संभव है। प्रकृति की गोद में रहकर ही बालक अपनी सहजता और निर्मलता को बनाए रख सकता है।

इसी क्रम में यह भी विचारणीय है कि बालक ईश्वर की धरोहर है। हम उसके स्वामी नहींबल्कि सेवक हैं। समाज और समय में चाहे कितने भी परिवर्तन हो जाएँबालक का मूल स्वभाव लगभग अपरिवर्तित रहता है। इसलिए हर परिस्थिति में बालक के संरक्षण, पालनपोषण-, शिक्षा, खेल, मनोरंजन और सर्वांगीण विकास की जिम्मेदारी मातापिता और समाज --दोनों पर समान रूप से आती है।जॉर्ज बर्नार्ड शॉ ने बड़ों की मानसिकता की तीखी आलोचना करते हुए कहा"जो व्यक्ति बच्चों के स्वाभाविक चरित्र को मोड़ने का प्रयास करता हैवह संसार का सबसे बड़ा अपराधी है।"इस कथन का आशय यह है कि बच्चों की मूल प्रकृति को जबरन बदलने का प्रयास नहीं करना चाहिए। अक्सर मातापिता और समाज बच्चों को -अपने साँचे में ढालना चाहते हैंजिससे उनका चंचल, सहज और सृजनात्मक स्वभाव धीरेधीरे दब जाता है।-

पाश्चात्य आलोचक वसीली सुखोम्लिंस्की के अनुसार-"बाल साहित्य केवल रोमांचक घटनाओं का विवरण नहीं, बल्कि बच्चों के लिए एक संपूर्ण संसार होता हैजिसमें वे जीते हैं, संघर्ष करते हैं और अच्छाई के पक्ष में खड़े होते हैं।"कहानियों के माध्यम से बच्चों की आत्मिक शक्ति अभिव्यक्त होती है। बच्चा केवल कहानी सुनना नहीं चाहतावह सुनाना भी चाहता हैगीत सुनने के साथ गाना और खेल देखने के साथ खेलना भी चाहता है। यही बाल साहित्य की जीवंतता है।

बालक स्वयं एक गतिशील और विकासोन्मुख शक्ति है। थोड़े से मार्गदर्शन और सही दिशा देने से उसका व्यक्तित्व निखर सकता है। बचपन में बच्चों की रुचियाँ निरंतर बदलती रहती हैं। वे लुकाछिपी-, चोरपुलिस-, खोखो-, पकड़म-पकड़ाई, गुल्लीडंडा जैसे खेलों से न केवल आनंद लेते हैंबल्कि जीवन के प्रारंभिक अनुभव भी प्राप्त करते हैं। कविता उन्हें -प्रसन्न करती हैनाटक देखकर वे अभिनय करना चाहते हैं और कहानी उन्हें कल्पना की नई दुनिया में ले जाती है।कार्नेलिया मीग्स का यह कथन अत्यंत सार्थक है -"अंततः बाल साहित्य की कसौटी स्वयं बालक है। वही तय करता है कि क्या बाल साहित्य है और क्या नहीं।"

वास्तव मेंबाल साहित्य का स्वरूप लेखक, अभिभावक या शिक्षक तय नहीं कर सकते। जो रचना बालक के मन को सहज रूप से भा जाए, वही सच्चा बाल साहित्य है।बच्चों का संसार बड़ों से बिल्कुल भिन्न होता है। उनका हृदय आकाश की तरह विशाल और निर्मल होता है। इसलिए बाल साहित्य ऐसा होना चाहिए जो बिना उपदेशात्मक बनेबच्चों के बौद्धिक विकास, चरित्र निर्माण और नैतिक चेतना को दिशा दे।ग्लेन कनिंघम के शब्दों में -"कोई बच्चा मूलतः बुरा नहीं होता, उसे बुरा बनाता है उसका वातावरण।"

आज के अनेक लेखक वर्तमान बाल साहित्य की दिशा से असंतुष्ट दिखाई देते हैं। उनका मानना है कि बाल साहित्य को यथार्थ से जोड़ना आवश्यक हैक्योंकि बच्चे ही राष्ट्र के निर्माता होते हैं। अच्छे राष्ट्र के निर्माण के लिए बच्चों का नैतिक और बौद्धिक रूप से सुदृढ़ होना अनिवार्य है।पाश्चात्य देशों में बाल साहित्य को राष्ट्रीय नीति और विचारधारा से जोड़ा गया है। अमेरिका में बाल साहित्य जीवन के व्यावहारिक पक्ष पर बल देता है। मशीनों, उद्योगों, जहाजों और विमानों की कार्यप्रणाली को समझाना महत्वपूर्ण माना जाता है। रूस में बाल साहित्य का उद्देश्य बच्चों को सही दिशा देना और जीवन मूल्यों को सुदृढ़ करना है। फ्रांस में विपरीत परिस्थितियों में संघर्ष कर बेहतर नागरिक बनने की प्रेरणा दी जाती हैजबकि इंग्लैण्ड में बाल साहित्य का लक्ष्य बच्चों को आत्मनिर्भर और स्वयंसेवी बनाना है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि पाश्चात्य बाल साहित्य समय और युग के अनुरूप जीवन मूल्यों में परिवर्तन करते हुए भी मूल भावार्थ को सुरक्षित रखता है। यही उसकी सबसे बड़ी विशेषता है।

अपनी प्रगति जांचें

प्रश्न .1बाल्यावस्था कब से कब तक मानी जाती है ?

प्रश्न .2बाल साहित्य से आप क्या समझते है ?

प्रश्न .3कथाकार भगवती प्रसाद ने बाल साहित्य के संबंध में क्या कहां था ?

प्रश्न .4बाल साहित्य का प्रमुख उद्देश्य क्या है ?

प्रश्न .5बाल साहित्य और व्यक्तित्व निर्माण क्या संबंध है ?

प्रश्न .6कवि वर्ड्सवर्थ ने बाल साहित्य के बारे में क्या कहां था?

11.6 आधुनिक युग में बाल साहित्यानुवाद

बाल साहित्य केवल रचनात्मक अभिव्यक्ति नहींबल्कि बालमन से सीधा संवाद है। जब यह साहित्य एक भाषा से दूसरी भाषा में पहुँचता हैतब उसका महत्व और दायित्व दोनों बढ़ जाते हैं। बाल साहित्य का अनुवाद (बालसाहित्यनुवाद) साधारण अनुवाद प्रक्रिया नहीं हैबल्कि यह संवेदनशील, सृजनात्मक और मनोवैज्ञानिक समझ पर आधारित कार्य है। इसमें केवल शब्दों का रूपांतरण नहींबल्कि भाव, कल्पना, संस्कृति और बाल अनुभूति का स्थानांतरण निहित होता है।बाल एवं किशोर साहित्य वही माना जाता है जिसे बच्चे सहज रूप से स्वीकार कर लें। इसीलिए बाल साहित्य के अनुवाद में यह आवश्यक हो जाता है कि अनूदित रचना भी बच्चों को उतनी ही प्रिय लगेजितनी मूल रचना। बाल साहित्य का निर्णय न मातापिता करते हैंन शिक्षक-, बल्कि स्वयं बच्चे करते हैं। यही कसौटी अनुवाद पर भी लागू होती है। यदि अनूदित रचना बालकों के मन को छू लेतो वही सफल बालसाहित्यानुवाद कहलाता है।-

आधुनिक युग सूचना, तकनीक और वैश्वीकरण का युग है। आज का बच्चा केवल अपने परिवेश या मातृभाषा तक सीमित नहीं रहाबल्कि वह बहुभाषी, बहुसांस्कृतिक और डिजिटल संसार से निरंतर जुड़ा हुआ है। ऐसे समय में बाल साहित्य का अनुवाद अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। यह न केवल भाषाओं के बीच सेतु का (साहित्यानुवाद-बाल) कार्य करता है, बल्कि बच्चों के ज्ञानदृष्टि और संवेदनाओं को भी व्यापक बनाता है। बालसाहित्यानुवाद आधुनिक युग - की एक अनिवार्य आवश्यकता बन चुका है।बाल साहित्य का मूल उद्देश्य बच्चों का मनोरंजन करते हुए उनके व्यक्तित्व का विकास करना है। जब यही साहित्य अनुवाद के माध्यम से दूसरी भाषाओं में पहुँचता हैतब उसका प्रभाव कई गुना बढ़ जाता है। अनुवाद के द्वारा एक भाषा और संस्कृति की श्रेष्ठ बाल रचनाएँ दूसरी भाषा के बच्चों तक पहुँचती हैं। इससे बच्चों में सहिष्णुता, सांस्कृतिक समझ और वैश्विक दृष्टिकोण का विकास होता है।

भारतीय संदर्भ में बालसाहित्-यानुवाद का इतिहास अत्यंत समृद्ध है। पंचतंत्र इसका उत्कृष्ट उदाहरण है। मूलतः संस्कृत में रचित पंचतंत्र का अनुवाद फारसी, अरबी, अंग्रेज़ी और अनेक भारतीय भाषाओं में हुआ। आज विश्व के लगभग हर देश में पंचतंत्र की कहानियाँ बच्चों द्वारा पढ़ी जाती हैं। यह अनुवाद का ही परिणाम है कि 'सिंह और चूहा', 'कौआ और घड़ा' जैसी कथाएँ वैश्विक बाल चेतना का हिस्सा बन चुकी हैं।इसी प्रकार रामायण और महाभारत के बालोपयोगी रूपांतर और अनुवाद आधुनिक युग में अत्यंत लोकप्रिय हैं। वाल्मीकि रामायण के विभिन्न भाषाओं में सरल अनुवादतथा महाभारत की संक्षिप्त बालकथाएँ बच्चों को भारतीय संस्कृति, नैतिक मूल्यों और जीवनदर्शन से परिचित कराती हैं। आज - ये कथाएँ केवल पुस्तकों तक सीमित नहींबल्कि एनिमेशन, कॉमिक्स और डिजिटल माध्यमों में अनूदित होकर बच्चों तक पहुँच रही हैं।

आधुनिक युग में बाल साहित्यानुवाद का-महत्व इसलिए भी बढ़ गया है क्योंकि आज के बच्चे दृश्य और श्रव्य माध्यमों से अधिक जुड़ाव रखते हैं। टेलीविजन धारावाहिक और एनिमेशन श्रृंखलाएँ इसका सशक्त उदाहरण हैं। छोटा भीम, मोटूपतलू-, बाल गणेश और लिटिल सिंघम जैसे कार्यक्रम विभिन्न भारतीय भाषाओं में अनुवादित होकर देशभर के बच्चों

में समान रूप से लोकप्रिय हैं। भाषा बदल जाती हैकिंतु कथ्य, हास्य और संदेश वही रहता है। यह अनुवाद की सफलता का प्रमाण है।विश्व साहित्य के क्षेत्र में भी बालहेंस ,साहित्यानुवाद ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है। ग्रिम बंधुओं की परिकथाएँ- क्रिश्चियन एंडरसन की कहानियाँ, गुलिवर की यात्राएँ, एलिस इन वंडरलैंड और रोबिन्सन क्रूसो जैसी रचनाएँ मूलतः बाल साहित्य के रूप में नहीं लिखी गई थींफिर भी अनुवाद के माध्यम से ये बच्चों की प्रिय पुस्तकों में शामिल हो गईं। इन रचनाओं ने भारतीय बाल साहित्य को भी कल्पनाशीलता और रोमांच की नई दिशा दी।

महत्वपूर्ण बिंदु

बाल साहित्य अनेक प्रकारों में विभाजित होता हैजिसे बच्चों की उम्र और पढ़ने की क्षमता के अनुसार वर्गीकृत किया जाता है। इसमें प्रमुख रूप से कहानियाँ, कविताएँ और गीत, उपन्यास, नाटक, जीवनी, लघुकथाएँ, गैर काल्पनिक- पुस्तकें और चित्र पुस्तकें शामिल हैं। कहानियाँ लोककथाएँ और परिकथाएँ, ऐतिहासिक कथाएँ, यथार्थवादी कथाएँ और विज्ञान कथाएँ हो सकती हैं। कविताएँ और गीत बच्चों की रुचि और सृजनशीलता को बढ़ाते हैं। उपन्यास लंबी कथाएँ होती हैं, जबकि नाटक और एकांकी मंचन के लिए लिखे जाते हैं। जीवनी प्रसिद्ध व्यक्तियों के जीवन पर आधारित होती हैं। दंतकथाएँ नैतिक शिक्षा देने वाली छोटी कहानियाँ होती हैं। गैरकाल्पनिक पुस्तकें जानकारी और तथ्य प्रस्तुत करती हैं। - चित्र पुस्तकें छोटे बच्चों के लिए चित्रों सहित होती हैंजो कहानी को समझने में मदद करती हैं।

आधुनिक युग में बालसाथ -साहित्यानुवाद का एक प्रमुख महत्व यह है कि यह बच्चों के बौद्धिक विकास के साथ- भाषाई क्षमता को भी सुदृढ़ करता है। द्विभाषी या बहुभाषी अनूदित पुस्तकें बच्चों को नई भाषाओं से परिचित कराती हैं। उदाहरणस्वरूप, हिंदी अंग्रेज़ी-द्विभाषी बाल पुस्तकें आज शहरी बच्चों में अत्यंत लोकप्रिय हैं। इससे बच्चों में भाषा सीखने की रुचि स्वाभाविक रूप से विकसित होती है। बालप्रदान का भी सशक्त माध्यम है। -साहित्यानुवाद सांस्कृतिक आदान- जापान की लोककथाएँ, रूस की परिकथाएँ, अफ्रीकी जनजातीय कहानियाँ जब हिंदी या अन्य भारतीय भाषाओं में अनूदित होती हैंतो बच्चे भिन्न संस्कृतियों, जीवन शैलियों और मूल्यों से परिचित होते हैं। इससे उनके मन में-'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना विकसित होती है।

डिजिटल युग में बालबुक्स-साहित्यानुवाद ने नए रूप धारण किए हैं। ई-, ऑडियोबुक्स, पॉडकास्ट और यूट्यूब चैनलों के माध्यम से अनूदित बाल साहित्य बच्चों तक सहज रूप से पहुँच रहा है। उदाहरण के लिएपंचतंत्र या अकबर- बीरबल की कहानियाँ आज अनेक भाषाओं में ऑडियो और वीडियो रूप में उपलब्ध हैं। इससे वे बच्चे भी साहित्य से जुड़ पा रहे हैं जो पारंपरिक पठन से दूर रहते हैं।रवीन्द्रनाथ टैगोर का कथन बालसाहित्यानुवाद के महत्व को गहराई से स्पष्ट - -करता है"बच्चों का अर्धचेतन वृक्षों की भाँति सक्रिय होता है-; वह अपने चारों ओर के वातावरण से आवश्यक पोषण ग्रहण करता है।"अनुवाद के माध्यम से यह विस्तारऔर अधिक व्यापक हो जाता है। एक भाषा की श्रेष्ठ रचना दूसरी भाषा के बालकों के मानसिक वातावरण को समृद्ध करती है।

आधुनिक समय में बालसाहित्यानुवाद का एक सामाजिक महत्व भी है। यह समानता और समावेशन को बढ़ावा - देता है। क्षेत्रीय भाषाओं में रचित श्रेष्ठ बाल साहित्य जब राष्ट्रीय या अंतरराष्ट्रीय भाषाओं में अनूदित होता हैतो स्थानीय प्रतिभा को वैश्विक मंच मिलता है। उदाहरणस्वरूपआदिवासी लोककथाओं के हिंदी और अंग्रेज़ी अनुवाद बच्चों को विविध सामाजिक यथार्थ से जोड़ते हैं।हालाँकि बालसाहित्यानुवाद की प्रक्रिया सरल नहीं है। इसमें केवल- शब्दों का अनुवाद पर्याप्त नहीं होता। बाल मनोविज्ञान, सांस्कृतिक संदर्भ और भाषा की सहजता का विशेष ध्यान रखना पड़ता है। सफल बालसाहित्यानुवाद वही है जिसमें मूल रचना का आनंद-, भाव और संदेश अक्षुण्ण बना रहे।हिंदी कहानी सम्राट प्रेमचंद द्वारा रचित प्रसिद्ध बाल कहानी सरल रूप को अभिव्यक्त करता है और वर्तमान -जो बाल मन के सहज'ईदगाह' -पीढ़ी को नैतिक शिक्षा प्रदान करता है। कहानी के आरंभिक पंक्ति को देखते है

रमज़ान के पूरे तीस रोज़ों के बाद ईद आई है। कितना मनोहर", कितना सुहावना प्रभात है। वृक्षों पर अजीब हरियाली हैखेत,ोंं में कुछ अजीब रौनक़ है, आसमान पर कुछ अजीब लालिमा है। आज का सूर्य देखो, कितना प्यारा, कितना शीतल हैयानी संसार को ईद की बधाई दे रहा है। गाँव में कितनी हलचल है। ईदगाह जाने की तैयारियाँ हो रही हैं। किसी के कुरते में बटन नहीं है, पड़ोस के घर में सुईतागा लेने- दौड़ा जा रहा है। किसी के जूते कड़े हो गए हैं, उनमें तेल डालने के लिए तेली के घर पर भागा जाता है। जल्दीलौटते दुपहर हो -पानी दे दें। ईदगाह से लौटते-जल्दी बैलों को सानी-जाएगी। तीन कोस का पैदल रास्ता, फिर सैकड़ों आदमियों से मिलनाभेंटना। दुपहर के पहले लौटना अ-संभव है। लड़के सबसे ज़्यादा प्रसन्न हैं। किसी ने एक रोज़ा रखा हैवह भी दुपहर तक, किसी ने वह भी नहीं, लेकिन ईदगाह जाने की ख़ुशी उनके हिस्से की चीज़ है।"

अंग्रेजी अनुवाद:

"A full thirty days after Ramadan comes Eid. How wonderful and beautiful is the morning of Eid! The trees look greener, the field more festive, the sky has a lovely pink glow. Look at the sun! It comes up brighter and more dazzling than before to wish the world a very happy Eid. The village is agog with excitement. Everyone is up early to go to the Eidgah mosque. One finds a button missing from his shirt and is hurrying to his neighbour's house for thread and needle. Another finds that the leather of his shoes has become hard and is running to the oil-press for oil to grease it. They are dumping fodder before their oxen because by the time they get back from the Eidgah it may be late afternoon. It is a good three miles from the village. There will also be hundreds of people to greet and chat with; they would certainly not be finished before midday".

कहा जा सकता है कि आधुनिक युग में बालसाहित्यानुवाद का महत्व अत्यंत व्यापक और बहुआयामी है। यह -विस्तार-बच्चों के ज्ञान, सांस्कृतिक समझ, नैतिक विकास और वैश्विक दृष्टि के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अनुवाद के माध्यम से बाल साहित्य सीमाओं को पार कर बच्चों के मन तक पहुँचता है। इसलिए बालसाहित्यानुवाद को -केवल साहित्यिक प्रक्रिया न मानकर, भविष्य की पीढ़ी को संवेदनशील, जागरूक और व्यापक दृष्टिकोण से युक्त बनाने का सशक्त साधन माना जाना चाहिए।

11.7 हिंदी बाल साहित्य में अनुवाद: चुनौतियाँ, परंपरा और भविष्य की दिशाएँ

बाल साहित्य बालक के व्यक्तित्व निर्माण, संवेदनात्मक विकास और बौद्धिक परिपक्वता का आधार है। यह केवल मनोरंजन तक सीमित न रहकर बालक को समाज, संस्कृति और जीवनमूल्यों से परिचित कराता है। किंतु जब तक श्रेष्ठ -बाल साहित्य विभिन्न भाषाओं की सीमाओं को पार कर व्यापक पाठक वर्ग तक नहीं पहुँचतातब तक उसका प्रभाव सीमित ही रहता है। इस संदर्भ में बाल साहित्य अनुवाद की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है। हिन्दी बाल साहित्य के विकास में अनुवाद ने जहाँ एक ओर उसे समृद्ध किया हैवहीं अनेक चुनौतियाँ भी प्रस्तुत की हैं।

बाल साहित्य अनुवाद सामान्य साहित्य के अनुवाद से भिन्न और अधिक संवेदनशील कार्य है। इसमें केवल शब्दों का रूपांतरण नहीं होताबल्कि भावों, कल्पनाओं और बालमन की सहज अभ-िव्यक्ति का अनुवाद करना पड़ता है। बालक की भाषासमझ सीमित और सरल होती हैइसलिए अनुवादक को अत्यंत सावधानी से शब्दों का चयन करना होता -संबंध टूट जाता है। इस कारण बाल साहित्य अनुवाद में -है। यदि भाषा बोझिल या कृत्रिम हो जाएतो बालक का रुचि भावानुवाद को शब्दानुवादसे अधिक महत्व दिया जाना चाहिए।हिन्दी बाल साहित्य में अनुवाद की परम्परा प्राचीन काल से चली आ रही है। पंचतंत्र, हितोपदेश और जातक कथाएँ संस्कृत से अनेक भारतीय और विदेशी भाषाओं में अनूदित होकर विश्व साहित्य की अमूल्य धरोहर बनीं। इन ग्रंथों का उद्देश्य केवल कथा कहना नहीं थाबल्कि नैतिक शिक्षा और

व्यावहारिक बुद्धि का विकास करना था। अनुवाद के कारण ही ये रचनाएँ काल और देश की सीमाओं को पार कर सकीं और आज भी बच्चों में लोकप्रिय हैं।

आधुनिक काल मेंविशेषतः स्वतंत्रता के बादहिन्दी बाल साहित्य में अनुवाद का कार्य अधिक संगठित रूप में सामने आया। अन्य भारतीय भाषाओं में रचित श्रेष्ठ बाल साहित्य का हिन्दी में अनुवाद हुआजिससे राष्ट्रीय एकता और सांस्कृतिक समन्वय को बल मिला। रवीन्द्रनाथ टैगोर की बाल रचनाओं के हिन्दी अनुवाद इस दिशा में उल्लेखनीय हैं। 'बाल भारती' जैसी पत्रिकाओं ने अनूदित बाल साहित्य को स्थान देकर हिन्दी बाल पाठकों को विविध भाषाई अनुभव प्रदान किए।इसके बावजूदबाल साहित्य अनुवाद की स्थिति संतोषजनक नहीं कही जा सकती। विश्व की प्रमुख भाषाओं में रचित उत्कृष्ट बाल साहित्यजैसे यूरोप-, रूस और एशिया के देशों काहिन्दी में बहुत सी-मित मात्रा में उपलब्ध है। इसी प्रकार हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं के श्रेष्ठ बाल साहित्य का विदेशी भाषाओं में अपेक्षित अनुवाद नहीं हो सका है। परिणामस्वरूप भारतीय बाल साहित्य वैश्विक मंच पर अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज नहीं करा पाया है।

बाल साहित्य अनुवाद की एक प्रमुख समस्या गुणवत्ता से संबंधित है। कई अनुवादों में बालभाषा की सहजता का - कभी मूल रचना की आत्मा को सुरक्षित रखने में असफल हो जाते हैं। इसके -अभाव दिखाई देता है। अनुवादक कभी अतिरिक्तसांस्कृतिक संदर्भों का प्रश्न भी जटिल है। विदेशी बाल साहित्य का अनुवाद करत ◌े समय यह निर्णय कठिन होता है कि मूल संस्कृति को ज्यों का त्यों रखा जाए या भारतीय परिवेश के अनुरूप ढाला जाए। संतुलन न साध पाने पर बालक रचना से जुड़ नहीं पाता।प्रकाशकों और संस्थानों की भूमिका भी इस क्षेत्र में सीमित रही है। योजनाबद्ध ढंग से आयुवर्ग के - अनुसार पुस्तकों का चयन और अनुवाद नहीं किया गया। इस संदर्भ में डॉरमापति शुक्ल का कथन विशेष रूप से प्रासंगिक . यह बात अनूदित बाल साहित्य पर "योजनाबद्ध प्रकाशन के बिना बाल साहित्य का समुचित विकास संभव नहीं।" है कि भी समान रूप से लागू होती है।

बाल साहित्य अनुवाद का सामाजिक और शैक्षिक महत्व भी अत्यंत व्यापक है। अनुवादित रचनाएँ बच्चों में वैश्विक दृष्टि विकसित करती हैंअन्य संस्कृतियों के प्रति जिज्ञासा और सहिष्णुता को बढ़ाती हैं तथा यह बोध कराती हैं कि मानव मूल्य सार्वभौमिक होते हैं। इससे बालक का दृष्टिकोण संकीर्ण न होकर व्यापक बनता है।वर्तमान समय में आवश्यकता है कि बाल साहित्य अनुवाद को एक स्वतंत्र और प्रतिष्ठित विधा के रूप में मान्यता दी जाए। इसके लिए प्रशिक्षित अनुवादकों का निर्माण, बाल मनोविज्ञान से परिचित संपादकों की सहभागिता और संवेदनशील प्रकाशन नीति आवश्यक है। साथ हीसरकारी और शैक्षिक संस्थाओं द्वारा अनूदित बाल साहित्य को प्रोत्साहन, पुरस्कार और अकादमिक महत्व दिए जाने चाहिए।

हिन्दी बाल साहित्य के विकास और विस्तार में अनुवाद की भूमिका केंद्रीय है। अनुवाद के बिना न तो हिन्दी बाल साहित्य का वैश्विक विस्तार संभव है और न ही विश्व के श्रेष्ठ बाल साहित्य का हिन्दी बालकों तक सहज पहुँचना। यदि भावानुवाद, सांस्कृतिक संतुलन और बालोचित भाषा को केंद्र में रखकर बाल साहित्य अनुवाद को सशक्त किया जाएतो हिन्दी बाल साहित्य निश्चय ही नई ऊँचाइयों को प्राप्त करेगा

|

11.8 सारांश

आधुनिक युग में बालसाहित्य अनुवाद का महत्व अत्यंत व्यापक और बहुआयामी है। यह केवल शब्दों का - रूपांतरण नहींबल्कि भाव, कल्पना, संस्कृति और बालमन की सहज अभिव्यक्ति का संवेदनशील स्थानांतरण है। अनूदित - रचना बच्चों के मन को छू सके, तभी वह सफल बालसाहित्य अनुवाद मानी जाती- है। आधुनिक बालक बहुभाषी, बहुसांस्कृतिक और डिजिटल संसार से जुड़ा हैइसलिए अनुवाद बालकों के ज्ञान, दृष्टि और संवेदनाओं का विकास करता है। भारतीय संदर्भ में पंचतंत्र, रामायण और महाभारत के बालोपयोगी अनुवाद इसके उत्कृष्ट उदाहरण हैं। इसके साथ ही विश्व साहित्य की प्रमुख बाल रचनाएँ जैसे ग्रिम बंधु, एंडरसन और अन्य विदेशी कहानियाँ भी अनुवाद के माध्यम से बच्चों

तक पहुँच रही हैं। बालसाहित्यअनुवाद बच्चों की भाषाई क्षमता-, बौद्धिक विकास और नैतिक शिक्षा में योगदान देता है तथा सांस्कृतिक समझ और वैश्विक दृष्टिकोण विकसित करता है। डिजिटल माध्यमों के कारण अनूदित बाल साहित्य अब अधिक सहज और व्यापक रूप से उपलब्ध है।बालसाहित्यअनुवाद को केवल साहित्यिक प्रक्रिया नहीं-, बल्कि भविष्य की पीढ़ी को संवेदनशील, जागरूक और बहुआयामी दृष्टिकोण से युक्त बनाने का सशक्त माध्यम माना जाना चाहिए। इसलिए इसे योजनाबद्ध, प्रशिक्षित अनुवादकों और बाल मनोविज्ञान के आधार पर प्रोत्साहित करना अनिवार्य है।

✓ 11.9 प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा)

प्रश्न 1 का उत्तर: सामान्यतः बाल्यावस्था पाँच-छः वर्ष से तेरह-चौदह वर्ष तक मानी जाती है।

प्रश्न 2 का उत्तर: जो रचना बाल मन को आकर्षित करेजिसे बच्चा उत्साहपूर्वक अपनाएवही बाल साहित्य है।

प्रश्न 3 का उत्तर: कथाकार भगवती प्रसाद वाजपेयी न बाल साहित्य के बारे में कहां था -"बाल साहित्य लिखना बड़ा ही कठिन कार्य है। भाषा क्लिष्ट हो जाए तो लेखक को अपनी कुर्सी छोड़नी पड़े, भावों में स्वाभाविक सारल्य न होअभिव्यंजना में झलक पडे तो लेखक कलाकार नहीं घसियारा बन जाए। इन दोनों गुणों में पारंगत होने पर भी यदि कथन में नई पौध के नव निर्माण की भावना न हुई तो भी लेखक का प्रयास कालान्तर में तीन कौड़ी का बन जाता है।"

प्रश्न 4 का उत्तर: बाल साहित्य का उद्देश्य केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि ज्ञानवर्धन, संस्कार-निर्माण और भविष्य के प्रति उन्मुख करना है।

प्रश्न 5 का उत्तर: बालक की जिज्ञासा, कल्पना, अनुकरण प्रवृत्ति और उत्कंठा-ये सभी उसके बौद्धिक और चारित्रिक विकास के आधार हैं। अच्छा बाल साहित्य इन गुणों को सकारात्मक दिशा देता है। जब बालक को आदर्श पात्र, प्रेरक कथाएँ और जीवनोपयोगी मूल्य मिलते हैंतभी वह भविष्य का जिम्मेदार नागरिक बनता है।पं. सोहनलाल द्विवेदी का मत है-"सफल बाल साहित्य वही है जो बालकों के मन की बातउनकी भाषा में कह सके।"

प्रश्न 6 का उत्तर: प्रसिद्ध कवि वर्ड्सवर्थ का कथन बाल साहित्य की मूल भावना को स्पष्ट करता है-"बालक ईश्वर का अंश लेकर संसार में आता है, परंतु सांसारिक प्रभावों से उसका जीवन धीरे-धीरे मलिन हो जाता है।"

🔍 11.10 अधिक जानने के लिए पढ़ें

- Bassnett, Susan and Trivedi, Harish (eds.) ((1999, Post ColonialTranslaiton: Theory and Practice
- Venuti, Lawrence (ed), ((2000, The Translation Studies Reader, London & New York, Routledge.
- Baker, Mona (ed.), :1998Encyclopedia of Translation Studies, London and Newyork, London.
- गोस्वामी, कृष्ण कुमार, अनुवाद विज्ञान की भूमिका, नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन।
- टंडन, पूरनचंद, अनुवाद के विविध आयाम, दिल्ली, तक्षशिला प्रकाशन।
- नगेंद्र (.सं), अनुवाद 1993, सिद्धांत एवं अनुप्रयोग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली।

- श्रीवास्तव, रवींद्रनाथ, एवं गोस्वामी, कृष्ण कुमार (.सं), 1995, अनुवाद सिद्धांत और समस्याएँ, दिल्ली, आलेख प्रकाशन।
- शुक्लकानपूर ,आराधना ब्रदर्स ,हिंदी बाल साहित्य की सैद्धांतिक विवेचन .(2015)परशुराम.डॉ .
- सेठ जयपुर ,अंकित पब्लिकेशन्स ,समकालीन हिंदी बाल साहित्य .(2011)सुचेता ,

⍰ 11.11 अभ्यास प्रश्न

(क) संक्षिप्त प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

1. बाल साहित्य का अनुवाद से आप समझते है?
2. भारतीय संदर्भ में बाल-साहित्यानुवाद का इतिहास कैसा है ?
3. आधुनिक युग मे बालसाहित्यनुवाद का महत्व क्या अधिक है ?
4. बालसाहित्यनुवाद किस प्रकार सांस्कृतिक आदान-प्रदान का सशक्त माध्यम है ?
5. बालसाहित्यनुवाद का सामाजिक महत्व क्या है ?

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

1. बाल साहित्य एवं किशोर साहित्य अर्थ, अवधारण और समाज निर्माण की आधारशिला पर प्रकाश डालिए |
2. भारतीय परंपरा में बाल साहित्य के स्वरूप, उद्देश्य और महत्व को अपने शब्दों में लिखिए |
3. पाश्चात्य बाल साहित्य की दृष्टि, उद्देश्य और प्रभाव को स्पष्ट कीजिए |
4. आधुनिक युग में बाल-साहित्यानुवाद के महत्व को अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए |
5. हिंदी बाल साहित्य में अनुवाद की चुनौतियाँ, परंपरा और भविष्य की दिशाएँ पर आलेख प्रस्तुत कीजिए |
6. निम्नलिखित अंशो का अनुवाद कीजिए-

क) अंग्रेजी में अनुवाद:

मेरे हमजोलियों में एक लड़का गया नाम का था। मुझसे दो-तीन साल बड़ा होगा। दुबला, लंबा, बन्दरों की सी लम्बी-लम्बी, पतली-पतली उंगलियां, बन्दरों की-सी ही चपलता, वह झल्लाहट। गुल्ली कैसी भी हो, उस पर इस तरह से लपकता था, जैसे छिपकली कीड़ों पर लपकती है। मालूम नहीं उसके मां-बाप थे या नहीं, कहां रहता था, क्या खाता था, पर था हमारे गुल्ली क्लब का चैम्पियन। जिसकी तरफ वह आ जाये, उसकी जीत निश्चित थी। हम सब उसे दूर से आते देख, उसका दौडकर स्वागत करते थे और उसे अपना गोइयां बना लेते थे।

एक दिन हम और गया दो ही खेल रहे थे। वह पदा रहा था, मैं पद रहा था, मगर कुछ विचित्र बात है कि पदाने में हम दिन भर मस्त रह सकते हैं, पदना एक मिनट का भी अखरता है, मैंने गला छुड़ाने के लिए सब चालें चली, जो ऐसे अवसर पर शास्त्र-निहित न होने पर भी क्षम्य हैं, लेकिन गया अपना दांव लिए बगैर मेरा पिण्ड न छोड़ता था।

ख)हिंदी में अनुवाद:

It was indeed a Superior Comestible (that's Magic), and he put it on the stove because he was allowed to cook on that stove, and he baked it and he baked it till it was all done brown and smelt most sentimental. But just as he was going to eat it, there came down to the beach from the Altogether Uninhabited Interior one Rhinoceros with a horn on his nose, two piggy eyes and few manners. In those days the Rhinoceros's skin fitted him quite tight. There were no wrinkles in it anywhere. He looked exactly like a Noah's Ark Rhinoceros, but of course much bigger. All the same, he had no manners then, and he has no manners now,and he never will have any manners.

He said "How!", and the Parsee left that cake and climbed to the top of a palm tree with nothing on but his hat, from which the rays of the sun were always reflected in more than oriental splendour. And the Rhinoceros upset the oil stove with his nose, and the cake rolled on the sand, and he spiked that cake on the horn of his nose, and he ate it, and he went away, waving his tail, to the desolate and Exclusive Uninhabited Interior which abuts on the islands of Mazandaran, Socotra and the Promontories of the Larger Equinox.

शब्दकोश:

1. योजनाबद्ध: योजना में बँधा हुआ, योजनामय।
2. बौद्धिक:बुद्धि संबंधी,बुद्धि के योग्य।
3. परिपक्वता:परिपक्व होने की अवस्था |
4. लालिमा: लाल होने का भाव, लाली।
5. विभाजित: विभाजित किया हुआ।
6. मार्गदर्शन: रास्ता दिखलाना,पथ प्रदर्शन।

*** ***** ***

इकाई 12: साहित्य, संस्कृति और अनुवाद का संबंध

इकाई की रुपरेखा

.121 उद्देश्य
12. 2 प्रस्तावना
12.3 संस्कृति का अर्थ एवं अवधारणा
12.4 साहित्य का अर्थ एवं अवधारणा
12.5 साहित्यिक अनुवाद एक सर्जनात्मक प्रक्रिया :
12.6 संस्कृति और अनुवाद का अंतः संबंध प्रक्रिया
12.7 अनुवाद के माध्यम से साहित्य और संस्कृति की अभिव्यक्ति
12.8 अनुवाद में भाषाई आदानप्रदान-प्रदान के माध्यम से सांस्कृतिक आदन-
12. 9 सारांश
12.10 प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा)
12.11 अधिक जानने के लिए पढ़ें
12.12 अभ्यास प्रश्न

.121 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन से आप-

- संस्कृति का अर्थ एवं अवधारणा से अवगत होंगे |
- साहित्य का अर्थ एवं अवधारणा के बारे में ज्ञान प्राप्त करेंगे |
- साहित्य और संस्कृति के साथ अनुवाद का अन्तःसम्बन्ध के बारे में जानेंगे |
- साहित्यिक अनुवाद के सर्जनात्मक प्रक्रिया के बारे में ज्ञान प्राप्त करेंगे |
- अनुवाद में माध्यम से साहित्य और संस्कृति की अभिव्यक्ति की प्रकार हुआ है| उसके बारे में जान सकेंगे ,

12.2 प्रस्तावाना

प्रस्तुत इकाई का उद्देश्य संस्कृति, साहित्य और अनुवाद के आपसी संबंधों को समझना है। संस्कृति किसी समाज की जीवनदृष्टि-, मूल्यव्यवस्था-, आस्थाओं, परंपराओं, सामाजिक व्यवहार और रचनात्मक अभिव्यक्तियों से निर्मित होती है। साहित्य इसी सांस्कृतिक चेतना का सृजनात्मक रूप हैजिसमें समाज का इतिहास, अनुभव, संघर्ष और संवेदना प्रतिबिंबित होती है। इस दृष्टि से साहित्य को संस्कृति का दर्पण भी कहा जा सकता है।अनुवाद इस सांस्कृतिकसाहित्यिक - परंपरा को एक समाज से दूसरे समाज तक पहुँचाने का महत्वपूर्ण माध्यम है। वह केवल किसी रचना को नए पाठकों तक ले जाने का कार्य नहीं करताबल्कि भिन्न सांस्कृतिक अनुभवों के बीच संवाद की प्रक्रिया को संभव बनाता है। अनुवाद के माध्यम से एक संस्कृति के विचार, मूल्य और सामाजिक संदर्भ दूसरी संस्कृति में प्रवेश करते हैं और वहाँ नए अर्थ ग्रहण करते हैं। इसलिए अनुवाद को सांस्कृतिक आदानप्-रदान की सृजनात्मक प्रक्रिया के रूप में देखा जाता है।

अधिकतर अनुवाद के दौरान ऐसे सांस्कृतिक तत्व सामने आते हैं जो लक्ष्य समाज में सीधे उपलब्ध नहीं होते। ऐसी परिस्थितियों में अनुवादक को मूल रचना के आशय और संवेदना को बनाए रखते हुए नए सांस्कृतिक संदर्भों के माध्यम से अभिव्यक्ति करनी पड़ती है। इसी कारण अनुवाद को कई बार पुनःसृजन कहा जाता हैक्योंकि इसमें केवल रूपांतरण नहींबल्कि रचनात्मक हस्तक्षेप भी निहित होता है।यह इकाई अनुवाद के इसी सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य पर केंद्रित है। इसमें संस्कृति और साहित्य के पारस्परिक संबंधों, अनुवाद की भूमिका तथा अनुवादक की सृजनात्मक जिम्मेदारियों पर चर्चा की जाएगी। इस अध्ययन के माध्यम से अनुवाद को एक व्यापक सांस्कृतिक प्रक्रिया के रूप में समझने का प्रयास किया गया हैजो समाजों और परंपराओं के बीच संवाद को सशक्त बनाती है।

12.3 संस्कृति का अर्थ एवं अवधारणा

संस्कृति मानव जीवन की वह आधारभूत शक्ति हैजो उसके आचारविचार-, व्यवहार, जीवनपद्धति और मूल्यों को -शारीरिक-दिशा देती है। यह केवल बाह्य आडंबर या भौतिक सुविधाओं का नाम नहींबल्कि मनुष्य के आंतरिक विकास, मानसिक और आध्यात्मिकसे जुड़ी हुई एक सूक्-ष्म प्रक्रिया है। संस्कृति मनुष्य को परिष्कृत करती है और उसके जीवन को अर्थपूर्ण बनाती है।

'संस्कृति' शब्द संस्कृत की 'कृ' धातु से बना हैजिसका अर्थ है—संवारना, शुद्ध करना या परिष्कृत करना। इस प्रकार संस्कृति का मूल अर्थ जीवन को श्रेष्ठ और उन्नत बनाना है। यह मनुष्य के स्वभाव, प्रवृत्तियों और व्यवहारों में निरंतर परिमार्जन की प्रक्रिया को दर्शाती है। संस्कृति जीवन जीने की वह शैली हैजो समाज में सदियों से विकसित होती चली आती है और पीढ़ीपीढ़ी हस्तांतरित होती रहती है।संस्कृति को सभ्यता से भिन्न समझना आवश्यक है-दर-। भवन, सड़क, वाहन, वस्त्र और भौतिक सुखसुविधाएँ सभ्यता के अंतर्गत आती हैंकिंतु इन्हें उपयोग करने की मर्यादा-, शिष्टता और सौंदर्यबोध संस्कृति का विषय है। सभ्यता बाह्य और स्थूल है-, जबकि संस्कृति आंतरिक और सूक्ष्म। इसलिए हर सभ्य व्यक्ति का सुसंस्कृत होना अनिवार्य नहीं और हर सुसंस्कृत व्यक्ति का सभ्य होना भी आवश्यक नहीं।

संस्कृति की परिभाषा:

संस्कृति की एक सर्वमान्य परिभाषा देना कठिन हैक्योंकि यह जीवन के हर क्षेत्र से जुड़ी हुई है। फिर भी विभिन्न विद्वानों की परिभाषाओं के आधार पर इसके स्वरूप को समझा जा सकता है।हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार "मनुष्य की श्रेष्ठ साधनाएँ ही संस्कृति हैं।"

रामधारी सिंह दिनकर संस्कृति को जीवन में व्याप्त एक आत्मिक गुण मानते हैंजो युगों में विकसित होता है और " "|फूल में सुगंध या दूध में मक्खन की भाँति सर्वत्र व्याप्त रहता है

राहुल सांकृत्यायन के मत में संस्कृति देश और जाति से संबद्ध चेतना हैजो पीढ़ियों तक संस्कार के रूप में बनी " "| रहती है

पाश्चात्य विद्वान टायलर संस्कृति को मानव की "सामाजिक विरासत" कहते हैं, जो समाज के सदस्य होने के कारण व्यक्ति को प्राप्त होती है।

इन परिभाषाओं के आलोक में कहा जा सकता है कि संस्कृति उन समस्त आचारों, विचारोंमूल्यों और परंपराओं का समुच्चय हैजो मानव जीवन को संस्कारित, परिष्कृत और उन्नत बनाते हैं।

संस्कृति का स्वरूप व्यापक और बहुआयामी है। यह केवल नाचगान या कला तक सीमित नहीं-, बल्कि सामाजिक, धार्मिक, दार्शनिक, नैतिक और रचनात्मक जीवन के सभी पक्षों को अपने भीतर समेटे रहती है। मनुष्य के खान-पान, रहनसहन-, पहनावे, विवाह, संस्कार, धर्मकर्म-, लोकविश्वास, भाषा, साहित्य और कला—सभी में संस्कृति की झलक मिलती है।संस्कृति एक सामाजिक परिघटना है। इसका निर्माण किसी एक व्यक्ति द्वारा नहीं होता, बल्कि संपूर्ण

समाज के सामूहिक जीवन से होता है। समाज में स्वीकृत आचारपीढ़ी चलते हैं-दर-विचार और व्यवहार जब पीढ़ी-, तो वे संस्कृति का रूप ले लेते हैं। इसलिए संस्कृति समाज की आत्मा कही जा सकती है।

संस्कृति स्थिर नहीं होती। यह समय, परिस्थिति और संपर्क के अनुसार निरंतर परिवर्तित होती रहती है। विभिन्न संस्कृतियों का आपसी संपर्क उसे समृद्ध करता है और नया रूप प्रदान करता है। नृत्य, संगीत, नाटक, खेलकूद और हास्य - संस्कृति को सजीव बनाए रखते हैं। इनके बिना संस्कृति नीरस और निष्प्राण हो जाती है।भारतीय संदर्भ में संस्कृति की धारा अत्यंत प्राचीन है। आदिकाल से आधुनिक काल तक साहित्य ने संस्कृति को अभिव्यक्त किया है। पृथ्वीराज रासो युगीन जीवन और परंपराओं का चित्र प्रस्तुत करता हैतो भक्ति साहित्यरामचरितमानस-, कबीर और सूर के पद—तत्कालीन सांस्कृतिक चेतना को उजागर करते हैं। लोकसाहित्य भी संस्कृति का महत्वपूर्ण आधार हैजिसमें जनसाधारण का जीवन-, विश्वास और संवेदनाएँ प्रतिध्वनित होती हैं।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि संस्कृति मानव जीवन को परिष्कृत करने वाली वह सतत प्रक्रिया हैजो समाज की ऐतिहासिक परंपराओं और अनुभवों से जन्म लेती है। यह सभ्यता से अधिक सूक्ष्म, अधिक स्थायी और अधिक व्यापक है।

12.4 साहित्य का अर्थ एवं अवधारणा

साहित्य और समाज का संबंध अत्यंत घनिष्ठ और अविभाज्य है। समाज के बिना साहित्य की रचना संभव नहीं और साहित्य के बिना समाज अपनी संवेदनशीलता, चेतना और आत्मचिंतन की शक्ति खो देता है। साहित्य समाज का प्रतिबिंब भी है और उसका मार्गदर्शक भी। जैसे साहित्य शब्दों के माध्यम से भावों और अनुभवों को व्यक्त करता हैवैसे ही सिनेमा दृश्यश्रव्य माध्यम से समाज की सच्चाइयों को सामने लाता है। दोनों कला के प्रभावश-ाली रूप हैंकिंतु साहित्यकार जहाँ केवल काग़ज़कलम से सृजन करता हैवहीं फिल्म निर्देशक को रचनात्मकता के साथ तकनीकी - जटिलताओं और जोखिमों से भी गुजरना पड़ता है। इसके बावजूददोनों का उद्देश्य सामाजिक यथार्थ को उजागर करना और मानवीय मूल्यों की रक्षा करना है।

'साहित्य' शब्द संस्कृत से आया हैजिसकी व्युत्पत्ति 'सहित' से मानी जाती हैजिसका अर्थ हैसहभाव या साथ - -होना। सामान्य रूप से साहित्य को शब्द और अर्थ के सामंजस्य के रूप में परिभाषित किया गया है। भामह का कथन "शब्दार्थौ सहितौ काव्यम्" और विश्वनाथ का सूत्र -"वाक्य रसात्मकं काव्यम्" इस बात को स्पष्ट करते हैं कि साहित्य केवल भाषा का विन्यास नहींबल्कि रस, सौंदर्य और भाव की संयुक्त अभिव्यक्ति है। पंडितराज जगन्नाथ ने साहित्य को "रमणीय अर्थ का प्रतिपादन करनेवाला शब्द" कहाजिससे उसकी कलात्मकता और आनंददायक प्रकृति सामने आती है।

प्राचीन भारतीय परंपरा में 'काव्य' शब्द का प्रयोग व्यापक अर्थ में होता थाकिंतु कालांतर में उसका अर्थ कविता तक सीमित हो गया और 'साहित्य' शब्द ने कहानी, उपन्यास, नाटक, निबंध, आलोचना आदि सभी विधाओं को समाहित कर लिया। आधुनिक काल में साहित्य को 'ज्ञान का साहित्य' और 'भावना का साहित्य'इन दो वर्गों में बाँटा - क्विन्सी के अनुसार .गया। डी, ज्ञान का साहित्य शिक्षण और सूचना पर केंद्रित होता हैजबकि भावना का साहित्य मनुष्य की अनुभूतियों और संवेदनाओं को जाग्रत करता है। वस्तुतः साहित्य की आत्मा इसी भावनाप्रधान रचनात्मकता म-ेंं निहित है।

हिंदी साहित्यकारों ने भी साहित्य को जीवन से जोड़कर देखा है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल का कथन—"कविता जीवन और जगत की अभिव्यक्ति है"साहित्य की सामाजिक भूमिका को रेखांकित करता है। जयशंकर प्रसाद के अनुसार, काव्य "आत्मा की संकल्पात्मक अनुभूति" हैजबकि सुमित्रानंदन पंत इसे "हमारे परिपूर्ण क्षणों की वाणी" मानते हैं। पाश्चात्य विचारकों में वर्ड्सवर्थ ने कविता को "प्रबल भावनाओं का सहज प्रवाह" कहा और मैथ्यू अर्नोल्ड ने इसे "जीवन की आलोचना" के रूप में परिभाषित किया।

साहित्य के स्वरूप को समझने के लिए उसके चार प्रमुख तत्व माने गए हैंभाव -, कल्पना, बुद्धि और शैली। 'भाव' साहित्य की आत्मा है, जो पाठक के हृदय को स्पर्श करता है। कल्पना उस भाव को सजीव, प्रभावशाली और सौंदर्यपूर्ण बनाती है। बुद्धि रचना में संतुलन, औचित्य और तार्किकता लाती हैजबकि शैली भाव और विचारों को अभिव्यक्त करने का माध्यम है। भाव, कल्पना और बुद्धि यदि साहित्य के प्राण हैंतो शैली उसका शरीर है।

मूलतः साहित्य केवल परिभाषाओं या सिद्धांतों में सीमित नहीं किया जा सकता। वह मानवीय अनुभवों, संवेदनाओं और सांस्कृतिक मूल्यों की जीवंत अभिव्यक्ति है। "साहित्य की आत्मा का साक्षात्कार तभी संभव है जब हृदय में अनुभूति, मस्तिष्क में गंभीर अध्ययन और व्यक्तित्व में साधना का बल हो।" संक्षेप में, साहित्य समाज की चेतना को जाग्रत करने वाला, जीवन को समझने और सुधारने का सशक्त माध्यम हैजो शब्दों के द्वारा मानव जीवन की गहराइयों को उजागर करता है।

12.5 साहित्यिक अनुवाद: एक सर्जनात्मक प्रक्रिया

साहित्यिक अनुवाद केवल शब्दों के स्थानांतरण की क्रिया नहीं हैबल्कि यह एक गहन बौद्धिक और सर्जनात्मक उपक्रम है। इसका पहला और सबसे महत्त्वपूर्ण चरण मूल पाठ का सजग पाठन है। अनुवादक को रचना को केवल भाषिक स्तर पर नहींबल्कि उसके भावात्मक, वैचारिक और संवेदनात्मक स्तरों पर भी आत्मसात करना पड़ता है। साहित्यिक अनुवाद की कसौटी यही है कि मूल रचना के अर्थ, भाव, विचार और अनुभूति लक्ष्यभाषा में उसी प्रभाव और तीव्रता के - साथ संप्रेषित हों।इसके लिए आवश्यक है कि अनुवादक को संबंधित साहित्यिक विधा का समुचित ज्ञान होया तो वह - पठन -स्वयं उस विधा का रचनाकार होया अनुवाद से पहले कृति को उसकी समग्रता में समझने का गंभीर प्रयास करे। पाठ विश्लेषण का होता हैजिसमें वाक्य-के बाद दूसरा चरण पाठ, उपवाक्य, पदबंध, शब्द, प्रतीक, अलंकार और छंद जैसे तत्वों का सूक्ष्म परीक्षण शामिल है। यही विश्लेषण अनुवादक को यह तय करने में सहायता करता है कि स्रोतभाषा की रचना को - भाषा में किस प्रकार ढाला जाए ताकि वह नई भाषा में भी स्वाभाविक और सजीव लगे।-लक्ष्य

इस प्रक्रिया का अगला चरण भाषांतरण हैजिसमें अनुवादक को मूल रचना के "सत्व" की रक्षा करते हुए उसकी संरचनात्मक अखंडता बनाए रखनी होती है। मूल पाठ के संवेदनशील स्थलों की पहचान करउनके समग्र प्रभाव को लक्ष्य-) भाषा में पुनर्सृजित करना अनुवादक की जिम्मेदारी होती है। इसके बाद प्रतिस्थापनsubstitution) का चरण आता हैजिसमें लक्ष्यभाषा की प्रकृति-, प्रवाह और आंतरिक संरचना के अनुरूप वाक्यरचना-, शब्दसंयोजन और मुहावरों में - भाषा में अनावश्यक हो जाते हैंतो उन्हें -आवश्यक परिवर्तन किए जाते हैं। कई बार मूल पाठ के कुछ शब्द या वाक्य लक्ष्य हटाना भी पड़ता है—बशर्ते मूल भाव सुरक्षित रहे।

उदाहरण के लिए, अंग्रेजी वाक्य "Jayaprakash was a good leader" का हिंदी अनुवाद "जयप्रकाश अच्छे नेता थे" होगा। यहाँ 'a' का प्रयोग हिंदी में अनावश्यक हैजबकि अंग्रेजी में वह आवश्यक है। ऐसे सूक्ष्म निर्णय ही अनुवाद को सहज और प्रभावी बनाते हैं।अंतिम चरण मूल और अनूदित पाठ का तुलनात्मक विश्लेषण है। इसमें यह परखा जाता है कि क्या अनुवाद मूल रचना के भाव, संदर्भ, व्यंजना और प्रभाव को समुचित रूप से संप्रेषित कर पा रहा है। यदि मूल रचना काव्य या नाटक हैतो छंद, लय और नाटकीय प्रभावों का ध्यान रखना भी आवश्यक हो जाता हैताकि पाठक केवल अर्थ ही नहींरस का भी अनुभव कर सके।

इस पूरी प्रक्रिया में यह समझना जरूरी है कि साहित्यिक अनुवाद मूलतः एक सर्जनात्मक कर्म है। वह मात्र भाषांतरण नहींबल्कि पुनर्सृजन है। जब तक अनूदित रचना में मौलिक लेखन का आस्वाद नहीं आता, तब तक उसकी प्रामाणिकता संदिग्ध रहती है। अनुवादक को रचना को "जीना" पड़ता हैउसके परिवेश-, संस्कृति और रचनाकार के मानसिक संसार में प्रवेश करना पड़ता है। बिना इस आत्मीयता के सर्जनात्मक अनुवाद संभव नहीं।इसी कारण कई बार अनूदित रचनाएँ मूल से भी अधिक प्रभावशाली बन जाती हैं। श्रेष्ठ साहित्यिक अनुवाद वही है जो अपने देशकाल और

सांस्कृतिक संदर्भ में विजातीय न लगे। यह तभी संभव है जब अनुवादक स्रोतभाषा की -साथ लक्ष्य-भाषा के साथ-भांति परिचित हो।-सांस्कृतिक बनावट और साहित्यिक परंपरा से भी भली

इस संदर्भ में हिंदी में हुए कुछ उल्लेखनीय अनुवादों को देखा जा सकता है। टाल्स्टाय के नाटक "Power of Darkness" का जैनेन्द्र कुमार द्वारा किया गया अनुवाद "पाप और प्रकाश" इसका सशक्त उदाहरण हैजिसमें मूल कृति की केन्द्रीय संवेदना को सुरक्षित रखते हुए उसे भारतीय सामाजिकसांस्कृतिक संदर्भ में ढ-ाला गया है। इसी प्रकार रघुवीर सहाय द्वारा शेक्सपियर के "Macbeth" का अनुवाद "बरनम वन" के रूप में किया गयाजिसमें मूल कथ्य सुरक्षित रहते हुए भी रचना पूरी तरह भारतीय भावभूमि में प्रतिष्ठित हो जाती है। इसके विपरीत, इसी नाटक के कुछ अन्य अनुवाद मूल के भाषिक ढाँचे से बाहर नहीं निकल पाए और अपेक्षित सर्जनात्मकता हासिल नहीं कर सके।

अतः साहित्यिक अनुवाद की सर्जनात्मकता का मूल सूत्र यही है कि रचना को उसके समग्र सांस्कृतिक आयामों में समझा जाए और उसे अपने देशकाल के अनुरूप पुनर्सृजित किया जाए। यह केवल वांछनीय नहींबल्कि अनिवार्य है। ऐसा अनुवाद ही पाठक को मूल रचना का सच्चा आस्वाद दे सकता है और साहित्यिक परंपरा को समृद्ध कर सकता है।

12.6 संस्कृति और अनुवाद का अंतः संबंध प्रक्रिया

अनुवाद को केवल दो भाषाओं के बीच शब्दों के स्थानांतरण के रूप में देखना एक सीमित दृष्टि है। वस्तुतः अनुवाद दो संस्कृतियों के बीच संवाद की प्रक्रिया हैजिसमें भाषा माध्यम का कार्य करती है। संस्कृति जीवनशैली-, आस्थाओं, व्यवहारों और सामाजिक मूल्यों का समुच्चय हैजबकि भाषा उसी संस्कृति की अभिव्यक्ति का सबसे सशक्त साधन। इसलिए सांस्कृतिक अनुवाद का प्रश्न मूलतः भाषा, समाज और संस्कृति के अंतर्संबंध से जुड़ा हुआ है।भाषा मनुष्य द्वारा विकसित एक सामाजिक व्यवस्था हैजिसके माध्यम से वह अपने विचारों, भावों और अनुभवों को साझा करता है। भाषावैज्ञानिक सपीर के अनुसार भाषा "स्वेच्छा से निर्मित प्रतीकों की एक ऐसी व्यवस्था है जिसके द्वारा मनुष्य अपने विचारों, भावों और इच्छाओं को संप्रेषित करता है।" ब्रिटानिका शब्दकोश भी भाषा को समाज और संस्कृति से जोड़ते हुए उसे संप्रेषण, अस्मिता और भावात्मक अभिव्यक्ति का माध्यम मानता है। हिंदी के विद्वान डॉ .श्यामसुंदर दास और डॉ . भोलानाथ तिवारीने भी भाषा को सामाजिक संपर्क और विचारविनिमय की अनिवार्य प्रक्रिया बताया है।-

किसी भी भाषा की संरचना और शब्दभंडार उसके समाज के इतिहास और सांस्कृतिक विकास से निर्मित होते हैं। - समाज में आए परिवर्तनों का सीधा प्रभाव भाषा पर पड़ता है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल नेसाहित्य के संदर्भ में कहा है कि किसी देश का साहित्य वहाँ की जनता की चित्तवृत्ति का संचित प्रतिबिंब होता है। यही बात भाषा पर भी लागू होती हैसमाज बदलता है तो भाषा भी रूप और अर्थ दोनों स्तरों पर बदलती है। संस्कृत से पाली, प्राकृत और अपभ्रंश होते हुए आधुनिक भारतीय भाषाओं तक की यात्रा इसी सामाजिक परिवर्तन की कहानी है।

भारतीय संदर्भ में बाह्य सांस्कृतिक संपर्कों ने भाषा को गहराई से प्रभावित किया है। तुर्क और मुगल शासन के साथ अरबीफारसी शब्द आएअंग्रेज़ी शासन के दौरान अंग्रेज़ी शब्दों का प्रसार हुआ और आज भूमंडलीकरण- के दौर में तकनीकी और डिजिटल शब्दावली का तीव्र प्रवेश हो रहा है। यह परिवर्तन भाषा के रूपसंबंधी विकास का उदाहरण - -संबंधी। उनके अनुसार-संबंधी और विषयवस्तु-रूप-है।रामविलास शर्मा ने भाषा के विकास को दो स्तरों पर समझाया है "बाह्य अंतर्विरोधों से प्रायः रूप संबंधी परिवर्तन होते हैंजबकि समाज के आंतरिक अंतर्विरोधों से विषयवस्तु संबंधी परिवर्तन।" भाषा न केवल नई शब्दावली ग्रहण करती है, बल्कि नए सामाजिक अनुभवों को व्यक्त करने की क्षमता भी अर्जित करती है। इस प्रकार भाषा संस्कृति को प्रतिबिंबित भी करती है और गढ़ती भी है।

अनुवाद इसी जटिल प्रक्रिया का संवेदनशील पक्ष है। अनुवादक को केवल शब्दों का नहींबल्कि सांस्कृतिक संदर्भों, सामाजिक अनुभवों और भावार्थ का स्थानांतरण करना होता है। इसलिए सांस्कृतिक अनुवाद में भाषा को समाज और संस्कृति से अलग नहीं किया जा सकता। भाषा स्वयं संस्कृति का अंग है और अनुवाद उसी संस्कृति को दूसरी संस्कृति तक

पहुँचाने का माध्यम।किसी भी समाज की संस्कृति का निर्माण भाषा के बिना संभव नहीं है। भाषा न केवल सांस्कृतिक अनुभवों को अभिव्यक्त करती हैबल्कि समय के साथ उन्हें संरक्षित और रूपांतरित भी करती है। इस अर्थ में यह कहना अतिशयोक्ति नहीं कि भाषा किसी समाज के सांस्कृतिक विकास का दर्पण है। जब संस्कृतियाँ आपस में टकराती हैंसंवाद करती हैं या सहअस्तित्व में आती हैंतब भाषा और अनुवाद उस प्रक्रिया के सबसे सक्रिय माध्यम बन जाते हैं।

रामस्वरूप चतुर्वेदी भारतीय पुनर्जागरण के संदर्भ में लिखते हैं—"पुनर्जागरण दो जातीय संस्कृतियों की टकराहट से उत्पन्न रचनात्मक ऊर्जा है" (हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास, पृ। यह टकराहट केवल नई सांस्कृतिक (94 . संरचनाओं को जन्म नहीं देतीबल्कि भाषाओं के स्वरूप, शब्दशैली में-भंडार और अभिव्यक्ति- भी गहरे परिवर्तन लाती है। भारतीय इतिहास इसका सशक्त उदाहरण है। मध्यकाल में इस्लाम के आगमन से भारतीय और अरबीफारसी संस्कृतियाँ - फारसी के प्रयोग ने न केवल द्विभाषिक साहित्य को -सामने आई। प्रशासन और साहित्य की भाषा के रूप में अरबी-आमने जन्म दियाबल्कि भारतीय भाषाओं और अरबीफारसी के बीच अनुवाद की एक समृद्ध परंपरा भी विकसित हुई।-

बाद में यूरोपीय संपर्क और विशेषतः अंग्रेजी उपनिवेशवाद के प्रभाव से भारतीय भाषाओं में अंग्रेजी शब्दों और सांस्कृतिक अवधारणाओं का प्रवेश हुआ। यह स्पष्ट करता है कि भाषा की निर्मिति, विकास और परिवर्तन सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश से गहराई से जुड़े होते हैं। इसीलिए भाषा को समाज और संस्कृति से अलग करके नहीं समझा जा सकता।अनुवाद इस सांस्कृतिक अंतःक्रिया का सबसे जीवंत रूप है। लोककथाओं और साहित्यिक आख्यानों की यात्रा इसका प्रमाण है। पंचतंत्र, जातक कथाएँ, अकबर–बीरबल, अरेबियन नाइट्स और यूरोपीय फेयरी टेल्स—ये सभी अनुवाद, रूपांतरण और आत्मसातीकरण की प्रक्रियाओं से गुजरकर विभिन्न समाजों में रचबस गई हैं। पंचतंत्र की अरब यात्रा इस - बात का उदाहरण है कि किस तरह एक संस्कृति का पाठ दूसरी संस्कृति में जाकर नया रूप ग्रहण करता है और अंततः विश्वसाहित्य का हिस्सा बन जाता है।-

यहीं अनुवाद की मूल चुनौती सामने आती है—एक संस्कृति में जन्मे पाठ को दूसरी, भिन्न संस्कृति में किस प्रकार रोपा जाए। इसी जटिलता के कारण कई अनुवाद चिंतकों ने अनुवाद को "लगभग असंभव" कार्य कहा है। फिर भी, विश्व साहित्य में उपलब्ध उत्कृष्ट अनुवाद यह सिद्ध करते हैं कि यह असंभवता मानव की सांस्कृतिक जिज्ञासा और संवाद की आकांक्षा के सामने टिक नहीं पाती। सृजनात्मक साहित्य के संदर्भ में इसी कारण "पुनःसृजन" को एक प्रभावी अनुवाद-रणनीति माना गया है, विशेषकर तब जब पाठ अत्यंत संस्कृतिनिष्ठ हो।कृष्णा सोबती के उपन्यासों के अंग्रेजी शीर्षक इस द्वंद्व को उजागर करते हैं। सूरजमुखी अँधेरे के का अनुवाद 'Sunflowers of the Darkअपेक्षाकृत शाब्दिक हैजबकि गुजरात ' ' पाकिस्तान सेगुजरात हिंदुस्तान तक का अनुवादA Gujarat Here, A Gujarat Thereभावात्मक तो हैपर मूल शीर्षक ' सांस्कृतिक संकेतों को पूरी तरह व्यक्त नहीं कर पाता। फिर भी-में निहित ऐतिहासिक, जैसा कि अनुवादक डेज़ी रॉकवेल कहती हैं—"For worse… for better, because a broad audience may now have access to this marvelous palimpsest." अर्थात् अनुवाद में कुछ खोता है, पर पाठ का विस्तार भी होता है।

कविता का अनुवाद इस समस्या को और जटिल बना देता है। नागार्जुन की अकालकविता और उसका अंग्रेजी - अनुवाद देखें तो प्रारंभिक पंक्तियों में मूल की लय और प्रतीकात्मकता अनुवाद में क्षीण लगती हैजबकि आगे चलकर प्रवाह अपेक्षाकृत सध जाता है। यह अंतर दर्शाता है कि कविता में केवल अर्थ नहींबल्कि सांस्कृतिक बिंब, लय और ध्वनि भी अनुवाद की कसौटी पर होते हैं।वॉल्टर बेंजामिन का यह कथन महत्वपूर्ण है कि अनुवाद उन पाठकों के लिए होता है जो मूल भाषा नहीं जानते। इसका निहितार्थ यह भी है कि वे मूल संस्कृति और परिवेश से भी अपरिचित होते हैं। यही कारण है कि साहित्यिक अनुवाद में सांस्कृतिक संदर्भों की बोधगम्यता एक बड़ी चुनौती बन जाती है। राग दरबारी के अंग्रेजी अनुवाद में "कबीरपंथी तिलक", "तुलसी की कंठी" और "मिर्जई" जैसे शब्द अनूदित होने के बावजूद अपने सांस्कृतिक अर्थलोक के कारण विदेशी पाठक के लिए पूरी तरह स्पष्ट नहीं हो पाते।-

अपनी प्रगति जांचें

प्रश्न 1. रामस्वरूप चतुर्वेदी ने भरतीय पुनर्जागरण के संदर्भ में क्या लिखते है ?

प्रश्न 2. भारतीय संस्कृति अरबी फारसी संस्कृति का आगमन कैसे हुआ था ?

प्रश्न 3. सांस्कृतिक अनुवाद में भाषा का क्या महत्व है ?

प्रश्न 4. साहित्यिक अनुवाद की दो विशेषताओं के बारे में लिखिए।

प्रश्न 5. कविता जीवन और जगत की अभिव्यक्ति हैयह कथन किस का?

श्रीलाल शुक्ल द्वारा रचित राग दरबारी आंचलिकता का पुट लिए हुए है। इसमें आंचलिक संदर्भ, गालियाँ तथा भाषा आदि का प्रचुर प्रयोग हुआ है। जिलियन राइट ने इसका अंग्रेजी अनुवाद इसी शीर्षक से किया जो पेंगुइन से प्रकाशित हुआ। सामाजिक-सांस्कृतिक अनुवाद की दृष्टि से इसे देखा जा सकता है-

उसको लोग लंगड़ कहते थे। माथे पर कबीरपंथी तिलक", गले में तुलसी की कंठी, आंधीपानी झेला हुआ दढ़ियल - चेहरा, दुबलीपतली देह-, मिर्जई पहने हुए। एक पैर घुटने के पास से कटा था जिसकी कमी एक लाठी से पूरी की गई थी। चेहरे पर पुराने जमाने के उन इसाई संतों का भाव, जो रोज अपने हाथ से अपनी पीठ पर खींचकर सौ कोड़े मारते हों "|

जिलियन राइट द्वारा किया गया अंग्रेजी अनुवाद" -People called him Langar the lame one. On his forehead he bore the tilak of the Kabirpanthi ascetics, around his throat hung a necklace of holy tulsi. His face was weathered by dust and thunderstorms, and his thin body was covered with a quilted cotton jacket. One leg had been ampulated at the knee and he made up for its loss with a stout stick. His expression resembled that of the early Christian saints who whipped themselves daily a hundred times to mortify the flesah."

उपर्युक्त गद्यांश में यदि सामाजिक सांस्कृतिक शब्दों को छाँटा जाए तो कबीरपंथी तिलक, तुलसी की कंठी, मिर्जई और इसाई संत। इनमें से इसाई संत ही एक ऐसा प्रयोग होगा, जो अंग्रेजी समाज के लिए बोधगम्य होगा, बाकी सभी प्रयोग अनुवाद के बावजूद समझ से परे होंगे क्योंकि ये केवल शब्द या प्रयोग मात्र नहीं है अपितु इनका सामाजिक-सांस्कृतिक-भाँति परिचित हुए बिना -धार्मिक निहितार्थ है। कबीरपंथी तिलक या तुलसी की कंठी का प्रयोग भारतीय संस्कृति से भली नहीं किया जा सकता। हालाँकि अनुवादक ने तुलसी के साथholy शब्द का प्रयोग करके उसे स्पष्ट करने का प्रयास किया है। इसी तरह के सांस्कृतिक संदर्भगत शब्दों तथा प्रयोगों आदि का अनुवाद करते समय अनुवादक को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

इसी तरह कबीर का एक दोहा और उसका अंग्रेजी अनुवाद यहाँ दृष्टव्य है-

मन न रगाये रंगाये जोगी कपडा आसन मार मंदिर में बैठे,
ब्रह्म छौंडि पूजन लगे पथरा ।।-
कनवा फड़ाय जटवा बढ़ौले,
दाढ़ी बढ़ाय जोगी होई गेलें बकरा।।
जंगल जाये जोगी धुनिया रमौले
काम जराय जोगी होए गैले हिजड़ा।।
मथवा मुड़ाय जोगी कपड़ो रंगीले,
गीता बांच के होय गैले लबरा ।।
कहहिं कबीर सुनो भाई साधो,
जम दरवजवा बांधल जैबे पकड़ा।।

अंग्रेजी अनुवाद:

The Yogi dyes his garments, instead of dyeing his mind in the colours of love:

He sits within the temple of the Lord, leaving Brahma to worship a stone.

He pierces holes in his ears, he has a great beard and matted locks, he looks like a goat:

He goes for the into the wilderness, killing all his desires, and turns himself into an eunuch:

He shaves his head and dyes his garments, he reads the Gita and becomes a mighty talker.

Kabir says: "You are going to the doors of death, bound handand foot!"

I don't know what sort of God we have been talking about

")The Kabir Book: Forty-Four of the Ecstatic Poems of Kabir" (-(1977versions by Robert Bly, based on Rabindranath Tagore's "The Songs of Kabir" (.(1915

इस अनुवाद में स्पष्ट देखा जा सकता है कि जिस दोहा शैली में कबीर लिखते हैं, वह यहां अनुवाद में सुरक्षित नहीं रह पाई। मूल पाठ में जहाँ एक गेयता और छंदात्मकता है वहीं अनुवाद मूल का शाब्दिक अनुवाद या कहींकहीं गद्यानुवाद - सा प्रतीत होता है।

इस सबके बावजूद यह महत्वपूर्ण है कि थोड़ेबहुत परिवर्तन या विचलन के बावजूद साहित्यानुवाद संभव हो पाया - है और कबीर, मीरा, तुलसी, जायसी, से लेकर आधुनिक रचनाकार तक भाषा की दीवारों को लाँधकर व्यापक तथा बहुभाषी समाज तक पहुँच पाए हैं। यह सब साहित्यानुवाद के कारण ही संभव हो पाया है।

कबीर के दोहों के अंग्रेजी अनुवाद में भी यही स्थिति दिखती है। दोहे की गेयता, व्यंग्य और सांस्कृतिक तीखापन अनुवाद में आंशिक रूप से ही संप्रेषित हो पाता है। फिर भी, यह तथ्य महत्वपूर्ण है कि इन अनुवादों के माध्यम से कबीर, मीरा, तुलसी और अन्य भारतीय रचनाकार भाषाई सीमाओं को पार कर वैश्विक पाठक तक पहुँचे। कबीर के दोहे का उदाहरण दृष्टान्त है-

भाषा, समाज और संस्कृति परस्पर आश्रित हैं और अनुवाद इन तीनों के बीच सेतु का कार्य करता है। संस्कृति के बिना भाषा अर्थहीन है और भाषा के बिना संस्कृति का संप्रेषण असंभव। इसलिए अनुवाद का अध्ययन मूलतः सांस्कृतिक अध्ययन हैजिसमें भाषा केवल साधन नहींबल्कि सांस्कृतिक संवाहक के रूप में उपस्थित रहती है अनुवाद संस्कृति का | केवल स्थानांतरण नहींबल्कि पुनर्निर्माण की प्रक्रिया है। इसमें कुछ छूटता है, कुछ जुड़ता हैपर इसी प्रक्रिया से संस्कृतियाँ एक-दूसरे से संवाद करती हैं। अनुवाद के बिना न तो विश्व साहित्य की कल्पना संभव है और न ही सांस्कृतिक सह-अस्तित्व की। इसलिएसीमाओं और अपूर्णताओं के बावजूद, अनुवाद मानव समाज के सांस्कृतिक विकास का अनिवार्य और सृजनात्मक उपकरण है।

12.7 अनुवाद के माध्यम से साहित्य और संस्कृति की अभिव्यक्ति

किसी भी समाज की सांस्कृतिक पहचान के निर्माण और विस्तार में भाषा तथा साहित्य की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण होती है। साहित्य न केवल सामाजिक अनुभवों और सांस्कृतिक मूल्यों को अभिव्यक्त करता हैबल्कि उन्हें स्थायित्व भी प्रदान करता है। भाषा मानव चेतना की अभिव्यक्ति का मूल माध्यम है और इसी कारण उसका संस्कृति से गहरा और अनिवार्य संबंध बनता है। भाषा एक ओर संस्कृति का अंग होती हैतो दूसरी ओर वही संस्कृति को रूपायित और संप्रेषित भी करती है। इसलिए यह कहना समीचीन है कि भाषा और साहित्य का विकास सीधेसीधे संस्कृति के विकास से - जुड़ा होता है।

जब विभिन्न संस्कृतियाँ परस्पर संपर्क में आती हैंतो भाषा उनके बीच सेतु का कार्य करती है। दो भिन्न समाजों की भाषाएँ एकदूसरे से प्रभावित होकर नए रूप ग्रहण करती हैं। यह प्रक्रिया सतत और स्वाभाविक होती हैक्-योंकि कोई भी

भाषा स्थिर नहीं रहती। समय, समाज और संपर्क के प्रभाव से उसमें निरंतर परिवर्तन होता रहता है। भारत के संदर्भ में इस प्रक्रिया का एक महत्त्वपूर्ण उदाहरण इस्लाम के आगमन के बाद देखने को मिलता है। भारतीय और अरबीफारसी संस्कृति - के संपर्क से दोनोंसमुदायों के बीच संवाद की आवश्यकता उत्पन्न हुई। परिणामस्वरूप फारसी और अरबी शब्द भारतीय भाषाओं में प्रवेश करने लगे।

मुस्लिम शासकों के साथ फारसी भारत की राजकीय और साहित्यिक भाषा बनी। फारसी से हिंदी और संस्कृत में तथा हिंदीसंस्कृत से फारसी में अनुवाद होने लगे-। इन्हीं अनुवादों और भाषायी संपर्कों के माध्यम से एक नई भाषा विकसित हुईजिसे आगे चलकर उर्दू कहा गया। प्रारंभिक दौर में हिंदी और उर्दू के बीच मूल अंतर शब्दस्रोतों का था। हिंदी - में तत्सम शब्दों की प्रधानता रही, जबकि उर्दू में फारसी शब्द अधिक प्रयुक्त हुए। समय के साथ दोनों भाषाएँ स्वतंत्र साहित्यिक परंपराओं के रूप में विकसित हुईंइसके बाद भारतीय संस्कृति का संपर्क यूरोपीय सभ्यता से हुआ। सोलहवीं शताब्दी से यूरोपीय देशों के व्यापार और उपनिवेशों के कारण हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं पर अंग्रेजी, फ्रांसीसी और पुर्तगाली का प्रभाव बढ़ा। भारतीय ग्रंथों के यूरोपीय भाषाओं में तथा यूरोपीय साहित्य के हिंदी में अनुवाद होने लगे। इस प्रकार भारतीय संस्कृति और हिंदी भाषा का विकास दो स्तरों परइस्लामी और यूरोपीय संपर्कसमानांतर रूप से आगे बढ़ा।-

महत्वपूर्ण बिंदु

भाषा के बदलते स्वरूप का प्रभाव अनुवाद की परंपरा पर भी पड़ता है। उन्नीसवीं शताब्दी में राजा लक्ष्मण सिंह द्वारा संस्कृत के 'अभिज्ञान शाकुंतलम्' का ब्रजभाषा में अनुवाद इसी ऐतिहासिक स्थिति का परिणाम था। उस समय खड़ी बोली साहित्य की भाषा नहीं बनी थी, इसलिए ब्रजभाषा को माध्यम चुना गया। आज वही कृति खड़ी बोली में अनूदित होती है, क्योंकि वही आधुनिक साहित्य की मानक भाषा है। यह समस्या केवल हिंदी तक सीमित नहीं हैविश्व की सभी भाषाओं में समय के साथ साहित्यिक भाषा बदलती रहती है। इसी कारण क्लासिक साहित्य का हर युग में नए सिरे से अनुवाद आवश्यक हो जाता है।

होमर की प्राचीन यूनानी रचनाओं को आधुनिक यूनानी में अनूदित करने की आवश्यकता इसी परिवर्तन का प्रमाण है। अंग्रेजी भाषा का इतिहास भी यही दर्शाता है। शेक्सपियर और चौसर की अंग्रेजी आज की अंग्रेजी से भिन्न है। विभिन्न संस्कृतियों और भाषाओं के संपर्क से अंग्रेजी का स्वरूप निरंतर बदलता रहा। ब्रिटिश साम्राज्य के विस्तार के साथ अंग्रेजी अमेरिका, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड पहुँची, जहाँ उसने स्थानीय संदर्भों के अनुसार नए रूप ग्रहण किए। परिणामस्वरूप अंग्रेजी के अनेक रूप और अलगअलग राष्ट्रीय साहि-त्य विकसित हुए।

भारत में प्रयुक्त अंग्रेजी भी ब्रिटेन या अमेरिका की अंग्रेजी से भिन्न है। इसमें भारतीय भाषाओं के शब्दों के साथ-साथ भारतीय जीवन, संवेदना और सामाजिक यथार्थ की छवियाँ शामिल हैं। भारतीय लेखकों द्वारा अंग्रेजी में लिखे गए साहित्य में यह विशेषता स्पष्ट दिखती है। अनुवाद के दौरान यही सांस्कृतिक विशेषता एक चुनौती बन जाती है। में 1990 साहित्य अकादमी द्वारा आयोजित एक अनुवाद कार्यशाला में यह तथ्य सामने आया कि हिंदी कविताओं के अंग्रेजी अनुवाद, भारतीय अनुवादकों की सांस्कृतिक संवेदना के कारणविदेशी विद्वानों को पूरी तरह समझ में नहीं आ पाए। इसका कारण भाषा से अधिक संस्कृति की दूरी थी।

अनुवाद साहित्य और संस्कृति के बीच एक सशक्त पुल का निर्माण करता है। इसके माध्यम से विचार, भावनाएँ, कथाएँ और परंपराएँ सीमाओं को लांघकर वैश्विक स्तर पर पहुँचती हैं। अनुवादक केवल शब्दों का नहींबल्कि सांस्कृतिक संदर्भों और मानवीय अनुभवों का भी रूपांतरण करता है। इसी कारण 'गोदान' जैसी रचनाएँ विश्व स्तर पर पहचानी जाती हैं और भारतीय साहित्य की समृद्ध परंपरा अंतरराष्ट्रीय मंच तक पहुँचती है।संस्कृति के विकास में मौखिक साहित्य का योगदान भी कम महत्त्वपूर्ण नहीं है। मौखिक साहित्य को एक भाषा से दूसरी भाषा में पहुँचाने के लिए औपचारिक अनुवाद

की आवश्यकता नहीं होती। सामाजिक संपर्क और संवाद के माध्यम से कहावतें, लोककथाएँ, गीत, पहेलियाँ और लोरियाँ विभिन्न भाषाओं में फैलती रहती हैं। जैसेटेलर द्वारा संग-ृहीत English Riddles अंग्रेजी में संकलित हैंकिंतु वे शताब्दियों से अनेक भाषाओं में प्रचलित रही हैं। यह तय कर पाना कठिन है कि वे मूलतः किस भाषा से आई।

इसी तरह जातक कथाएँ और पंचतंत्र की कहानियाँ एक भाषा से दूसरी भाषा में मौखिक और लिखित दोनों रूपों में यात्रा करती रही हैं। लोक साहित्य का स्वरूप स्थान और समाज के अनुसार बदलता रहता है। मैसूर के गायकों द्वारा गाई जाने वाली 'रामायण' में सीता की व्यथाकथा का जो रूप मिलता है-, वह लिखित ग्रंथों से भिन्न है। इससे स्पष्ट होता है कि अनुवाद उतना ही पुराना है जितनी मानव सभ्यता।अनुवाद की अनिवार्यता को कविता के संदर्भ में भी समझा जा सकता है। कविता के अनुवाद में कभी कुछ छूट जाता हैतो कभी कुछ जुड़ जाता हैजिससे मूल रचना का स्वरूप आंशिक रूप से बदल सकता है। फिर भीसामाजिक और सांस्कृतिक विकास के लिए अनुवाद अत्यंत उपयोगी है। नागार्जुन की कविता और उसका अंग्रेजी अनुवाद इसका अच्छा उदाहरण है-

कविता :(मूल)

"कई दिनों तक चूल्हा रोया,
चक्की रही उदास
कई दिनों तक कानी कुतिया
सोई उनके पास
कई दिनों तक लगी भीत पर
छिपकलियों की गश्त
कई दिनों तक चूहों की भी
हालत रही शिकस्त।"

अंग्रेजी अनुवाद:

"For many days, the hearth wept
For many days, the one-eyed dog slept beside them
For many days, the lizards kept vigil on the wall
For many days, even the mice were as if defeated…"

इस उदाहरण से स्पष्ट होता है कि जहाँ मूल कविता में लय और संवेदना गहराई से उपस्थित हैवहीं अनुवाद में कुछ पंक्तियाँ अधिक वर्णनात्मक प्रतीत होती हैं। वॉल्टर बेंजामिन के अनुसारअनुवाद उन पाठकों के लिए होता है जो मूल भाषा और संस्कृति से अपरिचित होते हैं। इसी कारण अनुवाद में सांस्कृतिक और भौगोलिक संदर्भों की स्पष्टता एक बड़ी चुनौती बन जाती है।

अनुवाद साहित्य और संस्कृति की अभिव्यक्ति का एक अनिवार्य और सृजनात्मक माध्यम है। यद्यपि इसमें पूर्ण समानता संभव नहींफिर भी यह विभिन्न समाजों को जोड़ने, परंपराओं को जीवित रखने और मानवीय अनुभवों को साझा करने का सशक्त साधन है। इसी के माध्यम से साहित्य राष्ट्रीय सीमाओं को पार कर वैश्विक स्वरूप ग्रहण करता है |

12.8 अनुवाद में भाषाई आदान-प्रदान के माध्यम से सांस्कृतिक आदन-प्रदान

भाषा और साहित्य किसी भी समाज की सांस्कृतिक चेतना के मूल आधार होते हैं। इन्हीं के माध्यम से किसी समुदाय की स्मृतियाँ, मूल्य, परंपराएँ और जीवनदृष्टि पीढ़ी दर पीढ़ी संप्रेषित होती हैं। जब भाषाएँ आपस में संपर्क में आती - दूसरे से संवाद करती हैं। इस -प्रदान नहीं होताबल्कि संस्कृति की गहन संरचनाएँ भी एक-हैंतब केवल शब्दों का आदान प्रक्रिया का सबसे सशक्त उपकरण अनुवाद है। इसलिए यह कहना समीचीन है कि अनुवाद भाषा और साहित्य के विकास

के साथसाथ संस्कृति के विस्तार और पुनर्निर्माण का भी प्रमुख माध्यम रहा है।इतिहास पर दृष्टि डालने से स्पष्ट होता है कि - एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया रही है।-चाहे मौखिक हो या लिखित-विश्व की लगभग सभी सभ्यताओं में अनुवादएक भाषा का साहित्य किसी न किसी रूप में दूसरी भाषा में प्रवेश करता हैवहाँ स्थानीय परिस्थितियों के अनुसार ढलता है और आगे किसी तीसरी भाषा में स्थानांतरित होता है। साहित्य की यह यात्रा सभ्यताओं के विकास और सांस्कृतिक प्रसार को गति प्रदान करती है।

मौखिक अनुवाद और लोक:संस्कृति का प्रसार-

लिखित परंपरा से पहले मौखिक साहित्य ही मानव समाज की सामूहिक स्मृति था। इस मौखिक साहित्य के अनुवाद के लिए किसी औपचारिक अनुवादक की आवश्यकता नहीं होती थी। सामाजिक संपर्क, व्यापार, यात्राएँ और दैनिक व्यवहार के माध्यम से लोग एकदूसरे क-ी भाषा को समझने लगे और कहावतें, चुटकुले, गीत, पहेलियाँ तथा लोककथाएँ स्वतः दूसरी भाषाओं में स्थानांतरित होती चली गईलोक साहित्य का वैश्विक स्वरूप इसका प्रमाण है। टेलर)Taylor) द्वारा संकलित English Riddles में न केवल अंग्रेज़ीबल्कि प्राचीन रोम, अफ्रीका और भारत में प्रचलित पहेलियों का संग्रह मिलता है। ये पहेलियाँ सदियों से अनेक भाषाओं में जीवित रही हैंइसलिए यह निर्धारित करना कठिन है कि वे मूलतः किस भाषा से उत्पन्न हुईं। इस प्रकार लोक साहित्य एक अदृश्य सेतु की तरह अनेक संस्कृतियों को आपस में जोड़ता है।

मौखिक परंपरा के माध्यम से कई बार लिखित साहित्य भी नई भाषाओं तक पहुँचता है। जातक कथाओं और पंचतंत्र की कहानियों का प्रसार इसी प्रक्रिया का उदाहरण है। लोक परंपरा में ये कथाएँ स्थानीय सामाजिकसांस्कृतिक - स्थितियों के अनुरूप परिवर्तित होती गईं। रामायण की कथा विभिन्न ल◌ोक रूपों में भिन्नभिन्न अर्थ ग्रहण करती है। मैसूर - गाथा केंद्र में हैजबकि तमिल लोककथा-के लोकगायन में सीता की व्यथा'माइली रावनन' में सहस्रशीश रावण का वर्णन मिलता हैजिसका वध सीता द्वारा किया जाता है। इससे स्पष्ट है कि मौखिक अनुवाद रचनात्मक परिवर्तन का स्रोत भी बनता है।

लिखित अनुवाद और सभ्यताओं का निर्माण:

मौखिक परंपरा के समानांतर लिखित अनुवाद की परंपरा भी अत्यंत प्राचीन है। एशिया में भारतीय ग्रंथों के अनुवाद ने सांस्कृतिक इतिहास की दिशा ही बदल दी। ईसा की पहली शताब्दी से संस्कृत और पालि ग्रंथों का चीनी भाषा में अनुवाद आरंभ हुआ। चीनी त्रिपिटक के ताकशो संस्करण में से अधिक भारतीय ग्रंथों के अनुवाद उपलब्ध हैं। इन 3360 ग्रंथों ने चीन सहित अनेक एशियाई देशों में बौद्ध धर्म और भारतीय संस्कृति को प्रतिष्ठा दिलाई।इन्हीं चीनी अनुवादों के माध्यम से जापान में बौद्ध धर्म का प्रसार हुआ। बौद्ध ग्रंथों के अध्ययन से वहाँ शिक्षा का सार्वजनिक विस्तार हुआकाना लिपियों का विकास हुआ और जापानी भाषा में साहित्य सर्जना को बल मिला।

तिब्बत में नौवीं से तेरहवीं शताब्दी के बीच से अधिक भारतीय कृतियों के अनुवाद हुए। इन अनुवादों ने 4000 तिब्बती भाषा को एक परिष्कृत साहित्यिक भाषा का स्वरूप दिया और बौद्धिक नवजागरण का मार्ग प्रशस्त किया। मंगोल भाषा में कंजूर और तंजूर के अनुवादों ने भी मंगोलिया की साहित्यिक परंपरा को सुदृढ़ किया।दक्षिण ,पूर्व एशिया- इंडोनेशिया, श्रीलंका, लाओस, थाईलैंड और कम्बोडिया—में संस्कृत और पालि ग्रंथों के अनुवाद से वहाँ के साहित्य, धर्म और सामाजिक संरचना पर गहरा प्रभाव पड़ा। इन भाषाओं में आज भी संस्कृत शब्दावली की व्यापक उपस्थिति इस सांस्कृतिक संपर्क की साक्षी है।

पश्चिम एशिया, यूरोप और आधुनिक काल:

पश्चिम एशिया में अब्बासी शासन के दौरान भारतीय ज्ञान साहित्य का अरबी में अनुवाद हुआ। गणित, खगोलशास्त्र, चिकित्सा, राजनीति और कथासाहित्य से जुड़े ग्रंथों का अरबी में रूपांतरण हुआ और वहीं से यह ज्ञान यूरोप और अफ्रीका तक पहुँचा। मुहम्मद बिन मूसा अल ख्वारिज़्मी द्वारा अंकगणित का अनुवाद इसी-परंपरा का महत्त्वपूर्ण

उदाहरण है। 'अकामअरविद्या-ए-' कहलाने वाली अरबी गिनती मूलतः भारतीय गणित पर आधारित थी।उन्नीसवीं शताब्दी में औपनिवेशिक विस्तार के साथ अनुवाद का दायरा और व्यापक हुआ। अनेक संस्कृत ग्रंथ पहले अंग्रेज़ी में अनूदित हुए और बाद में भारतीय भाषाओं में पहुँचे। इस प्रकार अनुवाद ने आधुनिक भारत को अपनी प्राचीन बौद्धिक विरासत से पुनः जोड़ने का कार्य किया।

समकालीन संदर्भ और भाषाई परिवर्तन:

इक्कीसवीं शताब्दी में संचार माध्यमों के तीव्र विकास ने सांस्कृतिक दूरी को लगभग समाप्त कर दिया है। भारतीय दर्शन और अध्यात्म में वैश्विक रुचि बढ़ी हैवहीं पश्चिमी संस्कृति का प्रभाव भारतीय समाज पर स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। हॉलीवुड फिल्मों और अंग्रेज़ी कार्यक्रमों के हिंदी अनुवाद में एक नई मिश्रित भाषा उभर रही है। समाचार वाचन और फिल्मी संवादों में अंग्रेज़ी शब्दों की भरमार इस परिवर्तन का संकेत है। यह स्थिति वैसी ही है जैसी कभी अरबी और फारसी शब्दों के प्रवेश से बनी थी।

भाषाई विशिष्टता और अनुवाद की चुनौती:

हर भाषा अपनी सांस्कृतिक संरचना और सामाजिक अनुभवों से निर्मित होती है। अभिवादन के उदाहरण से यह अंतर स्पष्ट होता है—हिंदी में 'नमस्कार' या 'रामराम-' समय से स्वतंत्र हैंजबकि अंग्रेज़ी में Good Morning, Good Evening जैसे समयसापेक्ष रूप प्रचलित हैं। Good Night का 'शुभरात्रि' अनुवाद शाब्दिक रूप से सही होते हुए भी हिंदी की सांस्कृतिक अनुभूति को पूर्णतः व्यक्त नहीं करता।नातेरिश्-तों की शब्दावली, 'सौभाग्यवती' जैसे शब्द और तमिल में 'इनम्मा' तथा 'इतिमा' के भेद इस तथ्य को रेखांकित करते हैं कि अनुवाद केवल शब्द नहींबल्कि सांस्कृतिक संदर्भ का पुनर्निर्माण है। भौगोलिक परिस्थितियाँ भी भाषा को प्रभावित करती हैंमलयालम और तमिल में नौवहन से जुड़े शब्दों की विविधता इसका उदाहरण है।

अनुवाद की समस्याओं और कठिनाइयों का विश्लेषण अनेक दृष्टिकोणों से किया जा सकता है। यह इस बात पर निर्भर करता है कि अनुवाद का उद्देश्य क्या है और वह किन पाठकों के लिए किया जा रहा है। अनुवादसिद्धांत के क्षेत्र में - इस संबंध में दो परस्पर विरोधी धारणाएँ प्रमुख रूप से सामने आती हैं। एक ओर यह मत है कि अनुवाद मूल रचना का विकल्प होना चाहिए मूलनिष्ठ-, अर्थप्रधान और यथासंभव शाब्दिक। दूसरी ओर यह विचार है कि अनुवाद एक - सृजनात्मक प्रक्रिया हैजिसका उद्देश्य केवल मूल कृति का अर्थ प्रस्तुत करना नहीं, बल्कि उसके प्रभाव, भाव और कलात्मक अनुभूति को भी पुनर्सृजित करना है।

यदि पहली धारणा को पूर्णतः स्वीकार किया जाएतो यह स्पष्ट हो जाता है कि कुछ रचनाओं का संपूर्ण और संतोषजनक शाब्दिक अनुवाद संभव ही नहीं है। ऐसी स्थिति में यह प्रश्न उठता है कि क्या प्रत्येक रचना अनुवाद के योग्य होती है। इसके विपरीत, यदि अनुवाद को पूर्णतः सृजनात्मक मान लिया जाएतो यह खतरा उत्पन्न होता है कि अनुवादक अपनी मानसिक संरचना, भावनात्मक दृष्टि और कल्पनाशीलता के आधार पर मूल रचना से बहुत दूर निकल जाए। तब अनुवाद मूल कृति से निकटता बनाए रखेयह आवश्यक नहीं रह जाता।

व्यावहारिक दृष्टि से देखा जाए तो अनुवाद में इन दोनों धारणाओं में से किसी एक को पूरी तरह अपनाना संभव नहीं है। अनुवाद में अर्थ और भाव, दोनों का संतुलन आवश्यक होता है। विशेष रूप से सांस्कृतिक संदर्भों और अर्धच्छवियों के अनुवाद में कोई एकांगी नियम लागू नहीं किया जा सकता। ऐसे अनुवादों में अनुवादक को केवल दो भाषाओं ही नहींबल्कि दो संस्कृतियों के बीच प्रवेश करना पड़ता है।अक्सर मूल भाषा में ऐसे शब्द मिलते हैं जिनके लिए लक्ष्य भाषा में कोई सटीक पर्याय उपलब्ध नहीं होताक्योंकि लक्ष्य भाषा की संस्कृति में वे संकल्पनाएँ प्रचलित ही नहीं होतीं। उदाहरण के लिए अंग्रेज़ी भाषा का dating शब्द। पश्चिमी समाज में dating का जो सामाजिक अर्थ और महत्व हैवह पारंपरिक भारतीय समाज की कल्पना से बाहर रहा है। हिंदी में इसका कोई स्वीकृत पर्याय नहीं है। ऐसी स्थिति में अनुवादक के सामने तीन विकल्प होते हैंमूल शब्द का लिप्यंतरण-, नया शब्द गढ़ना या अर्थ की व्याख्या करना। नया शब्द गढ़ना प्रायः

असफल सिद्ध होता हैक्योंकि ऐसे शब्द सामान्य प्रयोग में नहीं आ पाते और केवल सरकारी अनुवादों तक सीमित रह जाते हैं। अतः व्यवहार में dating जैसे शब्दों का लिप्यंतरण ही अधिक स्वीकार्य समाधान बनता है। संभव है कि इस प्रक्रिया से वह शब्द धीरेधीरे हिंदी में प्रचलित हो जाए-, जैसे अनेक विदेशी शब्द हुए हैं। ठीक इसी प्रकार 'योग' शब्द आज विश्व की लगभग सभी भाषाओं में प्रयुक्त होता है।

हालाँकि विशेष संदर्भों में लिप्यंतरण पर्याप्त नहीं होता। पतंजलि के योग सूत्रों का अंग्रेज़ी अनुवाद करते समय यह स्पष्ट करना आवश्यक हो जाता है कि-

"Yoga is a method by which an individual may become united with the God."यहाँ शब्द के साथ उसकी सांस्कृतिक और दार्शनिक व्याख्या भी अपेक्षित है।

वास्तव में अनुवादक के लिए भाषासंरचना की भिन्नता से अधिक कठिन समस्या सांस्कृतिक भिन्नता उत्पन्न - टिप्पणियों के माध्यम से शब्दों की व्याख्या करता हैतो पाठ के प्रवाह में बाधा -बार पाद-करती है। यदि अनुवादक बार आती है। फिर भी भिन्नसांस्कृतिक पृष्ठभूमि के पाठकों के लिए अनुवाद करते समय पादटिप्पणियाँ या शब्दावली कई बार - अनिवार्य हो जाती हैं।

साहित्यिक रचनाएँ भावप्रधान होती हैं। उनमें शब्द केवल अर्थ वहन नहीं करते-, बल्कि सांस्कृतिक और सामाजिक संदर्भों से जुड़ी ध्वनियाँ भी उत्पन्न करते हैं। अनुवादक का दायित्व है कि वह इन ध्वनितार्थों को समझे और लक्ष्य भाषा में उन्हें यथासंभव व्यक्त करे। ऐसा करते समय उसे मूल रचना की कलात्मक विशिष्टता को सामने लाने का प्रयास करना चाहिएकिंतु अपनी निजी भावनाओं और विचारों को मूल कृति पर आरोपित नहीं करना चाहिए।

उमर खैय्याम की रुबाइयों के प्रसिद्ध अनुवादक फिट्ज़जेराल्ड से यही भूल हुई। वह ईरानी संस्कृति में शराब के प्रतीकात्मक महत्व को नहीं समझ सका। जहाँ सौदी ने शराब को ईरानी जातीयता से जोड़ा था, वहीं फिट्ज़जेराल्ड ने उसे भोगवाद का प्रतीक मानकर रुबाइयों को भोगवादी दृष्टि से प्रस्तुत किया।ध्वनितार्थ के अनुवाद की कठिनाई कबीर के निम्न दोहे और उसके अंग्रेज़ी अनुवाद से स्पष्ट होती हैकबीर का दोहा -

दस द्वार का पीजरा ता में पात्री पौना रहे
अवरज होत है, गये अचम्बा कौन।।

अंग्रेज़ी अनुवाद:

Tien are the doors to the cage
There the life bird stays
Its flight should not amaze

इसके बाद दी गई व्याख्या से यह स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है कि शरीर रूपी पिंजरे के दस द्वार खुले होने पर भी प्राण पक्षी उसमें ठहरा रहता है। किंतु अंग्रेज़ी पाठक यह नहीं समझ पाता कि-'दस द्वार' से अभिप्राय पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ और पाँच कर्मेन्द्रियाँ हैं। यदि यह सांस्कृतिक संकेत स्पष्ट किया गया होतातो अर्थ अधिक पूर्ण हो जाता।रवीन्द्रनाथ ठाकुर की कविता और उसके हिंदी अनुवाद का उदाहरण भी उल्लेखनीय है—

"I have felt you muffled steps in my blood…"और उसका हिंदी अनुवाद, जिसमें सहज, बोलचाल की भाषा और उपलब्ध मुहावरों का प्रयोग किया गया है। यह अनुवाद दर्शाता है कि सांस्कृतिक और भाषाई साम्य होने पर भावानुवाद अधिक स्वाभाविक बन सकता है।

अनुवाद भाषाओं के बीच सेतु ही नहींबल्कि संस्कृतियों के बीच संवाद की जीवंत प्रक्रिया है। यह भाषाओं को रूपांतरित करता हैनई संवेदनाएँ जोड़ता है और सांस्कृतिक पुनर्सृजन को संभव बनाता है। अतीत से वर्तमान तक अनुवाद ने सभ्यताओं को जोड़ा है और भविष्य में भी यह प्रक्रिया निरंतर मानव संस्कृति को नई दिशाएँ देती रहेगी।अनुवाद केवल शब्दों का स्थानांतरण नहींबल्कि भाषाई आदानप्रदान के माध्यम से सांस्कृतिक अर्थों का पुनर्निर्माण है। अनुवादक की -

सफलता इसी में निहित है कि वह मूल रचना की आत्मा को समझते हुए उसे नई भाषा और नई संस्कृति में सार्थक रूप से प्रतिष्ठित कर सके।

12.9 सारांश

यह इकाई साहित्य, संस्कृति और अनुवाद के आपसी संबंधों को स्पष्ट करती है। इसमें बताया गया है कि अनुवाद केवल पाठ का रूपांतरण नहींबल्कि एक सांस्कृतिक प्रक्रिया हैजिसके माध्यम से विभिन्न समाजों और संस्कृतियों के बीच संवाद स्थापित होता है। साहित्य किसी समाज की सांस्कृतिक चेतना, जीवनमूल्य-ोः और सामाजिक अनुभवों का प्रतिनिधित्व करता है। जब साहित्य का अनुवाद होता हैतब उसके साथ जुड़ी सांस्कृतिक विशेषताएँ भी एक नए सामाजिक संदर्भ में प्रवेश करती हैं। इस कारण अनुवादक की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है।

इकाई में यह स्पष्ट किया गया है कि अनुवाद के दौरान सांस्कृतिक भिन्नताओं के कारण अनेक कठिनाइयाँ उत्पन्न होती हैं। परंपराएँ, सामाजिक व्यवहार, प्रतीक, विश्वास और ऐतिहासिक संदर्भ ऐसे तत्व हैंजिन्हें यथावत् रूप में दूसरी संस्कृति में स्थानांतरित करना सरल नहीं होता। अनुवादक को इन चुनौतियों से निपटने के लिए उपयुक्त रणनीतियों का प्रयोग करना पड़ता हैजिससे मूल कृति का भाव और सांस्कृतिक अर्थ सुरक्षित रह सके।इतिहास के संदर्भ में इकाई यह भी दर्शाती है कि अनुवाद ने सभ्यताओं के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। भारतीय संस्कृति का प्रभाव एशियाई देशों तक अनुवादों के माध्यम से पहुँचावहीं आधुनिक काल में विदेशी साहित्य के अनुवादों ने भारतीय साहित्य और सांस्कृतिक दृष्टि को व्यापक बनाया। इस प्रकार अनुवाद ने सांस्कृतिक आदानप्रदान को सशक्त किया है।-

समग्र रूप से यह इकाई इस निष्कर्ष पर पहुँचती है कि साहित्य, संस्कृति और अनुवाद एकदूसरे से गहराई से जुड़े -साथ सांस्कृतिक समन्वय और वैश्विक समझ को भी -हुए हैं। अनुवाद साहित्य को नए समाजों तक पहुँचाने के साथ विकसित करता है।

12.10 प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा)

प्रश्न 1 का उत्तर: रामस्वरूप चतुर्वेदी भारतीय पुनर्जागरण के संदर्भ में लिखते हैं—"पुनर्जागरण दो जातीय संस्कृतियों की टकराहट से उत्पन्न रचनात्मक ऊर्जा है |"

प्रश्न 2 का उत्तर: मध्यकाल में इस्लाम के आगमन से भारतीय और अरबी-फारसी संस्कृतियाँ आमने-सामने आईं। प्रशासन और साहित्य की भाषा के रूप में अरबी-फारसी के प्रयोग ने न केवल द्विभाषिक साहित्य को जन्म दियाबल्कि भारतीय भाषाओं और अरबी-फारसी के बीच अनुवाद की एक समृद्ध परंपरा भी विकसित हुई।

प्रश्न 3 का उत्तर: सांस्कृतिक अनुवाद में भाषा को समाज और संस्कृति से अलग नहीं किया जा सकता। भाषा स्वयं संस्कृति का अंग है और अनुवाद उसी संस्कृति को दूसरी संस्कृति तक पहुँचाने का माध्यम।किसी भी समाज की संस्कृति का निर्माण भाषा के बिना संभव नहीं है। भाषा न केवल सांस्कृतिक अनुभवों को अभिव्यक्त करती हैबल्कि समय के साथ उन्हें संरक्षित और रूपांतरित भी करती है।

प्रश्न 4 का उत्तर: साहित्यिक अनुवाद की विशेषता हैं- साहित्यिक अनुवाद केवल शब्दों के स्थानांतरण की क्रिया नहीं हैबल्कि यह एक गहन बौद्धिक और सर्जनात्मक उपक्रम है और साहित्यिक अनुवाद की कसौटी यही है कि मूल रचना के अर्थ, भाव, विचार और अनुभूति लक्ष्य-भाषा में उसी प्रभाव और तीव्रता के साथ संप्रेषित हों।

प्रश्न 5 का उत्तर: यह आचार्य रामचंद्र शुक्ल का कथन है |

12.11 अधिक जानने के लिए पढ़ें

- Bassnett, Susan, 1993, Comparative Literature: A Critical Introduction, UK, Exfort Black Well Publishers.
- Badode, Rambhau & Afzalkhan (eds.) 2007. New Directions in Comparative Literature, Macmilhan India Ltd.
- Spivak, Gayatri Chakravarty, 2003, Death of a Discipline, Colombia, Colombia University Press.
- Said, Edward, 1978, Orientalism, London, RNP.
- चौधुरी, इंद्रनाथ, 1983, तुलनात्मक साहित्य की भूमिका, मद्रास, दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा।
- चौधुरी, इंद्रनाथ, 1996, तुलनात्मक साहित्य भारतीय परिप्रेक्ष्य, नई दिल्ली, वाणी प्रकाशन।
- गोस्वामी, कृष्ण कुमार, अनुवाद विज्ञान की भूमिका, नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन ।
- टंडन, पूरनचंद, अनुवाद के विविध आयाम, दिल्ली, तक्षशिला प्रकाशन ।
- नगेंद्र (.सं), अनुवाद 1993, सिद्धांत एवं अनुप्रयोग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली ।
- श्रीवास्तव, रवींद्रनाथ, एवं गोस्वामी, कृष्ण कुमार (.सं), 1995, अनुवाद सिद्धांत और समस्याएँ, दिल्ली, आलेख प्रकाशन।

12.12 अभ्यास प्रश्न

(क) संक्षिप्त प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

1. पंडितराज जगन्नाथ ने साहित्य को क्या कहां है ?
2. साहित्य शब्द से आप क्या समझते है ?
3. संस्कृति शब्द का अर्थ क्या है?
4. साहित्य और संस्कृति के बीच अनुवाद का मुख्य कार्य क्या है ?
5. लोक साहित्य के विकास में अनुवाद की भूमिका क्या है?

(ख)निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

1. संस्कृति का अर्थ एवं अवधारणा को स्पष्ट कीजिए |
2. साहित्यिक अनुवाद किस प्रकार सृजनात्मक प्रक्रिया है-स्पष्ट कीजिए |
3. साहित्य का अर्थ स्पष्ट करते हुए अवधारणा पर प्रकाश डालिए |
4. संस्कृति और अनुवाद का अंतः संबंध प्रक्रिया को विविध उदाहरणों के माध्यम से लिखिए |
5. अनुवाद के माध्यम से साहित्य और संस्कृति की अभिव्यक्ति को उदहारण सहित स्पष्ट कीजिए |
6. अनुवाद में भाषाई आदान-प्रदान के माध्यम से सांस्कृतिक आदन-प्रदान के बारे में एक लेख प्रस्तुत कीजिए |

शब्दकोश:

- अनिवार्यता: अटल, परम आवश्यक |
- आंशिक: अल्प, थोड़ा |
- संवेदना: अनुभूति
- समीचीन: यथार्थ, ठीक, उचित
- स्थायित्व: स्थायी होने का भाव
- निहितार्थ: छिपा हुआ अर्थ, संकेत

*** ***** ***

इकाई 13 - साहित्य अनुवाद में भाषा की सरलता और शुद्धता का महत्व

इकाई की रुपरेखा

.131 उद्देश्य
13.2 प्रस्तावना
13.3 भाषापरिभाषा और स्वरूप ,अर्थ :
13.4 अनुवाद और भाषा का परस्पर संबंध
13.5 अनुवाद और भाषा विकास और संकल्पना :
13.6 साहित्य अनुवाद में भाषा की भूमिका
13.7 भाषा के आधुनिकीकरण एवं अंतर्राष्ट्रीय विकास में अनुवाद की भूमिका
13. 8 साहित्यिक अनुवाद:अनुभव और विवेक :
13. 9 सारांश
13.10 प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा)
13.11 अधिक जानने के लिए पढ़ें
13.12 अभ्यास प्रश्न

.131 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन से आप-

- भाषा के अर्थ| परिभाषा और स्वरूप के बारे में जान सकेंगे ,
- अनुवाद और भाषा का परस्पर संबंध से अवगत होंगे |
- अनुवाद और भाषा के विकास और संकल्पना के विविध स्वरूप को जानेंगे |
- साहित्य अनुवाद में भाषा की भूमिका के बारे में ज्ञान प्राप्त करेंगे |
- भाषा के आधुनिकीकरण एवं अंतर्राष्ट्रीय विकास में अनुवाद की भूमिका से परिचित होंगे |
- साहित्यिक अनुवाद में अनुभव और विवेक के महत्व को जान सकेंगे |

13.2 प्रस्तावाना

अनुवाद केवल एक भाषा से दूसरी भाषा में शब्दों को बदलने की प्रक्रिया नहीं हैयह संस्कृतियों और समाजों के बीच समझ और संवाद का महत्वपूर्ण माध्यम है। जब किसी भाषा की रचनाएँ अनुवाद के जरिए दूसरी भाषा में प्रवेश करती हैंतो वे अपने साथ उस भाषा की सांस्कृतिक परंपराएँ, जीवन दृष्टिकोण और विचारधाराएँ भी लाती हैं। इसके साथ ही अनुवाद लक्ष्य भाषा में नए शब्द, अभिव्यक्तियाँ और शैलीगत तत्व जोड़कर उसकी समृद्धि में योगदान देता है।अनुवाद भाषा के विकास और सांस्कृतिक आदानप्रदान दोनों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।-

आज का वैश्वीकृत समाज यह स्पष्ट करता है कि कोई भी देश या समुदाय बाहरी विचारों और अनुभवों से पूरी तरह अलग नहीं रह सकता। विश्व में लगभग चार हजार भाषाएँ हैंलेकिन प्रमुख भाषाओं के माध्यम से विचारों, ज्ञान और

साहित्य का आदानअलग भाषाओं तक -प्रदान तीव्र गति से हो रहा है। अनुवाद इन विचारों और रचनाओं को अलग-पहुँचाकर मानवता को जोड़ता है और समाज तथा संस्कृति के विकास में नई दिशा प्रदान करता है।

साहित्यिक अनुवाद में भाषा की सरलता और स्पष्टता अत्यंत महत्वपूर्ण है। जब शब्द और वाक्य सहज और स्वाभाविक होते हैंतो पाठक मूल भाव को समझने के साथसाथ भाषा की सुंदरता और संस्कृति क-ा गहन अनुभव प्राप्त करता है। यही कारण है कि अनुवाद न केवल संवाद का माध्यम हैबल्कि भाषा और साहित्य दोनों के संवर्धन का एक प्रभावशाली साधन बन जाता है।

13.3 भाषा: अर्थ, परिभाषा और स्वरूप

भाषा मनुष्य की वह विशिष्ट शक्ति हैजिसने उसे अन्य सभी प्राणियों से अलग पहचान दी है। संस्कृत की 'भाष्' धातु से निष्पन्न 'भाषा' शब्द का मूल अर्थ 'बोलना' है, किंतु भाषा केवल बोलने भर का नाम नहीं है। यह ध्वनियों, शब्दों, वाक्यों और नियमों की ऐसी सुव्यवस्थित व्यवस्था हैजिसके माध्यम से मनुष्य अपने विचार, भावनाएँ, इच्छाएँ और अनुभव दूसरों तक पहुँचाता है। भाषा के बिना न समाज की कल्पना की जा सकती है और न ही संस्कृति के विकास की। मानव सभ्यता की प्रगति का इतिहास वस्तुतः भाषा के विकास का इतिहास है। ज्ञान, विज्ञान, कला, दर्शन और परंपराएँकुछ भाषा के सहारे ही पीढ़ीपीढ़ी सुरक्षित और स-दर-ंवर्धित हुआ है। चाहे मनुष्य आदिम अवस्था में रहा हो या आज के तकनीकी युग में, भाषा उसकी सबसे मूल्यवान पूँजी रही है। किसी समाज की भाषा जितनी अधिक समृद्ध और विकसित होती हैउसकी संस्कृति भी उतनी ही उन्नत मानी जाती है। फिर भीदैनिक जीवन में निरंतर प्रयोग के कारण हम भाषा के महत्व पर गंभीरता से विचार नहीं कर पाते और उसे सांस लेने जैसी सहज प्रक्रिया मान लेते हैं।

भाषा की संकल्पना को स्पष्ट करने के लिए अनेक भारतीय और पाश्चात्य विद्वानों ने अपनीअपनी परिभाषाएँ दी हैं। -व्यक्ता वाचि वर्ण येषां त इम"-माणिक्य के अनुसारः व्यक्तिवाचःअर्थात वाणी में जिन वर्णों की स्पष्ट अभिव्यक्ति होवही " भाषा है।

कामता प्रसाद गुरु का मत है—"भाषा यह साधन है, जिसके द्वारा मनुष्य अपने विचार दूसरों पर भलीभांति प्रकट कर सकता है और दूसरों के विचार आप स्पष्टता से समझ सकता है।"

आचार्य किशोरीदास वाजपेयी लिखते हैं—"विभिन्न अर्थों में सांकेतिक शब्द समूह ही भाषा है जिसके द्वारा हम अपने मनोभाव दूसरों के प्रति सरलता से व्यक्त कर सकते हैं।"

डॉश्यामसुंदर दास के अनुसार .—"मनुष्य और मनुष्य के बीच वस्तुओं के विषय में अपनी इच्छा और गत्ति का आदानप्रदान करने- के लिए व्यक्त ध्वनि संकेतों का जो व्यवहार होता है उसे भाषा कहते हैं।"

पाश्चात्य विद्वानों में भी भाषा को सामाजिक और सांकेतिक व्यवस्था के रूप में देखा गया है। ब्लॉख और ट्रेगर का कथन है—"A Language is a system of arbitrary vocal symbols by means of which a social group cooperates."

नोम चॉम्स्की भाषा को इस प्रकार परिभाषित करते हैं—"I will consider a language to be a set (finite or infinite) of sentences, each finite in length and constructed out of a finite set of elements."

इन परिभाषाओं से स्पष्ट होता है कि भाषा कोई एकांगी प्रक्रिया नहींबल्कि सामाजिक सहयोग और सांस्कृतिक सहभागिता का सशक्त माध्यम है।

भाषा के दो प्रमुख पक्ष माने जाते हैंमानसिक और भौतिक। मानसिक पक्ष में विचार और भाव अमूर्त रूप में मन में -विद्यमान रहते हैंजबकि भौतिक पक्ष में वही विचार ध्वनियोः और शब्दों के रूप में प्रकट होते हैं। वक्ता अपने वागेन्द्रियों की सहायता से भाषा को मूर्त रूप देता है और श्रोता श्रवणेन्द्रिय द्वारा उसे ग्रहण कर अपने मन में अर्थ का निर्माण करता है। यदि वक्ता और श्रोता के बीच भाषिक या बौद्धिक सामंजस्य न होतो संप्रेषण बाधित हो जाता है।

मानवीय भाषा की कुछ मूलभूत विशेषताएँ हैंजो उसे अन्य संकेत प्रणालियों से अलग करती हैं। सबसे पहली विशेषता यह है कि भाषा सामाजिक वस्तु है। इसका जन्म समाज में होता है और विकास भी समाज में ही होता है। बिना सामाजिक संपर्क के भाषा का अर्जन संभव नहीं। दूसरी महत्वपूर्ण बात यह है कि भाषा आनुवांशिक नहीं होती। बच्चा भाषा सीखने की क्षमता लेकर जन्म लेता है किंतु किसी विशेष भाषा का ज्ञान उसे अपने परिवेश से ही प्राप्त होता है। यही कारण है कि गोद लिया गया बच्चा अपने नए परिवार की भाषा को ही मातृभाषा के रूप में अपनाता है।

तीसरी विशेषता यह है कि भाषा अर्जित की जाती है। बच्चा अनुकरण और व्यवहार के माध्यम से धीरेधीरे शब्द-, वाक्य और अर्थ सीखता है। चौथी विशेषता भाषा की परंपरागत प्रकृति है। भाषा हमें पूर्वजों से विरासत में मिलती है और पीढ़ियों के माध्यम से आगे बढ़ती रहती है। कृत्रिम रूप से निर्मित भाषाएँ, जैसे एस्पेरांतो, व्यापक रूप से इसलिए स्वीकार नहीं हो सकीं क्योंकि वे इस परंपरागत प्रवाह से नहीं जुड़ी थीं।

भाषा की पाँचवीं प्रमुख विशेषता उसकी परिवर्तनशीलता है। समय और स्थान के साथ भाषा में ध्वनि, रूप, वाक्य रचना और अर्थस्तरों पर परिवर्तन होता रहता है। यही परिवर्तन भाषाओं को जीवंत बनाए रखता है। छठी विशेषता यह है कि भाषा व्याकरण द्वारा नियंत्रित होती है। व्याकरण भाषा को पूर्णतः स्थिर नहीं करताबल्कि परिवर्तन की गति को संतुलित करता हैजिससे भाषिक अराजकता न फैले।

कहा जा सकता है कि भाषा मानव जीवन की आत्मा है। यह केवल संप्रेषण का साधन नहींबल्कि सामाजिक एकता, सांस्कृतिक पहचान और बौद्धिक विकास की आधारशिला है। भाषा के बिना न मनुष्य का अस्तित्व पूर्ण है और न ही समाज की कल्पना संभव। इसलिए भाषा का अध्ययन केवल शैक्षणिक आवश्यकता नहींबल्कि मानव सभ्यता को समझने का अनिवार्य माध्यम है।

13.4 अनुवाद और भाषा का परस्पर संबंध

भाषा किसी समाज की सोच, संस्कृति और ज्ञान का प्रतिनिधित्व करती है। जैसेजैसे समाज में बौद्धिक और - वैसे उसकी भाषा भी समृद्ध-भौतिक प्रगति होती हैवैसेहोती जाती है। शब्द, विचार और अभिव्यक्ति की क्षमता समाज के अनुभवों और उपलब्धियों के साथ विकसित होती है। उदाहरण स्वरूपअंग्रेज़ी भाषा का वैश्विक स्तर पर प्रचलन केवल : उसके भाषाई गुणों की वजह से नहींबल्कि इंग्लैंड और अमेरिका की राजनीतिक, आर्थिक और वैज्ञानिक प्रगति के कारण भी है।

भाषा विकास कई स्तरों पर होता है। इसमें नई शब्दावली का निर्माण, विचारों की अभिव्यक्ति की शक्ति, साहित्यिक रचनाएँ और साहित्येतर लेखन शामिल हैं। जब किसी भाषा के प्रयोग का क्षेत्र बढ़ता हैतो यह विकास और भी तीव्र हो जाता है। भारतीय भाषाओं के उदाहरण पर ध्यान दें। प्राचीन काल में संस्कृत ज्ञान और साहित्य की प्रमुख भाषा थी। समय के साथ लोकभाषाओं का उदय हुआ और पाली, प्राकृत और अपभ्रंश से आधुनिक भारतीय भाषाएँ विकसित हुईं। शुरू में ये केवल बोलचाल की भाषा थींलेकिन धीरेधीरे इनमें रचनात्मक साह-ित्य विकसित हुआ और भक्त कवियों ने इन्हें समृद्ध किया। बाद में यह भाषा ज्ञान और विज्ञान के क्षेत्रों में प्रयोग होने लगी और आज ये सभी क्षेत्रों में अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम बन चुकी हैं।

अनुवाद भाषा विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। जब किसी विषय का ज्ञान या साहित्य दूसरी भाषा में अनूदित होता हैतो यह केवल शब्दों का रूपांतरण नहीं होता बल्कि उस मूल भाषा की संस्कृति, भाव, चिंतन और ज्ञान प्रक्रिया भी लक्ष्य भाषा में प्रवेश करती है। कई बार लक्ष्य भाषा में नए शब्द और वाक्य संरचनाएँ उसी समय विकसित होती हैं। उदाहरण के तौर पर, हिंदी में 'सकारात्मक' और 'नकारात्मक' शब्द अंग्रेज़ी से अनुवादित होकर प्रचलित हुए। साथ ही, हिंदी में नई अभिव्यक्ति शैली जैसे 'सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाया' या 'नकारात्मक प्रतिक्रिया दी' भी सामने आईजो पारंपरिक शैली से अलग हैं।

अनुवाद केवल साहित्य तक सीमित नहीं है। विज्ञान, तकनीक, समाजशास्त्र, राजनीति और चिकित्सा जैसे क्षेत्रों में अनुवादित कार्य नई शब्दावली और विचारधारा को जन्म देते हैं। कंप्यूटर विज्ञान पर अनूदित सामग्री ने भारतीय भाषाओं में तकनीकी शब्दावली और वाक्य संरचना को विकसित किया। देखा जा सकता है कि राजनीति और समाजशास्त्र के अनुवाद ने इन भाषाओं में नए अभिव्यक्तिपरक दृष्टिकोण और विश्लेषणात्मक शब्दावली को जोड़ा।

सृजनात्मक साहित्य का अनुवाद नई भावनाओं और विचारों को भी लाता है। यह न केवल भाषा में विविधता लाता हैबल्कि साहित्यिक चेतना को विस्तार देता है और कभीकभी नए साहित्यिक आंदोलनों की नींव भी रखता है। -कालिदास की रचनाओं के यूरोपीय भाषाओं में अनुवाद ने पश्चिमी रोमांटिक आंदोलन में योगदान दिया। -उदाहरण स्वरूप इसी प्रकारभारतीय नाटक और उपन्यास विधा का समृद्ध विकास पश्चिमी साहित्य के अनुवादों से संभव हुआ।

अनुवाद भाषा के विकास में शब्दावली, अभिव्यक्ति, शैली और ज्ञान के विस्तार का माध्यम बनता है। यह न केवल भाषा को समृद्ध बनाता है बल्कि समाज की बौद्धिक उन्नति और सांस्कृतिक आदानप्रदान में भी महत्वपूर्ण योगदान -देता है।

13.5 अनुवाद और भाषा: विकास और संकल्पना

भाषा केवल संवाद का साधन नहीं हैबल्कि यह विचारों, भावनाओं और संस्कृति की अभिव्यक्ति का माध्यम भी है। समय के साथ भाषा बदलती है, विकसित होती है और नई परिस्थितियों के अनुरूप ढलती है। अनुवाद इस प्रक्रिया में एक महत्वपूर्ण कड़ी की तरह कार्य करता है। जब हम किसी दूसरी भाषा से शब्द,अभिव्यक्ति या संकल्पना को अपनाते हैं तो वह केवल शब्दों का परिवर्तन नहीं होता यह भाषा की अभिव्यक्ति क्षमता को बढ़ाने और उसे नए आयाम देने का अवसर भी बनता है। हालांकि हर नए शब्द या अनुवादित अभिव्यक्ति को भाषा का विकास नहीं कहा जा सकता। यदि नई अभिव्यक्तियाँ भाषा की स्वाभाविक संरचना और मानसिकता के अनुरूप हों और इससे विचारों की स्पष्टता बढ़े, तो यह वास्तव में विकास है। लेकिन अगर ये भाषा की संरचना से मेल नहीं खातीं और सिर्फ बाहरी प्रभाव के कारण प्रयोग में आती हैंतो यह भाषा के लिए विकृति बन जाती है। इसलिए अनुवाद में संतुलन और विवेक आवश्यक है।

1. शब्दावली:

आधुनिक युग में वैश्वीकरण और तकनीकी प्रगति के चलते नई संकल्पनाएँ लगातार सामने आती हैं। इन्हें व्यक्त करने के लिए नई शब्दावली की आवश्यकता होती है। इस संदर्भ में अनुवाद और शब्द निर्माण दोनों ही अत्यंत महत्वपूर्ण साधन हैं। शब्द निर्माण के दो मुख्य तरीके देखे जाते हैं:

पहला विदेशी शब्दों को उनके मूल स्वरूप के करीब हिंदी में अपनाना। इसे उधार लेना कहा जाता है। उदाहरण के लिए टेलीफोन, बल्ब, अलमारी आदि। इस प्रक्रिया में विदेशी शब्द धीरेधीरे भाषा के हिस्से बन जाते हैं। दूसरा नई -संकल्पना के अनुसार मूल रूप से नए शब्द बनाना। यह विशेष रूप से अविकसित भाषाओं में देखा जाता है जहाँ वस्तु या विचार के अनुसार वर्णनात्मक शब्द तैयार किए जाते हैं। उदाहरण के लिए, रेल के लिए "आग गाड़ी" और हवाई जहाज के लिए "लोहे की चील" जैसी रचनाएँ। विकसित भाषाओं में खासकर हिंदी मेंअमूर्त विचारों को व्यक्त करने के लिए भी नए शब्दों की आवश्यकता होती है। ऐसे शब्द अक्सर संस्कृत की शब्द रूपों से बनाए जाते हैं। उदाहरण के लिएसंस्कृत : से शब्द"संस्कृति" से अनेक रूप उत्पन्न होते हैंसुसंस्कृत-, असंस्कृत, सांस्कृतिक आदि। इसी तरह संसद से संसदीय और सांसद जैसे शब्द निर्मित होते हैं।

अनुवाद विशेष रूप से तकनीकी और पारिभाषिक शब्दावली के निर्माण में सहायक होता है। कई बार अंग्रेजी शब्दों के खंडों का अनुवाद कर हिंदी में नए शब्द बनाए जाते हैं। उदाहरण के लिए टेलीफोन के लिए दूरभाष और कन्नड़ में दूरवाणी। इसी तरह, टेलीविजन के लिए दूरदर्शन और टेलीप्रिंटर के लिए दूरमुद्रक। इस प्रक्रिया को उधारअनुवाद कहा -जाता है क्योंकि इसमें मूल शब्द संरचना को अपनाकर हिंदी में नए रूप दिए जाते हैं।

सफल शब्द निर्माण के लिए कुछ प्रमुख गुणों का होना आवश्यक है:

.1स्वीकृतिनया शब्द सहज और सरल होना चाहिए ताकि भाषिक समाज उसे आसानी से अपनाए। उदाहरण के - लिए, दूरभाष और द्विचक्री शब्द प्रयोग में नहीं आए, जबकि अंग्रेजी शब्द टेलीफोन और साइकिल प्रचलित हो गए।

.2संबद्धताविशेष रूप से पारिभाषिक शब्दों में अर्थ और प्रयोग का मेल होना चाहिए। उदाहरण के लिए- "state" शब्द के अलग अलग अर्थ को हिंदी में स्पष्ट करना आवश्यक है। इसे प्रशासनिक इकाई के लिए-"राज्य" भौगोलिक क्षेत्र के लिए "प्रदेश" और अन्य अर्थों के लिए "प्रांत" का प्रयोग किया जा सकता है।

.3एकरूपताशब्दों का प्रयोग-, वर्तनी और अर्थ स्तर पर स्थिर और संगत होना चाहिए। उदाहरण के लिए, "विकास" शब्द का प्रयोग "development", "growth" और "evolution" तीनों अर्थों में किया जाता है। अनुवादक को संदर्भ के अनुसार सही विकल्प चुनना चाहिए।

अनुवाद का उद्देश्य केवल शब्दों का परिवर्तित रूप देना नहीं हैबल्कि भाषा की अभिव्यक्ति क्षमता बढ़ाना और विचारों को स्पष्टता से प्रस्तुत करना है। उदाहरण के लिए "सार्वजनिक मत" और "लोकमत" में अंतर स्पष्ट करना अनुवादक की जिम्मेदारी है। इसी तरह "प्रशासन तंत्र" शब्द, सरल और सार्थक अनुवाद का उत्कृष्ट उदाहरण है।

अंततःभाषा विकास और अनुवाद की प्रक्रिया में यह देखा गया है कि संतुलित, संदर्भोचित और प्राकृतिक अनुवाद भाषा को समृद्ध बनाते हैं। तकनीकी, साहित्यिक या सामाजिक संदर्भों में अनुवाद केवल शब्दों की अदलाबदली नहीं - बल्कि विचार और संकल्पना की सटीक अभिव्यक्ति भी है। अनुवादक की कुशलता और विवेक भाषा की प्रगति में निर्णायक भूमिका निभाते हैं।

2. वैचारिक और ज्ञानपरक स्तर:

भाषा का विकास मुख्यतः दो स्तरों पर होता है। पहला स्तर है शब्द स्तर, जिसमें हम नई संज्ञाएँ, तकनीकी शब्द और पारिभाषिक शब्द अपनाते हैं। दूसरा स्तर है वैचारिक स्तर जिसमें दूसरी भाषाओं में उपलब्ध ज्ञान और साहित्य को अपनी भाषा में रूपांतरित किया जाता है। ये दोनों स्तर अलग दिखते हैं, लेकिन वास्तव में एकदूसरे से गहराई से जुड़े हुए - हैं। उदाहरण के रूप में अंग्रेजी वाक्य "U.S. experts called to cap the blighted well" लें। इसका शाब्दिक अनुवाद होगा :"जलते हुए कुएँ को ढकने के लिए अमेरिकी विशेषज्ञ बुलाए गए।" यहाँ शब्दार्थ सही है-cap का अर्थ ढक्कन या ढकना, well का अर्थ कुआँलेकिन असली संदर्भ तभी- स्पष्ट होता है जब पाठक पेट्रोलियम तकनीक से परिचित हो। सामान्य जलते कुएँ में आग नहीं लगती अतः केवल शब्दों के अनुवाद से संदेश स्पष्ट नहीं होता।

इस प्रकार अनुवाद में बोधगम्यता के तीन प्रमुख कारण हैं:

.1खराब अनुवादजब अनुवादक मूल संदेश को पूरी तरह न समझ प :ाए और अर्थहीन या कृत्रिम वाक्य प्रस्तुत करे।

.2पारिभाषिक शब्दों का जटिल प्रयोगकई तकनीकी या विशेष शब्दों के एकसाथ प्रयोग से पाठक को समझने में : कठिनाई होती है।

.3विषय की जटिलताविज्ञान :, गणित, दर्शन जैसे विषय जटिल होते हैं इनका अनुवाद केवल कठिन शब्दों के माध्यम से और अधिक कठिन हो जाता है।

इसलिए अनुवादक को शब्द और विचार दोनों स्तरों पर संतुलन बनाए रखना आवश्यक है। सही शब्द चयन और संदर्भ की समझ ही अनुवाद को सटीक और पठनीय बनाती है।

3. वाक्य संरचना:

अनुवाद में वाक्य संरचना एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। अनुवादक को केवल शब्दों का अनुवाद नहीं करना चाहिएबल्कि वाक्य के प्रवाह, उपवाक्य और पदबंधों की स्वाभाविक संरचना बनाए रखनी चाहिए। अक्सर अंग्रेजी वाक्य संरचना का अनुकरण करते हुए हिंदी में अटपटे और अस्वाभाविक वाक्य बन जाते हैं। उदाहरण के रूप में अंग्रेजी वाक्य

"line in reply will be appreciated" का स्वाभाविक हिंदी अनुवाद होगा :"कृपया उत्तर दें" या "उत्तर की प्रतीक्षा रहेगी ।" वहीं, इसे शब्दशः अनुवादित किया जाए :"प्रत्युत्तर में एक पंक्ति आशंसित होगी", तो यह हिंदी में अटपटा और अप्राकृतिक लगता है ।

अनुवाद की तीन प्रमुख विशेषताएँ हैं:

सुबोधतापाठक को आसानी से समझ में आना चाहिए । :

स्वाभाविकतावाक्य हिंदी की प्रवाहमान शैली में होने चाहिए । :

संगतताअनुवाद मूल अर्थ से मेल खाता हो । :

एक और उदाहरण अंग्रेजी में अपोजिशन)apposition) का है । जैसे :"Shri Jawaharlal Nehru, India's first Prime Minister" । सीधे अनुकरण से होगा :"श्री जवाहरलाल नेहरू, भारत के प्रथम प्रधानमंत्री" । हिंदी में स्वाभाविक रूप होगा :"भारत के प्रथम प्रधानमंत्री श्री जवाहरलाल नेहरू ।" इस प्रकार, अनुवादक को मूल वाक्य संरचना का अनुकरण करते समय हिंदी की प्राकृतिक प्रवाह और शैली का ध्यान रखना आवश्यक है ।

4. मुहावरों का प्रयोग और शैली:

अनुवाद में मुहावरों और शैलीगत विशेषताओं का सही प्रयोग अत्यंत महत्वपूर्ण है । मुहावरे भाषा और संस्कृति से जन्म लेते हैं इसलिए उनका शाब्दिक अनुवाद अक्सर अप्राकृतिक या हास्यजनक होता है । उदाहरण के लिए:

"to turn a new leaf" :शाब्दिक-"नया पत्ता पलटना", वास्तविक अर्थनया आरंभ करना । :

"apple of the eye" :शाब्दिक-"आँखों का तारा", अर्थप्रियतम । :

कई अंग्रेजी मुहावरे हिंदी में सीधे रूप में अपनाए गए हैं जैसे:

"to keep in the dark" - "अँधेरे में रखना"

"to sweat it out" - "पसीना बहाना"

"to bell the cat" - "बिल्ली के गले में घंटी बाँधना"

अनुवादक को समान अर्थ और सांस्कृतिक संदर्भ खोजकर हिंदी में प्रयोग करना चाहिए । यदि यह ध्यान न रखा जाएतो अनुवाद अटपटा और अप्राकृतिक लगेगा । शैलीगत विशेषताओं को भी अनुवाद में स्थानांतरित करना आवश्यक हैताकि पाठक के लिए यह सहज, रोचक और अर्थपूर्ण बने ।

12.11 अधिक जानने के लिए पढ़ें

प्रश्न 1.अनुवाद की तीन प्रमुख विशेषताएँ लिखिए ।

प्रश्न 2.अनुवाद कार्य मे वाक्य संरचना का क्या महत्व है ?

प्रश्न 3.अनुवाद में बोधगम्यता के दो प्रमुख कारण लिखिए ।

प्रश्न 4.सफल शब्द निर्माण के लिए दो प्रमुख गुणों का उल्लेख कीजिए।

प्रश्न 5.मानवीय भाषा की दो विशेषताओं के बारे में लिखिए।

13.6 साहित्य अनुवाद में भाषा की भूमिका

यहाँ 'साहित्य' शब्द का प्रयोग हम एक विस्तृत और समग्र अर्थ में करेंगे, जैसा कि विद्वानों द्वारा सामान्यतः स्वीकार किया गया है । साहित्य केवल भावात्मक या कलात्मक अभिव्यक्ति तक सीमित नहीं हैबल्कि यह मानव ज्ञान और अनुभव के विविध पक्षों को समेटे हुए है । परंपरागत रूप से साहित्य का पहला रूप सृजनात्मक साहित्य माना जाता है।

इसके अंतर्गत कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक जैसी विधाएँ आती हैंजिनका उद्देश्य सौंदर्यबोध, संवेदना और कल्पना का विकास करना होता है। संस्कृत काव्यशास्त्र की परंपरा में साहित्य शब्द का प्रयोग मुख्यतः इसी अर्थ में किया जाता रहा है।

साहित्य का दूसरा रूप शास्त्रीय या ज्ञानपरक लेखन है। भौतिकी, रसायन, गणित, ज्योतिष, तर्क और दर्शन जैसे विषयों से संबंधित ग्रंथ इस श्रेणी में आते हैं। आधुनिक समय में इन्हें सामूहिक रूप से 'विज्ञान' या 'ज्ञानविज्ञान-' कहा जाता है। इन ग्रंथों का उद्देश्य वस्तुनिष्ठ तथ्यों, सिद्धांतों और नियमों का स्पष्ट विवेचन करना होता है। संस्कृत परंपरा में सृजनात्मक और शास्त्रीय—दोनों प्रकार के लेखन को मिलाकर 'वाङ्मय' कहा गया है।

आधुनिक काल में साहित्य का एक तीसरा स्वरूप भी विकसित हुआ है जिसे प्रकार्यात्मक या प्रयोजनमूलक साहित्य कहा जा सकता है। इसमें वे रचनाएँ शामिल होती हैं जो प्रशासनिक, कानूनी या संस्थागत कार्यों के संचालन के लिए आवश्यक होती हैं। नियमावली, मार्गदर्शिकाएँ, अधिनियम, कार्यालयी आदेश, प्रक्रिया पुस्तिकाएँ और संदर्भ ग्रंथ इसी श्रेणी में आते हैं। शासन के तीनों अंग—विधानपालिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका—अपने कार्यों के लिए ऐसे साहित्य पर निर्भर रहते हैं। आज के युग में इन तीनों प्रकार के साहित्य का निरंतर विकास और समयानुकूल अद्यतन आवश्यक है। इस प्रक्रिया में अनुवाद की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। प्रयोजनमूलक साहित्य तथ्यप्रधान होता हैइसलिए इसके अनुवाद में भावनात्मक सजावट के स्थान पर अर्थ की सटीकता और स्पष्टता प्रमुख लक्ष्य होनी चाहिए। मूल आशय को सुरक्षित रखते हुए भाषा और संरचना में नवीनता लाना सफल अनुवाद की पहचान है। साहित्य के क्षेत्र में अनुवाद की भूमिका को निम्नलिखित रूप में देख सकते है-

1. सृजनात्मक साहित्य:

सृजनात्मक साहित्य केवल घटनाओं या तथ्यों का विवरण नहीं होताबल्कि वह मनुष्य की भीतरी अनुभूतियों, समय की चेतना और सामाजिक यथार्थ का कलात्मक रूपांतरण होता है। कविता, कहानी, उपन्यास और नाटक जैसी विधाओं में लेखक अपनी दृष्टि, अनुभव और कल्पना को भाषा के माध्यम से अभिव्यक्त करता है। यह भाषा सामान्य ज्ञानविज्ञान - की भाषा से भिन्न होती हैक्योंकि इसमें प्रतीक, बिंब, व्यंजना और लय का विशेष महत्व होता है। इसी कारण साहित्यिक अनुवाद को एक साधारण भाषांतरण नहीं माना जा सकता।

साहित्यिक अनुवाद का मूल उद्देश्य केवल शब्दों को एक भाषा से दूसरी भाषा में बदलना नहीं है, बल्कि उस रचना की आत्मा, संवेदना और प्रभाव को नए पाठकों तक पहुँचाना है। एक सफल अनुवाद वही होता हैजो पाठक के मन में लगभग वही अनुभूति जगा सकेजो मूल रचना ने अपने पाठकों में उत्पन्न की थी। यह कार्य अत्यंत कठिन हैक्योंकि हर भाषा की अपनी संरचना, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि और अभिव्यक्ति की सीमाएँ होती हैं। इसीलिए कई विद्वान मानते हैं कि साहित्यिक अनुवाद वस्तुतः पुनःसर्जन है—एक नई रचना जो मूल से प्रेरित होती हैपर उसकी प्रतिकृति नहीं होती।

अनुवाद का महत्व अनेक स्तरों पर दिखाई देता है। विश्व साहित्य की महान कृतियों का अनुवाद हमें विभिन्न देशों और संस्कृतियों से जोड़ता है। शेक्सपीयर, तोल्स्तॉय या रवींद्रनाथ ठाकुर जैसे रचनाकारों की कृतियाँ अनुवाद के माध्यम से ही विश्वव्यापी बनीं। इसके अतिरिक्त, भारतीय सांस्कृतिक परंपरा में रामायण और महाभारत जैसी कथाएँ विभिन्न भाषाओं में समय और स्थान के अनुरूप नए रूप में रची गईंजो अनुवाद से अधिक सृजनात्मक रूपांतरण का उदाहरण हैं। हिंदी साहित्य के विकास में भी अनुवाद की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। आधुनिक गद्य, उपन्यास, कहानी और निबंध जैसी विधाओं के विकास में विदेशी साहित्य के अनुवादों से नई दृष्टि और शिल्प की प्रेरणा मिली। इससे हिंदी की अभिव्यक्ति क्षमता का विस्तार हुआ और वह राष्ट्रीय संपर्क भाषा के रूप में अधिक समृद्ध बनी।

कहा जा सकता है कि साहित्यिक अनुवाद केवल भाषाओं के बीच सेतु नहीं बनाताबल्कि संवेदनाओं, विचारों और संस्कृतियों को भी एकदूसरे से जोड़ता है। यही उसका सबसे बड़ा साहित्यिक और मानवीय मूल्य है।-

2. ज्ञान-विज्ञान के साहित्य का अनुवाद:

आधुनिक समाज में ज्ञानविज्ञान का क्षेत्र अत्यंत व्यापक और गतिशील है। भौ-तिकी, रसायनिकी, गणित, दर्शन, तर्कशास्त्र, समाजशास्त्र जैसे विषय केवल अकादमिक अध्ययन तक सीमित नहीं हैंबल्कि ये मानव जीवन के व्यावहारिक पक्षों को भी दिशा देते हैं। इन्हीं विषयों के अध्ययन से व्यक्ति विभिन्न पेशों में दक्षता प्राप्त करता है और राष्ट्र के सामाजिक-विज्ञान के विषय अपेक्षाकृत नए हैं। -आर्थिक विकास में योगदान देता है। विशेष रूप से उल्लेखनीय यह है कि अनेक ज्ञान उदाहरण के लिएमनोविज्ञान और समाजशास्त्र का विकास पिछले कुछ सौ वर्षों में ही हुआ। वहीं जीवविज्ञान से जुड़ी नई शाखाएँ जैसे मॉलिक्यूलर बायोलॉजी या मरीन बायोलॉजी निरंतर उभर रही हैं। आज इन विषयों का विकास किसी एक देश तक सीमित नहींबल्कि वैश्विक स्तर पर हो रहा है। ऐसी स्थिति में यह आवश्यक हो जाता है कि विश्व की प्रमुख भाषाओं में उपलब्ध नवीन ज्ञान का अनुवाद विभिन्न भाषाओं में किया जाए।

अनुवाद की भूमिका केवल वैज्ञानिक या तकनीकी साहित्य तक सीमित नहीं रही है। धार्मिक ग्रंथों के अनुवाद ने भी इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान बनाया है। उदाहरणस्वरूपबाइबिल का अनेक भाषाओं में अनुवाद हुआजिससे अनुवाद : सिद्धांतों के विकास को भी बल मिला। इसी संदर्भ में यूजीन नायडा जैसे विद्वानों ने अनुवाद के सिद्धांतों पर गहन विचार प्रस्तुत किए।

शिक्षा के क्षेत्र में मातृभाषा के माध्यम से अध्ययन को आज व्यापक समर्थन मिल रहा है। भारत में हिंदी, तमिल, तेलुगु, कन्नड़ जैसी भाषाओं में पाठ्य पुस्तकों का निर्माण सरकारी और निजी संस्थाओं द्वारा किया जा रहा है। दिल्ली विश्वविद्यालय का हिंदी माध्यम निदेशालय या विभिन्न राज्य अकादमियाँ इसके उदाहरण हैं। ज्ञानविज्ञान के अनुवाद में - पारिभाषिक शब्दावली एक बड़ी चुनौती है। नए विषयों के साथ नए शब्दों की आवश्यकता पड़ती है। यह प्रक्रिया सतत हैजिसमें अनुवाद के माध्यम से अर्थ को सुरक्षित रखते हुए नए शब्द गढ़े जाते हैं। इस प्रकार अनुवाद न केवल भाषा को समृद्ध करता हैबल्कि ज्ञान के लोकतंत्रीकरण का सशक्त माध्यम भी बनता है।

3. प्रकार्यात्मक साहित्य में अनुवाद:

शासन व्यवस्था का संचालन केवल नीतियों से नहींबल्कि उन दस्तावेज़ों से होता है जो नीतियों को व्यवहार में उतारते हैं। प्रशासन, न्याय और विधान से जुड़ी जिन पुस्तिकाओं, प्रपत्रों, नियमावलियों और अभिलेखों का दैनिक उपयोग होता हैउन्हें समग्र रूप से प्रकार्यात्मक साहित्य कहा जा सकता है। यह साहित्य सरकार के तीन प्रमुख स्तंभों—विधायिका, न्यायपालिका और कार्यपालिका—के कामकाज की रीढ़ है।

विधायिका के क्षेत्र में संविधान, संसद और राज्य विधानमंडलों द्वारा पारित कानूनतथा सदनों में हुई चर्चाओं के अभिलेख आते हैं। उदाहरण के लिए, किसी नए शिक्षा अधिनियम पर हुई बहसें भविष्य की नीतियों की दिशा तय करती हैं। न्यायपालिका में इन्हीं कानूनों की व्याख्या होती है। उच्चतम न्यायालय और उच्च न्यायालयों के निर्णय न केवल विवाद सुलझाते हैं, बल्कि प्रशासन को मार्गदर्शन भी देते हैं। जैसेकिसी कर कानून पर दिया गया फैसला आगे के मामलों में संदर्भ बन जाता है। कार्यपालिका का संसार अपेक्षाकृत अधिक व्यावहारिक है। यहाँ विभागीय मैनुअल, सेवा नियम, आवेदन प्रपत्र, परिपत्र और दिशानिर्देश प्रयुक्त होते हैं। किसी नागरिक द्वारा पासपोर्ट आवेदन भरना या किसी अधिकारी द्वारा सेवा - नियमों का पालन करना—ये सभी प्रकार्यात्मक साहित्य के उदाहरण हैं।

इस साहित्य की आवश्यकता ऐतिहासिक विकास से जुड़ी है। कानून समाज के जीवन से जन्म लेते हैं। भारत में प्राचीन विधिक परंपराएँ रहीं पर आधुनिक ढाँचे पर औपनिवेशिक काल का प्रभाव पड़ा। स्वतंत्रता के बाद भी अनेक कानूनी अवधारणाएँ अंग्रेज़ी परंपरा से आईं। इसलिए प्रशासनिक, वैज्ञानिक और वाणिज्यिक क्षेत्रों में हिंदी का विकास बड़े पैमाने पर अंग्रेज़ी से अनुवाद के माध्यम से हुआ।

आज चुनौती यह है कि अनुवाद केवल शब्दों का न होकर अर्थ और प्रयोजन का हो। जब नियमों की भाषा स्पष्ट और सुलभ होती हैतभी नागरिक और शासन के बीच भरोसा मज़बूत होता है। प्रकार्यात्मक साहित्य इसी भरोसे की आधारशिला है।

महत्वपूर्ण बिंदु

साहित्यिक अनुवाद का उद्देश्य केवल शब्दों को एक भाषा से दूसरी में बदलना नहीं होताबल्कि यह मूल रचना की आत्मा, शैली और भावनाओं को पाठक तक पहुँचाने का एक सृजनात्मक प्रयास है। इस प्रक्रिया में भाषा की सरलता और शुद्धता का विशेष महत्व है। सरल भाषा वह होती है जो तुरंत समझ में आए और पाठक को कृत्रिमता का अनुभव न हो। इसके साथ ही अनुवाद में प्रवाह और स्वाभाविकता बनाए रखना जरूरी हैताकि पाठक पढ़ते समय सहज अनुभव कर सके और लक्ष्य भाषा में रचना मूल की तरह प्राकृतिक लगे। इसमें मुहावरे, अभिव्यक्तियाँ और सांस्कृतिक संकेतों को सही ढंग से ढालना अनिवार्य हैताकि अनुवाद नीरस न लगे।

शुद्धता का तात्पर्य है कि अनुवाद मूल पाठ के अर्थ, शैली और लहजे से पूर्णतः मेल खाता हो। इसमें व्याकरणिक और वर्तनी की त्रुटियों से बचनालेखक की भावनाओं और दृष्टिकोण का संरक्षण करना तथा सांस्कृतिक बारीकियों को सटीक रूप से प्रस्तुत करना शामिल है। केवल शब्दों का शाब्दिक अनुवाद पर्याप्त नहींअनुवादक को स्रोत और लक्ष्य दोनों भाषाओं की संस्कृतियों की गहन समझ के साथ मूल भाव को अपने शब्दों में पुनर्सृजित करना चाहिए।

4. जन संचार के मध्यम में अनुवाद

आधुनिक समाज में जनसंचार माध्यम केवल मनोरंजन के साधन नहीं हैंबल्कि वे लोगों को देशदुनिया से जोड़ने - वाली सबसे प्रभावी कड़ी भी हैं। रेडियो, टेलीविजन, समाचार पत्र, पत्रपत्रिकाएँ और डिजिटल प्लेटफॉर्म-—ये सभी समाज को सूचित, जागरूक और सक्रिय बनाए रखने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इन माध्यमों की सफलता के पीछे अनुवाद की वह प्रक्रिया हैजो अक्सर दिखाई नहीं देती परंतु हर सूचना के मूल में मौजूद रहती है ।जनसंचार का मूल उद्देश्य अधिकतम लोगों तक कम समय में स्पष्ट सूचना पहुँचाना है। इसलिए इसकी भाषा न तो अत्यधिक साहित्यिक होती है और न ही जटिल शास्त्रीय। यह एक प्रयोजनमूलक भाषा है, जो सरल, सहज और प्रभावी संप्रेषण पर आधारित होती है। उदाहरण के लिएअखबार की सुर्खि:याँ अक्सर पूरे वाक्य के बजाय अर्थपूर्ण खंडों में लिखी जाती हैं—जैसे "महँगाई में राहत" या "टीम इंडिया की ऐतिहासिक जीत"। ऐसे वाक्य कम शब्दों में अधिक अर्थ प्रकट करते हैं।

विश्व के समाचार किसी एक भाषा या क्षेत्र तक सीमित नहीं रहते। अंतरराष्ट्रीय घटनाएँ विभिन्न देशों और भाषाओं से होकर आती हैं। सभी समाचार संस्थानों के लिए यह संभव नहीं कि वे हर स्थान पर अपने संवाददाता भेजें। इस कमी को समाचार एजेंसियाँ पूरा करती हैंजो अलगअलग देशों से सूचनाएँ एकत्र कर उन्हें विभिन्न भाषाओं में प्रसारित करती हैं। - यही वह बिंदु है जहाँ अनुवाद जनसंचार का अनिवार्य अंग बन जाता है।

भारत जैसे बहुभाषी देश में अनुवाद की भूमिका और भी बढ़ जाती है। मान लीजिएकिसी घटना की रिपोर्ट पहले अंग्रेजी में तैयार हुई। वही समाचार हिंदी, तमिल, बांग्ला या मराठी में पाठकों तक पहुँचता है। इस प्रक्रिया में केवल शब्द नहीं बदले जाते, बल्कि भाषा की प्रकृति और पाठक की समझ को ध्यान में रखकर शैली भी बदली जाती है। उदाहरण के तौर परवैज्ञानिक समाचारों को इस तरह रूपांतरित किया जाता है कि सामान्य पाठक भी उनका आशय समझ सके।

जनसंचार की भाषा में संक्षिप्तियों और लघु रूपों का भी खूब प्रयोग होता है। जैसे IMF, WHO या ISRO। हिंदी में भी इन्हें अपनाकर "इसरो" या "डब्ल्यूएचओ" के रूप में प्रयोग किया जाता है। इससे भाषा समृद्ध होती है और संप्रेषण तेज़ होता है। इसके अतिरिक्त, राजनीतिक और सामाजिक संदर्भों में "भाजपा", "जदयू" या "रासुका" जैसे संक्षिप्त रूप आम हो गए हैं।

यह स्पष्ट है कि जनसंचार के व्यापक नेटवर्क का संचालन अनुवाद के बिना संभव नहीं। अनुवाद ही वह माध्यम है जो अलगअलग भाषाओं-, संस्कृतियों और समाजों को जोड़ता है। सही और संवेदनशील अनुवाद न केवल सूचना को सटीक बनाता हैबल्कि उसकी विश्वसनीयता भी बढ़ाता है। इसलिए कहा जा सकता है कि जनसंचार की सफलता के पीछे अनुवाद एक मौन लेकिन सशक्त आधार के रूप में कार्य करता है।

13.7 भाषा के आधुनिकीकरण एवं अंतर्राष्ट्रीय विकास में अनुवाद की भूमिका

भाषा किसी समाज की केवल अभिव्यक्ति का साधन नहीं होतीबल्कि उसके ज्ञान, संस्कृति और विकास की वाहक भी होती है। जब हम भाषा के विकास की बात करते हैंतो इसे केवल शब्दों की संख्या बढ़ने तक सीमित नहीं किया जा सकता। विकास एक व्यापक प्रक्रिया हैजिसमें समय के साथ होने वाला परिवर्तन, उपयोग का विस्तार और गुणवत्ता में सुधार—तीनों शामिल हैं। इन्हीं तीनों स्तरों पर अनुवाद भाषा के आधुनिकीकरण में महत्त्वपूर्ण योगदान देता है।

सबसे पहले विकास को परिवर्तन के अर्थ में समझा जा सकता है। जैसे एक बच्चा उम्र के साथ शारीरिक और मानसिक रूप से आगे बढ़ता हैवैसे ही भाषा भी समय के अनुसार बदलती है। नए विचार, नई परिस्थितियाँ और नई आवश्यकताएँ भाषा में नए शब्दों और अभिव्यक्तियों को जन्म देती हैं। उदाहरण के लिए विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में: "कंप्यूटर", "सॉफ्टवेयर" या "डिजिटल" जैसे शब्दों का प्रचलन इसी परिवर्तन का परिणाम है। अनुवाद के माध्यम से ये शब्द और अवधारणाएँ एक भाषा से दूसरी भाषा में पहुँचती हैं और भाषा को समकालीन बनाती हैं।

विकास का दूसरा अर्थ है—विस्तार। जब किसी भाषा का प्रयोग अधिक क्षेत्रों में होने लगता हैतो उसका दायरा बढ़ता है। शिक्षा, प्रशासन, मीडिया और साहित्य में भाषा के बढ़ते उपयोग से यह विस्तार संभव होता है। आधुनिक युग में अनुवाद ने ज्ञान को सीमाओं से मुक्त किया है। यदि वैज्ञानिक खोजें, दार्शनिक चिंतन या कानूनी अवधारणाएँ केवल अपनी मूल भाषाओं तक सीमित रहतींतो अनेक समाज उनसे वंचित रह जाते। अनुवाद के कारण ही विभिन्न भाषाओं के पाठक विश्व स्तरीय-ज्ञान से जुड़ पाते हैं और उनकी अपनी भाषा का क्षेत्र विस्तृत होता है।

विकास का तीसरा और सबसे महत्त्वपूर्ण पक्ष है—गुणवत्ता। भाषा तभी समृद्ध कही जा सकती हैजब वह जटिल विचारों को स्पष्ट और प्रभावी ढंग से व्यक्त कर सके। अनुवाद इस गुणवत्तावृद्धि में केंद्रीय भू-मिका निभाता है। जब किसी भाषा में विज्ञान, विधि, दर्शन या प्रबंधन से जुड़े ग्रंथों का अनुवाद होता हैतो भाषा को नए शब्द, नई संरचनाएँ और नई अभिव्यक्तिशैलियाँ मिलती हैं। उदाहरण के तौर पर-, हिंदी में वैज्ञानिक पाठ्यपुस्तकों के अनुवाद ने इसे केवल भावनात्मक अभिव्यक्ति की भाषा नहींबल्कि बौद्धिक विमर्श की सक्षम भाषा बनाया है।

आधुनिकीकरण का सीधा संबंध भाषा के व्यावहारिक उपयोग से है। आज भाषा से अपेक्षा की जाती है कि वह शिक्षा, रोजगार, तकनीक और वैश्विक संवाद में उपयोगी हो। हिंदी का राजभाषा के रूप में प्रयोग, कंप्यूटर और इंटरनेट पर इसकी उपस्थिति तथा विभिन्न विषयों में उपलब्ध अनूदित सामग्री—ये सभी इसके आधुनिकीकरण के संकेत हैं। यदि अनुवाद न होता, तो हिंदी भाषी समाज वैश्विक ज्ञानप्रवाह से कट जाता और भाषा का विकास सीमित रह जाता।भाषाओं - की स्थिति को प्रभावित करने वाले कई कारक होते हैं। भाषा की व्यापकता उसे जनसंपर्क की शक्ति देती है। समृद्ध साहित्य और पर्याप्त संदर्भ सामग्री भाषा के प्रति आकर्षण बढ़ाती है। साथ हीतकनीकी साधनों की उपलब्धता भाषा को आधुनिक जीवन से जोड़ती है। जिस भाषा में अधिक संसाधन होते हैं, लोग उसी में काम करना पसंद करते हैं। इसलिए अनुवाद केवल साहित्यिक कार्य नहीं, बल्कि भाषा को सक्षम और प्रतिस्पर्धी बनाने की प्रक्रिया है।

अंततः कहा जा सकता है कि विकास एक सतत प्रक्रिया है और समृद्धि उसका परिणाम। अनुवाद इस प्रक्रिया का सेतु हैजो भाषाओं को एकदूसरे से जोड़कर ज्ञान-, विचार और संस्कृति का आदानप्रदान संभव बनाता है। आधुनिक - समाज में भाषा, विकास और वैश्विक संपर्क—तीनों अनुवाद के माध्यम से ही सशक्त रूप ग्रहण करते हैं।

13.8 साहित्यिक अनुवाद: अनुभव और विवेक:

साहित्यिक कृतियों का अनुवाद केवल भाषाओं के बीच शब्दों का स्थानांतरण नहीं हैबल्कि यह अर्थ, अनुभव और संवेदना के स्तर पर होने वाली एक गहन प्रक्रिया है। लंबे समय से साहित्यिक अनुवाद विद्वानों, अनुवादकों और आलोचकों के बीच चिंता और विमर्श का विषय रहा है। इसका प्रमुख कारण यह है कि साहित्यिक पाठ किसी निर्वात में उत्पन्न नहीं होताबल्कि वह परंपरा, समय, समाज और सांस्कृतिक संदर्भों से निर्मित होता है। प्रत्येक साहित्यिक रचना अपने युग की लेखनसांस्कृतिक संदर्भों द्वारा निर्देशित भी -परंपरा का अनुसरण करती है और साथ ही अपने सामाजिक- होती है। ऐसे में उसका अनुवाद करना एक अत्यंत चुनौतीपूर्ण कार्य बन जाता है।

गायत्री चक्रवर्ती स्पीवाक के अनुसार अनुवाद मूलतः एक आत्मिक या नैतिक अभ्यास है। उनका मानना है कि अनुवाद का कार्य केवल तकनीकी दक्षता का परिणाम नहीं होताबल्कि यह इस बात पर निर्भर करता है कि अनुवादक ने मूल पाठ को कितनी संवेदनशीलता और गहराई से पढ़ा है। साहित्यिक अनुवाद की गुणवत्ता इसी से तय होती है। यदि अनुवादक का पाठ से आत्मिक जुड़ाव नहीं हैतो उसका सीधा प्रभाव अनुवाद की नियति पर पड़ता है। साहित्यिक पाठ अपने आप में अनुभवों का पुनर्निर्माण होता हैकभी कविता के माध्यम सेकभी कथा के रूप में। यह एक प्-रकार का आत्म- छल या मृगतृष्णा भी है, जिसमें यथार्थ और कल्पना घुलमिल जाते हैं। इसलिए ऐसे पाठों का अनुवाद केवल शब्दशः - करना न तो पर्याप्त है और न ही उचित।

साहित्यिक अनुवाद की इन जटिलताओं को ध्यान में रखते हुए अनेक सिद्धांतकारों ने विभिन्न पद्धतियों और मानदंडों का प्रस्ताव रखा है। आंद्रे लेफेवेयर ने कैटूलस की कविताओं के अंग्रेज़ी अनुवादों का अध्ययन करते हुए सात प्रमुख रणनीतियों की पहचान की है। इनमें ध्वन्यात्मक अनुवाद, शब्दशः अनुवाद, छंदोबद्ध अनुवाद, पद्य से गद्य में रूपांतरण, तुकांत अनुवाद, छंदमुक्त अन-ुवाद और व्याख्या या अनुकरण शामिल हैं। लेफेवेयर का निष्कर्ष यह है कि इनमें से अधिकांश पद्धतियाँ मूल पाठ के किसी एक पक्ष पर अत्यधिक बल देती हैं और समग्र अर्थ या अनुभव को क्षति पहुँचाती हैं। उदाहरणतः ध्वन्यात्मक या तुकांत अनुवाद में अर्थ अक्सर विकृत या अस्पष्ट हो जाता हैजबकि शब्दशः अनुवाद वाक्यप्रवाह को बिगाड़ देता है।-विन्यास और भाव-

इसी क्रम में सुसान बैसनेट ने अपनी पुस्तक Translation Studies में लेफेवेयर के विचारों की विस्तार से चर्चा की है। दूसरी ओर, हिलेर बैलाक ने गद्य अनुवाद के लिए छह सामान्य नियम प्रस्तुत किए हैं। वे इस बात पर जोर देते हैं कि अनुवादक को पूरे पाठ को एक अखंड इकाई के रूप में देखना चाहिएमुहावरों का अनुवाद मुहावरों से ही करना चाहिए, और 'भाव के बदले भाव' की रणनीति अपनानी चाहिए। बैलाक झूठे समानार्थी शब्दों)false friends) से सावधान रहने की सलाह देते हैं और यह भी कहते हैं कि अनुवादक को आवश्यकता पड़ने पर साहसपूर्वक रूपांतरण करना चाहिएलेकिन अनुवाद को अनावश्यक रूप से अलंकृत नहीं करना चाहिए।

इसके विपरीतऐनी अबरस्फेल्ड जैसे विचारक यह दिखाते हैं कि पाठ और प्रस्तुति को अलगअलग करना संभव - नहीं है, विशेष रूप से रंगमंच के संदर्भ में। उनके अनुसार साहित्यिक पाठ को श्रेष्ठ मानकर मंचन को उसका मात्र अनुवाद समझना एक कृत्रिम विभाजन है। निर्देशक का कार्य भी एक प्रकार का अनुवाद ही हैजिसमें लिखित चिह्नों की व्यवस्था दृश्य और श्रव्य चिह्नों में बदलती है, जबकि अर्थ का मूल ढांचा बना रहता है।

गद्य, पद्य और नाटक—तीनों ही विधाएँ अनुवादक के सामने अपनीअपनी विशिष्ट कठिनाइयाँ प्रस्तुत करती हैं। - प्रत्येक विधा में निहित मानवीय अनुभवों को लक्ष्य भाषा में उसी प्रभाव और संवेदना के साथ प्रस्तुत करना अत्यंत दुष्कर कार्य है। इसलिए साहित्यिक अनुवाद को एक सरल भाषायी अभ्यास के रूप में नहीं, बल्कि विवेक, संवेदना और बहुआयामी दृष्टिकोण की मांग करने वाली सृजनात्मक प्रक्रिया के रूप में देखना चाहिए। कई बार तो एक छोटीसी कविता - का अनुवाद करने के लिए भी अनुवादक को अनेक सिद्धांतों, पद्धतियों और व्यक्तिगत अनुभवों का सहारा लेना पड़ता है। यही कारण है कि साहित्यिक अनुवाद को एक कठिनकिंतु अत्यंत महत्त्वपूर्ण रचनात्मक कर्म माना जाता है।

13.9 सारांश

वैश्वीकरण के वर्तमान युग में भाषाएँ स्थिर न रहकर निरंतर परिवर्तनशील होती जा रही हैं। विभिन्न संस्कृतियों, ज्ञान-भंडार समृद्ध होता है। नए विचारों-परंपराओं और विचारधाराओं के संपर्क से भाषाओं का शब्द, अवधारणाओं और वैज्ञानिकतकनीकी ज्ञान को व्यक्त करने के लिए नई शब्दावली की आवश्यकता पड़ती है। यह शब्दावली कभी उधार - लेकरकभी अपनी भाषिक संरचना के अनुसार गढ़कर और कभी अनुवाद के माध्यम से विकसित की जाती है। इस प्रक्रिया में अनुवाद भाषाविकास का एक सशक्त माध्यम बन जाता है।-

साहित्यिक अनुवाद में भाषा की सरलता और शुद्धता का विशेष महत्व है। यदि अनुवाद जटिल, कृत्रिम या मूल भाषा की संरचना की नकल मात्र बन जाएतो वह पाठक से दूरी बना लेता है। सफल अनुवाद वही है जिसमें मूल भाव सुरक्षित रहते हुए भाषा सहज, स्वाभाविक और प्रवाहपूर्ण हो। अनुवादक को अपनी भाषा की प्रकृति, उसकी अभिव्यक्ति क्षमता और सांस्कृतिक संदर्भों का ध्यान रखना आवश्यक है।

भाषा का विकास केवल साहित्य तक सीमित नहीं हैबल्कि ज्ञानविज्ञान-, प्रशासन और व्यवहारिक क्षेत्रों में उसके प्रभावी प्रयोग से जुड़ा है। जब कोई भाषा आधुनिक संदर्भों में सरल और शुद्ध रूप में विचार व्यक्त करने में सक्षम होती हैतब उसकी स्वीकार्यता व्यापक होती है। इसी से भाषा न केवल समृद्ध बनती हैबल्कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी अपनी पहचान स्थापित करती है।

13.10 प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा)

प्रश्न 1 का उत्तर: अनुवाद की तीन प्रमुख विशेषताएँ हैं:

सुबोधता: पाठक को आसानी से समझ में आना चाहिए।

स्वाभाविकता: वाक्य हिंदी की प्रवाहमान शैली में होने चाहिए।

संगतता: अनुवाद मूल अर्थ से मेल खाता हो।

प्रश्न 2 का उत्तर: अनुवाद में वाक्य संरचना एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। अनुवादक को केवल शब्दों का अनुवाद नहीं करना चाहिएबल्कि वाक्य के प्रवाह, उपवाक्य और पदबंधों की स्वाभाविक संरचना बनाए रखनी चाहिए।

प्रश्न 3 का उत्तर: बोधगम्यता के दो प्रमुख कारण हैं:

1. खराब अनुवाद: जब अनुवादक मूल संदेश को पूरी तरह न समझ पाए और अर्थहीन या कृत्रिम वाक्य प्रस्तुत करे।
2. पारिभाषिक शब्दों का जटिल प्रयोग: कई तकनीकी या विशेष शब्दों के एकसाथ प्रयोग से पाठक को समझने में कठिनाई होती है।

प्रश्न 4 का उत्तर: सफल शब्द निर्माण के लिए दो प्रमुख गुणों का होना आवश्यक है:

1. स्वीकृति-नया शब्द सहज और सरल होना चाहिए ताकि भाषिक समाज उसे आसानी से अपनाए। उदाहरण के लिए, दूरभाष और द्विचक्री शब्द प्रयोग में नहीं आए, जबकि अंग्रेजी शब्द टेलीफोन और साइकिल प्रचलित हो गए।
2. संबद्धता-विशेष रूप से पारिभाषिक शब्दों में अर्थ और प्रयोग का मेल होना चाहिए। उदाहरण के लिए "state" शब्द के अलग-अलग अर्थ को हिंदी में स्पष्ट करना आवश्यक है। इसे प्रशासनिक इकाई के लिए "राज्य" भौगोलिक क्षेत्र के लिए "प्रदेश" और अन्य अर्थों के लिए "प्रांत" का प्रयोग किया जा सकता है।

प्रश्न 5 का उत्तर: मानवीय भाषा की कुछ मूलभूत विशेषताएँ हैंजो उसे अन्य संकेत प्रणालियों से अलग करती हैं। सबसे पहली विशेषता यह है कि भाषा सामाजिक वस्तु है। इसका जन्म समाज में होता है और विकास भी समाज में ही

होता है। बिना सामाजिक संपर्क के भाषा का अर्जन संभव नहीं। दूसरी महत्वपूर्ण बात यह है कि भाषा आनुवांशिक नहीं होती। बच्चा भाषा सीखने की क्षमता लेकर जन्म लेता है किंतु किसी विशेष भाषा का ज्ञान उसे अपने परिवेश से ही प्राप्त होता है।

13.11 अधिक जानने के लिए पढ़ें

- Bassnett, Susan, 1993, Comparative Literature: A Critical Introduction, UK, Exfort Black Well Publishers.
- Badode, Rambhau & Afzalkhan (eds.) 2007. New Directions in Comparative Literature, Macmilhan India Ltd.
- Spivak, Gayatri Chakravarty, 2003, Death of a Discipline, Colombia, Colombia University Press.
- Said, Edward, 1978, Orientalism, London, RNP.
- चौधुरी, इंद्रनाथ, 1983, तुलनात्मक साहित्य की भूमिका, मद्रास, दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा।
- चौधुरी, इंद्रनाथ, 1996, तुलनात्मक साहित्य भारतीय परिप्रेक्ष्य, नई दिल्ली, वाणी प्रकाशन।
- गोस्वामी, कृष्ण कुमार, अनुवाद विज्ञान की भूमिका, नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन।
- टंडन, पूरनचंद, अनुवाद के विविध आयाम, दिल्ली, तक्षशिला प्रकाशन।
- नगेंद्र (.सं), अनुवाद 1993, सिद्धांत एवं अनुप्रयोग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली।
- श्रीवास्तव, रवींद्रनाथ, एवं गोस्वामी, कृष्ण कुमार (.सं), 1995, अनुवाद सिद्धांत और समस्याएँ, दिल्ली, आलेख प्रकाशन।

13.12 अभ्यास प्रश्न

(क) संक्षिप्त प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

बी 1.भाषा के दो प्रमुख पक्ष क्या है ?

2. भाषा से आप क्या समझते है ?
3. श्यामसुंदर ने भाषा को किस प्रकार परिभाषा किया है?
4. साहित्य शब्द को परिभाषित कीजिए।
5. सृजनात्मक साहित्य से आप क्या समझते है?
6. आधुनिक समाज में जन संचार का क्या महत्व है ?

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

1. भाषा के अर्थ, परिभाषा और स्वरूप को स्पष्ट कीजिए|
2. अनुवाद और भाषा का परस्पर संबंध को अपने शब्दों में लिखिए|
3. अनुवाद और भाषा के विकास और संकल्पना से आप क्या समझते है-अपने शब्दों में लिखिए|
4. साहित्य अनुवाद में भाषा की भूमिका को विविध उदाहरणों के माध्यम से स्पष्ट कीजिए|

5. भाषा के आधुनिकीकरण एवं अंतर्राष्ट्रीय विकास में अनुवाद की भूमिका पर प्रकाश डालिए|
6. साहित्यिक अनुवाद में अनुभव और विवेक की क्या भूमिका है एक आलेख प्रस्तुत कीजिए|

शब्दकोश:

1. भौतिक: सांसारिक, लौकिक
2. आनुवांशिक: वंशानुगत
3. अराजकता: अनियंत्रित
4. अपेक्षाकृत: किसी की तुलना में, उम्मीद में प्रतीक्षा करना
5. प्रकार्यात्मक: कार्य करने में सक्षम होना
6. निर्देशित: उल्लेखित, आदेशित, निर्दिष्ट
7. मृगतृष्णा: मरीचिका, भ्रम, भ्रांति

*** ***** ***

इकाई 14 - डिजिटल युग में साहित्यानुवादनई प्रवित्तियाँ और बहुभाषिक : परिवेश

इकाई की रुपरेखा

.141 उद्देश्य
14.2 प्रस्तावना
14.3 डिजिटल युग में साहित्यपरम्परा एवं परिवर्तन :
14.4 डिजिटल युग में साहित्यानुवाद,प्रक्रिया और सांस्कृतिक महत्व ,स्वरूप :
14.5 डिजिटल युग में साहित्यानुवाद की नई प्रवृत्तियों की भूमिका
14.6 डिजिटल युग में साहित्यिक अनुवाद और बहुभाषीय परिवेश
14.7 डिजिटल युग में साहित्य अनुवादमातृभाषा से बहुभाषीय :
14. 8 सारांश
14.9 प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा)
14.10 अधिक जानने के लिए पढ़ें
14.11 अभ्यास प्रश्न

.141 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन से आप-

- डिजिटल युग में साहित्य की परम्परा एवं परिवर्तन के बारे में जान सकेंगे |
- डिजिटल युग में साहित्यानुवाद के स्वरूप प्रक्रिया और सांस्कृतिक महत्व ,के बारे में जानकारी प्राप्त करेंगे |
- डिजिटल युग में साहित्यानुवाद की नई प्रवृत्तियों की भूमिका से अवगत होंगे |
- डिजिटल युग में साहित्यिक अनुवाद और बहुभाषीय परिवेश को जानेंगे |
- डिजिटल युग में साहित्य अनुवाद द्वारा मातृभाषा से बहुभाषीय भूमिका की जानकारी प्राप्त करेंगे |

14.2 प्रस्तावना

डिजिटल युग ने साहित्य और अनुवाद की परंपरागत सीमाओं को परिवर्तित कर दिया है। अब साहित्य केवल पुस्तक तक सीमित नहीं रह गया हैबल्कि ऑनलाइन प्लेटफॉर्म, ईबुक्स-, ब्लॉग, और सोशल मीडिया के माध्यम से विश्वभर में तेजी से साझा और पहुँचाया जा रहा है। इसी संदर्भ में साहित्यानुवाद की भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो गई हैक्योंकि विभिन्न भाषाओं और संस्कृतियों के साहित्य को बहुभाषिक पाठकों तक पहुँचाना डिजिटल माध्यमों के जरिए सहज हो गया है।

नई प्रवित्तियों में मशीन अनुवाद, कम्प्यूटेशनल टूल्स, और सहयोगात्मक अनुवाद प्लेटफॉर्म ने अनुवाद प्रक्रिया को तेज, सटीक और अधिक व्यापक बनाया है। इसके साथ ही, डिजिटल परिवेश ने पाठकों और अनुवादकों के बीच संवाद को भी सक्रिय किया हैजिससे अनुवाद में सांस्कृतिक और भाषाई विविधता का समावेश बढ़ा है। बहुभाषिक परिवेश में

साहित्य का अनुवाद केवल भाषा का रूपांतरण नहीं, बल्कि सांस्कृतिक आदानप्रदान और वैश्विक समझ का माध्यम बन - गया है।

इस इकाई में हम डिजिटल युग में साहित्यानुवाद की प्रमुख प्रवित्तियों, तकनीकी साधनों, बहुभाषिक संदर्भों और साहित्यिक संवाद के नए आयामों का विश्लेषण करेंगे। इससे यह स्पष्ट होगा कि कैसे अनुवाद ने डिजिटल दुनिया में साहित्य को अधिक समावेशी और बहुआयामी बनाने में योगदान दिया है।

14.3 डिजिटल युग में साहित्य: परम्परा एवं परिवर्तन

मानव मस्तिष्क सृष्टि की उन अद्वितीय रचनाओं में से एक हैजिसने मनुष्य को केवल जैविक अस्तित्व तक सीमित नहीं रखा, बल्कि उसे चेतना, कल्पना और अनुभूति की ऊँचाइयों तक पहुँचने का सामर्थ्य प्रदान किया। यही मस्तिष्क मनुष्य को लौकिक जीवन की आवश्यकताओं से आगे बढ़ाकर अलौकिक चिंतन की ओर प्रेरित करता है। मनुष्य के भीतर करुणा, सहानुभूति, विवेक और संवेदना जैसे गुणों का विकास इसी के कारण संभव हुआ है। आदिम मानव से आधुनिक और तथाकथित अतिमानव तक की यात्रा में मस्तिष्क की भूमिका निर्णायक रही है। उसने न केवल जीवन को सरल बनाने वाले उपकरण गढ़ेबल्कि भावनाओं और विचारों को अभिव्यक्त करने के माध्यम भी विकसित किए।

आज का युग आधुनिकता से सराबोर है। भोजन, वस्त्र और आवास जैसी मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति से लेकर चंद्रमा पर बस्ती बसाने की कल्पना तकसब कुछ मानव बुद्धि की देन प्रतीत होता है। किंतु मानव मस्तिष्क की क्षमता केवल यांत्रिक आविष्कारों तक सीमित नहीं है। वह मनुष्य के अंतर्जगत—उसके भाव, विचार और संवेदनाओं—को भी दिशा देता है। मानव सभ्यता के विकासक्रम पर दृष्टि डालें तो ज्ञात होता है कि जब मनुष्य ने घुमंतू जीवन त्यागकर एक स्थान पर समूह में रहना आरंभ कियातभी सामाजिक जीवन का बीज पड़ा। संकेतों के माध्यम से आवश्यकताओं की अभिव्यक्ति से भाषा का जन्म हुआ। भाषा की यह यात्रा वाचिक से लिखित रूप तक पहुँची और इसी के साथ सामाजिक संरचना अधिक सुदृढ़ होती चली गई।

भाषा केवल संवाद का साधन नहीं रहीबल्कि चिंतन और मनन का सशक्त माध्यम बन गई। वास्तव मेंसभ्यता की नींव ही भाषा पर टिकी हैजिसने मनुष्य को अन्य प्राणियों से अलग पहचान दी और उसे सामाजिक प्राणी के रूप में स्थापित किया। "सहितस्य भावः तत् साहित्यम्" के अनुसार, जो भावों को संचित करे और सबके कल्याण का साधन बने, वही साहित्य है। हिंदी भाषा और साहित्य की लिखित परंपरा अत्यंत समृद्ध और विस्तृत रही हैजो हमारी सांस्कृतिक धरोहर का अभिन्न अंग है।

इतिहास के विभिन्न चरणों में साहित्यकारों और विद्वानों ने अपने अध्ययन और शोध के आधार पर साहित्येतिहास ग्रंथों की रचना की। इन ग्रंथों में केवल रचनाओं और रचनाकारों का विवरण ही नहीं मिलताबल्कि उस युग की साहित्यिक प्रवृत्तियों, सामाजिक ढाँचे, राजनीतिक परिस्थितियों और आर्थिक स्थितियों का भी गहन चित्रण होता है। इससे उस समय के मानवमन की प्रवृत्तियों को समझने में सहायता मिलती है। इसी संदर्भ में आचार्य रामचंद्र शुक्ल का यह कथन अत्यंत - महत्वपूर्ण है—"जबकि प्रत्येक देश का साहित्य वहाँ की जनता की चित्तवृत्तियों का संक्षिप्त प्रतिबिंब होता हैतब यह निश्चय है कि जनता की चित्तवृत्ति में परिवर्तन के साथसाथ साहित्य के स्वरूप में भी परिवर्तन होता चला जाता है।-"इस उद्धरण से स्पष्ट होता है कि साहित्य समाज का वह दर्पण हैजिसमें जनता के सुखदुख-, आशानिराशा-, आकर्षणविकर्षण और संघर्षों - की छवि झलकती है। साहित्य आत्मा के स्पंदन को शब्द देता है और समाज के जीवन की व्याख्या करता है। आदिकाल से लेकर इक्कीसवीं सदी तक के साहित्य पर दृष्टि डालने से समाज का यथार्थ स्वरूप सामने आता है।

वर्तमान समय में साहित्य का स्वरूप तेजी से बदल रहा है। नवीन ज्ञाननई तकनीक और आधुनिक सुविधाओं ने साहित्य को एक नया आयाम प्रदान किया है। डिजिटल युग में संपूर्ण विश्व एक वैश्विक गाँव के रूप में दिखाई देता हैजहाँ व्यक्ति किसी एक राष्ट्र का नहींबल्कि पूरे विश्व का नागरिक बनता जा रहा है। इस डिजिटल क्रांति ने मनुष्य के सांस्कृतिक

जीवन को गहराई से प्रभावित किया है। साहित्य भी इस परिवर्तन से अछूता नहीं रहा। जहाँ एक ओर उसे अभूतपूर्व अवसर मिले हैंवहीं दूसरी ओर गंभीर चुनौतियाँ भी सामने आई हैं।

प्रिंट मीडिया से इलेक्ट्रॉनिक मीडिया और फिर इंटरनेट तक की यात्रा ने साहित्य को व्यापक मंच प्रदान किया। कंप्यूटर द्वारा निर्मित आभासी संसार में उपलब्ध रचनाओं को ऑनलाइन या डिजिटल साहित्य कहा जाने लगा। ई-साहित्यन्यू मीडिया साहित्य, साइबर साहित्य और हाइपरटेक्स्ट साहित्य जैसी अवधारणाएँ इसी का परिणाम हैं। डिजिटल साहित्य की विशेषता यह है कि यह परंपरागत शैली से अलग, बहुआयामी और नवीन प्रयोगों से युक्त है।

आज हिंदी साहित्य की प्राचीन से आधुनिक काल तक की रचनाएँ पीडीएफ के रूप में अनेक वेबसाइटों पर उपलब्ध हैं। हिंदी समय, गद्यकोश, कविताकोश, भारतकोश, काव्यालय जैसे मंचों ने साहित्य को वैश्विक पाठक तक पहुँचा दिया है। अब कोई भी व्यक्ति दुनिया के किसी भी कोने से अपनी पसंदीदा रचना पढ़ सकता है। इसके अतिरिक्त साहित्य अब केवल पाठ्य रूप में नहींबल्कि दृश्य और श्रव्य माध्यमोंऑडियो बुक-, वीडियो, एनीमेशन और मल्टीमीडियाक-ी रूप में भी उपलब्ध है।

डिजिटल साहित्य की एक प्रमुख विशेषता लेखक और पाठक के बीच की दूरी का कम होना है। पाठक तत्काल प्रतिक्रिया दे सकता हैजिससे संवाद की प्रक्रिया सशक्त होती है। इससे साहित्य का विश्लेषण भी होता है और रचनाकार को अपनी लेखन शैली पर आत्ममंथन का अवसर मिलता है। इस व्यवस्था ने लेखक को संपादन और प्रकाशन की स्वतंत्रता भी प्रदान की है।

डिजिटल साहित्य का प्रारंभ लेखक -में ऑडियो बुक के रूप में माना जाता है। मैकल हार्ट को पहला ई 1934 में ऑनलाइ 1994 के दशक में हाइपरटेक्स्ट साहित्य और 1990 स्वीकार किया गया।न डायरी का प्रचलन शुरू हुआ। यूनिकोड और वर्ल्ड वाइड वेब के विकास के साथ मातृभाषाओं में कंप्यूटर का प्रयोग संभव हुआ और इंटरनेट पर साहित्य के विकास की नींव पड़ी। आगे चलकर ब्लॉगिंग, ईपत्रिकाएँ और सोशल नेटवर्किंग साइट्स साहित्यिक अभिव्यक्ति के -प्रमुख मंच बने।

ब्लॉगिंग ने साहित्य को नई गति दी। त्वरित लेखन, त्वरित प्रकाशन और त्वरित प्रतिक्रियाइन तीनों ने इसे -लोकप्रिय बनाया। सोशल नेटवर्किंग साइट्स जैसे फेसबुक, यूट्यूब, इंस्टाग्राम, ट्विटर, व्हाट्सएप आदि ने साहित्यिक, सामाजिक और शैक्षणिक संवाद को व्यापक बनाया। ईप-त्रिकाओं ने कविता, कहानी, उपन्यास, निबंध, आलोचना और शोध लेखन को नया मंच दिया। हंस, तद्भव, कथाक्रम, वागर्थ, समालोचन, अभिव्यक्ति डॉट कॉम जैसी पत्रिकाओं ने डिजिटल माध्यम में अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज कराई।

डिजिटल माध्यम से साहित्य के संरक्षण और प्रसार की समस्या काफी हद तक हल हुई है। पुस्तकें अब डिजिटल स्मृति में सुरक्षित की जा सकती हैं और लाखों प्रतियों तक पहुँच सकती हैं। नवोदित लेखकों के लिए यह माध्यम संभावनाओं से भरा है। साहित्यकार अब वैश्विक संवाद का हिस्सा बन गए हैं।

डिजिटल साहित्य की सीमाएं:

इन सब उपलब्धियों के बीच कुछ गंभीर प्रश्न भी खड़े होते हैं। क्या डिजिटल सुविधा के कारण हम भौतिक पुस्तकों से दूर होते जा रहे हैं? क्या साहित्य का आस्वाद केवल सूचना और त्वरित मनोरंजन तक सीमित होता जा रहा है? साहित्य तो मूलतः अनुभूति का विषय हैजो गहन पाठ और आत्मीय संबंध से ही संभव होता है। विद्यालयों और महाविद्यालयों में आज भी परंपरागत पुस्तकों के माध्यम से साहित्य का अध्ययन अधिक प्रभावी सिद्ध होता है।

कक्षा में जब शिक्षक भाव, रस और अलंकार के साथ कविता का पाठ कराते हैं, तब विद्यार्थी केवल शब्द नहीं सीखताबल्कि भावों को आत्मसात करता है। रासो का वीर रस, कबीर का अध्यात्म, सूर की कृष्णलीला-, तुलसी का राम, भारतेन्दु का नवजागरण, निराला और महादेवी की करुणाये सब आज भी उतने ही जीवंत हैं। प्रेमचंद के 'होरी' में छात्र अपने आसपास के समाज को पहचान लेता है। यही साहित्य की शक्ति है।

डिजिटल युग में साहित्य की मात्रा बढ़ी हैपरंतु गुणवत्ता का प्रश्न चिंता का विषय है। सोशल मीडिया पर फैलने वाली अफवाहें, उत्तेजक सामग्री और सतही लेखन साहित्य के मूल उद्देश्य से भटकाव पैदा करते हैं। बच्चों और युवाओं पर इसका नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। इसलिए आवश्यक है कि तकनीक के साथ विवेक और जिम्मेदारी भी विकसित हो।

डिजिटल व्यवस्था साहित्य के लिए एक सशक्त साधन हैकिंतु वह परंपरा का स्थान नहीं ले सकती। साहित्य की मूल आत्मा—मानवीय संवेदना, नैतिकता और विचारशीलताका संरक्षण अत्यंत आवश्यक है। लेखक, पाठक और तकनीकी मंच सभी-को अपनी भूमिका समझनी होगी। तभी हम सही अर्थों में साहित्य की साधना कर सकेंगे और मानव जीवन को अधिक मानवीय बना पाएँगे।

14.4 डिजिटल युग में साहित्यानुवाद: स्वरूप, प्रक्रिया और सांस्कृतिक महत्व

साहित्य मानव की कल्पना, अनुभव और संवेदना की सर्जनात्मक अभिव्यक्ति है। प्रत्येक साहित्यकार अपने जीवनानुभवों, सामाजिक परिवेश और वैचारिक दृष्टि से प्रेरित होकर विचारों को शब्दों का रूप देता है। इसी कारण साहित्यिक अभिव्यक्ति की शैली, संरचना और भाषा में विविधता दिखाई देती है। इस विविधता ने साहित्य को अनेक विधाओं में विभक्त किया है—जैसे कहानी, उपन्यास, कविता, नाटक, निबंध आदि। ये विधाएँ कभी पद्य के रूप में, कभी गद्य के रूप में और कभी दोनों के सम्मिलित रूप में सामने आती हैं। पद्य और गद्य का संयुक्त रूप 'चम्पू' कहलाता है। साहित्य की रचना परंपरा में गद्य और पद्य दो प्रमुख आधार हैं-और इन्हीं के आधार पर साहित्यिक अनुवाद को भी गद्यानुवाद और पद्यानुवाद कहा जाता है।

जब किसी एक भाषा में रचित सर्जनात्मक साहित्य को दूसरी भाषा में स्थानांतरित किया जाता है, तो वह साहित्यानुवाद कहलाता है। इसे साहित्यिक अनुवाद भी कहा जाता है। जिस प्रकार मूल साहित्य विभिन्न विधाओं में रचा जाता है, उसी प्रकार उसका अनुवाद भी विधाआधारित होता है-—गद्य साहित्य का अनुवाद गद्यानुवाद, कविता का अनुवाद पद्यानुवाद और नाटक का अनुवाद नाट्यानुवाद कहलाता है। कथा और कथेतर साहित्य की (या काव्यानुवाद) अन्य विधाओं में भी यही सिद्धा ंत लागू होता है।

विधा:विशेष और साहित्यानुवाद की चुनौती-

साहित्य की प्रत्येक विधा का अपना विशिष्ट स्वरूप, शिल्प और संवेदना होती है। कविता में भाव की सूक्ष्मता और लयात्मकता प्रमुख होती हैजबकि उपन्यास और कहानी में कथानक, चरित्र और सामाजिक यथार्थ का विस्तार मिलता है। नाटक संवाद और मंचीय संरचना पर आधारित होता है। इसलिए इन विधाओं का अनुवाद भी समान नहीं हो सकता। यदि अनुवादक को विधाविशेष की प्रकृति और उसकी कलात्मक आवश्यकताओं का ज्ञान नहीं हैतो यह अनुवादक की सीमा - मानी जाएगीन कि साहित्यानुवाद की असंभाव्यता।

वास्तव मेंसाहित्यानुवाद केवल शब्दों का रूपांतरण नहीं हैबल्कि भाव, अनुभूति और कलात्मक चेतना का पुनःसृजन है। अनुवादक को मूल रचना की विषयवस्तु, अंतर्निहित भावना और रचनाकार की मानसिक भूमि को समझकर लक्ष्य भाषा में उसी अनुभूति को जगाना होता है। इसे ही 'परमानस प्रवेश' कहा गया हैअर्थात् रचयिता के व्यक्तित्व में प्रवेश कर उसकी सर्जनात्मक अवस्था को आत्मसात करना। अनुवादक में भी वही सर्जनात्मक क्षमता अपेक्षित होती हैजो मूल रचना में होती है। अनुवाद की सफलता की कसौटी यही है कि पाठक को अनूदित रचना पढ़ते समय ऐसा लगे मानो लेखक ने स्वयं अपनी कृति को दूसरी भाषा में फिर से रच दिया हो।

डिजिटल युग में साहित्यानुवाद का विस्तार:

आज का समय डिजिटल युग का हैजिसे अनुवाद का युग भी कहा जा सकता है। इंटरनेट, सोशल मीडिया, ईबुक्स-, ऑनलाइन पत्रिकाएँ और डिजिटल प्रकाशन ने अनुवाद के क्षेत्र को अभूतपूर्व विस्तार दिया है। अब किसी भाषा की रचना

सीमित भौगोलिक क्षेत्र तक नहीं रहती, बल्कि विश्वभर के पाठकों तक पहुँच जाती है। डिजिटल मंचों ने अनुवादकों, लेखकों और पाठकों को सीधे जोड़ दिया है। इससे अनुवाद की माँग और अवसर दोनों में तीव्र वृद्धि हुई है।

डिजिटल युग में मशीन अनुवाद, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और अनुवाद सॉफ़्टवेयर का प्रयोग भी बढ़ा है। हालाँकि ये तकनीकी साधन सूचनाआधारित अनुवाद में सहायक हैंपरंतु साहित्यिक अनुवाद के लिए मानवीय संवेदना-, सांस्कृतिक समझ और रचनात्मकता आज भी अनिवार्य है। डिजिटल तकनीक ने साहित्यानुवाद को गति दी है, लेकिन उसकी आत्मा अब भी मानवीय अनुभूति में ही निहित है।

साहित्यानुवाद का सांस्कृतिक और राष्ट्रीय महत्व्:

साहित्यानुवाद का सबसे बड़ा महत्त्व यह है कि वह विभिन्न भाषाओं और संस्कृतियों के बीच सेतु का कार्य करता है। विश्व की महान साहित्यिक कृतियों के प्रति मानव की जिज्ञासा ही अनुवाद की प्रेरणा बनती है। इसी कारण शेक्सपियर, टॉलस्टॉय जैसे विश्वविख्यात लेखकों की रचनाएँ अनेक भाषाओं में अनूदित हुईं। इसी प्रकारबंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय, रवींद्रनाथ ठाकुर, कालिदास, वाल्मीकि, तुलसीदास, कबीरदास और प्रेमचंद की कृतियाँ भारतीय भाषाओं के साथसाथ - विदेशी भाषाओं में भी पहुँचीं।

महाकवि कालिदास की अभिज्ञान शाकुंतलम् को पढ़कर जर्मन कवि गेटे अत्यंत प्रभावित हुए। शेलिंग, शॉपेनहावर और टीविल्सन द् .एच.एलियट भारतीय उपनिषदों से अनुवाद के माध्यम से परिचित हुए। मेघदूत के एच .एस.वारा किए गए पद्यानुवाद ने पाश्चात्य रोमांटिक कवियों को प्रेरणा दी। यह सब साहित्यानुवाद की शक्ति को प्रमाणित करता है।

राष्ट्रीय स्तर पर साहित्यानुवाद भावनात्मक एकता को सुदृढ़ करता है। भारत जैसे बहुभाषी देश में अनुवाद ही वह माध्यम हैजो कश्मीर से कन्याकुमारी तक विविधताओं के बीच एकता की भावना को विकसित करता है। गोस्वामी तुलसीदास की रामचरितमानस के समानांतर तमिल में कंबन, बंगाल में कृत्तिवास और असम में शंकरदेव द्वारा रचित रामकाव्य इस भावात्मक एकता का उदाहरण हैं। कबीर, नानकदेव, ज्ञानेश्वर, नामदेव, लल्लेश्वरी और वैमना जैसे संत-कवियों की निर्गुण भक्ति परंपरा भी विभिन्न भाषाओं में समान चेतना को अभिव्यक्त करती है।

अपनी प्रगति जांचें

प्रश्न .1 आपकी दृष्टि में भाषा और साहित्य क्या है ?

प्रश्न .2 साहित्य के संबंध में आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने क्या कहां था ?

प्रश्न .3 डिजिटल साहित्य किसे कहते है ?

प्रश्न .4 डिजिटल साहित्य की दो विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

प्रश्न .5 डिजिटल युग मे साहित्यनुवाद का विस्तार किस प्रकार हुआ है ?

भारतीय साहित्य और विश्व साहित्य की अवधारणा:

भारतीय साहित्य विभिन्न भारतीय भाषाओं में रचित साहित्य का समष्टिगत रूप है। इसमें विविधता होते हुए भी सांस्कृतिक और दार्शनिक आधार एक है। रामायण और महाभारत का प्रभाव हिंदी, बांग्ला, मराठी के साथसाथ तमिल - और तेलुगु साहित्य पर भी पड़ा है। अनुवाद ने इस आंतरिक एकता को उजागर किया है। इसी भावना के तहत भारतीय साहित्य परिषद और साहित्य अकादमी जैसी संस्थाओं की स्थापना हुई।

अनुवाद ने 'विश्व साहित्य' की अवधारणा को भी साकार किया। गेटे ने अभिज्ञान शाकुंतलम् के अनुवाद से प्रेरित होकर 'World Literature' की संकल्पना प्रस्तुत की, जिसे रवींद्रनाथ ठाकुर ने समर्थन दिया। इस अवधारणा के अनुसार साहित्य की मूल शक्ति उसकी मानवीय संवेदना है, जो सार्वभौमिक होती है। अनुवाद इसी सार्वभौमिकता को संभव बनाता है।

संस्कृति, भाषा और अनुवाद

संस्कृति के विकास में भाषा और साहित्य की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। साहित्य सामाजिक मूल्यों, विश्वासों और जीवनदृष्टि की अभिव्यक्ति का माध्यम है। अनुवाद के माध्यम से एक भाषा की सांस्कृतिक धरोहर दूसरी भाषाओं तक - पहुँचती है। भारतीय ग्रंथों के अनुवाद से चीन, जापान, श्रीलंका, थाईलैंड और इंडोनेशिया जैसे देशों में भारतीय संस्कृति और बौद्ध धर्म का प्रसार हुआ। अरब विद्वानों ने भारतीय गणित, खगोल विज्ञान और आयुर्वेद के ग्रंथों का अनुवाद कर यूरोप तक पहुँचाया, जिससे वहाँ के पुनर्जागरण को प्रेरणा मिली।

भाषादूसरे से शब्द ग्रहण -विकास की दृष्टि से भी साहित्यानुवाद अत्यंत उपयोगी है। अनुवाद के कारण भाषाएँ एक- करती हैं। हिंदी में'मुआवजा', 'कुर्की', 'जुर्माना' जैसे उर्दू शब्द और 'कंप्यूटर', 'बैंक', 'बोनस' जैसे अंग्रेज़ी शब्द इसी प्रक्रिया के उदाहरण हैं। अंग्रेज़ी में 'योग', 'जंगल', 'चटनी' जैसे भारतीय शब्दों का समावेश भी इसी का प्रमाण है।

डिजिटल युग और तुलनात्मक साहित्य

डिजिटल युग में साहित्यानुवाद ने तुलनात्मक साहित्य के अध्ययन को नई दिशा दी है। ऑनलाइन डेटाबेस, डिजिटल पुस्तकालय और ईजर्नल्स ने विभिन्न भाषाओं के साहित्य को तुलनात्मक दृष्टि से समझना सरल बना दिया है। - कबीर और बसवेश्वर, सूरदास और नरसी मेहता, निराला और एजरा पाउंड, प्रेमचंद और मैक्सिम गोर्की जैसे तुलनात्मक अध्ययन अनुवाद के बिना संभव नहीं होते।

डिजिटल युग में साहित्यानुवाद केवल साहित्यिक गतिविधि नहींबल्कि सांस्कृतिक संवाद, राष्ट्रीय एकता और वैश्विक समझ का सशक्त माध्यम बन चुका है। तकनीक ने इसके विस्तार को सरल बनाया हैपरंतु उसकी आत्मा आज भी मानवीय संवेदना, सर्जनात्मक प्रतिभा और सांस्कृतिक चेतना में निहित है। साहित्यानुवाद भाषाओं को जोड़ता है, संस्कृतियों को समृद्ध करता है और मानवता को एक साझा मंच प्रदान करता है। इसी कारणडिजिटल युग में साहित्यानुवाद का महत्त्व पहले से कहीं अधिक बढ़ गया है |

14.5 डिजिटल युग में साहित्यानुवाद की नई प्रवृत्तियों की भूमिका

भाषा मानव सभ्यता की आत्मा है और साहित्य उसका सबसे सशक्त अभिव्यक्ति माध्यम। जब एक भाषा का साहित्य दूसरी भाषा में अनूदित होता हैतब केवल शब्दों का रूपांतरण नहीं होताबल्कि एक संपूर्ण संस्कृति, इतिहास, संवेदना और जीवनदृष्टि का स्थानांतरण होता है। साहित्य अनुवाद ने सदैव सभ्यताओं को जोड़ने का कार्य किया है। - रामायण, महाभारत, इलियड, ओडिसी, बाइबिल या कुरान—इन सभी ग्रंथों का अनुवाद विभिन्न भाषाओं में होकर ही वैश्विक मानवता की साझा धरोहर बना।

इक्कीसवीं सदी में प्रवेश करते ही जब दुनिया डिजिटल युग में पहुँचीतब साहित्य और अनुवाद भी इस परिवर्तन से अछूते नहीं रहे। तकनीकी विकास, इंटरनेट की सर्वसुलभता और कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने साहित्य अनुवाद की परंपरागत प्रक्रिया को नई दिशा दी है। आज साहित्य अनुवाद केवल विद्वानों या प्रकाशकों तक सीमित न रहकर एक व्यापक, गतिशील और वैश्विक प्रक्रिया बन गया है।

डिजिटल युग का प्रभाव और साहित्य अनुवाद:

डिजिटल युग की सबसे बड़ी विशेषता हैसूचनाओं का तीव्र प्रसार। इंटरनेट और डिजिटल माध्यमों ने भौगोलिक - सीमाओं को लगभग समाप्त करदिया है। अब किसी देश या भाषा का साहित्य केवल उसी क्षेत्र तक सीमित नहीं रहता। ई-पुस्तकों, डिजिटल लाइब्रेरी और ऑनलाइन मंचों के माध्यम से साहित्य विश्व के किसी भी कोने में तुरंत उपलब्ध हो जाता है।इस संदर्भ में साहित्य अनुवाद की आवश्यकता और भी बढ़ गई है। जब पाठक किसी विदेशी साहित्यिक कृति तक पहुँचता है, तो अनुवाद उसके लिए सेतु का कार्य करता है। डिजिटल युग में यह सेतु पहले से अधिक मजबूत, तेज़ और व्यापक हो गया है।

मशीन अनुवाद :सुविधा और सीमा :

डिजिटल युग की सबसे चर्चित प्रवृत्ति मशीन अनुवाद का विकास है। गूगल ट्रांसलेट, माइक्रोसॉफ्ट ट्रांसलेटर और डीपएल जैसे उपकरणों ने अनुवाद को अत्यंत सरल बना दिया है। अब किसी भी भाषा के पाठ को सेकंडों में दूसरी भाषा में बदला जा सकता है।उदाहरण के लिएयदि कोई छात्र रूसी लेखक टॉलस्टॉय या फ्रांसीसी लेखक अल्बर्ट कामू को पढ़ना चाहता हैतो मशीन अनुवाद की सहायता से वह तुरंत मूल पाठ का सामान्य अर्थ समझ सकता है। यह सुविधा अध्ययन, शोध और सामान्य पठन के लिए अत्यंत उपयोगी है।

हालाँकि साहित्यिक अनुवाद की दृष्टि से मशीन अनुवाद की अपनी सीमाएँ हैं। साहित्य में प्रतीक, व्यंजना, लाक्षणिक अर्थ, सांस्कृतिक संदर्भ और भावनात्मक गहराई होती हैजिसे मशीन पूरी तरह समझ नहीं पाती। फिर भीयह अनुवाद प्रक्रिया का प्रारंभिक चरण बन चुका है और मानव अनुवादकों के लिए सहायक सिद्ध हो रहा है।

मानव–मशीन सहभागिता :नई अनुवाद प्रक्रिया :

डिजिटल युग में एक नई प्रवृत्ति उभरकर सामने आई हैमानव और मशीन का संयुक्त प्रयास। अब अनुवाद पूरी तरह - मानव श्रम पर आधारित नहीं रहाबल्कि मशीन द्वारा किए गए प्रारंभिक अनुवाद को मानव अनुवादक साहित्यिक रूप देता है।उदाहरण के तौर परकिसी जापानी उपन्यास का मशीन अनुवाद कथानक का ढांचा प्रस्तुत कर देता हैकिंतुउसकी भावनात्मक सूक्ष्मता, सांस्कृतिक संकेत और भाषिक सौंदर्य को सहेजने का कार्य मानव अनुवादक करता है। इस सहयोग से अनुवाद की गति भी बढ़ती है और गुणवत्ता भी बनी रहती है।

डिजिटल मंच और अनूदित साहित्य का विस्तार:

डिजिटल युग ने साहित्य के प्रकाशन और प्रसार के साधनों को भी बदल दिया है। पहले अनुवादित साहित्य का प्रकाशन मुख्यतः छपाई पर निर्भर थाकिंतु अब ईपुस्तकें-, ऑनलाइन पत्रिकाएँ और साहित्यिक पोर्टल्स प्रमुख माध्यम बन गए हैं।उदाहरणस्वरूपभारतीय भाषाओं के अनेक साहित्यिक ग्रंथ आज अमेज़न किंडल और अन्य ईप्लेटफॉर्म्स प-र अंग्रेज़ी और विदेशी भाषाओं में उपलब्ध हैं। इसी प्रकारविश्व साहित्य की प्रसिद्ध कृतियाँ हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं में डिजिटल रूप में पढ़ी जा सकती हैं। इससे अनुवादित साहित्य का पाठक वर्ग अत्यंत व्यापक हो गया है।

क्षेत्रीय भाषाएँ और अनुवाद का लोकतंत्रीकरण:

डिजिटल युग की एक अत्यंत महत्वपूर्ण प्रवृत्ति हैक्षेत्रीय और उपेक्षित भाषाओं का सशक्तिकरण। पहले अनुवाद - मुख्यतः प्रमुख भाषाओं तक सीमित थाकिंतु अब तकनीक की सहायता से छोटे भाषा समुदायों का साहित्य भी वैश्विक मंच पा रहा है।उदाहरण के लिएआदिवासी लोककथाएँक्षेत्रीय कविताएँ और ग्रामीण जीवन पर आधारित साहित्य अब डिजिटल माध्यम से अन्य भाषाओं में अनूदित हो रहा है। इससे न केवल भाषाई विविधता संरक्षित हो रही है, बल्कि सांस्कृतिक समानता और संवाद भी बढ़ रहा है।

मल्टीमीडिया अनुवाद की नई दिशा:

डिजिटल युग में साहित्य केवल लिखित रूप में नहींबल्कि ऑडियो, वीडियो और दृश्य माध्यमों में भी उपलब्ध है। ऑडियोबुक्स और पॉडकास्ट ने साहित्य को नए श्रोताओं तक पहुँचाया है। इसका प्रभाव अनुवाद पर भी पड़ा है।अब अनुवादक को केवल शब्दों का ही नहीं, बल्कि ध्वनि, उच्चारण और प्रस्तुति का भी ध्यान रखना पड़ता है। उदाहरण के लिएकिसी कविता का ऑडियो अनुवाद करते समय उसकी लय और भाव को बनाए रखना अनिवार्य होता है। यह प्रवृत्ति साहित्य अनुवाद को अधिक रचनात्मक और चुनौतीपूर्ण बनाती है।

सोशल मीडिया और त्वरित साहित्य अनुवाद:

सोशल मीडिया डिजिटल युग का एक प्रभावशाली मंच हैजिसने साहित्य अनुवाद को नई पहचान दी है। आज कविताएँ, शेर, उद्धरण और लघुकथाएँ तुरंत अनुवादित होकर साझा की जाती हैं। इससे अनुवाद प्रक्रिया अधिक

सहभागितापूर्ण हो गई है।उदाहरणस्वरूपकिसी फारसी या उर्दू शेर का हिंदी और अंग्रेज़ी अनुवाद सोशल मीडिया पर साझा होकर हजारों पाठकों तक पहुँच जाता है। इससे युवा पीढ़ी साहित्य और अनुवाद के प्रति आकर्षित हो रही है।

चुनौतियाँ और भविष्य की दिशा:

डिजिटल युग में साहित्य अनुवाद की बढ़ती गति के साथ कुछ चुनौतियाँ भी सामने आई हैं। गुणवत्ता बनाम गति, मौलिकता की रक्षा, कॉपीराइट और अनुवादकों की पहचान जैसे प्रश्न आज भी विचारणीय हैं। इसके बावजूद, यह युग साहित्य अनुवाद के लिए संभावनाओं से भरा हुआ है।भविष्य में कृत्रिम बुद्धिमत्ता और भाषाई तकनीक और अधिक उन्नत होंगीकिंतु साहित्य की आत्मा को संरक्षित रखने के लिए मानव संवेदना की भूमिका सदैव आवश्यक रहेगी।

कहा जा सकता है कि डिजिटल युग ने साहित्य अनुवाद को एक नई दृष्टि, नई गति और नई पहचान प्रदान की है। यह अनुवाद अब केवल भाषाओं को जोड़ने का माध्यम नहीं, बल्कि वैश्विक सांस्कृतिक संवाद का सशक्त उपकरण बन चुका है। तकनीक और मानव रचनात्मकता के समन्वय से साहित्य अनुवाद आने वाले समय में और अधिक समृद्ध, संवेदनशील और व्यापक होगा |

14.6 डिजिटल युग में साहित्यिक अनुवाद और बहुभाषीय परिवेश

आज का युग सूचना, तकनीक और तीव्र संप्रेषण का युग है। डिजिटल माध्यमों ने न केवल हमारे दैनिक जीवन को बदला हैबल्कि भाषा, साहित्य और अनुवाद की दुनिया को भी व्यापक रूप से प्रभावित किया है। इंटरनेट, सोशल मीडिया, ईपुस्तकें-, ऑनलाइन पत्रिकाएँ और स्वचालित अनुवाद उपकरणों के कारण भाषाएँ अब केवल स्थानीय या राष्ट्रीय दायरे तक सीमित नहीं रह गई हैं। इस परिवेश में द्विभाषिकता और बहुभाषिकता का महत्व पहले से कहीं अधिक बढ़ गया है। साहित्यिक अनुवाद के क्षेत्र में भी द्विभाषिकता एक केंद्रीय अवधारणा बनकर उभरी हैक्योंकि अनुवादक को दो या अधिक भाषाओं के बीच न केवल शब्दों, बल्कि संस्कृतियों, संवेदनाओं और अर्थपरंपराओं को भी साधना होता है।-

विभिन्न विद्वानों के विचारों से यह स्पष्ट होता है कि द्विभाषिकता का सीधा संबंध दो भाषाओं के ज्ञान और उनके प्रयोग की क्षमता से है। फिर भी यह मान लेना उचित नहीं होगा कि कोई व्यक्ति दो भाषाओं में मातृभाषा के समान स्तर की पूर्ण दक्षता प्राप्त कर सकता है। वास्तव मेंद्विभाषिक व्यक्ति की भाषिक क्षमता परिस्थितियों, संदर्भों और प्रयोजनों के अनुसार बदलती रहती है। यही कारण है कि द्विभाषिकता को एक स्थिर या एकरूप स्थिति न मानकर उसके अनेक प्रकारों और आयामों के रूप में समझा गया है। डिजिटल युग और साहित्यिक अनुवाद के संदर्भ में इन आयामों को समझना और भी आवश्यक हो जाता है।

1. व्यक्तिगत और सामाजिक द्विभाषिकता:

द्विभाषिकता का पहला महत्वपूर्ण आयाम व्यक्ति और समाज के संबंध से जुड़ा हुआ है। जब कोई व्यक्ति अपनी व्यक्तिगत रुचि, शिक्षा, व्यवसाय या विशेष आवश्यकता के कारण किसी दूसरी भाषा को सीखता हैतो वह व्यक्तिगत द्विभाषिकता का उदाहरण प्रस्तुत करता है। भारत जैसे बहुभाषी देश में अनेक ऐसे लोग मिल जाते हैं जो फ्रांसीसी, जापानी, जर्मन, चीनी या इंडोनेशियाई जैसी भाषाएँ जानते हैंकिंतु उनके परिवार या सामाजिक परिवेश में इन भाषाओं का नियमित प्रयोग नहीं होता। ऐसे मामलों में दूसरी भाषा का प्रयोग व्यक्ति तक सीमित रहता है।

इसके विपरीत, सामाजिक द्विभाषिकता उस स्थिति को दर्शाती हैजहाँ समाज स्वयं व्यक्ति पर दूसरी भाषा सीखने का दबाव बनाता है। यह दबाव सामाजिक संप्रेषण, प्रशासन, शिक्षा, रोजगार या तकनीकी आवश्यकता के कारण उत्पन्न होता है। उदाहरण के लिए, हिंदी मातृभाषी व्यक्ति द्वारा अंग्रेजी सीखना केवल व्यक्तिगत रुचि का परिणाम नहीं, बल्कि सामाजिक और व्यावहारिक आवश्यकता का भी परिणाम है। डिजिटल युग में यह सामाजिक दबाव और अधिक बढ़ गया हैक्योंकि वैश्विक मंचों पर सहभागिता के लिए अंग्रेजी या अन्य अंतरराष्ट्रीय भाषाओं का ज्ञान लगभग अनिवार्य हो गया है।

साहित्यिक अनुवाद के संदर्भ में सामाजिक द्विभाषिकता विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। आज अनुवादक केवल अपने लिए नहींबल्कि एक बड़े पाठक वर्ग के लिए कार्य करता है। वह सामाजिक अपेक्षाओं, पाठकीय रूचियों और डिजिटल मंचों की मांग को ध्यान में रखते हुए भाषा का चयन करता है।व्यक्तिगत और सामाजिक द्विभाषिकता दोनों ही अनुवाद प्रक्रिया को अलगअलग स्तरों पर प्रभावित करती हैं।-

महत्वपूर्ण बिंदु

डिजिटल युग में साहित्यिक अनुवाद नए आयाम पा रहा हैजहाँ AI और NLP जैसी तकनीकें भाषाओं के बीच संवाद को तेज़ और सटीक बना रही हैं। अब अनुवाद सिर्फ शब्दों तक सीमित नहीं रह गयाबल्कि डिजिटल माध्यमों जैसे ऑडियोबुक्स, ऑनलाइन प्लेटफॉर्म्स और सोशल मीडिया के ज़रिए यह व्यापक पाठक वर्ग तक पहुँच रहा है। डिजिटल अभिलेखों और मेटाडेटा के माध्यम से दुर्लभ ग्रंथों और मौखिक साहित्य का संग्रह और विश्लेषण सरल हुआ है, जो शोध और सांस्कृतिक अध्ययन में मददगार है।

बहुभाषिक वातावरण में हिंदी, मराठी, कन्नड़, पंजाबी और अंग्रेज़ी जैसी भाषाएँ आपस में सहज संपर्क कर रही हैंलेकिन तकनीकी समस्याएँ, जैसे OCR में त्रुटियाँ और भाषा विशेष की जटिलताएँअभी भी चुनौती हैं। इसके अलावा डिजिटल सामग्री की अधिकता और शॉर्टक्षमता पर असर डाल रही है।-फॉर्म कंटेंट की प्रवृत्ति पाठक की ध्यान-

सही तकनीकी उपयोग और गुणवत्ता पर ध्यान देकरसाहित्य अपने सांस्कृतिक और भाषाई मूल्य को बनाए रखते हुए वैश्विक पाठकों तक पहुँच सकता है। डिजिटल माध्यम इसे अधिक सुलभ और आकर्षक बनाने का अवसर भी प्रदान कर रहे हैं।

2. समानाधिकृत और सामासिक द्विभाषिकता:

द्विभाषिकता के अध्ययन में वाइनराइख का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है। उन्होंने द्विभाषिकता को केवल भाषाओं के ज्ञान तक सीमित न रखकर, उनके वैचारिक प्रयोग और शब्दार्थ व्यवस्था से जोड़ा। इसी आधार पर उन्होंने द्विभाषिक व्यक्तियों को दो वर्गों में विभाजित किया—समानाधिकृत द्विभाषी और सामासिक द्विभाषी।समानाधिकृत द्विभाषी वह होता है जिसके मस्तिष्क में दोनों भाषाओं की शब्दार्थ प्रणालियाँ अलगअलग रूप में विद्यमान रहती हैं। ऐसा - व्यक्ति प्रत्येक भाषा का प्रयोग उसके सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भ के अनुसार करता है। उदाहरण के लिएफ्रांसीसी भाषा जानने वाला कोई मलयालम भाषी व्यक्ति फ्रांसीसी संदर्भ में फ्रांसीसी शब्दार्थ व्यवस्था का और मलयालम संदर्भ में मलयालम शब्दार्थ व्यवस्था का प्रयोग करता है। इस स्थिति में दोनों भाषाएँ दो भिन्न संस्कृतियों और जीवनदृष्टियों की - अभिव्यक्ति का माध्यम बनती हैं।

इसके विपरीतसामासिक द्विभाषी के मस्तिष्क में दोनों भाषाओं की शब्दार्थ व्यवस्था एक ही होती है। वह उसी साझा अर्थतंत्र को दोनों भाषाओं में व्यक्त करता है। उदाहरण के लिएयदि कोई कन्नड़ भाषी व्यक्ति हिंदी और कन्नड़ को - परंपरा में प्रयोग करता हैतो वह सामासिक द्विभाषी कहलाएगा। भारत में इस प्रकार के द्विभाषिकों -एक ही सांस्कृतिक अर्थ की संख्या काफी अधिक हैविशेषकर उन लोगों में जो अपनी मातृभाषा के साथसाथ अंग्रेजी में भी दक्ष हैं।-

डिजिटल युग में सामासिक द्विभाषिकता का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। सोशल मीडिया, ब्लॉग, ई- दूसरे के संपर्क में रह-पत्रिकाओं और ऑनलाइन साहित्य में भाषाएँ निरंतर एकती हैं। इस संपर्क के कारण भाषाएँ न केवल एकतंत्र भी प्रभावित होते हैं। साहित्यिक अनुवाद में यह -दूसरे से शब्द और अभिव्यक्तियाँ ग्रहण करती हैंबल्कि उनके अर्थ- स्थिति अनुवादक के लिए चुनौती भी है और संभावना भीक्योंकि उसे दो भाषाओं के बीच संतुलन बनाए रखना होता है।

3. योगात्मक और ऋणात्मक द्विभाषिकता:

द्विभाषिकता को उसके प्रभाव के आधार पर योगात्मक और ऋणात्मक रूपों में भी समझा गया है। योगात्मक द्विभाषिकता उस स्थिति को दर्शाती हैजिसमें व्यक्ति अपनी मातृभाषा को सुरक्षित रखते हुए एक या अधिक भाषाएँ सीखता

है। ऐसी स्थिति में दूसरी भाषा सीखने से व्यक्ति की भाषिक और बौद्धिक क्षमता में वृद्धि होती हैऔर मातृभाषा पर कोई नकारात्मक प्रभाव नहीं पड़ता। इसे धनात्मक या योगात्मक बहुभाषिकता कहा जाता है।

इसके विपरीतऋणात्मक द्विभाषिकता में दूसरी भाषा का प्रभाव इतना प्रबल हो जाता है कि व्यक्ति धीरेधीरे अपनी - मातृभाषा से दूर होने लगता है। दूसरी भाषा उसके लिए अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है और मातृभाषा का प्रयोग सीमित या कमजोर पड़ने लगता है। इस स्थिति में व्यक्ति को भाषिक और सांस्कृतिक स्तर पर हानि भी उठानी पड़ सकती है।

डिजिटल युग में ऋणात्मक द्विभाषिकता की संभावना अधिक दिखाई देती हैक्योंकि वैश्विक मंचों पर प्रभुत्वशाली भाषाओं का दबाव स्थानीय भाषाओं पर पड़ता है। साहित्यिक अनुवाद के क्षेत्र में यह प्रश्न विशेष रूप से महत्वपूर्ण हो जाता है कि क्या अनुवाद मातृभाषा को समृद्ध कर रहा है या उसे हाशिये पर धकेल रहा है। एक सचेत अनुवादक योगात्मक द्विभाषिकता को बढ़ावा देने का प्रयास करता हैताकि अनुवाद के माध्यम से मातृभाषा की अभिव्यक्ति-क्षमता और शब्द-संपदा का विस्तार हो।

4. अंतः और बाह्य द्विभाषिकता:

द्विभाषिकता का एक अन्य महत्वपूर्ण आयाम अंतः और बाह्य द्विभाषिकता से संबंधित है। अंतःद्विभाषिकता एक ही भाषा के भीतर मौजूद विभिन्न बोलियों या शैलियों के प्रयोग से जुड़ी होती है। उदाहरण के लिएहिंदी और उसकी बोलियाँ—ब्रज, अवधी, बुंदेली, हरियाणवी आदि—अंतःद्विभाषिकता की स्थिति को दर्शाती हैं। इसी प्रकारएक ही भाषा की उच्च और निम्न शैलियों के प्रयोग से उत्पन्न स्थिति को समष्टि द्विभाषा या डिग्लोसिया कहा जाता है।

भारतीय भाषाओं में डिग्लोसिया के अनेक उदाहरण मिलते हैं। बांग्ला में साधुभाषा और चलित भाषा, तमिल में शुद्ध और बोलचाल की तमिल, तेलुगु में ग्रंथिका और व्यावहारिक भाषा—ये सभी अंतःद्विभाषिकता के उदाहरण हैं। हिंदी में भी संस्कृतनिष्ठ उच्च हिंदी, आधारभूत हिंदी और उर्दू के रूप दिखाई देते हैंयद्यपि हिंदी में डिग्लोसिया की (हिंदुस्तानी) स्थिति पूरी तरह स्थिर नहीं मानी जाती।

बाह्य द्विभाषिकता का संबंध दो अलगअलग भाषाओं के मानक र-ूपों से है। इसमें या तो दो स्वदेशी भाषाओं का संयोग होता हैजैसे हिंदी और बांग्ला, तमिल और हिंदी, या फिर स्वदेशी और विदेशी भाषा का मेल, जैसे हिंदी और अंग्रेजी। डिजिटल युग में हिंदी और अंग्रेजी का संयोग विशेष रूप से महत्वपूर्ण हो गया हैक्योंकि शिक्षा, तकनीक, प्रशासन और वैश्विक संप्रेषण में अंग्रेजी की भूमिका अत्यंत प्रभावशाली है।

साहित्यिक अनुवाद के क्षेत्र में बाह्य द्विभाषिकता अनुवादक को व्यापक पाठक समुदाय से जोड़ती है। अनुवाद के माध्यम से स्थानीय साहित्य वैश्विक मंच पर पहुँचता हैऔर वैश्विक साहित्य स्थानीय भाषाओं में प्रवेश करता है। इस प्रक्रिया में द्विभाषिकता केवल भाषिक कौशल नहींबल्कि सांस्कृतिक संवाद का माध्यम बन जाती है।

डिजिटल युग में साहित्यिक अनुवाद और बहुभाषीय परिवेश ने द्विभाषिकता को एक नई दृष्टि से देखने की आवश्यकता पैदा कर दी है। व्यक्तिगत और सामाजिक, समानाधिकृत और सामासिक, योगात्मक और ऋणात्मकअंतः और बाह्य—द्विभाषिकता के ये सभी आयाम आज के भाषिक यथार्थ को समझने में सहायक हैं। साहित्यिक अनुवाद के संदर्भ में द्विभाषिकता केवल दो भाषाओं के बीच पुल नहीं बनातीबल्कि संस्कृतियों, विचारों और संवेदनाओं के आदान-प्रदान को भी संभव बनाती है। यदि इस प्रक्रिया को संतुलित और सचेत रूप में अपनाया जाएतो डिजिटल युग में बहुभाषिकता भाषाओं के लिए चुनौती नहींबल्कि समृद्धि का अवसर बन सकती है।

14.7 डिजिटल युग में साहित्य अनुवाद: मातृभाषा से बहुभाषीय

मनुष्य का भाषा से संबंध उसके जन्म के साथ ही प्रारंभ हो जाता है। जब कोई शिशु संसार में आता हैतो वह किसी औपचारिक प्रशिक्षण या शिक्षण के बिना ही अपने चारों ओर के भाषायी परिवेश को आत्मसात करने लगता है। यह क्षमता मनुष्य को प्रकृति से प्राप्त होती है। शैशवावस्था में बच्चा सबसे पहले अपनी माँ से संवाद करता है और उसी के माध्यम से

भाषा की ध्वनियों, शब्दों और सरल संरचनाओं को ग्रहण करता है। यही कारण है कि जिस भाषा को व्यक्ति बचपन सेस्वाभाविक और अनायास रूप में सीखता हैउसे उसकी मातृभाषा कहा जाता है। प्रारंभिक अवस्था में यह भाषाव्यवहार - मुख्यतः मौखिक होता है और धीरेधीरे व्यक्ति की पहचानभावनात्मक दुनिया और सांस्कृतिक चेतना का हिस्सा बन जाता - है।

मातृभाषा केवल संप्रेषण का माध्यम नहीं होती, बल्कि वह व्यक्ति के सोचने, अनुभव करने और संसार को देखने के तरीके को भी गहराई से प्रभावित करती है। किंतु विज्ञान, प्रौद्योगिकी और वैश्वीकरण के वर्तमान युग में केवल एक भाषा के सहारे जीवनव्यवहार को सुचारु रूप से संचालित कर पाना कठिन होता जा रहा है। आज व्यक्ति को न केवल अपने - भाषायी समाज में, बल्कि अन्य भाषायी समुदायों के साथ भी निरंतर संपर्क में रहना पड़ता है। शिक्षा, रोजगार, डिजिटल माध्यम, अंतरराष्ट्रीय संवाद और साहित्यिक आदानइन सभी क्षेत्रों में बहुभाषिकता एक अनिवार्य आवश्यकता बन -प्रदान- चुकी है।

जब कोई व्यक्ति अपनी मातृभाषा के अतिरिक्त अन्य भाषाओं का प्रयोग करने लगता हैतो वह स्थिति केवल व्यक्तिगत स्तर तक सीमित नहीं रहतीबल्कि पूरे भाषायी समाज को प्रभावित करती है। जैसे ही किसी समाज में एक से अधिक भाषाओं का व्यवहारिक प्रयोग आरंभ होता हैवह समाज बहुभाषी समाज कहलाता है। इस संदर्भ में 'भाषायी समाज' की अवधारणा को समझना आवश्यक है।

भाषा मनुष्य को अन्य प्राणियों से अलग और श्रेष्ठ बनाती है। भाषा के माध्यम से ही व्यक्ति अपनी भावनाओं, विचारों, इच्छाओं, मूल्यों और जीवनदृष्टि को अभिव्यक्त करता है। जब किसी समाज के लोग आपसी संप्रेषण में समान - भाषिक प्रतीकों और संकेतों का प्रयोग करते हैंऔर वे प्रतीक सभी के लिए बोधगम्य एवं स्वीकार्य होते हैंतो वह समूह एक 'भाषायी समाज' का निर्माण करता है। समाजभाषाविज्ञान की दृष्टि से भाषायी समाज उन भाषाप्रयोक्ताओं का समूह है-, जो परस्पर संवाद में एक साझा भाषिक प्रणाली का उपयोग करते हैं।

यदि किसी समाज में केवल एक ही भाषा का प्रयोग होता हैतो वह समाज एकभाषिक कहलाता है, और वही भाषा उस समाज की मातृभाषा मानी जाती है। यह मातृभाषा उस समाज की सांस्कृतिक पहचान और सामूहिक अस्मिता का प्रतीक भी होती है। यही भाषायी समानता एक समाज को दूसरे समाजों से अलग पहचान प्रदान करती है। किंतु यह ध्यान रखना आवश्यक है कि भाषायी समाज की अवधारणा केवल भौगोलिक सीमाओं तक सीमित नहीं होती।उदाहरण के लिएहिंदी भाषा को ही लें। हिंदी केवल भारत में ही नहींबल्कि मॉरिशस, ट्रिनिडाड, गयाना, सूरीनाम जैसे अनेक देशों में भी बोली और समझी जाती है। भले ही ये क्षेत्र भौगोलिक रूप से भारत से दूर होंकिंतु हिंदी का प्रयोग वहाँ के लोगों को एक साझा भाषायी समाज में बाँधता है।अंग्रेजी भाषा का प्रयोग विश्व के अनेक हिस्सों में होता हैजिससे एक वैश्विक अंग्रेजी भाषायी समाज का निर्माण हुआ है।

सामाजिक भाषावैज्ञानिक दृष्टि के अनुसारजैसे ही किसी भाषायी समाज में मातृभाषा के साथसाथ एक या अधिक - अन्य भाषाओं का प्रयोग शुरू होता हैवह समाज बहुभाषी समाज बन जाता है। यह अतिरिक्त भाषा कोई एक भी हो सकती व्यवहार एक से अधिक भाषाओं में संपन्न हो -है या एक से अधिक भी। बहुभाषिकता का संबंध इस तथ्य से है कि संप्रेषण रहा है।यहीं से द्विभाषिकता और बहुभाषिकता की अवधारणाएँ सामने आती हैं। यदि संप्रेषण दो भाषाओं में होता हैतो उसे द्विभाषिकता कहा जा सकता हैऔर यदि दो से अधिक भाषाओं मेंतो त्रिभाषिकता या चतुर्भाषिकता जैसे शब्द प्रयुक्त हो सकते हैं किंतु व्यवहारिक स्तर पर इस प्रकार की शब्दावली अत्यधिक विस्तार और जटिलता पैदा करती है। इसलिए आधुनिक भाषाविज्ञान में 'बहुभाषिकता' शब्द को ही एक व्यापक और आधारभूत अवधारणा के रूप में स्वीकार किया गया है, जिसमें दो या उससे अधिक भाषाओं के प्रयोग की स्थिति निहित रहती है। इसी कारण प्रस्तुत चर्चा में 'द्विभाषिकता' और 'बहुभाषिकता' दोनों शब्दों का प्रयोग समान अर्थ में किया जा रहा है।

बहुभाषिकता का मूल अर्थ है—संप्रेषण के लिए एक से अधिक भाषाओं का प्रयोग करने की क्षमता। इसमें पहली भाषा व्यक्ति की मातृभाषा होती है और अन्य भाषाएँ द्वितीय या तृतीय भाषा के रूप में आती हैं। इस संदर्भ में विभिन्न भाषाविदों ने द्विभाषिकता को अलगअलग दृष्टिकोणों से परिभाषित किया है।ब्लूमफील्ड ने द्विभाषिकता को अत्यंत - आदर्श रूप में देखा। उनके अनुसार, द्विभाषिकता का अर्थ है दो या दो से अधिक भाषाओं पर मातृभाषासमान नियंत्रण-—"The native like control of two or more language"। यह परिभाषा द्विभाषिकता को एक उच्च मानक पर स्थापित करती है। किंतु व्यावहारिक वास्तविकता यह है कि किसी व्यक्ति के लिए दो या अधिक भाषाओं पर समान रूप से मातृभाषा जैसी दक्षता प्राप्त करना अत्यंत कठिन, बल्कि लगभग असंभव है।

इसी व्यावहारिक कठिनाई को ध्यान में रखते हुए यूवाइनराइख ने द्विभाषिकता को एक भिन्न दृष्टि से परिभाषित . किया। उन्होंने द्विभाषिकता को दो भाषाओं के वैकल्पिक प्रयोग से जोड़ा। उनके अनुसार, जब कोई व्यक्ति संप्रेषण की स्थिति के अनुसार एक भाषा के स्थान पर दूसरी भाषा का प्रयोग करता हैतो वही द्विभाषिकता है । इस दृष्टिकोण में भाषा पर पूर्ण अधिकार से अधिकभाषा के प्रयोग की क्षमता को महत्व दिया गया है। वाइनराइख की परिभाषा यह संकेत देती है कि दूसरी भाषा का सीमित ज्ञान भी व्यक्ति को द्विभाषिक बना सकता है।

इसी आधार पर 'प्रारंभिक द्विभाषिकता' (incipient bilingualism) की अवधारणा सामने आती हैजिसमें व्यक्ति को दूसरी भाषा की केवल प्रारंभिक या आंशिक जानकारी होती हैफिर भी वह बहुभाषिक माना जाता है। डिजिटल युग में यह स्थिति अत्यंत सामान्य हो गई है। आज अनेक लोग ऑनलाइन माध्यमों, सोशल मीडिया, मोबाइल एप्लिकेशन और अनुवाद उपकरणों के माध्यम से किसी दूसरी भाषा की सीमित समझ विकसित कर लेते हैं और उसका प्रयोग भी करने लगते हैं।

नोम चॉमस्की ने भाषा अधिगम को-'क्षमता' और 'निष्पादन' के रूप में समझाया। उनके अनुसार, व्यक्ति के मन में निहित भाषिक ज्ञान उसकी क्षमता हैऔर उस ज्ञान का वास्तविक प्रयोग निष्पादन। यह विचार द्विभाषिकता को समझने में भी सहायक हैक्योंकि किसी व्यक्ति के पास दो भाषाओं की क्षमता हो सकती हैभले ही वह उनका प्रयोग समान स्तर पर न करता हो। हॉस हारमैन ने द्विभाषिक व्यक्ति को वह माना है, जो दो भाषाओं में उसी सहजता और दक्षता से अपने विचार व्यक्त कर सके, जैसी सहजता मातृभाषी में होती है किंतु स्वयं हारमैन भी स्वीकार करते हैं कि यह स्थिति एक आदर्श कल्पना हैक्योंकि सामान्यतः कोई भी व्यक्ति दो भाषाओं पर पूर्ण समान अधिकार प्राप्त नहीं कर पाता।

इसी संदर्भ में होंगेन के विचार अधिक व्यावहारिक प्रतीत होते हैं। उनके अनुसारद्विभाषिकता का प्रश्न 'दो' की संख्या से नहीं, बल्कि 'एक से अधिक' की स्थिति से जुड़ा है। यदि किसी व्यक्ति के पास दूसरी भाषा की आंशिक क्षमता भी हैतब भी वह एक से अधिक है और इसलिए उसे द्विभाषिक माना जाना चाहिए। होंगेन ने यह भी स्पष्ट किया कि द्विभाषिक होने के लिए दोनों भाषाओं का सक्रिय प्रयोग आवश्यक नहीं है। यदि किसी व्यक्ति को दो भाषाओं का ज्ञान है, भले ही वह एक भाषा का ही नियमित प्रयोग करता होतब भी वह द्विभाषिक कहलाएगा।

टेलर ने भी द्विभाषिकता को सीमित अर्थ में परिभाषित किया। उनके अनुसार, वह व्यक्ति द्विभाषिक है जो दो ऐसी भाषाएँ बोल सकता हैजो उच्चारण, शब्दावली और वाक्यदूसरे से भिन्न हों-विन्यास की दृष्टि से एक-—"A bilingual is a person who can speak two languages that differ in speech sounds, vocabulary, and syntax" ((1976। यह परिभाषा भी प्रारंभिक द्विभाषिकता की अवधारणा को समर्थन देती है।

डिजिटल युग और साहित्यिक अनुवाद के विशेष संदर्भ में देखें तो स्पष्ट होता है कि बहुभाषिकता अब अपवाद नहींबल्कि सामान्य स्थिति बन चुकी है। अनुवादक, लेखक और पाठक तीनों ही किसी न-किसी रूप में बहुभाषिक परिवेश में कार्य कर रहे हैं। डिजिटल मंचों पर साहित्य का अनुवाद केवल भाषाओं के बीच शब्दांतरण नहीं हैबल्कि यह विभिन्न भाषायी समाजों के बीच सेतु का कार्य करता है। इस प्रक्रिया में बहुभाषिकता न केवल संप्रेषण को आसान बनाती है, बल्कि साहित्य को वैश्विक संवाद का माध्यम भी बनाती है।

मातृभाषा से आरंभ होकर बहुभाषिकता तक की यह यात्रा डिजिटल युग में साहित्यिक अनुवाद के लिए नई संभावनाएँ और नई चुनौतियाँ दोनों प्रस्तुत करती है। यदि इस बहुभाषिक क्षमता का संतुलित और संवेदनशील उपयोग किया जाएतो यह भाषाओं के बीच समन्वय, सांस्कृतिक समृद्धि और साहित्यिक विस्तार का सशक्त साधन बन सकती है |

14.8 सारांश

डिजिटल युग ने साहित्य और अनुवाद के क्षेत्र में अभूतपूर्व बदलाव लाए हैं। अब साहित्य केवल मुद्रित रूप तक सीमित नहीं हैबल्कि ईबुक्स-, ऑनलाइन प्लेटफॉर्म, सोशल मीडिया और ब्लॉग के माध्यम से वैश्विक स्तर पर फैल रहा है। इसी संदर्भ में साहित्यानुवाद की भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो गई हैक्योंकि विभिन्न भाषाओं और संस्कृतियों के साहित्य को बहुभाषिक पाठकों तक पहुँचाना सरल और त्वरित हो गया है।

नई प्रवित्तियों में मशीन अनुवाद, कम्प्यूटेशनल टूल्स, सहयोगात्मक अनुवाद प्लेटफॉर्म और आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस आधारित अनुवाद तकनीक प्रमुख हैं। ये साधन न केवल अनुवाद की गति बढ़ाते हैं, बल्कि भाषाई सटीकता और बहुसांस्कृतिक अभिव्यक्ति में भी मदद करते हैं। डिजिटल युग ने पाठकों और अनुवादकों के बीच- संवाद को सक्रिय किया हैजिससे अनुवाद प्रक्रिया अधिक लोकतांत्रिक और सहभागितापूर्ण हो गई है।

बहुभाषिक परिवेश में साहित्य का अनुवाद केवल शब्दों का रूपांतरण नहीं हैबल्कि यह सांस्कृतिक आदानप्रदान - और वैश्विक समझ का माध्यम बन गया है। अनुवाद के जरिए विभिन्न समाजोंं की सोच, मान्यताएँ और संवेदनाएँ साझा होती हैंजिससे साहित्य का अनुभव व्यापक और समावेशी बनता है।इस इकाई में डिजिटल युग में साहित्यानुवाद की तकनीकी, सांस्कृतिक और सामाजिक पहलुओं का अध्ययन किया गया है। यह स्पष्ट करता है कि अनुवाद केवल भाषाई कार्य नहींबल्कि बहुभाषिक और बहुसांस्कृतिक संवाद का महत्वपूर्ण उपकरण बन गया है।

14.9 प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा)

प्रश्न 1 का उत्तर: भाषा केवल संवाद का साधन नहीं रहीबल्कि चिंतन और मनन का सशक्त माध्यम बन गई। वास्तव मेंसभ्यता की नींव ही भाषा पर टिकी हैजिसने मनुष्य को अन्य प्राणियों से अलग पहचान दी और उसे सामाजिक प्राणी के रूप में स्थापित किया। "सहितस्य भावः तत् साहित्यम्" के अनुसार, जो भावों को संचित करे और सबके कल्याण का साधन बने, वही साहित्य है।

प्रश्न 2 का उत्तर: साहित्य के संबंध में आचार्य रामचंद्र शुक्ल का यह कथन अत्यंत महत्वपूर्ण है—"जबकि प्रत्येक देश का साहित्य वहाँ की जनता की चित्तवृत्तियों का संक्षिप्त प्रतिबिंब होता हैतब यह निश्चय है कि जनता की चित्तवृत्ति में परिवर्तन के साथ-साथ साहित्य के स्वरूप में भी परिवर्तन होता चला जाता है।"

प्रश्न 3 का उत्तर: प्रिंट मीडिया से इलेक्ट्रॉनिक मीडिया और फिर इंटरनेट तक की यात्रा ने साहित्य को व्यापक मंच प्रदान किया। कंप्यूटर द्वारा निर्मित आभासी संसार में उपलब्ध रचनाओं को ऑनलाइन या डिजिटल साहित्य कहा जाने लगा।

प्रश्न 4 का उत्तर: डिजिटल साहित्य की एक प्रमुख विशेषता लेखक और पाठक के बीच की दूरी का कम होना है। पाठक तत्काल प्रतिक्रिया दे सकता हैजिससे संवाद की प्रक्रिया सशक्त होती है। दूसरी विशेषता है- डिजिटल साहित्य की विशेषता यह है कि यह परंपरागत शैली से अलग, बहुआयामी और नवीन प्रयोगों से युक्त है।

प्रश्न 5 का उत्तर: डिजिटल युग की सबसे बड़ी विशेषता है-सूचनाओं का तीव्र प्रसार। इंटरनेट और डिजिटल माध्यमों ने भौगोलिक सीमाओं को लगभग समाप्त कर दिया है। अब किसी देश या भाषा का साहित्य केवल उसी क्षेत्र तक

सीमित नहीं रहता। ई-पुस्तकों, डिजिटल लाइब्रेरी और ऑनलाइन मंचों के माध्यम से साहित्य विश्व के किसी भी कोने में तुरंत उपलब्ध हो जाता है।इस संदर्भ में साहित्य अनुवाद की आवश्यकता और भी बढ़ गई है।

14.10 अधिक जानने के लिए पढ़ें

- Bassnett, Susan, 1993, Comparative Literature: A Critical Introduction, UK, Exfort Black Well Publishers.
- Badode, Rambhau & Afzalkhan (eds.) 2007. New Directions in Comparative Literature, Macmilhan India Ltd.
- Spivak, Gayatri Chakravarty, 2003, Death of a Discipline, Colombia, Colombia University Press.
- Said, Edward, 1978, Orientalism, London, RNP.
- चौधुरी, इंद्रनाथ, 1983, तुलनात्मक साहित्य की भूमिका, मद्रास, दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा।
- चौधुरी, इंद्रनाथ, 1996, तुलनात्मक साहित्य भारतीय परिप्रेक्ष्य, नई दिल्ली, वाणी प्रकाशन।
- गोस्वामी, कृष्ण कुमार, अनुवाद विज्ञान की भूमिका, नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन ।
- टंडन, पूरनचंद, अनुवाद के विविध आयाम, दिल्ली, तक्षशिला प्रकाशन ।
- नगेंद्र (.सं), अनुवाद 1993, सिद्धांत एवं अनुप्रयोग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली ।
- श्रीवास्तव, रवींद्रनाथ, एवं गोस्वामी, कृष्ण कुमार (.सं), 1995, अनुवाद सिद्धांत और समस्याएँ, दिल्ली, आलेख प्रकाशन।

14.11 अभ्यास प्रश्न

(क) संक्षिप्त प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

1. विधा विशेष और साहित्यनुवाद की चुनौती से आप की समझते है।
2. डिजिटल साहित्य की सीमाएँ क्या है ?
3. संस्कृति, भाषा और अनुवाद से आप क्या समझते है ?
4. साहित्यनुवाद में डिजिटल युग का प्रभाव किस प्रकार पड़ा है?
5. मल्टीमीडिया अनुवाद की नई दिशा से आप क्या समझते है ?

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

1. डिजिटल युग में साहित्य की परम्परा एवं परिवर्तन पर एक आलेख तैयार कीजिए |
2. डिजिटल युग में साहित्यानुवाद के स्वरूप, प्रक्रिया और सांस्कृतिक महत्व पर प्रकाश डालिए |
3. डिजिटल युग में साहित्यानुवाद की नई प्रवृत्तियों की भूमिका को अपने शब्दों में लिखिए |
4. डिजिटल युग में साहित्यिक अनुवाद और बहुभाषीय परिवेश पर एक आलेख प्रस्तुत कीजिए |
5. डिजिटल युग में साहित्य अनुवाद द्वरा मातृभाषा से बहुभाषीय परिवेश को विविध उदाहरणों के माध्यम से स्पष्ट कीजिए |

शब्दकोश:

योगात्मक पूरक ,जोड़ने वाला :

ऋणात्मक नकारात्मक :

हाशियेवं :चित अल्पसंख्यक ,

प्रयोक्ताप्रयोगकर्ता ,उपयोगकर्ता :

कृत्रिमदिखावटी ,बनावटी :

चित्तवृत्तिमन की अवस्था ,मनोवृत्ति :

आभासी डिजिटल ,अवास्तविक ,काल्पनिक :

*** ***** ***